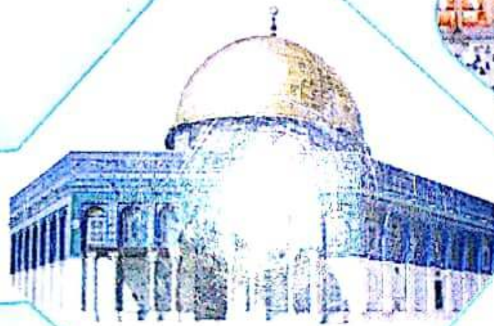
सच्ची हिकायात

हज़रत मौलाना अबुन्नूर मौहम्मद बशीर साहब









अदबी दुनिया

इल्तिज़ा है कि इस किताब को अपनी मोबाईल की मैमोरी में सेव करके ना रखे वल्कि आप से गुजारिश है कि इस किताब का मुताला कीजिये ये किताब बहुत शानदार है।

दुआ की गुजारिश
डॉ ज़ाहूर रज़वी
अल अश्हर अकडमी

दुआ की गुज़ारिश
मोहम्मद अहतिराम क़ुरैशी
तीसरा हिस्सा

आप हज़रात से गुजारिश है कि इस किताब को आप अपना निम्ती वक़्त दे और इस किताब का मुताला करे और हम ना चीज़ को अपनी अपनी दुआओं में याद रखे

Scanned by CamScanner

नाम किताब	:	सच्ची हिकायात मुकम्मल
तालीफ़	:	मौलाना अबु अलनूर बशीर
सन इशाअत	:	2013
सफ़हात	:	936
मतबअ	:	नाहिद प्रेस, देहली
हदिया	:	
नाशिर	:	अदबी दुनिया, देहली

इस किताब में

कुतब अहादीस और दीगर मुसतनिद इस्लामी किताबों से दिलचस्प, मुफ़ीद और सबक़ आमोज़ हिकायात जमा कर दी गई हैं और हर हिकायत के बाद इससे जो सबक़ हासिल होता हैए लिख दिया गया है और हर हिकायत को असल किताब से देखकर दर्ज किया गया है और किताब का नाम, सफ़हा और जिल्द सब कुछ दिया गया है।

Publisher

ADABI DUNIYA

399, Matia mahal, jama masjid,
Delhi - 110006
Phone : 23250122

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

पहली नज़र

इस ज़माने में अफ़साने, ड्रामे, किस्से और कहानियाँ बड़े शौक़ से पढ़ी जाती हैं और ये शौक़ बिलअमूम हर छोटे बड़े मर्द और औरत में पाया जाता है, आज कल हर वो तहरीर जिसमें अफ़सानवी तर्ज़ और हिकायती रंग मौजूद हो, पसंदीदगी की नज़र से देखी जाती है, क़ौम का यही रूहजान तबअे इस अम्र का बाइस है के मुल्क के अक्सर रसायल व जरायद अपने अपने "कहानी नम्बर" और "अफ़साना नम्बर" शाय करते हैं और अफ़साना पसंद अफ़राद इन्हें हाथों हाथ लेते हैं।

ये अफ़साने, ड्रामे और आज कल की हिकायात व कहानियाँ ज़्यादा तर दरोग़ व कज़िब और ग़ैर वाक़ेई बिना पर मुबनी होती हैं, उनकी कोई हक़ीक़त और असल नहीं होती और ऐसे अफ़साना लिखने वाले उन वज़अई हिकायात को "तबै ज़ाद" और अपनी तख़लीक़ क़रार देकर अपने वज़अे व कज़िब को अपना एक शाहकार साबित करते हैं और अफ़साना पसंद तबीअतें उन्हें उस कारनामे पर दादे तहसीन देती हैं और उसे तरक़्क़ी पसंद अदब के नाम से मोसूम करने लगती हैं।

क़िस्से और हिकायात ज़रूरी नहीं के झूट ही हों, इस आलम में क़िस्सों और सच्ची हिकायात का वजूद भी है, ख़ुद क़ुरआने पाक और अहादीसे शरीफ़ा में भी हिकायात व क़सस मौजूद हैं और वो हिकायात व क़सस ऐसे हैं जिनमें सौ फ़ीसदी सदाक़त है और जो अपनी सदाक़त के बाइस मख़्लूक़ के लिए मौजिबे रूश्दो हिदायत और वजह दर्से इब्रत हैं। ख़ुदा तआला ने अपनी सच्ची किताब मजीद में अम्बियाइक्राम अलेहिमअस्सलाम के ईमान अफ़रोज़ क़िस्से और उमम साबिक़ा की सबक़ आमोज़ हिकायात बयान फ़रमाई हैं और रसूले ख़ुदा सल-लल्लाहो-तआला-अलेह व सल्लम ने भी अपने इर्शादाते आलिया में पहली उम्मतों के इब्रत आमोज़ वाक़ेयात और सबक़ आमोज़ हिकायात सुनाई हैं और इसी तरह बुज़ुर्गाने दीन के इर्शादात और उनकी तालीफ़ात में भी इस क़िस्म की सच्ची हिकायत का वजूद पाया जाता है मगर मुश्किल ये है के ये सब पुरानी बातें हैं और इस नए दौर में उन पुरानी बातों की तरफ़ तवज्जह नहीं की जाती ऐ काश! मुसलमान आज

कल के लायानी अफ़्सानों और वज़अई और झूटी हिकायात की बजाए अपने हक़ीक़ी अफ़्सानों और सच्ची हिकायात को पढ़ते पढ़ाते तो दिलचस्पी के अलावा उन्हें दीनी और दुनयवी फ़वायद भी हासिल होते।

मुद्दत से मेर दिल में ये ख़याल था के क़ुरआन व हदीस और दीगर इस्लामी लिटरेचर से हक़ीक़ी क़िस्सों और सच्ची हिकायात को जमा करूं और उन्हें सादा और आम फ़हेमो तर्ज़ में क़लमबंद कर के मुसलमानों के लिए एक ऐसी किताब लिखूं जिसका मुतअल्ला उनके लिए दिलचस्पी भी पैदा करे और साथ साथ ही उनके लिए सबक़ व इब्रत पेश करके उनके दीन व दुनिया की इसलाह भी करे चुनाँचे इसी अपने इरादे के तहेत मैंने सच्ची हिकायात को जमा करना शुरू कर दिया और क़ुरआन व हदीस के अलावा और बहुत सी इस्लामी कुतुब का मुतअल्ला करने के बाद इस सबक़ आमोज़ सिसिले की इब्तिदा कर दी।

मेरे ज़हेन में ये सिलसिला बड़ा तवील है और इरादा है के मुबारक सिलसिला को दूर तक ले जाऊँ, मैंने इस तालीफ़ के लिए जो बाब तजवीज़ किए हैं वो हस्बे ज़ेल हैं:-

पहला बाब	तौहीदे बारी
दूसरा बाब	सय्यद-उल-अम्बिया हुज़ूर अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफ़ा सल-लल्लाहो-अलेह व सल्लम
तीसरा बाब	अम्बियाऐक्राम अलेहिम-उल-सलाम
चौथा बाब	खुलफ़ाए राशिदीन रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
पाँचवा बाब	सहाबाइक्राम रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
छटा बाब	अहले बैत अेज़ाम रिज़वान-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन
सातवाँ बाब	आयम्माइक्राम रहमत-उल्लाही अलेहिम अजमईन
आठवाँ बाब	औलियाइक्राम रहमत-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
नवाँ बाब	सलातीने इस्लाम
दसवाँ बाब	मुख़्तलिफ़ हिकायात

Scanned by CamScanner

चूँके ये सिलसिला बहुत तवील है इसलिए इस किताब को तीन हिस्सों पर तक़सीम कर दिया है इसका ये पहला हिस्सा जो आपके हाथ में है पहले चार अबवाब पर मुशतमिल है, इसमें पहला, दूसरा, तीसरा, और चौथा बाब है और बाक़ी दूसरे अबवाब इंशाअल्लाह दूसरे हिस्सों में आएँगे इस किताब के पहले बाब में ऐसी हिकायात का इन्तिख़ाब है जिनका ताल्लुक़ "तौहीदे बारी" से है और दूस. . बाब में उन रिवायात व हिकायात का ज़िक्र है जिनका ताल्लुक़ हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ज़ातेग्रामी से है, उन सच्ची हिकायात व रिवायात से हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के मरातिब व मदारिज, आपके इख़्तियारात व कमालात और आपके उलूम का पता चलता है और ये बात साबित होती है के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मालिक व मुख़्तार हैं और दानाऐ ग़यूब हैं और हर गिज़ हर गिज़ हमारी मिस्ल नहीं हैं, तीसरे बाब में अम्बियाऐक्राम अलेहिम-उल सलाम के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे पता चलता है के अम्बियाऐक्राम की बहुत बड़ी शानें हैं और अल्लाह तआला ने उन्हें बड़े बड़े इख़्तियारात अता फ़रमाए हैं, चौथे बाब में ख़ुल्फ़ाऐ राशिदीन यानी हज़रत सिद्दिके अक्बर, हज़रते उमर फ़ारूक़ आज़म हज़रत उस्मान ज़ुलनोरैन और हज़रते मौला अली रिज़्वानउल्लाही अलेहिम अजमईन के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे इन चार याराने नबी के मरातिब व मदारिज ज़ाहिर होते हैं और पता चलता है के ये चारों ही अल्लाह के महबूब के महबूब हैं और उनकी मोहब्बत ऐन ईमान है और उनकी अदावत से ईमान जाता रहता है। इस हिस्से में ये चारों बाब हैं बाक़ी के छः अबवाब दूसरे और तीसरे हिस्से में हैं।

ज़रूरत है के आज वो मुसलमान जो क़िस्सों के शौक़ीन हैं वो झूटी हिकायात को छोड़ कर उन सच्ची हिकायात को पढ़ें ताके उन के लिए दीनी तरक़्क़ी का सबब हो और वो मुसलमान औरतें जो रातों में बच्चों को झूटी कहानियाँ सुनाया करती हैं इन सच्ची हिकायात को पढ़ें, याद करें और अपने बच्चों को ये सच्ची हिकायात सुनाएँ ताके बच्चों के दिल में भी दीन की रग़बत पैदा हो।

(अबु अलनूर मोहम्मद बशीर)

Scanned by CamScanner

हिस्सा सोम
आठवाँ बाब
औलिया इक्राम रहमत-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन

नवाँ बाब
ख़ुलफ़ा-ए-सलातीन

दसवाँ बाब
मुख़्तलिफ़ हिकायात

हिस्सा चहरम
दसवाँ बाब
मुख़्तलिफ हिकायात

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

लक़द काना फी क़सासीहिम इबरातुन लिऔलियल अलबाब

(बेशक उनके क़िस्सों में इबरत है समझदारों के लिए-पाराः 13, रुकूः 6)

मुसतनिद और सबक़ आमोज़

सच्ची हिकायात मुकम्मल

हिस्सा सोम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिल करीम

आठवाँ बाब

औलिया इक्राम रहमत-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन

हिकायत नम्बर(409) हज़रत उवैस क़ुरनी(र०अ०)

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के विसाल शरीफ का वक़्त आया तो सहाबा इक्राम अर्ज़ किया के या रसूल अल्लाह! आपका पीरहन मुबारक हम किस को दें? हुज़ूर ने फ़रमाया। उवैस क़ुरनी को। चुनाँचे हुज़ूर के विसाल शरीफ के बाद हज़रत उमर और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्हुमा आपका पीरहन मुबारक लेकर, यमन में आए। और लोगों से दरयाफ़्त किया। के यहाँ क़ुर्न का कोई शख़्स है। लोगों ने कहा। हाँ है। हज़रत उमर ने हज़रत उवैस क़ुरनी की ख़बर पूछी। तो उन्होंने बताया के हम उसे नहीं जानते। हाँ इतना ज़रूर जानते हैं के इस नाम का एक शख़्स आबादी से दूर बाहर जंगल में रहता है। और लोग उसे दीवाना कहते हैं। हज़रत उमर ने फ़रमाया के हमें उसी के पास ले चलो। चुनाँचे हज़रत उमर और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्हुमा को वहाँ ले जाया गया। ये दोनों बुज़ुर्ग जब वहाँ गए तो

उन्होंने देखा के हज़रत उवैस नमाज़ पढ़ रहे हैं। हज़रत उमर व हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्हुमा वहाँ बैठ गए। हज़रत उवैस ने जब नमाज़ ख़त्म की तो हज़रत उमर व हज़रत अली ने अस्सलाम अलेकुम कहा। और हज़रत उवैस ने व अलेकुम अस्सलाम जवाब दिया। फिर हज़रत उमर ने नाम दरयाफ़्त किया तो हज़रत उवैस ने बताया मेरा नाम उवैस है। फिर हज़रत उमर ने फ़रमाया के अपना दाहिना हाथ दिखाओ। तो आपने अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ा दिया। हज़रत उमर ने उस हाथ में वो निशानी देख ली। जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने बताई थी। हज़रत उमर ने उसका हाथ का बोसा दिया और फ़रमाया के मुबारक हो के हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने आपको सलाम फ़रमाया है। और अपना पीरहन मुबारक आपके वास्ते भेजा है। और वसीयत की है के मेरी उम्मत के वास्ते दुआ कीजिए। हज़रत उवैस रज़ी अल्लाहो अन्ह ये पैग़ामे रहमत सुनकर आलमे वज्द में आ गए और पीरहन मुबारक लेकर एक तरफ़ फासले पर चले गए और सज्दे में गिर कर दुआ करने लगे। ऐ इश्क़ व मोहब्बत के बनाने वाले और ऐ अपने हबीब के चाहने वाले! तेरे मेहबूब ने अपना जामा पाक मुझ शीफ़्ता व शीदा फक़ीर बेसरोपा को भेजा है। अगर इजाज़त हो तो ये फक़ीर इसे पहन ले आवाज़ आई के हाँ। पहनो। अर्ज़ किया ऐ मौलाऐ ग़फ़ूरो रहीम! मैं इस पीरहन मुबारक को इस वक़्त तक ना पहनूंगा जब तक के तू अपने मेहबूब की कुल उम्मत को ना बख़्श दे। इर्शाद हुआ हमने चन्द हज़ार को बख़्श दिया। अर्ज़ किया। इलाही सब उम्मत को बख़्श इर्शाद हुआ जिस क़द्र इस पीरहन मुबारक के तार हैं। उसे दुगने सह गुने हिस्से को बख़्श दिया। अर्ज़ किया इलाही जब तक सारी उम्मत को ना बख्शेगा मैं ये पीरहन ना पहनूंगा। निदा आई। मैंने और भी कई हज़ार को बख़्श दिया। अर्ज़ किया। मैं तो सबको चाहता हूँ। इसी तरह राज़ो नियाज़ की बातें हो रही थीं के इसी हालत में हज़रत अली और हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्हुमा वहाँ तशरीफ़ ले आए। आप ने उनको देखकर फ़रमाया के आप क्यों आ गए। मैं ये पीरहन हर गिज़ ना पहनता। जब तक के सारी उम्मत को ना बख़्शवा लेता। फिर आपने इस पीरहन मुबारक को पहना और फ़रमाया के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उम्मत मेरी शफ़ाअत और इस पीरहन की बर्कतें

से रबीआ और मुज़िर की भेड़ों के बालों के बराबर बख़्श दी गई है। फिर हज़रत उवैस फर्त मुसर्रत से रोने लगे।

हज़रत उवैस की ये शान और ये अंदाज़ देखकर हज़रत उमर और हज़रत अली भी रोने लगे। और फिर हज़रत उवैस से दरयाफ़्त किया के बावजूद इस ग़ल्बा-ए-शौक़ और वलवला इश्तियाक़ के दीदारे जमाल मेहबूब से कौन से सबब मानअे हुआ? और आपने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से मुलाक़ात क्यों नहीं की? हज़रत उवैस ने जवाब दिया के आप ने हुज़ूर को देखा है अगर आपने इस महबूब का जमाल जहाँ आरा देखा है तो फ़रमाईये के मेहबूबे पाक के वो अबरूऐ पाक आपस में मिले हुए थे या कुशादा थे। इत्तिफाक़ देखिये के हज़रत उमर व हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्हुमा उस वक़्त उसका जवाब ना दे सके। और हज़रत उवैस ने अबरूऐ पाक की पूरी पूरी नूरानी तसवीर खींच कर बता दी और फ़रमाया मैं अगरचै बज़ाहिर ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर नहीं हुआ मगर जलवा-ए-मेहबूब किसी वक़्त मुझ से पनेहाँ नहीं रहा। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 24)

सबक़:- हज़रत उवैस क़ुरनी रज़ी अल्लाहो अन्ह की बहुत बड़ी शान है। आप अगरचै बज़ाहिर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत शरीफा से मुशर्रफ नहीं हुए लेकिन इश्क़ व मोहब्बत की बदौलत बातिनी आँखों से आप हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के जमाल जहाँ आरा से मुशर्रफ हो चुके थे ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम इश्क़ व मोहब्बत और बातिनी आँख वालों के सामने हाज़िर व नाज़िर हैं और हक़ीक़त यही है के.....

दीदा-ए- कोर को क्या आए नज़र क्या देखे
आँख वाला तेरे जोबन का तमाशा देखे

और ये मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के बदन अनवर से मस शुदा पीरहन अनवर की बर्कतों और बुज़ुर्गों की दुआओं से हम गुनाहगारों की निजात हो जाती है।

फायदा:- जिस खुश क़िस्मत शख़्स ने ब-नज़र ईमान हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उन ज़ाहिरी आँखों से ज़ियारत की हो। या जिस साहबे ईमान पर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की

नज़र मुबारक पड़ गई हो। वो "सहाबी" है और जिसने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की तो ज़ियारत ना की हो और उनके सहाबी को देखा हो वो ताबई है। इस मानी में हज़रत उवैस रज़ी अल्लाहो अन्ह ताबई हैं और हज़रत उवैस रज़ी अल्लाहो अन्ह को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने "खै़र-उल-ताबईन" फ़रमाया है। (मिशकात शरीफ, सफ़ा 574)

2- हज़रत उवैस रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के ज़माने ही में थे। लेकिन वो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में इसलिए हाज़िर ना हो सके के आपकी वालिदा बूढ़िया और ज़ईफा थीं। और उनको छोड़कर कहीं जा ना सके थे। (हाशिया मिशकात सफ़ा मज़कूर)

3- चूंके हज़रत उवैस रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर ना हो सके थे इसलिए इस खयाल से के हज़रत उवैस इस बात का खयाल ना फ़रमाईं हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत उवैस की दिलजोई के लिए अपने सहाबा से यूं फ़रमाया के *मन लक़ीहू मिनकुम फलयसतग़फिर लकुम* यानी तुम में से जो शख़्स उनसे मिले तो अपने लिए उनसे मग़फिरत की दुआ कराऐ। गोया उनकी अज़मत शान को बयान फ़रमा दिया।

हिकायत नम्बर(410) मातियों का सौदागर

हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा इब्तिदा में मोतियों और जवाहरात के सौदागर थे। क़िस्म क़िस्म के मोती और जवाहरात की आप तिजारत करते और बड़े बड़े बादशाहों के पास जवाहरात तोहफा में ले जाकर पेश करते थे। एक दफा कुछ जवाहरात हरक़ुल बादशाह रोम के पास लेकर गए। पहले वज़ीर से मिले। और अपने आने का और आदशाह की ख़िदमत में तोहफा लाने का हाल बयान किया। वज़ीर ने कहा। कल तो बादशाह को एक निहायत ज़रूरी काम है असलन फुरसत ना होगी। और काम देखने के क़ाबिल है। हज़रत हसन ने कहा के मैं ज़रूर देखूंगा। वज़ीर ने हज़रत हसन को ले जाकर एक जगह मैदान में ठहराया। मैदान में एक खै़मा ज़री का

क़ायम था। उसके आस पास आला दर्जे की मख़मल का फर्श था ख़ैमे की तनाबीन ज़री की थीं। उसकी चौबें चाँदी की थीं। मेखें सोने की थीं। निहायत क़ाबिल दीद मंज़र था। वज़ीर ने हज़रत हसन को ख़ैमा के अक़ब में चिलमन के पीछे खड़ा किया। के जिस जगह से हज़रत हसन ने सारा तमाशा देख लिया। लेकिन वो ख़ैमा दरअसल शाह हरकुल के अज़ीज़ फ़रज़ंद की क़ब्र पर खड़ा था। और आज उसकी सालाना बर्सी का दिन था। बादशाह सालाना रसम ताज़ीयत अदा करने यहाँ आया था। हज़रत हसन ने देखा के पहले एक जमात मुक़द्दस इसाई लोगों की ख़ैमा के अन्दर आई। और क़ब्र के पास खड़े होकर कुछ पढ़ने लगे और फिर रोते हुए निकल कर चले गए। उसके बाद एक जमात तबीबों की और बड़े बड़े ज़ी अक़्ल लोगों की आई। ये लोग भी नंगे सर। क़ब्र के पास खड़े रोते रहे। और थोड़ी देर के बाद निकल कर चले गए। उनके बाद फौज के अफसरों की जमात नंगी तलवारें लेकर ख़ैमा के अन्दर आई वो भी क़ब्र की सलामी उतार कर नाकाम वापस गई। फौजी लोगों के बाद एक झुंड नोजवान औरतों का आया। जिनके सर के बाल खुले हुए थे। उनके हाथों में सोने की थालियाँ थीं। जिनमें मोती और जवाहरात भरे थे। इन औरतों ने क़ब्र का तवाफ किया और बहुत रोकर ये भी ख़ैमे से बाहर चली गईं। इन सबके बाद बादशाह खुद खैमे के अन्दर आया और कब्र के पास खड़ा होकर कहने लगा। बेटा! तू मुझे बहुत प्यारा था। मगर अफसोस के तू मर गया। अगर मुझे ये मालूम हो जाए के जिसने तेरी जान ली है वो उन बड़े बड़े राहिबों और पाद्रियों का कहा मान कर तेरी जान वापस कर देगा तो ये बड़े बड़े इसाई राहिब इस काम के लिए तेरे पास हाज़िर हैं। मगर मैं जानता हूँ के उनके कहने से कुछ ना होगा। अगर मुझे ये मालूम हा जाए के अक़्लमंदों और तबीबों की तदबीर करने से तेरी जान खुदा तुझे बख़्श देगा तो ये बहुत बड़ी जमात तबीबों और बड़े बड़े अक़्लमंदों की तेरी क़ब्र के पास खड़ी है। और तेरी रिहाई की तदबीरें करने को मौजूद है। मगर मैं जानता हूँ के तुझे ऐसे ज़बरदस्त ने मारा है के उसके सामने किसी की तदबीर नहीं चलती। ऐ फ़रज़ंद! अगर मुझे ये मालूम हो जाए के जिसने तेरी जान निकाली है। वो किसी बड़ी फौज से डर तुझे छोड़ देगा तो ये कसीर फौज और फौज के अफ़्सर तुझे कैद से छूड़ाने को तेरी क़ब्र के पास मौजूद हैं।

लेकिन जिसने तुझे क़ैद किया है वो ऐसा ज़बरदस्त खुदा है के कोई फौज उसके सामने कोई हस्ती नहीं रखती। ऐ फ़रज़ंद अगर ये मुझे मालूम हो जाए के जिसने तुझे मारा है वो हसीन और खूबसूरत औरतों का तालिब है और हसीन औरतें लेकर तुझे छोड़ देगा तो ये खूबसूरत औरतों की जमात हाज़िर है। मगर मैं जानता हूँ के ना वो हसीन औरतों का तालिब है। ना माल व जवाहर का ख़्वास्तगार है और अब वो तुझे किसी तरह ना छोड़ेगा। इसलिए अब मैं तुझ से फिर एक साल के लिए रूख़्सत होता हूँ ये कहकर बादशाह खैमे से बाहर निकल आया। और सब लोग क़ब्र के पास से रूख़्सत हुए। हज़रत हसन ने ये वाक़ेया देखा तो दिल पर ऐसा असर पड़ा के दुनिया से तबीयत यक लख़्त हट गई। और आपने आईंदा दुनिया के जवाहरात बैचने छोड़ कर आख़िरत के जवाहरात ख़रीदने शुरू कर दिए और दुनिया के जुमला कारोबार से अलग होकर इस फिक्र में पड़ गए के आख़िरत का ज़ादे राह मोहय्या करें। और बसरे में आकर क़सम खाई के अब इस दुनिया में हंसूंगा नहीं। और फिर इबादत व मुजाहेदा में कुछ इस तरह मशग़ूल हो गए के इस ज़माने में कोई वैसा ना था। और 70 बरस तक ता दम ज़ीसत बे वज़ू ना रहे। (तज़करत–उल–औलिया, सफ़ा 76–77)

सबक़:- अल्लाह तआला बड़ी ताक़त और क़ुद्रत का मालिक है। उसके मुक़ाबले में बड़े बड़े दाना व तबीब और बड़ी बड़ी फौजें और बड़े बड़े लश्कर कुछ भी हैसियत नहीं रखते। और उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते और ये भी मालूम हुआ के चाहे कितना बड़ा आदमी क्यों ना हो। एक दिन उसे मरना ज़रूर है। और मौत के आने में अमीर व ग़रीब सब बराबर हैं। बक़ौल शायर....

कितने मुफलिस हो गए कितने तवंगर हो गए
ख़ाक में जब मिल गए दोनों बराबर हो गए

और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले इस दुनियाऐ फानी के वाक़ेयात से इब्रत हासिल करते और अपनी आक़्बत संवारने की फिक्र में रहते हैं।

हिकायत नम्बर (411) जिनों में वाज़

हज़रत अब्दुल्लाह का बयान है के मैं एक रोज़ सुबह उठा ताके जमात

के साथ नमाज़ पढ़ूं। मैं हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह की मस्जिद के दरवाज़े पर आया। दरवाज़ा बन्द था। और हज़रत हसन दुआ माँग रहे थे और लोग आमीन कह रहे थे। मैंने अपने दिल में कहा के शायद हज़रत हसन के अहबाब यहाँ मौजूद हैं। मैं थोड़ी देर ठहरा रहा। यहाँ तक के सुबह हो गई मैंने दरवाज़े पर हाथ रखा। दरवाज़ा खुल गया। मैं अन्दर गया तो हज़रत हसन को अकेला पाया। मैं हैरत में रहा और जब नमाज़ से फारिग़ हुआ तो वो क़िस्सा उनसे बयान किया। और मैंने कहा के खुदा के वास्ते मुझे इस हाल से ख़बरदार कीजिए के आमीन कहने वाले कौन थे। आपने फ़रमाया के किसी से मत कहना। मैंने हर जुमआ की रात जिनों में वाज़ कहने लिए मुक़र्रर कर रखी है। वो हर जुमअे की रात को यहाँ आते हैं और मैं उनके सामने वाज़ कहता हूँ और फिर दुआ माँगता हूँ और वो आमीन कहते हैं। (तज़करह औलिया, सफ़ा 36)

सबक़:- अल्लाह वालों की बहुत बड़ी शान है। यहाँ तक के जिन्न भी उनके ग़ुलाम होते हैं। और ये भी मालूम हुआ के किसी नेक काम के लिए कोई दिन या रात मुक़र्रर करना बिदअत नहीं बल्के जायज़ है।

झर्रे में एक हाफिज़ क़ुरआन रहते थे। जिनका नाम अबु उमरो था। ये लोगों को पढ़ाया करते थे एक रोज़ एक बे दाढ़ी मूंछ का खबसूरत लड़का उनके पास आया। और कहा मुझे भी क़ुरआन पढ़ाहिये । अबु उमरो ने उसकी तरफ़ ख़ियानत की नज़र से देखा। तो उसकी पादाश में उन्हें सारा क़ुरआन भूल गया। अबु उमरो बड़े घबराए और परेशानी के आलम में हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह की ख़िदमत में हाज़िर हुए और सारा क़िस्सा अर्ज़ करके तालिबे दुआ हुए। हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह ने फ़रमाया के हज का ज़माना क़रीब है। जाओ जाकर हज कर लो। और जब हज कर चुको तो मस्जिदे ख़ीफ में जाना। वहाँ तुम्हें एक बूढ़े शख़्स मिलेंगे जो मेहराब में बैठे होंगे। उनकी ख़िदमत में हाज़िर होना और उनके वक़्त ज़ाए ना करना जब वो अपने अवरादो वज़ायफ से फारिग़ हो जायें उस वक़्त अपनी अर्ज़ पेश करना और दुआ के लिए कहना। अबु उमर ने ऐसा ही किया।

और हज करके मस्जिदे ख़ीफ मे पहुँच गए वहाँ मेहराब में वाक़ई एक ज़ी शौकत नूरानी और पुर जलाल बूढे को बैठा हुआ पाया जिनके इर्दगिर्द बहुत से आदमी बैठे थे। ये भी उन आदमियों में बैठ गए। थोड़ी दर गुज़री तो एक बुज़ुर्ग सफेद और पाकीज़ा लिबास पहने वहाँ आए। लोग उनके सामने गए और सलाम किया। और आपस में बात चीत करते रहे। और जब नमाज़ का वक़्त आया तो वो बुज़ुर्ग चले गए। और लोग भी उनके हमराह चले गए। और बूढ़े बुज़ुर्ग तनहा रह गए। अबु उमरो आगे बढ़े। और उनको सलाम करके अपना सारा क़िस्सा बयान किया। और रोते हुए अर्ज़ किया के मेरी फ़रयाद को पहुँचिये और मेरी छीनी हुई दौलत (हिफ़्ज़ क़ुरआन) मुझे वापस दिलाईये। वो बूढ़े शख़्स ग़मनाक से हुए। और फिर कुन अखियों से आसमान की तरफ़ नज़र की। अभी उन्होंने नज़र नीचे ना की थी के अबु उमरो पर सारा क़ुरआन फिर कशफ हो गया। अबु उमरो मारे खुशी के उनके क़दमों में गिर गए। वो बूढ़े बुज़ुर्ग पूछने लगे के तुझे मेरा पता किस ने बताया था? अबु उमरो ने जवाब दिया के हज़रत हसन बसरी ने। वो बोले। हसन बसरी ने हमें रूसवा किया। और हमारा पर्दा फाश किया। अब हम उसको रूसवा करेंगे और उसका पर्दा फाश करेंगे। फिर फ़रमाया के तुम ने इस बुज़ुर्ग को देखा? जो ज़ोहर की नमाज़ से पहले यहाँ आए थे। जिनका सफेद और पाकीज़ा लिबास था। और जो सबसे पहले चले गए थे। अबु उमरो ने कहा! हाँ देखा था। फ़रमाया वो हसन बसरी ही थे। हर रोज़ नमाज़ ज़ोहर बसरा में पढ़कर यहाँ आते हैं। और हम से बात चीत करते हैं और दूसरी नमाज़ के वक़्त बसरा चले जाते हैं। फिर फ़रमाया के जिसका इमाम हसन बसरी जैसा हो। उसको हमारी दुआ की क्या हाजत है। (तज़करह औलिया, सफ़ा

सबक़- मुश्किल के वक़्त बुज़ुर्गों की ख़िदमत में हाज़िर होकर फ़रयाद करने से और बुज़ुर्गों की दुआ से बड़ी बड़ी मुश्किलें हल हो जाती हैं और ये भी मालूम हुआ के बदनिगाही से बड़ी बड़ी आफतें नाज़िल हो जाती हैं। और इल्मे दीन भी सलब हो जाता है....

और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले अपने कमालात को छुपाते हैं।

और बावजूद उलू शान के तवाज़ो इख़्तियार फ़रमाते हैं। उन्हें अपनी बड़ाई का खयाल तक नहीं आता। बलके वो दूसरे बुज़ुर्गों को ही बड़ा समझते हैं। और ये भी मालूम हुआ के सेंकड़ों मील की मुसाफत ये अल्लाह वाले पल भर में तय करते हैं। फिर जो लोग एक मील तक का भी सफर ना कर सकते हों। वो उन पाक लोगों के मिस्ल कैसे हो सकते हैं।

हिकायत नम्बर(413) आतिश परस्त शमऊन

हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह के पड़ोस में एक आतिश परस्त शमऊन नामी रहता था। वो एक बार बीमार पड़ गया। और क़रीब-उल-मर्ग हो गया। हज़रत हसन को इसकी बीमारी का पता चला तो आप उसके पास पहुँचे। आपने देखा आग उसके पास सुलग रही है और वो आग धूएँ से काला पड़ गया है। आपने फ़रमाया के खुदा से डर और मुसलमान हो जा। सारी उम्र तूने आग और धूएँ की परसतिश की। अब दीने इस्लाम को आज़मा। शायद खुदा तुझ पर रहम फ़रमाए। शमऊन ने कहा। के दीन इस्लाम की सदाक़त की कोई निशानी दिखाईये। आपने फ़रमाया। देख तूने सत्तर बरस आग की पूजा की। और मैंनें एक रोज़ भी उसको नहीं पूजा। अब मैं और तुम दोनों आग में अपना अपना हाथ डालते हैं और फिर देखते हैं के आग किस का जलाती है और किस को छोड़ती है। चाहिए तो ये के इसका पुजारी है। इसलिए वो तुझे ना जलाए और मैं उसका पुजारी नहीं इसलिए वो मुझे जला दे। मगर मुझे अपने अल्लाह से उम्मीद है के आग मुझे हर गिज़ ना जलाएगी अगर तुम मेरे खुदा की कुद्रत और इस आग की कमज़ोरी को देखना चाहते हो तो लो देख लो ये कह कर आपने अपना हाथ जलती आग में डाल दिया। और देर तक उसमें डाले रखा। शमऊन ने देखा के आपका हाथ बिलकुल नहीं जला। ये मंज़र देख कर शमऊन बेक़रार हुआ। और खुदा की मोहब्बत का नूर उसकी पैशानी से चमकने लगा और अर्ज़ करने लगा अब तक पूरे सत्तर बरस मैंने इस आग की पूजा की है और अब चन्द सांस बाक़ी हैं तो इसमें मैं आपके खुदा की क्या इबादत कर सकता हूँ? हज़रत ने फ़रमाया तो उसकी फिक्र ना कर। कलमा पढ़ ले। तो मेरा खुदा फौरन राज़ी हो जाएगा और पिछले सत्तर बरस की आग की सारी परसतिश माफ फ़रमाएगा। शमऊन ने कहा अगर आप एक इक़्रार नामा लिख दें के हक़ तआला मुझे अज़ाब ना देगा तो मैं ईमान ले आता हूँ। हज़रत हसन ने एक इक़्रार नामा लिख दिया और शमऊन को दे दिया। शमऊन ने वो इक़्रार नामा लिया और कलमा पढ़कर मुसलमान

हो गया। और फिर हज़्र हसन को वसीयत की के जब मैं मर जाऊँ तो गुस्ल देने के बाद आप खुद मुझे क़ब्र में उतारें और ये इक़्रार नामा मेरे हाथ में रखना ताके कल क़यामत के दिन में ये दिखा कर अज़ाब से बच जाऊँ। फिर कलमा शहादत पढ़ा। और शमऊन मर गया। हज़रत ने उसकी वसीयत के मुताबिक़ किया और बहुत से लोगों ने उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। उस रात हसन बसरी मतलक़ ना सोए और सारी रात नमाज़ पढ़ते रहे और अपने दिल में कहते रहे के मैंने क्या किया मैं तो खुद अपनी जायदाद पर क़ुद्रत नहीं रखता। फिर खुदा की मलिक पर मैंने कैसे मोहर कर दी और इक़्रार नामा लिख दिया। इसी ख़याल में सो गए तो शमऊन को देखा के ताज सर पर रखे और नूरानी लिबास पहने बहिश्त के बाग़ों में टहल रहा है। हज़रत हसन ने दरयाफ़्त किया के ऐ शमऊन! क्या हाल है? उसने कहा आप क्या पूछते हैं। हक़ तआला ने मुझ पर बड़ा फज़्ल फ़रमाया है और एक बहुत बड़े महल में उतारा है। और अपना दीदार भी अता फ़रमाया है। और जो जो मेहरबानियाँ मुझ पर फ़रमाई हैं के मुझ में ताक़त नहीं के बयान कर सकूं ऐ हसन! अब आपके ज़िम्मे कुछ बोझ ना रहा। आपका इक़्रार नामा बड़े काम आया। अब ये लीजिए अपना इक़्रार नामा। क्योंके अब इसकी ज़रूरत नहीं। ये कहकर वो इक़्रार नामा उसने हज़रत हसन बसरी को दे दिया। हज़रत हसन बसरी जब बैदार हुए तो वो इक़्रार नामा उनके हाथ में था। (तज़करह औलिया, सफ़ा 39-40)

सबक़:- अल्लाह वाले जब किसी बदकार गुनहगार और काफिर नाहिंजार की तरफ़ भी तवज्जह फ़र लें तो उसका बैड़ा पार हो जाता है और वो जन्नत का हक़दार बन जाता है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले जब किसी बात का अहेद व इक़्रार कर लें अल्लाह तआला अपने वली के अहेद व इक़्रार सच्चा कर देता है। और जो बात उनके मुंह से निकल जाए वो पूरी कर देता है। फिर जो उन वलियों और नबियों के भी आक़ा व मौला और सरदार हैं। यानी हुज़ूर सय्यद-उल-अंबिया अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफा सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम वो क्यों ना जन्नत के मालिक व मुख़तार होंगे और उनकी ये शान क्यों ना होगी? के वो जिस चाहें जन्नत में दाख़िल कर दें और जिसे चाहें जन्नत से निकाल दें।

हिकायत नम्बर(414) दजले के किनारे

हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह एक रोज़ दजले के किनारे

जा रहे थे के एक हबशी को देखा जो अपने पास एक औरत को लिटाए हुए एक बोतल से खुद भी कुछ पी रहा था और उस औरत को भी पिला रहा था।

हज़रत हसन के दिल में ख़याल गुज़रा के उस शख़्स से अच्छा मैं ही हूँ। जो ऐसी हरकत का मुरतकिब नहीं हूँ। ये शख़्स औरत के साथ शराब पी रहा है और शराब की बोतल आगे रखी है। इसी फिक्रो खयाल में थे के एक कश्ती असबाब से भरी हुई दरया में आई जो चक्कर खाकर डूब गई। उस पर दस आदमी भी सवार थे। वो दसों ग़ौते खाने लगे इस हबशी ने जो ये मंज़र देखा तो झट उठा। और दरया में कूद कर एक एक को निकालने लगा। हत्ता के नौ आदमी उसने निकाल लिए और फिर हज़रत हसन बसरी को मुख़ातिब करके कहने लगा.....

ऐ हसन बसरी ऐ मर्द बा कमाल
मुझ से अच्छा है तो दसवाँ तू निकाल

ऐ मुसलमानों के इमाम! बदगुमानी अच्छी नहीं। ये औरत मेरी माँ है और इस बोतल में पानी है। हज़रत हसन उसके क़दमों में गिर गए और माज़रत तलब करने लगे। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 40)

सबक़:- जब तक किसी बात का यक़ीन ना हो। किसी के हक़ में बदगुमानी ना करना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की नज़र से दिल के ख़याल भी पौशीदा नहीं रहते।

हिकायत नम्बर(415) ग़ीबत का बदला

हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह से किसी शख़्स ने आकर कहा के फलाँ शख़्स ने आपकी ग़ीबत की है। हज़रत हसन बसरी ने उसी वक़्त ताज़ा छुहारे मंगवाए। और एक तबाक़ में रखकर उन्हें इस शख़्स के पास बतौर तोहफा भेजा और कहला भेजा के मैं आपका शुक्रगुज़ार हूँ के आपने मेरी ग़ीबत करके अपनी नीकियों को मेरे दफ़्तर आमाल में मुनतक़िल कर दिया है। आपके इस एहसान का बदला मैं चुका नहीं सकता। ताहम ये हक़ीर सा तोहफा क़बूल फ़रमाईये। वो शख़्स हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा के इस सलूक को देखकर बहुत शर्मिंदा हुआ और ख़िदमत में हाज़िर होकर माफी चाही।

सबक़:- किसी की ग़ीबत करने से सरासर अपना ही नुक़सान है और जिसकी ग़ीबत की जाए वो फायदे में रहता है। और वो इस तरह के ग़ीबत करने वाले की नेकियाँ उसको मिल जाती हैं। लिहाज़ा ग़ीबत से बचना

चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के नेक बन्दे बुराई का बदला बुराई से नहीं देते बल्के बुराई के बदले भी नेकी ही करते हैं।

हिकायत नम्बर (416) दहरिये से मुनाज़रा

हज़रत मालिक बिन दीनार रहमत उल्लाह अलेह का एक बार एक दहरिये से मुनाज़रा हुआ। गुफ़्तगू बढ़ गई और बात यहाँ आकर ख़तम हुई के इस दहरिये का हाथ और हज़रत मालिक बिन दीनार का हाथ दोनों के हाथों को यकजा बाँध कर आग में डाला जाए फिर देखा जाए के आग किस के हाथ को जलाती है और किस के हाथ को छोड़ देती है जिस के हाथ को आग छोड़ दे वो सच्चा और जिसके हाथ को जला दे वो झूटा है चुनाँचे दोनों हाथ बाह मिलाकर बाँधे गए और आग में डाले गए। खुदा की क़ुद्रत से ऐसा हुआ के दोनों में से किसी का हाथ ना जला। बल्के आग सर्द हो गई। और दोनों बच गए। हज़रत मालिक बिन दीनार रहमत-उल्लाह अलेह ये वाक़ेया देखकर बड़े परेशान हुए। और सज्दे में गिर कर मनाजाता की। के इलाही! ये क्या किस्सा है। ग़ैब से आवाज़ आई के ऐ.........मालिक! दहरिये का हाथ तेरे हाथ के साथ मिला हुआ बाँधा गया है और तेरे हाथ के साथ साथ आग में डाला गया है। और जो चीज़ तेरे हाथ से लग जाएगी हम उसे भी ना जलाऐंगे। दहरिये का हाथ हलने से अगर बजा है तो तुम्हारे ही हाथ की बर्कत से तुम अपना हाथ अलग और उसका हाथ अलग आग में डालो। फिर तमाशा देखो। चुनाँचे फिर दूसरी मर्तबा ऐसा ही किया गया। तो हज़रत मालिक का हाथ तो मेहफ़ूज़ रहा और दहरिये का हाथ हल गया। और उसका झूटा होना ज़ाहिर हो गया। (तज़करह औलिया, सफ़ा 50)

सबक़:- अल्लाह वालों की सोहबत और उनके हाथ में हाथ दे देने की बर्कत से गुनहगार निजात पा जाता है और उनसे अलेहदा होने में नुक़सान व खसरान के सिवा कुछ हासिल नहीं होता। इसी लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया है *कूनूअ मआस्सादीक़ीन।* और मौलाना रूमी अली अर्रहमा भी फ़रमाते हैं के...

सोहबत सालेह तिरा सालेह कंद

हिकायत नम्बर (417) यहूदी का परनाला

हज़रत मालिक बिन दीनार रहमत-उल्लाह अलेह ने एक मकान किराए पर लिया। इस मकान के पड़ोस में एक यहूदी का मकान था। और

हज़रत मालिक बिन दीनार का हुजरा सफ़ा यहूदी के मकान के दरवाज़े से क़रीब था इस यहूदी ने एक परनाला बना रखा था। और हमेशा इस परनाले की राह से निजासत हज़रत मालिक के घर में फैंका करता था। उसने मुद्दत तक ऐसा ही किया। मगर हज़रत मालिक ने उसकी शिकायत कभी ना फ़रमाई। आख़िर एक दिन इस यहूदी ने खुद ही हज़रत मालिक से पूछा के हज़रत! आपको मेरे परनाले से कोई तकलीफ नहीं होती। आपने फ़रमाया होती तो है। मगर मैंने एक टोकरी और एक झाड़ू रख छोड़ी है। जो निजासत गिरती है उससे साफ कर देता हू। उसने कहा के आप इतनी तकलीफ क्यों करते हैं? और आपको गुस्सा क्यों नहीं आता? फ़रमाया के मेरे खुदा का कुरआन में इर्शाद है के जो लोग गुस्सा पी लेते हैं और लोगों को माफ कर देते हैं वो बड़े अच्छे लोग हैं। यहूदी ने कहा के फिर मुझे कलमा पढ़हाईये। जो दीन ऐसी अच्छी तालीम देता है वो दीन भी बड़ा अच्छा है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 52)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दों की आदत बड़ी ही नेक होती है और वो तकलीफ पहुँचने पर भी गुस्से में नहीं आते और ख़ता कार की ख़ता माफ कर देते हैं। और ये भी मालूम हुआ के इस्लाम अल्लाह वालों के अख़लाक़े हसन्ना से फैला है। बक़ौल शायर

दीन होता है बुज़ुर्गों की नज़र से पैदा
ना किताबों से ना कालिज के है दर से पैदा

हिकायत नम्बर(418) हबीब अजमी रहमत-उल्लाह अलेह

हज़रत हबीब अजमी रहमत-उल्लाह अलेह शुरू में बड़े मालदार और अपना माल सूद पर अहले बसरा को दिया करते थे। और हर रोज़ अपने लेन देन के तक़ाज़े के लिए जाया करते थे और जब तक के जिनसे कुछ लेना होता वसूल ना कर लेते थे ना टलते थे। और अगर देखते के और कुछ वसूल नहीं होता तो कहते के अच्छा मेरे आने की मज़दूरी दो और इसी से अपना गुज़ारा करते। एक रोज़ अपने माल की तलब के लिए एक घर में गए वो क़रज़दार घर में ना था। उसकी बीवी ने कहा के मेरा ख़ाविंद घर में नहीं। और मेरे पास कुछ नहीं। हाँ मैंने आज एक भेड़ ज़िबह की है उसकी गर्दन मेरे पास है। वो अगर चाहें तो ले जायें। आपने कहा अच्छा वही दे दो। चुनाँचे इस औरत ने वो गर्दन दे दी। और आप वसे सिरी लेकर अपने घर आए और बीवी से कहा के ये सिरी सूद

में आई है। पकाओ बीवी ने कहा। रोटियाँ और लकड़ियाँ नहीं हैं। आपने कहा। मैं अभी जाकर सूद में रोटियाँ और लकड़िया लाता हूँ। चुनाँचे गए और इसी तरह पर रोटियाँ और लकड़ियाँ ले आए। बीवी ने हाँडी चढ़ाई जब पक गई तो चाहा के पियाले में निकाले के एक सायल ने दरवाज़े पर आकर सवाल किया और राहे खुदा में कुछ माँगा। हबीब कहने लगे के वापस हो जाओ। इसलिए के तुझे जो कुछ हम देंगे उससे तू अमीर ना हो जाएगा। मगर हम फकीर हो जाऐंगे। सायल लौट गया। हज़रत हबीब की बीवी ने जो डोई हांडी में डाली तो क्या देखती है के उसमें सब खून ही खून है। अपने ख़ाविंद को बुलाया और दिखा कर कहने लगी। देखिये ये आपकी बदबख़्ती व शोमी से क्या हो गया। हज़रत हबीब ने ये हाल देखा तो दिल पर एक ऐसा असर हुआ के आपकी हालत फीअलफोर बदल गई। और कहने लगे ऐ मेरी बीवी! तू गवाह रह के मैंने आज हर बुरे काम से तौबा कर ली। फिर आप बाहर निकले ताके क़र्ज़ दारों को तलाश करके अपना माल व ज़र उनसे वापस लें और फिर सूद पर ना चलायें। जुमआ का रोज़ था और लड़के के खेल रहे थे उन लड़कों ने जब हज़रत हबीब को देखा तो आपस में कहने लगे के देखो सूद खौर आ रहा है। अलग हो जाओ ऐसा ना हो के उसके पाँव की गर्द हम पर पड़ जाए। और हम भी इस तरह बदबख़्त हो जाएँ। जब ये आवाज़ हज़रत हबीब के कानों में पहुँची तो बड़े रंजीदा हुए और सीधे हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह की मजलिस में गए। हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा ने तौबा कराई और कुछ पंदो निसायहे बयान फ़रमाए हज़रत हबीब की वहाँ काया पलट गई। और आप वहाँ से अल्लाह के महबूब बनकर निकले वापस आते वक़्त रास्ते में आपका मक़रूज़ आपको देखकर भागा। हज़रत हबीब ने उसे आवाज़ दी। और फ़रमाया। भाई! अब तू मुझ से ना भाग। अब मुझे तुझ से भागना चाहिए। ये कहा और घर की तरफ़ लौटे। रास्ते में फिर वही लड़के खेलते नज़र आए और उन्होंने जब हज़रत हबीब को आते देखा तो आपस में कहने लगे के अलग हट जाओ। हबीब तौबा करके आ रहा है। अब जो हमारी गर्द इस पर पड़ गई तो ऐसा ना हो। के हम गुनहगार हो जायें। हज़रत हबीब ये जुमला सुनकर दिल में कहने लगे। ऐ रब्बे ग़फूर! अजब तेरी रहमत है के आज ही मैंने तौबा की। तूने उसका असर अपनी मख़लूक़ के दिल में पहुँचाया। और मेरी नेक नामी मशहूर कर दी। फिर आपने आवाज़ दी

के जिस किसी ने हबीब का कुछ देना हो वो आए और अपनी दसतावेज़ वापस ले जाए। ये आवाज़ सुनकर सब मक़रूज़ जमा हुए। फिर आपने जो माल जमा किया था। सब लोगों को बाँट दिया। यहाँ तक के आपके पास कुछ बाक़ी ना रहा। (तज़करह औलिया, सफ़ा 59)

सबक़:- अल्लाह की रहमत बड़ी वसी है। और गुनहगार जब सच्चे दिल से तायब हो जाए तो उसकी रहमत फ़ौरन उसे अपनी आग़ोश में ले लेती है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह तआला अपने मक़्बूल से मोहब्बत फ़रमाता है तो *वज़आ लहुल क़बूलू फिल अर्ज़ी* के मुताबिक़ खुदाई के दिल में उसकी मोहब्बत व क़बूलियत पैदा फ़रमा दी जाती है और सब उसे चाहने लगते हैं। मसलन हुज़ूर ग़ौस-उल-आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह की महबूबियत व मक़्बूलियत का ये आलम है के हमने हिन्दूओं तक को देखा। जो ग़ौस-उल-आज़म के साथ बड़ी अक़ीदत रखते थे। फिर जो शख़्स उन अल्लाह वालों से अक़ीदत ना रखे वो किसी क़द्र बद नसीब है।

हिकायत नम्बर(419) राबिया बसरी

हज़रत राबिया बसरी के वालिद माजिद एक ग़रीब शख़्स थे। उनकी तीन बेटियाँ और भी थीं। और हज़रत राबिया बसरी चौथी बेटी थीं और उनको राबिया इसलिए कहते हैं के राबिया का मानी चौथी औरत के हैं। जिस रात हज़रत राबिया पैदा हुईं उसी रात उनके वालिद के घर में खर्च करने को कुछ ना था वो उसी फिक्र में सो गए के रात को हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत हुई और हुज़ूर ने फ़रमया तुम ग़मगीन मत हो ये लड़की जो तुम्हारे हाँ पैदा हुई है बड़ी बरगज़ीदा और मक़्बूल होगी। तुम सुबह अमीर बसरा के पास जाओ एक काग़ज़ पर मेरी तरफ़ से ये लिखकर उसे पहुँचा दो के हर रात तुम जो मुझ(हुज़ूर(स०अ०स०) पर सौ बार दुरूद भेजते हो और जुमअे की रात को चार सौ बार, ये जुमअे की रात जो गुज़र गई है तुम उसमें दरूद पढ़ना भूल गए हो। उसके अवज़ में चार सौ दीनार बतौर कुफ़्फ़ारा इस शख़्स को दे दो। हज़रत राबिया के वालिद जब बैदार हुए तो रोते हुए उठे और हस्ब-उल-इर्शाद एक अर्ज़ी लिखी। और अमीर बसरा के पास पहुँचे और एक दरबान के हाथ वो अर्ज़ी अन्दर भेजी। अमीर वो अर्ज़ी देखकर आलमे वज्द में आ गया और हुक्म दिया के इस

शुक्राने में के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने मुझ को याद फ़रमाया है। उसी वक़्त दस हज़ार दरहम फकीरों को तक़सीम किए जायें और चार सौ दरहम इस बुज़ुर्ग शख़्स को दिए जायें जो ये पैग़ाम लाया है और उसको कहा जाए के वो अन्दर तशरीफ़ लाए ताके उसकी ज़ियारत करूं। फिर एक दम उठा और कहा मगर ये खिलाफे अदब है के मैं उसे अन्दर बुलाऊँ। मैं खुद उसकी ख़िदमत में हाज़िर होता हूँ और उसकी राह को अपनी दाढ़ी से साफ करता हूँ। चुनाँचे अमीर बसरा खुद बाहर आया और हज़रत राबिया के वालिद के हाथ चूमे और बड़े ताज़ीम व तकरीम से उसे मसनदे शाही पर बिठाया और अर्ज़ किया आईंदा जब भी कभी कोई हाजत हो। खुदारा मुझ ही से वो ख़िदमत लिया कीजिए।

सबक़:- हज़रत राबिया बसरी रहमत-उल्लाह अलेहा ऐसी बरगज़ीदा और मक़्बूल हक़ थीं के जिनकी खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने तारीफ फ़रमाई और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूलों के दम क़दम से घर में बर्कतों और रहमतों का नज़ूल होने लगता है और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपनी उम्मत के हाला से आज भी बा ख़बर हैं और अब भी मोहताजों की मदद फ़रमाते हैं और ये भी मालूम हुआ के दुरूद शरीफ पढ़ना बड़ी बर्कत व रहमत का बाइस है और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम दुरूद पढ़ने वाले को जानते हैं चाहे वो कहीं भी हो और ये भी जानते हैं उसने कितना दुरूद पढ़ा। गोया हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कोई बात भी पौशीदा नहीं। फिर अगर कोई शख़्स हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्म में कलाम करे तो वो किस क़द्र बे इल्म है।

हिकायत नम्बर (420) चोर

हज़रत राबिया बसरी रहमत-उल्लाह अलेहा एक रात नमाज़ पढ़ते पढ़ते थक गईं और इत्तिफाक़न उस रात आपके घर कोई चोर घुस आया और आपके सामान की गठरी बाँध कर उठाई और चाहा के चल दे। मगर ब उसने गठरी उठाई तो अंधा हो गया और रास्ता ना पाया घबराकर उसने गठरी रख दी गठरी रखी तो फिर बीना हो गया। उसने फिर गठरी उठाई। उठाई तो फिर अंधा हो गया गर्ज़ दो तीन बार ऐसा ही हुआ। और फिर इस। हातिफ से एक आवाज़ सुनी के ऐ नादान! अगर एक दोस्त सो रहा है तो दूसरा दोस्त जाग

रहा है। बेवकूफ! राबिया ने अपने आपको जब से हमारे सपुर्द कर रखा है इस वक़्त से बिचारे इबलीस को ये कुद्रत हासिल नहीं के वो उसके पास फटके फिर चोर बिचारे की क्या ताक़त है के इस सामान के पास फटके। पस ऐ गिरह कट! निकल यहाँ से वो चोर ये आवाज़ सुन कर वहाँ से भाग गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 77)

हिकायत नम्बर(421) शाहे बलख़

हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम रहमत-उल्लाह अलेह बलख़ के बादशाह थे और एक जहाँ आपके ज़ेरे फ़रमान था। जब आप सवार होते थे तो आपके खिद्दाम चालीस ढालें सोने की और चालीस गर्ज़ सोने के आपके आगे और पीछे लेकर चलते थे। एक रात आप अपने शाही बिस्तर पर सो रहे थे। तो आधी रात के वक़्त आपको छत पर आहट मालूम हुई। आपने आवाज़ देकर पूछा के छत पर कौन है? तो किसी ने जवाब दिया के मेरा ऊँट खो गया है। मैं अपना ऊँट तलाश कर रहा हूँ। आपने फ़रमाया के ऐ नादान! ऊँट का छत पर क्या काम क्या कभी ऊँट छत पर भी मिला है? किसी ने जवाब दिया के ऐ ग़ाफ़िल! तू खुदा को अतलसी लिबास और शाही तख़्त पर ढूंडता है! क्या कोठे पर ऊँट पर ऊँट ढूंडने से ये बात ज़्यादा ताज्जुब की नहीं के शाही ऐशो इशरत और ग़फ़लत के बिस्तर पर खुदा को ढूंडा जाए। हज़रत इब्राहीम ये ग़ैबी आवाज़ सुनकर बड़े मुतास्सिर और हैरान हुए और सुबह जब आप तख़्ते शाही पर बैठे और दरबारे आम हो रहा था तो एक अजनबी और पुर शौकत आदमी दरबार में दाखिल हुआ। इस पुर शौकत शख़्स का कुछ ऐसा रौब व दबदबा था के उसे अन्दर दाखिल होते हुए कोई ना रोक सका ये अजनबी जब दरबार में दाखिल हुआ तो कहने लगा के ये सराये मुझ पसंद नहीं। बादशाह बोला के ये सराये कब है ये तो मेरा महल है इस अजनबी ने पूछा के ये बताओ के आपसे पहले ये महल किस के पास था? बादशाह बोला। मेरे बाप के पास। अजनबी ने पूछा और तेरे बाप से पहले ये महल किस के पास था। बादशाह ने जवाब दिया मेरे दादा के पास अजनबी ने पूछा। आपके दादा से पहले किसके पास था? बादशाह ने जवाब दिया के मेरे दादा के वालिद के पास? अजनबी ने कहा। तो गोया आपसे पहले उसमें आपके वालिद रहते थे। और आपके वालिद से पहले आपके दादा इसमें रहते थे। और आपके दादा से पहले उनके वालिद रहते थे तो ऐ

बादशाह! अब खुद ही सोच के सराये और किस को कहते हैं। सराये भी तो वही होती है। जिसमें एक जाए और दूसरा आए ये कहकर वो पुर शिकूह अजनबी बाहर निकल गया और गुम हो गया हज़रत इब्राहीम तख़्त से उतरे और इस अजनबी के पीछे दौड़े यहाँ तक के उसे पा लिया और उससे दरयाफ़्त किया के आप कौन हैं तो उसने जवाब दिया के ख़िज़्र हूँ। हज़रत इब्राहीम के दिल पर इन वाक़ेयात का एक गहरा असर हुआ और दुनयवी सलतनत को ख़ैरबाद कहकर आपने नो बरस तक एक ग़ार में सकूनत इख़्तियार करके बहुत मुजाहिदे और रियाज़तें की और फिर आप आसमानी विलायत के एक दरख़शिंदा सितारे बनकर चुके। मौलाना रूमी अलेह अर्रहमत ने आपका यही वाक़ेया लिखकर फिर ये भी लिखा (तफसील तज़करत-उल-औलिया के सफ़ा 127 पर मुलाहेज़ा करें) है के आप एक दिन दरया के किनारे बैठे अपने हाथ से अपना पीराहन सी रहे थे के वहाँ एक अमीर आदमी का गुज़र हुआ सफ़ा अमीर आदमी ने आपको जब इस हाल में देखा के आप अपने हाथ से अपना पीरहन सी रहे हैं। तो दिल में कहने लगा के उन्होंने सलतनत छोड़ कर इस फक़ीरी में क्या हासिल किया? हज़रत इब्राहीम उसके इस खयाल पर मतलअ हो गए और आपने झट अपने हाथ की वो सूई दरया में डाल दी और फिर बआवाज़ बुलंद फ़रमाया के ऐ दरया की मछलियो! मेरी सूई मुझे वापस ला दो। अमीर ने जब ये वाक़ेया देखा तो मुतअज्जिब हुआ। और सोचने लगा के इतने बड़े दरया में इतनी छोटी सी सूई गिरी हुई भला वापस कैसे मिल सकती है? मगर मौलाना रूमी फ़रमाते हैं के....

सद हज़ाराँ माही इलहय्ये
सोज़न ज़र बरलब हर माहिय्ये
रूबरूआवरदंद अज़ दरयाऐ हक़
के बगीराए शेख़ सोज़न हाय हक़

हज़ारों मछलियाँ अपने अपने मुंह में एक एक सोने की सोई पकड़े हुए दरया से बाहर निकल आईं। आपने फ़रमाया मुझे ये सोइयाँ नहीं चाहियें मुझे तो अपनी सूई चाहिए। चुनाँचे फिर एक छोटी सी मछली अपने मुंह में आपकी सूई पकड़े हुए लाई और आपके आगे रख दी। इस अमीर आदमी ने जब ये करामत देख ली तो....

रूबरू कर्दा बगफ़्तश ऐ अमीर
मुल्क हक़ ब या चुनीं मुल्क फक़ीर

आपने इस अमीर की तरफ़ तवज्जह फ़रमा कर फ़रमाया के बताओ मुझे वो हकूमत अच्छी थी या ये हकूमत? (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 104, मसनवी शरीफ़)

सबक़:- ऐशो इशरत और ग़फ़्लत की ज़िन्दगी इख़्तियार करके फिर खुदा को पा लेने का ख़याल ख़याले खाम है और ये भी मालूम हुआ के इस सराये फ़ानी दुनिया में अपने पास झोंपड़ी हो या अज़ीम-उश-शान महल। ना वो हमारे पास हमेशा रहेगा। और ना हम इसमें हमेशा रहेंगे हम मुसाफ़िरों की तरह इस में चन्द रोज़ रह कर चले जायेंगे। फिर इसमें कोई दूसरा आ जाएगा। फिर वो भी इसमें चन्द रोज़ रहेगा फिर कोई तीसरा आ जाएगा। लिहाज़ा दुनिया में दिल लगाना बहुत बड़ी नादानी है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले दिल के ख़यालात पर भी मतलअ हो जाते हैं। फिर उनका हुक्म व तसर्रूफ़ दरयाओं और दर की मख़लूक़ पर भी जारी होता है। फिर जिसका इसकी अपनी बीवी पर भी ना चलता हो वो अगर उन अल्लाह वालों के इख़्तियार व तसर्रूफ़ पर एत्राज़ करे तो उसकी किस क़द्र नादानी है।

हिकायत नम्बर(422) खट्टे अनार

हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम तख़्ते शाही छोड़ने के बाद कुछ अर्से के लिए किसी बाग़ की निगहबानी व हिफ़ाज़त के लिए मुलाज़िम हो गए। बाग़ के मालिक को उसका कोई इल्म ना था के ये हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम हैं। एक दिन वो बाग़ का मालिक अपने बाग़ में आया और हज़रत इब्राहीम से कहने लगा जाओ कोई मीठा अनार ले आओ। हज़रत इब्राहीम गए और एक अनार तोड़ कर ले आए। मालिक ने उसे चखा तो वो खट्टा निकला। उसने कहा। कोई दूसरा अनार लाओ। चुनाँचे आप दूसरा ले आए। मालिक ने चखा तो वो भी खट्टा ही निकला। आख़िर मालिक ने झुंझला कर कहा के इतने दिन गुज़र गए, मगर तुम्हें इतना भी पता ना चला के अनार मीठा कौन सा है। और खट्टा कौन सा? कोई अनार चख कर मीठा होता है। हज़रत इब्राहीम बोले, मगर बाग़ मेरे सपुर्द इसलिए किया है के मैं इसकी हिफ़ाज़त करूं ना इसलिए के मैं उसके अनार खाऊँ और चखूं। मालिक ये जवाब सुनकर कहने लगा। वा सुबहान अल्लाह! इतने परहैज़ार और मुत्तक़ी! कोई जाने के आप इब्राहीम इब्ने अदहम हैं। हज़रत इब्राहीम ये बात सुनकर फ़ौरन बाग़ से निकल गए और मालिक हैरान रह गया और सोचने लगा के ये कौन

था। (तज़करत–उल–औलिया, सफ़ा 124)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दे बड़े मुत्तक़ी और अमीन होते हैं वो कभी किसी के माल में ख़यानत नहीं करते फिर अगर कोई ऐसा शख़्स जिसका मसलक ये हो के "राम राम जपना पराया माल अपना" उन अल्लाह वालों पर मौतरिज़ हो तो उसकी ये किस क़द्र ज़ियादती है।

हिकायत नम्बर (423) पराई खजूर

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमत–उल्लाह अलेह एक रात बैत–उल–मुक़द्दस में लेटे थे और मस्जिद में आप तनहा ही थे। और कोई ना था थोड़ा हिस्सा रात का गुज़रा तो मस्जिद का दरवाज़ा खुला और एक ज़ईफ और नूरानी शख़्स चालीस हमराहियों के साथ मस्जिद में दाख़िल हुए और मेहराब के पास आकर सब ने नफिल पढ़े। और फिर सब मेहराब की तरफ़ पुश्त करके बैठ गए। एक शख़्स उनमें से बोला के आज कोई ऐसा शख़्स भी इस मस्जिद में है। जो हम में से नहीं। वो ज़ईफ शख़्स मुसकुराए और फ़रमाया के हाँ है और वो इब्राहीम बिन अदहम है। चालीस दिन से इबादत में लुत्फ नहीं पाता। हज़रत इब्राहीम ने ये बात सुनी तो आप कोने से उठे और इस मर्द ज़ईफ की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगे। आप ने सच फ़रमाया। मगर ये तो बताईये के इसकी वजह क्या है? वो फ़रमाने लगे। फलाँ रोज़ तूने बसरे में खजूरें खरीदी थीं। उनमें एक खजूर दसरे की गिर पड़ी थी। तुमने समझा के तुम्हारी ही है तुम ने उसे भी उठा लिया। और अपनी खजूरों में मिला लिया। बस इस पराई खजूर के तुम्हारे माल में मिल जाने से तुम्हारी इबादत में जो मज़ा था जाता रहा हज़रत इब्राहीम ये सुनते ही बसरे को रवाना हुए और इस शख़्स के पास जिसकी वो खजूर थी पहुँचे और उससे माफी चाही। (तज़करत–उल–औलिया सफ़ा 125)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दों का किरदार बड़ा ही पाकीज़ा होता है। पराई और मशकूक चीज़ भूल कर भी उनके इस्तेमाल में नहीं आती। और आ भी जाए तो अल्लाह तआला उन्हें इस ख़िलाफ शान अम्र से भी बचा लेता है और उनकी शान पर कोई धब्बा नहीं आने देता। फिर अगर कोई बिलेक ख़यानत और इसमगल करने वाला इन पाक किरदार अल्लाह के नेक बन्दों की शाम में कोई नाज़ैबा अलफाज़ बके तो किस क़द्र ज़ुल्म है। और ये भी मालूम हुआ के पराये और हराम माल से इजतिनाब ना हो। तो इबादत बे जान रह जाती है।

हिकायत नम्बर (424) रूमान-उल-आबेदीन

हज़रत मोहम्मद मुबारक और हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमत-उल्लाह अलेहिमा एक रोज़ बैत-उल-मुक़द्दस की तरफ़ जा रहे थे के रास्ते में एक जंगल में एक अनार का दरख़्त देखा। दोपहर का वक़्त था। और ये दोनों बुज़ुर्ग थोड़ी देर आराम करने के लिए इस दरख़्त के साये में बैठ गए। इतने में इस दरख़्त से आवाज़ आई के ऐ इब्राहीम! मुझे इज़्ज़त बख़्शिये और मेरे अनार से कुछ तनावुल फ़रमाइये। तीन मर्तबा इस दरख़्त ने ये दरख़्वास्त की। चुनाँचे हज़रत इब्राहीम और हज़रत मुबारक दोनों बुज़ुर्गों ने इस दरख़्त से एक अनार तोड़ा। और खाया और चल दिए। फ़िर जब वापस आए तो दरख़्त पहले की निसबत बड़ा घना और तनावर था और उसके अनार भी बहुत मीठे थे और इन बुज़ुर्गों की बर्कत से फल भी वो एक साल में दो दफ़ा देने लगा। और इसी वजह से लोगों ने उसका नाम ही "रूमान-उल-आबेदीन" रख दिया यानी "अल्लाह वालों का अनार" (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 126)

सबक़:- उन अल्लाह वालों के जहाँ क़दम आ जायें। वहाँ बर्कत ही बर्कत पैदा हो जाती है और उनके हाथ जिस चीज़ से लग जायें इस चीज़ को इज़्ज़त व अज़मत मिल जाती है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों के हाथ में हाथ दे दने से आमाल सालेह में बर्कत पैदा हो जाती है और नेक कामों की कसरत की तौफ़ीक़ हासिल होती है।

हिकायत नम्बर (425) पैग़ामे हक़

हज़रत बशर हाफी रहमत-उल्लाह अलेह अपनी पहली ज़िन्दगी में एक बहुत बड़े शराबी थे। आप एक मर्तबा शराब के नशे और मस्ती के आलम में कहीं जा रहे थे के रास्ते में आपने एक काग़ज़ का टुकड़ा देखा जिस पर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखा हुआ था। हज़रत बशर ने इस काग़ज़ पर अल्लाह का नाम लिखा देखकर तअज़ीमन उसे उठा लिया। और इत्र खरीद कर उसे मोअत्तर किया और फिर उसे एक बुलंद जगह पर रख दिया। उसी रात एक बुज़ुर्ग ने ख़्वाब में सुना के कोई कह रहा है जाओ बशर हाफी से कह दो के तुम ने मेरे नाम को मोअत्तर किया। उसकी तअज़ीम और उसे बुलंद जगह पर रखा हम भी तुझ को पाक करेंगे और दुनिया व आख़िरत में तुम्हें बुज़ुर्गी अता फ़रमायेंगे और बुलंद मुक़ाम अता फ़रमायेंगे इन बुज़ुर्ग ने दिल में सोचा के बशर तू

एक शराबी और फासिक़ शख़्स है। शायद मैंने ये ख़्वाब ग़लत देखा है। चुनाँचे उन्होंने वज़ू किया और नफिल पढ़े और फिर सो रहे। दूसरी बार उन्होंने फिर वही ख़्वाब देखा। इसी तरह तीन मर्तबा यही नज़र आया। और यही आवाज़ सुनी के ये हमारा पैग़ाम बशर ही तरफ़ है। जाओ उसे हमारा ये पैग़ाम पहुँचा दो। चुनाँचे सुबह हुई तो वो बुज़ुर्ग हज़रत बशर की तलाश में निकले। उनको पता चला के वो शराब की मजलिस में बैठे हैं। तो वो वहीं पहुँचे और बशर को आवाज़ दी। लोगों ने बताया के वो शराब के नशे में बेहोश पड़े हैं, उन्होंने कहा के तुम लोग उसे किसी तरह ये बात सुना दो के तुम्हारे नाम एक ज़रूरी पैग़ाम लाने वाला बाहर खड़ा है चुनाँचे वो लोग गए और हज़रत बशर से जाकर कह दिया के उठो बाहर चलो तुम्हारे नाम कोई पैग़ाम आया है। हज़रत बशर ने फ़रमाया उनसे जाकर पूछो के वो किस का पैग़ाम लाए हैं। वो बुज़ुर्ग फ़रमाने लगे के मैं खुदा तआला का पैग़ाम लाया हूँ क्या ख़बर के पैग़ाम अत्ताब आमेज़ है या अक्क़ाब आलूदा। फिर बाहर आए और पैग़ामे हक़ सुनकर सच्चे दिल से तौबा की और इस बुलंद मुक़ाम पर जा पहुँचे के मुशाहिदा-ए-हक़ के ग़ल्बे की शिद्दत से ब्रिहेना पा रहने लगे। और कभी जूता पाँव में ना पहना। और इसी लिए आप "हाफी" के नाम से मश्हूर हो गए के हाफी नंगे पाँव वाले को कहते हैं लोगों ने आप से पूछा के आप जूती क्यों नहीं पहनते। तो फ़रमाया हक़ तआला फ़रमाता है के मैंने ज़मीन को तुम्हारा बिछोना बनाया है पस बादशाह के बिछाए हुए बिछोने पर जूती पहने जाना बे अदबी है। (तज़करत-उल-औलिया 129)

सबक़:- एक ऐसे काग़ज़ के टुकड़ की तअज़ीम करने से जिस पर अल्लाह का नाम लिखा था। एक गुनहगार शख़्स को इतना बुलंद मुक़ाम हासिल हो गया के वो अल्लाह के बड़े बड़े मक़्बूलों और वलियों की फेहरिस्त में आ गया। तो इन नफूस क़ुदसिया की तअज़ीम व तकरीम से जिनके दिलों में खुदा का नाम कुदा है ओर जिनके दिल ज़िक्रे हक़ से मामूर हैं। हम गुनहगार अल्लाह के फज़्लो करम से क्यों बहरावर ना होंगे? नीज़ इन जुमला अल्लाह वालों, नबियों और रसूलों के भी सरदार हैं। यानी हुज़ूर सय्यद-उल-अंबिया अहमद मुजतबा मोहम्मद मुस्तफा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उनकी तअज़ीम व तकरीम अल्लाह को किस क़द्र मेहबूब व पसंद होगी? और ये भी मालूम हुआ के किसी शान वाले के नाम की भी तअज़ीम मौजिब अज्र व सवाब है। हज़रत बशर हाफी ने अल्लाह

के नाम की तअज़ीम की तो इज़्ज़त पाई। तो आज हम अगर रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के नाम की तअज़ीम करें जहाँ सुनें चूम कर आँखों से लगायें। तो क्यों इज़्ज़त ना पायेंगे? हज़रत बशर हाफी ने जहाँ अल्लाह का नाम देखा। वहाँ इत्र मला तो पाक हो गए। तो हम अगर जहाँ ज़िक्र रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हो। वहाँ इत्र व गुलाब छिड़कें। तो क्यों पाक ना होंगे? और ये भी मालूम हुआ के जिस बात की शरीयत में मुमानेअत ना हो वो बात हर गिज़ बिदअत नहीं। वरना हज़रत हाफी अलेह अर्रहमा का नंगे पाँव फिरना भी बिदअत ही होता।

हिकायत नम्बर (426) चौपायों का अदब

हज़रत बशर हाफी अलेह अर्रहमा हमेशा नंगे पाँव चलते थे और जब तक आप बग़दाद में ज़िन्दा रहे। चौपाया ने रास्ते में गोबर ना की। इस हुर्मत व अदब के पेशे नज़र के हज़रत हाफी नंगे पाँव चलते हैं। एक दिन एक चौपाया ने रास्ते में गोबर कर दी तो उसका मालिक ये बात देखकर घबराया और समझा के आज यक़ीनन बशर हाफी का इन्तिक़ाल हो गया है। वरना ये जानवर कभी रास्ते में गोबर ना करता चुनाँचे थोड़ी देर के बाद उसने सुन लिया के वाक़ई हज़रत का विसाल हो गया है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 137)

सबक़:- अल्लाह वालों का जानवर भी लिहाज़ करते हैं। फिर अगर कोई गुसताख़ अल्लाह के मक़्बूलों पर कीचड़ उछाले तो उसके लिए क्यों ना कहा जा के *ऊलाईका कालअनआमी बल हुम अज़ल्ला*

हिकायत नम्बर (427) ज़ुलनून

हज़रत ज़ुलनून मिस्री रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा कश्ती पर सवार कहीं जा रहे थे। कश्ती के मुसाफिरों को हज़रत से तआर्रूफ ना था। इस कश्ती में एक सौदागर भी था। इत्तिफाक़न उसका एक मोती गुम हो गया उसने ग़लत फहमी से हज़रत ज़ुलनून पर ये इलज़ाम लगा दिया के मोती उन्होंने लिया है। हज़रत ने फ़रमाया के हाशा व कला मोती मैंने नहीं लिया। वो सौदागर कहने लगा के मोती आप ही ने लिया है और गुसताखी से पेश आने लगा। हज़रत ज़ुलनून ने उस वक़्त आसमान की तरफ़ मुंह करके अर्ज़ किया। इलाही! तू जानता हे मैं इससे बरी हूँ। ये कहना था के हज़ारों मछलियाँ दरया से अपने अपने मुंह में एक एक मोती लेकर निकल आईं आपने उनमें से एक मोती

लेकर उस सौदागर को दे दिया। कश्ती के लोगों ने हज़रत की जब ये शान और करामत देखी तो सब आपके क़दमों पर गिर गए। और माफी चाहने लगे। "नून" मछली को कहते हैं। आपकी इसी करामत की वजह से आपका नाम ज़ुलनून से मशहूर हो गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 144)

सबक़:- जो अल्लाह का हो जाए सारी खुदाई उसकी हो जाती है और अल्लाह के मक़्बूलों की या शान होती है के दरया की मछलियाँ भी उनका ख़ादिम व रज़ाकार होती हैं और उनके लिए क़ीमती मोती लकर हाज़िर होती हैं। फिर वो शख़्स जिसके हाथ का टुकड़ा कव्वा भी ले उड़े अगर इन अल्लाह वालों की शान व अज़मत का इंकार करे और उन से मसावात का दम भरे, तो ग़ौर फ़रमा लीजिए के वो किस क़द्र बेख़बर है।

हिकायत नम्बर(428) सर्राफ

एक शख़्स औलिया इक्राम का मुनकिर था। एक रोज़ हज़रत ज़ुलनून से उसकी इत्तिफाक़न मुलाक़ात हो गई। हज़रत ज़ुलनून ने उसे अपनी अंगूठी देकर फ़रमाया के जाओ किसी नानबाई के पास उसे गिरवी रख आओ। वो शख़्स अंगूठी लकर एक नानबाई के पास गया और उसे अंगूठी गिरवी रखने को कहा। इस नानबाई ने अंगूठी देखी। और कहा के मैं इसे एक दरहम से ज़्यादा पर ना रखूंगा। वो शख़्स अंगूठी वापस ले आया। और हज़रत ज़ुलनून से कहने लगा के वो इसे एक दरहम से ज़्यादा पर गिरवी रखने को तैयार नहीं। आपने फ़रमया। अच्छा अब इसे किसी सर्राफ के पास ले जाओ और उससे दरयाफ़्त करो के वो इसे कहाँ तक गिरवी रख लेगा। चुनाँचे वो फिर सफ़ा अंगूठी को लेकर एक सर्राफ के पास आया। सर्राफ ने अंगूठी को देख कर बताया के वो उसे एक हज़ार दीनार पर गिरवी रख लेगा। वो शख़्स हज़रत ज़ुलनून के पास आया और बताने लगा के सर्राफ उसके एक हज़ार दीनार देता है। हज़रत ने फ़रमाया मुझ यही समझाना था के तुम्हारा इल्म औलिया इक्राम के मुतअल्लिक़ सिर्फ इतना ही है। जितना इल्म इस नानबाई का इस अंगूठी के मुतअल्लिक़ था। तुम अगर आरिफ़ पहचानने वाले होते तो औलिया इक्राम का कभी इंकार करते वो शख़्स फौरन अपनी ग़लती पर नादिम हुआ। और तायब हो गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 145)

सबक़:- औलिया इक्राम का इंकार दरअसल अपनी कम मायगी और अपनी नादानी का मुज़ाहेरा है। "वली रावाली मै शनासद" के मुताबिक़ जिन लोगों के अपने हाँ ना कोई वली गुज़रा है ना है ना होगा। वो ये समझते हैं

के दुनिया में कोई वली है ही नहीं और जिनमें हज़ारों लाखों औलिया हुए हैं और होंगे वो औलिया इक्राम के मौतरिफ़ भी हैं। ख़ादिम भी और मुरीद भी।

हिकायत नम्बर(429) सारंगी

एक नोजवान सारंगी बजा रहा था। इत्तिफ़ाक़न वहाँ से हज़रत बायज़ीद बसतामी रहमत-उल्लाह अलेह का गुज़र हुआ। आपने उसे सारंगी बजाते हुए देखा तो फ़रमाया *ला होला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह* इस नोजवान को गुस्सा आया। और उसने सारंगी हज़रत बायज़ीद के सर पर दे मारी वो सारंगी टूट गई और हज़रत बायज़ीद का सर भी फूट गया। हज़रत बायज़ीद ख़ामोशी से घर तशरीफ़ ले आए। और फिर उसकी सारंगी की क़ीमत और कुछ मीठाई इस नोजवान के पास भेजी। और कहला भेजा के भाई तुम ने अपनी सारंगी मेरे सर पर मार कर तोड़ डाली। ये इसकी क़ीमत है। दूसरी ख़रीद लो और मीठाई इसलिए भेज रहा हूँ ताके इसके टूटने से जो तुझे रंज पहुँचा है वो दूर हो जाए इस नोजवान ने जब ये बातें सुनीं तो दौड़ा हुआ आया और हज़रत बायज़ीद के क़दमों पर गिरा और तौबा की और बहुत रोया। और भी कई जवान देखकर तायब हो गए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा175)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दों के अख़लाक़ बड़े बुलंद होते हैं और वो बुराई का बदला भी भलाई से देते हैं और ये सब झलक है। उस प्यारे आक़ा हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की इस प्यारी सीरत की के....

सलाम उस पर के जिसने दुश्मनों को भी क़ुबायें दीं
सलाम उस पर के जिसने गालियाँ सुनकर दुआयें दीं

अल्लाह के मक़्बूल बन्दों की मक़्बूलियत व अज़मत का राज़ इसी इत्तिबाऐ रसूल में मुज़मिर है और वो अपने उन्हें पाकीज़ा अख़लाक़ की बदौलत गुमराहों के रहबर बने और हम जैसों के लिए मौजिब रूश्दो हिदायत साबित हुए। *रज़कनल्लाहू हुब्बाहुम*

हिकायत नम्बर(430) इंसान और कुत्ता

हज़रत बायज़ीद बसतामी रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा अपने मुरीदों के साथ एक बहुत तंग गली से गुज़र रहे थे के आपने दूसरी तरफ़ से एक कुत्ते को आते देखा। जब कत्ता सामने आया तो हज़रत बायज़ीद

पीछे मुड़ आए और कुत्ते के वास्ते रास्ता खाली कर दिया। आपके मुरीदों में से एक मुरीद के दिल में ये बात गुज़री के हक़ तआला ने इंसान को तो बुज़ुर्गी व शराफत अता फ़रमाई है और हज़रत बायज़ीद ने बावजूद इस मर्तबे के सबको इस कुत्ते के लिए पीछे मोड़ लिया है गोया इस कुत्ते को तरजीह दे दी। हज़रत बायज़ीद उसके इस ख़दशे पर मतलअ हो गए और उस मुरीद को मुख़ातिब करके फ़रमाया के इस कुत्ते ने बज़बान हाल मुझ से ये कहा है के ऐ बायज़ीद! ये सब खुदा की शान है के उसने रोज़ेअज़ल में मुझे कुत्ता बना दिया। और आप को जामा-ए-इंसानी पहना दिया और फिर आपको सुलतान-उल-आरफ़ीनी की क़बा भी पहना दी। देखिये मैं भी उसकी मख़लूक़ हूँ। कुत्ते की इस बात से मैं परेशान हो गया। और खुदा के फज़्लो करम के शुक्रिये में मैं पीछे हट गया और कुत्ते के लिए रास्ता खाली कर दिया। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 176)

सबक़:- खुदा वंद करीम का हम इंसानों पर ये बड़ा ही फज़्ल व अहसान है के उसने अपने फज़्लो कमर के साथ हमें किसी ज़लील नोअ में पैदा नहीं फ़रमाया बल्के अशरफ़-उल-मख़लूक़ात नोअे इंसान में पैदा फ़रमाया जो चाहता बना देता। और ये किसकी मजाल थी के वो ये कहता के: ऐ खुदा! मुझे कुत्ता या गाय घोड़ा वगै़रा ना बना। मुझे इंसान ही बना। मगर ये उसका अहसान ही है के हमें उसने इंसान बनाया और सारी मख़लूक़ पर हमें शराफत व करामत अता फ़रमाई। और *लक़द कर्रमना बनी आदामा* का ताज पहनाया। मालूम हुआ के ये शराफ भी महज़ अल्लाह का फज़्लो करम है और हमें उसका शुक्र अदा करना चाहिए और तकब्बुर व गु़रूर ना करना चाहिए बल्के तवाज़ो इख़्तियार करना चाहिए। और अल्लाह की दूसरी मख़लूक़ पर शफक़त व रहम से पेश आना चाहिए और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले दूसरों के वली ख़यालात पर भी मतलअ हो जाते हैं फिर वो ज़ात ग्रामी जिनके सदक़े में इन अल्लाह वालों को ये कमाल हासिल हुआ। यानी हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम वो क्यों असरार अक़लूब पर भी मतलअ ना होंगे?

हिकायत नम्बर(431) बायज़ीद और एक कुत्ता

हज़रत बायज़ीद बसतामी अलेह अर्रहमा एक मर्तबा कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे के रास्ते में एक कुत्ता आता हुआ नज़र आया जब वो कुत्ता हज़रत बायज़ीद के पास से गुज़रने लगा। तो आपने अपने कपड़े समेट लिए कुत्ता

ठहर गया और हज़रत बायज़ीद से कहने लगा के हुज़ूर आप ने कपड़े क्यों समेटे आपने फ़रमाया इसलिए के तू नजिस है कुत्ते ने जवाब दिया के हुज़ूर अगर मेरी वजह से आपके कपड़े पलीद हो गए। तो ये निजासत तो पानी के साथ धोने से दूर हो जाएगी।

और अगर मुझे हक़ीर जान कर और अपने आप को बड़ा जान कर नखुव्वत व ग़ुरूर से आपने कपड़े समेटे तो तकब्बुर व ग़ुरूर की निजासत दिल में पैदा हो जाएगी और ये दिल की निजासत सात समुंद्रों के पानी से भी दूर ना हो सकेगी। हज़रत बायज़ीद कुत्ते की ये बात सुनकर फ़रमाने लगे के तो सच कहता है के वाक़ई तो ज़ाहिरी निजासत रखता है। मगर मुतकब्बिर इंसान बातिनी निजासत रखता है। फिर फ़रमाया के ऐ कुत्ते! तुझ से मुझे बड़ा सबक़ हासिल हुआ। आओ हम तुम मिल कर रहे। कुत्ते ने जवाब दिया। हुज़ूर आप मेरे साथ नहीं रह सकते इसलिए के मैं मरदूद खिलाक़ हूँ। जो मुझे देखता है पत्थर मारता है और आप मक़्बूल खलाक़ हैं। जो आपको देखता है अस्सलाम अलेकुम या सुलतान-उल-आरफ़ीन कहता है और इसलिए भी नहीं रह सकते के मैं हड्डियों को जमा करके कल के लिए नहीं रखता। और इंसान गंदम के ज़खीरे जमा करके रखते हैं। हज़रत बायज़ीद कुत्ते की ये बात सुनकर फ़रमाने लगे ऐ कुत्ते तेरी बातें बड़ी ही सबक़ आमोज़ हैं। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 172)

सबक़:- इंसान को कभी फख्रो ग़ुरूर और तकब्बुर ना करना चाहिए। ये एक ऐसी निजासत है जिससे दिल नापाक हो जाता है और खुदा की नज़र रहमत के लायक़ नहीं रहता और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों से जानवर भी बातें करते हैं और वो समझते हैं और ये उनकी करामत है। जिसका मुसलमानों को इक़्रार है और ये भी मालूम हुआ के इंसान चाहे तो एक कुत्ते से भी बड़े बड़े सबक़ हासिल कर सकता है।

हिकायत नम्बर (432) रोशनी

हज़रत बायज़ीद के पड़ोस में एक आतिश परस्त रहता था। उसका एक शीरख़्वार बच्चा था। बच्चा रात की तारीकी में रोता रहता इसलिए के वो आतिश परस्त एक ग़रीब शख़्स था और चिराग़ जलाने के लिए भी उसके पास कुछ ना था। एक रात बच्चा बहुत रोया। हज़रत बायज़ीद उठे और अपना चिराग़ उसके घर छोड़ आए। बच्चा चुप हो गया। दूसरी रात

भी हज़रत बायज़ीद ने ऐसा ही किया और फिर तीसरी रात भी। आपके इस सलूक का इस आतिश परस्त के दिल पर बड़ा असर हुआ और अपनी बीवी से कहने लगा के जब शेख़ बायज़ीद की रोशनी हमारे घर में आ पहुँची। तो अब हमें ज़ैबा नहीं के हम कुफ्र की तारीकी में ही भटकते फिरें। चलो उठो। शेख़ की ख़िदमत में हाज़िर हों और मुसलमान हो जायें चुनाँचे वो दोनों हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कलमा पढ़कर मुसलमान हो गए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 181)

सबक़:-

ना किताबों से ना कालिज के है दर से पैदा
दीन होता है बुज़ुर्गों की नज़र से पैदा

हिकायत नम्बर (433) बराए नाम मुसलमान

एक काफिर रहता था बसताम में
आरिफ़ बसताम के अय्याम में
एक मुसमलमान से थी उसकी दोस्ती
कोई बात इस्लाम की उसमें ना थी
एक दिन काफिर से वो कहने लगा
तुझ को है इबलीस ने गुमराह किया
क्यों नहीं ईमाँ ले आता शताब
क्या खुद को देगा ज़ालिम तू जवाब
छोड़ दे तू शिर्क को ऐ बे तमीज़
शिर्क से गंदी नहीं दुनिया में चीज़
बोला काफिर मेहरबाँ इस्लाम के
दो नमूने हैं मिरे अब सामने
एक तो इस्लाम शेख़ बा यज़ीद!
शौकत इस्लाम जिसने की मज़ीद
ताब ताक़त उसकी मैं रखता नहीं
कौन रख सकता है उसका सा यक़ीं
ऐसे तो इस्लाम का हूँ मैं ग़ुलाम
पर नहीं वो हर कस व नाकिस का काम
दूसरा इस्लाम जो है आपका
ऐसे ईमाँ से तो मैं काफिर भला

मैल दिल गर इस तरफ़ लाता हूँ मैं
देखकर हज़रत को रूक जाता हूँ मैं

(तज़्करत-उल-औलिया और दरमंज़ू सफ़ा 152)

सबक़:-

हर बशर को दावते इस्लाम है
पर मुसलमान होना मुश्किल काम है

हिकायत नम्बर(434) मुनकर नकीर को जवाब

हज़रत बायज़ीद अलेह अर्रहमत का जब विसाल हो गया तो एक मुरीद बा सफा ने हज़रत को ख़्वाब में देखा और पूछा के हज़रत आपने मुनकर नकीर को क्या जवाब दिया था। आपने फ़रमाया के उन्होंने जब मुझ से सवाल किया के मन रब्बुका तुम्हारा रब कौन है? तो मैंने उससे कहा के तुम्हारे इस सवाल से और मेरे जवाब से कुछ हासिल नहीं मैं अगर यूं कह दूं के अल्लाह तआला मेरा रब है और अल्लाह तआला मुझे अपना बन्दा तसली ही ना फ़रमाए तो मेरा अपनी ज़बान से बन्दा बनना किस काम का? जाओ ऐ फरिश्तो! पहले अल्लाह तआला से दरयाफ़्त कर लो के बायज़ीद उसका बन्दा है या नहीं। अगर वो मुझे अपना बन्दा फ़रमा दे तो फिर मेरा बैड़ा पार है। (तज़्करत-उल-औलिया सफ़ा 217)

सबक़:- यूं कहलाने को तो हम सभी मुसलमान हैं मगर दरअसल मुसलमान वो है जिसे अल्लाह और उसका रसूल भी मुसलमान समझे और अगर कोई शख़्स अपने अक़ायदो आमाल से अल्लाह और रसूल को अपने आप से बेज़ार करके मुसलमान बनता और कहलाता है तो उसका क्या फायदा। ये तो ऐसा ही होगा जिसे किसी जाहिल का नाम "मोहम्मद फाज़िल" किसी बे इल्म का नाम "इल्म-उद्दीन" या किसी नाबीना का नाम "रोशन दीन" रख दिया जाए।

हिकायत नम्बर(435) दौलतमंद और दुरवैश

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमत-उल्लाह अलेह दुनयवी हैसियत से भी बहुत बड़े रईस थे। एक बार हज को जा रहे थे के आपके हमराह एक दुरवैश भी हो लिया। आपने उससे फ़रमाया के दुरवैश हम लोग तो दौलतमंद हैं और बुलाए हुए हैं, मगर तुम हमारे साथ क्यों जा रहे हो? इस दुरवैश ने जवाब दिया के जब मेज़बान करीम होता है। तो तुफैली की मेहमान से भी

ज़्यादा ख़ातिरदारी करता है अगर आपको उसने अपने घर बुलाया है तो मुझे उसने अपने पास बुलाया है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने फ़रमाया खुदा तआला ने हम दौलतमंदों से क़र्ज़ माँगा है। दुरवैश ने जवाब दिया। मगर आप जानते हैं के खुदा ने वो क़र्ज़ माँगा किन के लिए है? खुदा ने वो क़र्ज़ हम दुरवैशों के लिए माँगा है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ये जवाब सुनकर बड़े मुतास्सिर हुए और उससे माज़रत चाही। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 220)

सबक़:- दुरवैशों, मिसकीनों और ग़रीबों को हिक़ारत की नज़र से ना देखना चाहिए उनके पास अगर दुनयवी जाह व मंज़िलत ना भी नज़र आए। तो भी बहुत मुमकिन है के उनमें ऐसे भी हों। जिनका दिल दौलत ईमान से मामूर और जो इश्क़ हक़ में मख़मूर हों और ये भी मालूम हुआ के दुनयवी दौलत का पास होना बाइसे फज़ीलत नहीं। असल में वजह फज़ीलत खुदा तरसी व तशरअे व तदय्युन और मख़लूक़ नवाज़ी है।

हिकायत नम्बर(436) पुर असरार बुढ़िया

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के एक बार ऐसा इत्तिफाक़ हुआ के मैं एक बयाबान में था के हज का ज़माना आ गया मैं निहायत बेक़रार हुआ के किस तरह वहाँ पहुँचूं। आख़िर कार मैंने अपने दिल में ख़याल किया के मैं अब वहाँ तो नहीं पहुँच सकता। ख़ैर वो आमाल ही बजा लाऊँ जो हज्जाज बजा लाते हैं ताके इसी जगह हज का सवाब हासिल कर लूं। यानी नाखुन ना उतारूं, बाल ना मुंडवाऊँ वग़ैरा मैं इसी शशो पंज में था के क्या देखता हूँ के नूरानी शक्ल की कुबड़ी बुढ़िया लाठी टेकती चली आती है जब मेरे पास आई तो मुझ से कहा ऐ अब्दुल्लाह! शायद तू हज की तमन्ना रखता है? और इसी खयाल में है? मैंने कहा हाँ निहायत आरज़ूमंद हूँ। बुढ़िया ने कहा मुझे तुम्हारे ही वास्ते भेजा गया है। ऐ अब्दुल्लाह मेरे साथ चले आओ ताके मैं तुझ को अरफ़ात में पहुँचा दूं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने दिल में सोचा के अब तो सिर्फ दो रोज़ बाक़ी रह गए हैं। भला ये मुझे इतनी जल्दी अराफात तक कैसे पहुँचा सकती है इस बुढ़िया ने कहा ऐ अब्दुल्लाह! जिसने सुबह की नमाज़ की सुन्नतें संजाब में पढ़ी हों और फर्ज़ जीहूँ के किनारे पर और नमाज़ इशराक़ शहर मुर्द में, तो उसकी हमराही में क्यों अरफ़ात ना पहुँच सकेगा? बिस्मिल्लाह पढ़ो और

चलो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक फ़रमाते हैं: मैंने बिस्मिल्लाह पढ़ी और इस पुर असरार बुढ़िया के साथ हो लिया। चलते हुए रास्ते में जो जो दुश्वार मंज़िलें आतीं बुढ़िया के तुफ़ैल वहाँ से बाआसानी गुज़रते रहे। राह में ऐसा ऐसा गहरा पानी जिसमें कश्ती पर भी सवार होकर गुज़रना दुश्वार होता मिला। हम उससे बाआसानी उबूर करते रहे जब पानी के किनारे पहुँचते, तो वो बुढ़िया मुझ से कहती के आँखें बन्द कर लो जब आँखें बन्द कर लेता तो ऐसा मालूम होता के पानी सिर्फ कमर तक है इसी तरह इस पुर असरार बुढ़िया ने मुझे उसी दिन अरफ़ात में पहुँचा दिया और मैंने हज कर लिया। फिर जब हम हज कर चुके तो उस बुढ़िया ने कहा ऐ अब्दुल्लाह! अब आओ। मेरा एक बेटा है के जिसको अर्सा हो गया। एक ग़ार में इबादत व रियाज़त में मशग़ूल है। उसके पास चलें और उससे मिलें। चुनाँचे उसके सफ़ा ाथ हो लिया और हम एक ग़ार में पहुँच गए। मैंने देखा के ग़ार में एक जवान ज़र्दरू और ज़ईफ व नातवाँ और नूरानी शक्ल का वहाँ मौजूद है। जूंही उसने अपनी माँ को देखा उसके क़दमों पर गिर पड़ा और अपना मुंह उसके तलवों पर मलने लगा के जानता हूँ के आप अपने आप नहीं आई हैं। बल्के खुदा तआला ने आपको भेजा है ताके आप मेरी तजहीज़ व तकफीन करें क्योंके मेरे इन्तिक़ाल का वक़्त क़रीब है उस बुढ़िया ने फिर मुझ से कहा। ऐ अब्दुल्लाह! कुछ वक़्त यहाँ तुम भी ठहरो ताके मेरे बेटे को तुम दफ़्न करो। चुनाँचे मैंने देखा थोड़ी देर के बाद उस जवान का इन्तिक़ाल हो गया और हम ने उसको दफ़्न किया। उसके बाद उस बुढ़िया ने कहा के मुझे अब कोई काम नहीं। मैं अपनी बाक़ी उम्र अब अपने बेटे की क़ब्र पर बैठूंगी और ऐ अब्दुल्लाह! अब तुम जाओ और तुम दूसरे साल आओगे तो मुझे ना पाओगे मुझे दुआऐ खैर से याद करते रहना। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 221)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों की बड़ी ही शान होती है। उनके दिल में हर वक़्त खुदा की याद रहती है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के वलियों में ऐसी ऐसी बा कमाल औरतें भी गुज़री हैं के जिनके हालात व कमालात पढ़कर ईमान ताज़ा हो जाता है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले मुद्दतों का सफर पल भर में तय कर लेते हैं ओर दिलों के इरादों और खयालात पर भी मतलअ हो जाते हैं और ये भी मालूम हूआ के औलिया उम्मत को अपनी मौत का

भी इल्म हो जाता है। और ये सारे कमालात व उलूम उन औलिया को हुज़ूर सय्यद-उल-अंबिया जनाब अहमद मुजतबा मोहममद मुसतफा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सदक़े में हासिल हुए हैं। फिर हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के दाना ग़यूब और *आलम माकाना व यकून* होने में कोई शक कैसे हो सकता है।

हिकायत नम्बर(437) बीमार या तबीब

हज़रत सफयान सूरी रहमत-उल्लाह अलेह एक दफा बीमार हो गए। तो ख़लीफा वक़्त जो आपकी बड़ी इज़्ज़त करता था। उसने एक क़ाबिल तबीब को आपके पास इलाज करने के लिए भेजा। ये तबीब आतिश परस्त था। उसने जब आपका क़ारोरह देखा तो कहने लगा के मालूम होता है। ये कोई खुदा परस्त बुज़ुर्ग हैं। इनका जिगर खुदा के ख़ौफ से पारा पारा हो गया है और फिर कहने लगा के जिस दीन में ऐसे कामिल लोग हैं। वो दीन हर गिज़ बातिल नहीं हो सकता। लिहाज़ा मैं मुसलमान होता हूँ ये कहा और हज़रत के दस्ते हक़ परस्त पर तायब होकर मुसलमान हो गया। ख़लीफ-ए-वक़्त ने जब ये क़िस्सा सुना तो खुश होकर कहने लगा के मैंने तो समझा था तबीब को बीमार क़े पास भेजता हूँ। हालाँके मैंने खुद एक बीमार को तबीब के पास भेजा था। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 231)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों के दिलों में खुदा का ख़ौफ रहता है। और वो खुदा से निडर और बेबाक नहीं होते और ये भी मालूम हुआ के पाक लोगों का क़ारोरह भी गुमराहों के लिए मौजिबे हिदायत बन जाता है।

हिकायत नम्बर(438) हर दिल अज़ीज़

हज़रत सफयान सूरी रहमत-उल्लाह अलेह एक शख़्स का जनाज़ा पढ़कर आए। तो आपने जिस शख़्स की ज़बान से भी सुना। तो यही के ये मरने वाला बड़ा ही अच्छा था कोई भी उसके ख़िलाफ नहीं कह रहा था। हज़रत सफयान ने फ़रमाया अगर मुझे पहले मालूम होता के ये शख़्स ऐसा हर दिल अज़ीज़ है तो मैं उसका जनाज़ा हर गिज़ ना पढ़ता इसलिए के ये शख़्स हक़ गो ना था। अगर ये हक़ बात कहने का आदी होता तो कई लोग उसके मुख़ालिफ भी होते। मगर चूंके सभी उससे खुश

हैं इसलिए ये मालूम हुआ के ये हर एक की हाँ में हाँ मिलाने वाला था। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 223)

सबक़:- अल्लाह वालों के जहाँ कई लोग मौतक़िद मद्दाह और ग़ुलाम होते हैं, वहाँ कई उनके मुख़ालिफ भी होते हैं और ये इसलिए के अल्लाह वाले सच्ची बात कहने से नहीं चूकते, और जिन लोगों को वो सच्ची बात कड़वी लगती है वो उनके मुख़ालिफ हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर(439) हारून रशीद को नसीहत

हज़रत शफीक़ बलख़ी रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा को जाते हुए बग़दाद शरीफ पहुँचे। तो हारून रशीद ने आपको अपने पास बुलाया। आप जब हारून रशीद के पास तशरीफ़ ले गए। तो उसने पूछा के आप ही शफीक़ ज़ाहिद हैं। आपने फ़रमाया शफीक़ तो मैं हूँ मगर ज़ाहिद मैं नहीं हूँ। हारून रशीद ने कहा। आप मुझे कुछ नसीहत फ़रमाईये आपने फ़रमाया के होश रख! हक़ तआला ने तुझे सिद्दीक़ की जगह बैठाया है। वो तुझ से सिद्क़ तलब करेगा और फारूक़ की जगह बैठाया है। वो तुझ से हक़ व बातिल के दरमियान फर्क़ तलब करेगा और ज़ुलनूरैन की जगह बैठाया है। तुझ से हया व करम चाहेगा और अली मुर्तज़ा की जगह बैठाया है वो तुझ से इल्मो अद्ल चाहेगा हारून रशीद ने कहा। जज़ाकल्लाह कुछ और फ़रमाईये। आपने फ़रमाया के हज़रत हक़ सुबहाना व तआला का एक मकान है। जिसे दोज़ख़ कहते हैं। खुदा ने तुझे उसका दरबार बनाया है। और तीन चीज़ें तुझे दी हैं। माल ताज़याना और तलवारें और फ़रमाया है के मख़लूक़ को इन तीनों चीज़ों से दोज़ख़ से अलेहदा रख जो हाजतमंद तेरे पास आए। माल से उसकी एआनत कर। ताके वो गुमराह ना हो जाए और जो खुदा के हुक्म के ख़िलाफ करे उसे कोड़े से तनबीह कर और किसी को मार डाले। उससे तलवार के साथ क़सास ले। अगर इन कामों को तू ना करेगा तो क़यामत के रोज़ तुझ से बाज़ पुर्स होगी, हारून रशीद ने कहा। जज़ाकल्लाह! और कुछ फ़रमाईये। अगर किसी जंगल में तुझे प्यास लगे और तुम प्यास से क़रीब-उल-मर्ग हो जाओ। तो उस वक़्त अगर तुम्हें पानी का एक पियाला कहीं मिल जाए तो तुम उस पानी के पियाले को कितने में खरीदोगे। हारून रशीद ने कहा के मैं आधी बादशाहत भी देकर खरीद लूंगा। आपने फ़रमाया के अगर फिर इस पानी पीने के बाद तेरा पैशाब बन्द हो जाए और बिलकुल जारी ना हो यहाँ तक के तम करीब-उल-मर्ग हो जाओ और उस वक़्त कोई

शख़्स आ जाए और कहे के मैं तेरा इलाज करूंगा। मगर इस शर्त पर के अगर तुम्हारा पैशाब जारी हो जाए तो आधी बादशाहत ले लूंगा। तो तुम क्या करोगे? हारून रशीद ने जवाब दिया के मैं दे दूंगा। आपने फ़रमाया तो फिर समझ लो के ये हक़ीक़त तुम्हारे बादशाहत की है के हक़ की क़ीमत चन्द घूंट पानी के और चन्द क़त्रे पैशाब के हैं। फिर ऐ हारून रशीद! इस हक़ीर बादशाह पर फख्र कैसा? हारून रशीद रोने लगा और कहने लगा आप सच फ़रमा रहे हैं। फिर आपको बड़ी इज़्ज़त व ताज़ीम के साथ रूख़्सत किया। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 243)

सबक़:- पहले बादशाहों को अल्लाह वालों से बड़ी अक़ीदत थी वो अल्लाह वालों से पंदो नसायह सुनने और उन पर अमल करने के आदी थे और ये भी मालूम हुआ के मुसलमानों का अमीर खुल्फा राबिआ रिज़वान-उल्लाही अलेहिम अजमईन का जानशीन होता है। इसलिए उन्हें पाक लोगों के नक़्शे क़दम पर चलकर ख़ालिक़ व मख़लूक़ के हक़ूक़ पूरे अदा करने चाहिएँ। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की नज़र में इस दुनयिा और उसकी फानी नअेमतों की कुछ भी वक़अत नहीं।

हिकायत नम्बर(440) बदशाह फक़ीर के घर

हज़रत हारून रशीद ने एक रात अपने वज़ीर से कहा के आज मुझे किसी बुज़ुर्ग के पास ले चलो। क्योंके मेरा दिल इस कारोबार से उक्ता गया हे। थोड़ी देर इतमीनान व राहत पाऊँ। वज़ीर हारून रशीद को सफयान ऐनिया के मकान पर ले गए। और दरवाज़ा खटखटाया सफयान ने कहा कौन है? वज़ीर ने जवाब दिया अमीर-उल-मोमिनीन हैं। सफयान बोले के मुझे ख़बर क्यों ना की। ताके मैं खुद ख़िदमत में हाज़िर हो जाता। हारून रशीद ने ये सुनकर कहा के ये वो नहीं हैं के जिसकी मुझे तलाश है। वज़ीर ने कहा तो फिर जैसा मर्दे कामिल चाहते हैं वो फज़ील अयाज़ है। बादशाह ने कहा तो चलो उनके मकान पर ले चलो। चुनाँचे हज़रत फज़ील के मकान पर पहुँचे। उस वक़्त हज़रत फज़ील क़ुरआन की तिलावत कर रहे थे। और ये आयत पढ़ रहे थें *अम हसीबल्लज़ीनज तरीहू सय्यीअती अन नजअलूहुम कल्लज़ीना आमनू।* यानी जिन लोगों ने बुरे काम किए हैं। क्या वो गुमान करते हैं के हम उनको उन लोगों के साथ बराबर कर देंगे जिन्होंने नेक काम किए "हारून रशीद ने ये आयत सुनकर कहा के अगर कोई नसीहत

तलब करूं तो यही आयत काफी है।" फिर दरवाज़ा खटखटाया हज़रत फज़ील ने कहा। कौन है? वज़ीर ने जवाब दिया अमीर-उल-मोमिनीन हैं। आपने फ़रमाया अमीर-उल-मोमिनीन का मुझ से क्या काम? और मुझे उनसे क्या काम? मुझे मशगूल ना कीजिए वज़ीर ने कहा के हाकिमों की इताअत ज़रूरी है। फ़रमाया मुझे परेशान ना करो। वज़ीर ने कहा। हमें अन्दर आने की इजाज़त दीजिए। वरना हम ज़बरदस्ती अन्दर आ जायेंगे। आपने फ़रमाया मेरी इजाज़त नहीं है। और ज़बरदस्ती आते हो तो मुख़्तार हो। हारून रशीद के दिल पर इन बातों का बड़ा असर हुआ। और वज़ीर के साथ अन्दर दाख़िल हुआ। हज़रत फज़ील ने चिराग गुल कर दिया ताके हारून रशीद का चेहरा नज़र ना आए इसी असना में हारून रशीद का हाथ फज़ील के हाथ पर पड़ गया। हज़रत फज़ील ने फ़रमाया ये हाथ कैसा नर्म है। अगर दोज़ख़ की आग से बच जाए और ये कहकर नमाज़ की नीयत बाँध ली हारून रशीद रोने लगे और अर्ज़ की के आख़िर कोई बात तो हम से कीजिए, हज़रत फज़ील ने सलाम फैरा तो फ़रमाया आपके बाप हुज़ूर सय्यद-उल-अंबिया सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के चचा थे उन्होंने आँहज़रत सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से दरख़्वास्त की के आप मुझे किसी क़िस्म का सरदार कर दीजिए। तो हुज़ूर ने फ़रमाया के ऐ चचा! मैंने आपको आपके नफ़्स पर सरदार किया। हारून रशीद ने अर्ज़ किया कुछ और फ़रमाईये तो फ़रमाया के जब हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को तख़्त सलतनत पर बैठाया गया तो उन्होंने अपने दोस्त से कहा के मैं बहुत बड़ी आज़माईश में मुबतला हुआ हूँ। मुझे इस आज़माईश में कामयाब होने की कोई तदबीर बताए। तो एक साहब ने उनसे कहा के अगर आप चाहते हैं कल आपको अज़ाब से निजात हो। तो मुसलमान बूढ़ो को मिस्ल अपने बाप के और जवानों को मिस्ल अपने भाईयों के और बच्चों को बजाए फ़रज़ंदों के और औरतों को बजाए माँ बहन के जानिए। और उनके साथ बर्ताओ भी अच्छा कीजिए हारून रशीद ने कहा। कुछ और फ़रमाईये फ़रमाया के बुज़ुर्गों पर मेहरबानी करो और भलाई के साथ एहसान करो, और औलाद के साथ नेकी करो। फिर फ़रमाया! ऐ हारून रशीद! मैं तेरे खूबसूरत चेहरे को देखकर डरता हूँ के ऐसा ना हो के दोज़ख़ की आग उसको जलाए। इसलिए के *"कम मिन आमीरिन हुनाका असीर"* कितने अमीर हैं जो वहाँ (कयामत के रोज) असीर होंगे। हारून रशीद

ये बातें सुनकर रोने लगा और खूब रोया और पिुर कहा के कुछ और फ़रमाईये। हज़रत फज़ील ने फ़रमाया के खुदा से उसके सामने जवाब देने से होशयार रह! और तेयार रह के क़यामत के रोज़ खुदा तआला तुझ से एक एक मुसलमान के बारे में बाज़ पुर्स करेगा और हर एक का इंसाफ तलब करेगा अगर किसी रात कोई बुढ़िया भी किसी घर में भूकी सोई होगी तो कल क़यामत के रोज़ तेरा दामन पकड़ेगी और तुझ से झगड़ेगी। हारून रशीद रोते रोते बेहोश हो गया। वज़ीर ने कहा बस कीजिए के आपने तो अमीर-उल-मोमिनीन को मार डाला। हज़रत फज़ील फ़रमाने लगे ख़ामोश रह! उसे मैं नहीं बल्के तुझ से खुशामदी मारते हैं।

फिर हारून रशीद को होश आया तो हज़रत फज़ील से कहा किसी का कुछ देना है? हज़रत फज़ील ने फ़रमाया हाँ खुदा तआला का मुझ पर क़र्ज़ है और वो क़र्ज़ उसकी इताअत है। अगर वो इस बात में मुझ पर गिरफ़्त करे तो अफसोस है मुझ पर, हारून रशीद न कहा। मैं लोगों का क़र्ज़ पूछता हूँ। फ़रमाया खुदा का शुक्र है के उसने बहुत बड़ी नअेमतें अता फ़रमा रखी हैं और मुझे उसकी कोई शिकायत नहीं। फिर हारून रशीद ने एक हज़ार दीनार की थेली उनके सामने रख दी और कहा ये माल हलाल है और मुझे माँ के विरसे से मिला है। हज़रत फज़ील ने फ़रमाया के मेरी सारी नसीहतें बेकार हो गईं। मैं तुझे निजात और बे ताल्लुक़ी की तरफ़ बुलाता हूँ और तुम मुझे हलाकत में डालना चाहते हो मैं कहता हूँ के जो कुछ तुम्हारे पास है हक़दारों को दे दो मगर तुम जिसे ना देना चाहिए उसे देते हो। ये फ़रमा कर हारून रशीद के पास से उठ खड़े हुए और दरवाज़ा बन्द कर लिया। हारून रशीद और वज़ीर बाहर आए तो हारून रशीद ने कहा के वाक़ई ये मर्दे हक़ और अल्लाह का दोस्त है। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 94 ता 95)

सबक़:- जिनको इर्फान मारफ़त की दौलत हासिल हो जाए, वो इस दुनयवी दौलत की पवाह तक नहीं करते। और ऐसे ही लोग दरअसल बादशाह होते हैं और दुनिया के बड़े बड़े बादशाह भी उन रूमानी बादशाहों के दरबारों में हाज़री देते हैं और ये भी मालूम हुआ के पहले ज़माने के मुसलमान बादशाह भी अल्लाह वालों से अक़ीदत रखते थे और उनके हुज़ूर हाज़िर हुआ करते थे। और *निअमा अमीरा अला बाबिल फक़ीरी* के मुताबिक़ वो बड़े ही अच्छे थे। और ये भी मालूम हुआ के नफ़्स पर हकूमत बड़ी क़ाबिल क़द्र हकूमत है। और.....

बड़े मूज़ी को मारा नफ़्से अम्मारा को गर मारा

के मुताबिक़ जो शख़्स नफ़्से अम्मारा पर क़ाबू पा लेता है। वो बड़ा ही जवाँमर्द है और ये मालूम हुआ के जिस क़द्र बड़ा ओहदा हासिल हो। आदमी उसी क़द्र ज़्यादा आज़माईश में पड़ जाता है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की नज़र में दुनिया और उसकी फ़ानी शानो शौकत की कुछ भी वक़अत नहीं।

हिकायत नम्बर(441) हाकिम नीशापूर

अब्दुल्लाह बिन ताहिर हाकिम नीशापूर एक मर्तबा शहर नीशापूर में वारिद हुआ तो सारा शहर उसके इसतक़बाल को निकल आया और तीन रोज़ तक शहर के छोटे बड़े उसके सलाम को आते रहे। हाकिम नीशापूर ने दरयाफ़्त किया के कोई शख़्स बाक़ी तो नहीं रहा। जो मेरे सलाम को ना आया हो। लोगों ने बताया के सिर्फ दो शख़्स नहीं आए। एक तो हज़रत अहमद हर्ब, दूसरे हज़रत असलम तूसा। उसने कहा के क्यों नहीं आए लोगों ने कहा के ये दोनों औलियाऐ हक़ और उलमाऐ रब्बानी हैं और बादशाहों के सलाम को नहीं जाते हैं। अब्दुल्लाह बिन ताहिर ने कहा के अगर वो हमारे सलाम को नहीं आए तो हम उनके सलाम को जायेंगे। फिर उसने ये इरादा किया के हज़रत अहदम हर्ब के पास जाए। लोगों ने हज़रत को ख़बर दी के हाकिम शहर आपकी ख़िदमत में आ रहा है। हज़रत ने फ़रमाया हमें उसके मिलने से नाचारी है अलग़र्ज़ अब्दुल्लाह बिन ताहिर आया। तो हज़रत ने अपना सर मुबारक झुका लिया और उसकी तरफ़ देखा भी नहीं फिर काफी देर के बाद अपना सर अनवर उठाया। और हाकिम शहर की तरफ़ नज़र की और फ़रमाया के मैंने सुना था के तुम बहुत खूबसूरत हो अब मुझे देखने से पता चला के वाक़ई तुम बहुत खूबसूरत हो। ऐ अब्दुल्लाह! देखो अपनी इस खूबसूरती को हक़ तआला के अहकाम की मुख़ालफत और नाफरमानी के साथ बिगाड़ मत लेना। हाकिम शहर इजाज़त लेकर फिर हज़रत असलम तूसा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और हज़रत तूसा का दरवाज़ा बन्द था और आपने उसे अन्दर आने की इजाज़त ना दी। और पता चला के हज़रत नमाज़ के वक़्त बाहर निकलेंगे। हाकिम शहर दरवाज़े पर इसी तरह सवार खड़ा रहा। और हज़रत के बाहर निकलने का इन्तिज़ार करने लगा। नमाज़ का वक़्त हुआ। तो हज़रत का दरवाज़ा खुला और आप बाहर तशरीफ़ लाए। जूंही अब्दुल्लाह बिन ताहिर हाकिम शहर की आप पर नज़र पड़ी घोड़े से उतर पड़ा। और

आपके पाँव को चूमने लगा और कहा। इलाही इस सबब से के मैं बुरा हूँ। ये तेरा मक़्बूल बन्दा मुझ से दुश्मनी रखता है। और इस सबब से के ये नेक और तेरा मक़्बूल बन्दा है मैं इससे दोस्ती रखता हूँ। तू इस बुरे को इस नेक के तुफैल में नेक बना दे फिर हज़रत ने भी हाकिम शहर के लिए दुआ की और मोहब्बत के साथ उसे रूख़्सत किया (तज़्करत–उल–औलिया सफ़ा 290)

सबक़:- अल्लाह वाले रूहानी हाकिम व बादशाह होते हैं और उनकी बारगाह में दुनिया के बड़े बड़े बादशाह भी हाज़िर होते हैं। और ये हकूमत व क़बूलियत उन्हें अपने अल्लाह व रसूल की ताबेदारी से हासिल होती है। और ये भी मालूम हुआ के नेकों के तुफैल अल्लाह तआला बुरों पर भी अपना फज़्लो करम फ़रमाता है....

शनीदम के दर रोज़ उम्मीद वबीम
बदाँ राबा बख़्श्द बा नीकाँ करीम

हिकायत नम्बर(442) आतिश परस्त बेहराम

हज़रत अहमद हर्ब रहमत–उल्लाह अलेह के पड़ोस एक आतिश परस्त रहता था। उसका नाम बेहराम था उसने अपना माल तिजारत को भेजा था। जो राह में डाकूओं ने लूट लिया। हज़रत अहमद हर्ब को पता चला तो आपने अपने दोस्तों से फ़रमाया हमारे पड़ोसी पर ये वाक़ेया गुज़रा है आओ उसकी लिजोई व ग़मख़्वारी के लिए उसके पास चलें चुनाँचे हज़रत अपने दोस्तों समेत बेहराम के घर पहुँचे। बेहराम ने जब सुना के मुसलमानों का एक पैश्वा मेरे हाँ तशरीफ़ लाया है तो बड़ा खुश हुआ। और इसतक़बाल के लिए दरवाज़े पर आया। और हज़रत की आसतीन को बोसा दिया और बड़ी इज़्ज़त के साथ आपको बिठाया हज़रत ने फ़रमाया। भई तुम्हारा माल लूटा गया है हम इस बात का अफसोस के लिए आए हैं, बेहराम ने कहा हाँ ऐसा ही हुआ है लेकिन मैं उसके सबब से तीन शुक्र करता हूँ। एक तो इस बात का के दूसरे मेरा माल लूट कर ले गए हैं दूसरों का माल लूट कर नहीं लाया। दूसरे इस बात का के वो आधा माल लूट कर ले गए हैं और आधा बाक़ी है। तीसरे इस बात का के वो दुनिया को लूट कर ले गए हैं। दीन मेरे पास बाक़ी है।

हज़रत अहमद हर्ब उसकी ये माक़ूल बातें सुनकर दोस्तों से फ़रमाने लगे के इस बात को लिख लो के बेहराम से आशनाई की बू आती है। फिर आपने फ़रमाया के बेहराम ये तो बताओ के तुम आग की परसतिश किस वास्ते करते हो। उसने कहा। इसलिए के कल क़यामत को मुझे ना जलाए

और आज के रोज इस क़द्र लकड़ियाँ मैंने इसी वास्ते उसकी खूराक मुक़र्रर की हैं के मेरे साथ उस रोज़ बेवफाई ना करे। और मुझे खुदा तक पहुँचा दे, हज़रत ने ये सुनकर फ़रमाया के तुम बड़ी ग़लती में पड़े हो। क्योंके आग तो एक कमज़ोर व नातवाँ शै है। ज़रा खयाल तो करो के अगर एक अगर एक छोटा सा लड़का एक चुल्लू भर पानी इस पर डाल दे। तो वो बुझ जाती है। पस खयाल करने की बात है के जो ऐसी नातवाँ व कमज़ोर हो। वो क़वी तक कैसे पहुँचा सकती है? अलावा इसके आग जाहिल भी है के मुश्क व निजासत में ज़रा भी तमीज़ नहीं करती फौरन दोनों को जला डालती है। फिर ये भी के तुम उसके पुजारी हो मगर तुम भी अगर उसके अन्दर हाथ डालोगे तो तुम्हारा भी लिहाज़ ना करेगी बेहराम के दिल पर इन बातों का गहरा असर हुआ और कहने लगा। मेरे कुछ सवाल हैं। उनका जवाब दीजिए अगर आपके जवाबात सही हुए तो मैं मुसलमान हो जाऊँगा। आपने फ़रमाया पूछो क्या पूछते हो। बेहराम ने कहा के

(1) हक़ तआला ने मख़्लूक़ को क्यों पैदा किया (2) और अगर पैदा किया तो रिज़्क़ क्यों दिया? (3) और अगर रिज़्क़ दिया तो मारा क्यों? (4) और अगर मारा तो फिर ज़िंदा क्यों करेगा? हज़रत ने जवाब दिया के (1) मख़्लूक़ को इसलिए पैदा किया के उसकी ख़ालक़ीयत को पहचानें (2) और रिज़्क़ इसलिए दिया ताके उसकी रज़्ज़ाक़ी को जानें (3) और मारता इसलिए है ताके उसकी क़हहारी को पहचानें (4) और फिर ज़िंदा इसलिए करगा के ताके उसकी क़दिरी को जानें। फिर बेहराम ने कहा। अच्छा अगर आपका दीन सच्चा है तो लीजिए ये आग है इसमें अपना हाथ डालिये अगर आग ने आपको ना जलाया तो मैं मुसलमान हो जाऊँगा। चुनाँचे हज़रत ने अपना हाथ बिस्मिल्लाह पढ़कर आग में डाल दिया और देर तक डाले रहे मगर आग ने मतलक़न कोई असर ना किया। बेहराम ये देखते ही पुकार उठा। *अशहद अनलाइलाहा इलल्लाह व अशहदूअन्ना मोहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू* (तज़्करत-उल-औलिया सफ़ा 295)

सबक़:- अल्लाह वालों की ये सीरत है के वो अपने पड़ोसियों के हक़ूक़ का खयाल रखते हैं और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों के क़दमों के तुफैल काफिर व मुशरिक भी फायदा हासिल कर लेते हैं और कुफ्र व शुक्र की तारीकियों से निकल कर दीन व ईमान की रोशनी पा लेते हैं और ये भी मालूम हुआ के बुजुर्गाने दीन की ताज़ीम व इज़्ज़त से खुदा तआला खुश होता है। और इज़्ज़त करने वाला काफिर भी हो। तो खुदा उसे

इस्लाम की दौलत अता फ़रमा कर आग से बचा लेता है। फिर अगर कोई बराऐ नाम मुसलमान इन अल्लाह वालों की इज़्ज़त ना करे तो वो किस क़द्र बदनसीब है।

हिकायत नम्बर(443) कफन चोर

हज़रत हातिम असिम रहमत-उल्लाह अलेह एक बार बलख़ शहर में वाज़ फ़रमा रहे थे आप ने असना वाज़ में फ़रमाया के इलाही! जो इस मजलिस में सबसे ज़्यादा गुनहगार है उस पर अपना रहम फ़रमा। और उसको बख़्श दे। एक कफन चोर भी इस मजलिस में मौजूद था। जब रात हुई तो कफन चोर कब्रिस्तान में गया। और एक क़ब्र को खोदा उसने हातिफ़ से एक आवाज़ सुनी। के ऐ कफन चोर तू तो आज दिन को हातिम असिम की मजलिसे वाज़ में बख़्श दिया गया। फिर आज ही रात को दोबारा ये गुनाह क्यों करने लगे हो? कफन चोर ने ये आवाज़ सुनी तो रोने लगा। और सच्चे दिल से तायब हो गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 297)

सबक़:- अल्लाह वालों की मजलिस में हाज़री से इंसान खुदा की मग़फिरत व बख़्शिश पा लेता है। और गुनाहों से पाक हो जाता है।

हिकायत नम्बर(444) एक मुलहिद का जवाब

एक आवारा मिज़ाज। बातूनी, और *कट हुज्जतियों* का आदी मुलहिद हज़रत हातिम असिम रहमत-उल्लाह अलेह के पास पहुँचा। और आपकी शान में नाज़ैबा अलफाज़ बकने लगा। हज़रत ने उसकी *कट हुज्जतियों* के ऐसे जवाब दिए के वो ला जवाब होता रहा। चुनाँचे हस्बे ज़ैल सवाल जवाब हुए।

मुलहिदः- तुम मुफ़्त खौर हो। और आदमियों का माल खाते हो।

हज़रत हातिम असिमः- मैंने तेरे माल से कुछ खाया है।

मुलहिदः- नहीं।

हज़रत हातिम असिमः- तो फिर तुम आदमी ना हुए।

मुलहिदः- तुम हुज्जत करते हो।

हज़रत हातिम असिमः- खुदा तआला भी क़यामत के रोज़ बन्दे से हुज्जत तलब करेगा।

मुलहिदः- ये सब बातें ही बातें हैं।

हज़रत हातिम असिमः- खुदा ने बातें ही भेजी हैं। और तेरी माँ तेरे बाप

पर बात ही की वजह से हलाल हुई है।

मुलहिदः- तो क्या तुम्हारी रोज़ी आसमान पर से आती है।

हज़रत हातिमः- सब की रोज़ी आसमान ही से आती है। *वफिस्समाई रज़ाकाकुम* यानी आसमान में तुम्हारा रिज़्क़ है।

मुलहिदः- अच्छा तो आराम से साते रहो। ताके तुम्हारे मुंह में तुम्हारा रिज़्क़ आए।

हज़रत हातिमः- दो बरस तक गहवारा में सोया। और रोज़ी मेरे मुंह में आती रही।

मुलहिदः- क्या तुम ने किसी को देखा के बग़ैर बोए के काटे।

हज़रत हातिमः- तुम्हारे सर के बाल बग़ैर बोए के काटे जाते हैं।

मुलहिदः- अच्छा तो हवा में उड़ो, तुम्हारा रिज़्क़ वहीं पहुँचेगा।

हज़रत हातिमः- अगर मैं परिंदा होता तो मेरी रोज़ी हवा पर पहुँचती।

मुलहिदः- अच्छा ज़मीन के अन्दर घुस जाओ। वहाँ रिज़्क़ मिलेगा।

हज़रत हातिमः- अगर मैं चियूंटी होता तो वहाँ रिज़्क़ मिलता।

मुलहिदः- ख़ामोश हो गया। और मुतास्सिर होकर तौबा करके मुसलमान हो गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 299)

सबक़:- मुलहिदीन की तमाम बातें महज़ *कट हुज्जतियाँ* होती हैं। और अल्लाह वाले इन कट हुज्जतियों का जवाब अहसन पैराए में दे देते हैं।

हिकायत नम्बर (445) शैतान की मायूसी

हज़रत हातिम असिम रहमत-उल्लाह अलेह ने यक रोज़ फ़रमाया के शैतान ने एक दफ़ा मुझे फिसलाना चाहा। मगर मैंने उसको ऐसा जवाब दिया के वो मायूस होकर चला गया। वो मुझ से कहने लगा के तू क्या खाएगा? मैंने कहा मौत!

उसने कहा क्या पहनेगा? मैंने कहा कफ़न!

उसने कहा कहाँ रहोगे? मैंने कहा क़ब्र में!

मेरे ये जवाब सुनकर कहने लगा। तुम बड़े सख़्त मर्द हो। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 301)

सबक़:- अल्लाह के बन्दों पर शैतान का क़ाबू नहीं चलता।

हिकायत नम्बर (446) वली की बीवी

हज़रत हातिम असिम रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा कहीं बाहर

सफर में जाने लगे। तो अपनी बीवी से फ़रमाया। के मैं चार महीने तक बाहर रहूंगा, तुम्हारे वास्ते किस क़द्र खर्च मोहय्या कर जाऊँ? उन्होंने जवाब दिया के जिस क़द्र आपको मेरी ज़िन्दगी मंज़ूर है। हज़रत ने फ़रमाया। तुम्हारी ज़िन्दगी मेरे हाथ में तो नहीं, बीवी साहिबा ने जवाब दिया। तो मेरी रोज़ी भी आपके हाथ में नहीं है। हज़रत हातिम जब चले गए तो एक बुढ़िया ने हज़रत की बीवी से पूछा, के आपके वास्ते कितनी रोज़ी छोड़ गए हैं। उन्होंने जवाब दिया के हज़रत हातिम तो खुद ही रोज़ी खाने वाले थे जो खाने वाला था वो चला गया। और जो देने वाला है वो यहीं है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 301)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उम्मत में ऐसी पाकबाज़ औरतें भी गुज़री हैं जो बड़ी खुदा रसीदा और हक़ तआला पर कामिल एतमाद और भरोसा रखने वाली थीं। फिर जो मर्द होकर भी अल्लाह तआला पर एतमाद व भरोसा ना रखे तो वो किस क़द्र ग़ाफ़िल है।

हिकायत नम्बर(447) ज़ादे राह

एक शख़्स सफर मे जाने लगा। तो हज़रत हातिम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगा, के हज़रत मुझे कुछ नसीहतें फ़रमाइये। आपने फ़रमाया, अगर तू यार चाहता है तो खुदा तआला तेरा यार काफी है। और हमराही चाहता है तो करामन कातिबीन काफी हैं। और अगर इब्रत चाहता है तो दुनिया इब्रत के लिए काफी है। और अगर मोनिस व ग़मख़्वार चाहता है तो क़ुरआन मजीद तेरा मोनिस व ग़मख़्वार काफी है। और अगर शुग़्ल दरकार है तो इबादत काफी है। और अगर वाज़ चाहता है तो मौत काफी है। और अगर ये बातें जो मैंने बयान कीं। तुझे पसंद नहीं तो दोज़ख़ तेरे वास्ते काफी है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 202)

सबक़:- इंसान के लिए इस मुसाफिर खाने दुनिया में ज़िक्रो फिक्र सब से बड़ा मुफीद और कारआमद ज़ादे राह है।

हिकायत नम्बर(448) मुर्दों का माल

हज़रत हातिम से किसी ने कहा के फलाँ शख़्स ने बड़ा माल जमा कर लिया है। फ़रमाया, क्या उसने उसके साथ ज़िन्दगानी भी जमा कर ली है? फ़रमाया तो मुर्दों का माल किस काम का है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 304)

सबक़:- आगाही अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सौ बरस का है पल की ख़बर नहीं

हिकायत नम्बर (449) बुज़ुर्गों की नमाज़

हज़रत हातिम असिम रहमत-उल्लाह अलेह से किसी ने दरयाफ़्त किया के आप नमाज़ किस तरह पढ़ते हैं। आपने फ़रमाया के जब नमाज़ का वक़्त आता है तो मैं ज़ाहिर का वज़ू करता हूँ और बातिन का वज़ू भी करता हू। और मेरा वज़ू इस तरह होता है के ज़ाहिरी वज़ू पानी से करता हूँ। और बातिनी वज़ू तौबा के पानी से करता हूँ। और फिर मस्जिद में दाखिल होता हूँ और कअबा शरीफ का मुशाहेदा करता हूँ। और मुक़ामे इब्राहीम को दोनों अबरो के दरमियान रखता हूँ और बहिश्त को अपनी दाहिनी तरफ़ और दोज़ख को बायें तरफ़। और पुल सिरात को अपने क़दमों के नीचे रखता हूँ। और मलक-उल-मौत को पुश्त के पीछे खयाल करता हूँ और दिल को खुदा की तरफ़ मुतवज्जह करता हूँ। बल्के उसको सोंप देता हूँ। उस वक़्त बड़ी तअज़ीम के साथ तक्बीर कहता हूँ। और बड़ी हुर्मत के साथ क़याम करता हूँ। और बड़ी हुय्यत व शौकत के साथ क़िरात करता हूँ और बड़ी आजज़ी के साथ रूकू करता हूँ और निहायत आजज़ी के साथ सिजदा बजा लाता हूँ और बहुत ही हिल्म व बुर्दबारी के साथ क़अेदे में बैठता हूँ। और निहायत शुक्रगुज़ारी के साथ सलाम फैरता हूँ। मैं इस तरह नमाज़ पढ़ता हूँ। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 302)

सबक़:- अल्लाह वालों की नमाज़ वाक़ई नमाज़ होती है। और एक हमारी नमाज़ है। के हज़ारहा ख़ामियाँ इसमें पाई जाती हैं। फिर एक ऐसा शख़्स जिसने सारी उम्र नमाज़ पढ़ी ही ना हो। उन अल्लाह वालों पर मौतरिज़ हो तो वो किस क़द्र नाअक़्बत अंदेश है।

हिकायत नम्बर (450) बुज़ुर्गों का इल्म

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तसतरी रहमत-उल्लाह अलेह ने एक मर्तबा अपने दोस्तों से फ़रमाया के मुझे खूब याद है के हज़रत हक़ सुबहाना तआला ने जब रोज़े अज़ल में *अलस्तू बिरब्बिकुम* फ़रमाया था। और मैंने *ब-ल-या* कहा था। और जब मैं माँ के पेट में था उस वक़्त के कुल हालात भी मुझ को मालमू हैं और जब मैं तीन साल का था तो तमाम रात अपने मामू मोहम्मद बिन सवार रहमत-उल्लाह अलेह के साथ नमाज़ पढ़ा करता था।

(तज़्करत-उल-औलिया, सफ़ा 208)

सबक़:- उन अल्लाह वालों का ये इल्म है के रोज़े अज़ल तक की सारी बातें इल्म में हैं। शिकमे मादर में होते वक़्त की भी तमाम बातें और बचपन की तमाम बातें इल्म से बाहर नहीं। और ये भी मालूम हुआ के वो ज़ात ग्रामी जिन के सदक़े में उन अल्लाह वालों को ये इल्म हासिल हुआ यानी ज़ात बाबर्कात हुज़ूर अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम। भला इस ज़ात ग्रामी से कोई बात कैसे ग़ायब रह सकती है? जिनके तुफ़ैल अल्लाह वालों को रोज़े अज़ल तक की बातें मालूम हों। खुद उनको पीठ पीछे का भी इल्म ना हो। ये किस क़द्र जहालत की बात है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों का बचपन भी अल्लाह की याद व इबादत में गुज़रता है। फिर वो जिसने बुढ़ापे तक भी कभी नमाज़ ना पढ़ी हो। उन अल्लाह वालों का मिस्ल कैसे हो सकता है।

हिकायत नम्बर(451) बुज़ुर्गों की दुआ

एक हाकिम जिसका नाम उमरोलीस था। बीमार पड़ गया, और ऐसा बीमार हुआ के तबीब उसके इलाज से थक गए मगर वो अच्छा ना हो सका। आख़िर किसी ने कहा के दवा की तो इन्तिहा हो गई, अब किसी मुसतजाब-उल-दावात से दुआ कराई जाए। चुनाँचे सब ने हज़रत सहल रहमत-उल्लाह अलेह का नाम लिया। के वो बड़े बुज़ुर्ग और अल्लाह के वली हैं। उन से दुआ की दरख़्वास्त की जाए। चुनाँचे आपको बुलाया गया। और आप मुताबिक़ फ़रमाने हक़ *वओलिल अमरी मिनकुम* तशरीफ़ ले गए। जब मरीज़ हाकिम के पास बैठे तो उसने फ़रमाया के दुआ ऐसे शख़्स के हक़ में क़बूल होती है जो सच्चे दिल से तौबा करे और खुदा की जानिब रूजू करे। और ऐ उमरो! तेरे क़ैदखाने में बहुत से बेगुनाह क़ैदी भी हैं। पहले उन सब क़ैदियों को रिहा कर और तौबा कर। फिर मैं दुआ करता हूँ। उमरोलीस ने ऐसा ही किया। क़ैदियों की रिहाई का हुक्म दिया। और तौबा की। फिर हज़रत सहल ने हाथ उठाए और कहा के...

"खुदावंदा। ऐसा के तूने अपनी नाफरमानी की ज़िल्लत उसको दिखाई।

इसी तरह मेरी इताअत की इज़्ज़त भी उसको दिखला दे। और जिस तरह के तूने उसके बातिन को लिबास तौबा पहनाया है। इसी तरह उसके ज़ाहिर को लिबास आफियत भी पहना दे।"

आप ये दुआ कर ही रहे थे के उमरोलीस बिलकुल अच्छा हो गया

उमरोलीस आपको बहुत सामान नज़्र देने लगा। मगर आपने इंकार कर दिया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 312)

सबक़:- जहाँ दवा की इन्तिहा हो। दुआ की वो इब्तिदा होती है। और ये भी मालूम हुआ के....

बुज़ुर्गों की दुआ से बदल जाती है तक़दीरें

और ये भी मालूम हुआ के दुआ की क़बूलियत के लिए जहाँ दुआ माँगने वाला, मुसतजाब-उल-दावात होना चाहिए। वहाँ वो शख़्स जिसके लिए दुआ की जाए उसे भी अपने गुनाहों से सच्चे दिल से तौबा कर लेना चाहिए। जब दोनों तरफ़ से ये पाकीज़गी, और अफ़्फ़त पाई जाएगी। तो दुआ बहुत जल्द सुनी जाएगी।

हिकायत नम्बर(452) निराली दुआ

हज़रत मअरूफ कुर्ख़ी रहमत-उल्लाह अलेह एक रोज़ एक जमात के साथ कहीं जा रहे थे। के आपने दजला के किनारे जवानों की एक जमात देखी जो फिस्क़ो फिजूर में मुबतला थे। आपके हमराहियों ने अर्ज़ की। हुज़ूर इन के लिए दुआ कीजिए। ताके खुदा तआला इन सब बदमाशों को ग़र्क़ कर दे और उनकी नहूसत फैलने ना पाए। हज़रत मअरूफ ने फ़रमाया के हाथ उठाओ। मैं दुआ करता हूँ। तुम सब आमीन कहना। चुनाँचे सब ने हाथ उठाए और आपने दुआ की। के इलाही! जिस तरह तूने उनको इस जहान में ऐशो इशरत में रखा है। इसी तरह उनको उस जहान में भी ऐशो इशरत अता फ़रमा। आपकी इस दुआ पर हमराहियों ने ताज्जुब किया। और वजह दरयाफ़्त की। आपने फ़रमाया के ज़रा ठहरो मेरा मक़्सद अभी ज़ाहिर होता है। चुनाँचे थोड़ी देर के बाद इस जमात की नज़र जूहीं मअरूफ कुर्ख़ी पर पड़ी तो उन्होंने अपने बाजे गाजे तोड़ फोड़ डाले और शराब फैंक दी। और ज़ार ज़ार रोने लगे। और सब आकर हज़रत के क़दमों में गिर गए। और सच्चे दिल से तायब हो गए। हज़रत मअरूफ ने अपने हमराहियों से फ़रमाया के देख लिया तुम ने? के मुराद हासिल हो गई। बग़ैर उसके के ये ग़र्क़ हों। या इन्हें कोई तकलीफ पहुँचे। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 330)

सबक़:- बुज़ुर्गों की दुआओं से काया पलट जाती है और जो काम तीग़ व तीर से नहीं हो सकता वो काम किसी अल्लाह वाले की नज़र और दुआ से फौरन हो जाता हैं इसी लिए शायर ने लिखा है के:-

ना किताबों से ना कालिज के है दर से पैदा
दीन होता है बुज़ुर्गों की नज़र से पैदा

हिकायत नम्बर(453) रूनी हाकिम

हज़रत मअरूफ कुर्खी रहमत-उल्लाह अलेह के मामूँ शहर के हाकिम थे। एक रोज़ इस हाकिम का गुज़र एक जंगल से हुआ। जहाँ हज़रत मअरूफ कुर्खी बैठे रोटी खा रहे थे और एक कुत्ता भी साथ ही बैठा था। हाकिम शहर ने देखा के हज़रत मअरूफ एक लुक़्मा अपने मुंह में डालते हैं और एक लुक़्मा उस कुत्ते के मुंह में डालते हैं। आपके मामूँ ने देखकर कहा के तुम्हें शर्म नहीं आती के एक कुत्ते के साथ रोटी खा रहे हो। आपने फ़रमाया के मैं शर्म ही के सबब से तो उसे रोटी खिला रहा हूँ। आपने सर उठाया। और एक परिंदे को जो हवा में उड़ रहा था। आवाज़ दी। वो परिंदा हुक्म पाते ही नीचे उतर आया। आपके हाथ पर आ बैठा। लेकिन अपने पर से अपना मुंह और अपनी आँखें छुपा लीं। हज़रत मअरूफ ने फ़रमाया के देख लो जो शख़्स खुदा तआला से शर्म रखता है हर चीज़ उससे शर्म रखती है। आपके मामूँ ने ये शान देखी तो बड़ा शर्मिंदा हुए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 331)

सबक़:- अल्लाह वालों के अख़लाक़ बड़े बुलंद होते हैं। और उनके दिल अल्लाह की मख़लूक़ की हमदर्दी से मामूर होते हैं। और वो भूके कुत्तों का भी खयाल रखते हैं। फिर जिसके दिल में किसी भूके इंसान का भी खयाल ना हो, तो वो किस क़द्र संग दिल और ग़ाफिल है। और ये भी मालूम हुआ के ग़ुरबा व मसाकीन से नेक सलूक करना और हमदर्दी रखना दरअसल यही शर्म व हया है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की हकूमत जानवरों पर भी जारी है। इसलिए हज़रत शेख़ सअदी ने फ़रमाया के...

तोहम गर्दान अज़ हुक्म दावर मेच
के गर्दन ना पीचदज़ हुक्म तो हैच

यानी तुम अल्लाह के हुक्म से सरताबी ना करो, तो सारी मख़लूक़ में से कोई तुम्हारी हुक्म की सरताबी ना करेगा।

हिकायत नम्बर(454) इन्तिक़ाल मकानी

हज़रत फतह मूसल रहमत-उल्लाह अलेह एक रोज़ अपने यारों के साथ मस्जिद में बैठे थे। के एक नोजवान जो सादा लिबास पहने हुए था, आया, और कहने लगा के जनाब! क्या मुसाफिरों का भी कोई हक़ होता है या

नहीं। हज़रत मूसली ने फ़रमाया के हाँ होता हैं इस नोजवान ने कहा तो फिर मैं एक मुसाफिर हूँ, फलाँ मोहल्ले के फलाँ मकान में ठहरा हुआ हूँ। कल मैं मर जाऊँगा। कल आप इस मोहल्ले में आइये और मेरे मकान में पहुँच कर मेरा गुस्ल आप खुद दें। और मेरे इसी पीराहन को कफन बनाएँ। और इसी कफन में दफनायें। ये कहकर वो नोजवान चला गया।

हज़रत मूसली दूसरे रोज़ उसी मोहल्ले में पहुँचे। और इस मकान में गए तो वाक़ई वो नोजवान फौत हो चुका था। हज़रत मूसली ने हस्बे वसीयत उसको खुद निहलाया और इसी पीराहन में कफनाया। हज़रत मूसली रहमत-उल्लाह अलेह जब कफन पहना कर फारिग़ हुए तो उस नोजवान ने कफन से हाथ निकाला। और हज़रत मूसली का दामन पकड़ कर कहा के जज़कल्लाह! ऐ फतह मूसली! अगर मैं हक़ तआला के नज़दीक मर्तबा पाऊँगा तो आपकी इस ख़िदमत के अवज़ ज़रूर आपकी ख़िदमत का बदला चुकाऊँगा। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 349)

सबक़:- अल्लाह वालों को बअता इलाही ये इल्म भी होता है के वो कब मरेंगे। फिर जो उन सब अल्लाह वालों के सय्यद व सरदार हैं और जिनके सदक़े में उन सबको ये अज़मतें मिलीं, उनका अपना इल्म किस क़द्र वसी होगा। अैर ये भी मालूम हुआ के ये अल्लाह वाले मरते नहीं हैं बल्के उनकी मौत महज़ इन्तिक़ाल मकानी होती है। यानी एक जगह छोड़ कर देसरी जगह चले जाना। जैसे के एक शायर ने लिखा है...

औलिया को मत समझिये मर गए
वो तो इस दुनिया से अपने घर गए

हिकायत नम्बर(455) चिराग़ाँ

हज़रत अहमद ख़िज़्रविया रहमत-उल्लाह अलेह के घर एक दूसरे मक़्बूल हक़ तशरीफ़ लाए। हज़रत अहमद ख़िज़्रविया ने अपने घर में सात चिराग़ रोशन किए। मेहमान बुज़ुर्ग ने फ़रमाया के ये तकलीफ क्यों किया? हज़रत अहमद ख़िज़्रविया ने फ़रमया के आप उठिये। और जो चिराग़ मैंने खुदा के वास्ते रोशन ना किया हो। उसे बुझा दीजिए। मेहमान बुज़ुर्ग उठे और इन चिराग़ों को बुझाने लगे। मगर इनमें किसी चिराग़ को भी ना बुझा सके। हज़रत अहमद ख़िज़्रविया दूसरे रोज़ अपने मेहमान बुज़ुर्ग को साथ लेकर एक कलीसा के दरवाज़े पर पहुँचे इस कलीसा के दरवाज़े पर इसाईयों का सरदार बैठा हुआ था। उस सरदार ने हज़रत अहमद ख़िज़्रविया से कहा के आइये।

दसतरख़्वान बिछ रहा है। खाना खाईये। आपने फ़रमाया के दोस्त दुश्मनों के साथ कोई चीज़ नहीं खाया करते। उसने कहा। तो आप मुझे मुसलमान कर लीजिए। चुनाँचे आपने उसे कलमा पढ़ाकर मुसलमान कर लिया इस सरदार के साथ उसकी क़ौम के सत्तर अफ़राद और भी थे। उन्होंने अपने सरदार को मुसलमान होते देखा। तो वो सब भी मुसलमान हो गए। उस रात आपने ख़्वाब में खुदा तआला की तरफ़ से हातिफ की ये आवाज़ सुनी के

"तुम ने हमारे वास्ते सात चिराग़ रोशन किए, हम ने तुम्हारे वास्ते तेरे ज़रिये सत्तर दिलों को नूर ईमान से रोशन कर दिया।" (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 260)

सबक़:- जो काम भी अल्लाह की खुशनूदी के लिए किया जाए। उसी तकल्लुफ या इसराफ नहीं कहा जा सकता। मालूम हुआ के ईद मीलाद-उन्नबी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मौक़े पर जो चिराग़ाँ की जाती है। इस में बजुज़ उसके खुदा के मेहबूब सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की खुशी का मुज़ाहेरा हो। और कोई नीयत नहीं होती। फिर इस चिराग़ाँ को तकल्लुफ या बिदअत समझना क्यों ना हो। और ये भी मालूम हुआ के जो लोग अल्लाह के मेहबूब की खुशी मनाते हुए अपने घर रोशन करते हैं। अल्लाह तआला अपने मेहबूब के सदक़े में इंशा अल्लाह उनकी क़ब्रों को रोशन करेगा।

हिकायत नम्बर(456) भाई को नसीहत

हज़रत याहिया मआज़ राज़ी रहमत-उल्लाह अलेह के एक भाई थे जो के मक्का मोअज़्ज़मा में जाकर वहाँ के मुजाविर हो गए। एक रोज़ उन्होंने हज़रत याहिया को ख़त लिखा के मुझे तीन चीज़ों की आरज़ू थी। दो तो उन में से मुझे हासिल हो गईं। एक बाक़ी है। दुआ फ़रमाइये के वो भी हासिल हो जाए। इन तीनों आरज़ूओं में से एक ये आरज़ू थी के मैं अपनी आख़िर उम्र में एक बेहतरीन और मुबारक जगह में रहूं। चुनाँचे मैं अब ख़ाना कअबा में पहुँच गया हूँ। जो सबसे बढ़कर मुबारक जगह है। ये आरज़ू तो पूरी हुई। दूसरी आरज़ू ये थी के मेरा एक ख़ादिम हो, ताके मेरी ख़िदमत करे। अैर मेरे वज़ू के लिए पानी तैयार करे। सो खुदा तआला ने ये आरज़ू भी पूरी फ़रमा दी। के मुझे एक शायस्ता ग़ुलाम अता फ़र दिया। तीसरी आरज़ू मेरी ये थी के मौत से पहले आपको देखूं। तो उम्मीद है के हक़ तआला ये भी आरज़ू मेरी पूरी फ़रमा देगा।

हज़रत याहिया रहमत-उल्लाह अलेह ने अपने भाई को जवाब लिखा के ये जो आपने लिखा है के मैं बेहतरीन जगह की आरज़ू रखता हूँ। इसका जवाब ये है के आप खुद बेहतरीन मखलूक़ बनने की कोशिश कीजिए। और खुद बेहतरीन मखलूक़ बनकर फिर जिस जगह में भी दिल चाहे रहिए। याद रखिये के जगह मर्दों से बुज़ुर्ग व अज़ीज़ बनती है ना के मर्द जगह से। और जो आपने लिखा है के मुझे एक खादिम की ज़रूरत थी। और वो भी पूरी हो गई। तो इसका जवाब ये है के अगर आप में मुरव्वत व जवाँ मर्दी होती तो आप अल्लाह तआला के एक ख़ादिम को अपना ख़ादिम ना बनाते। और हक़ तआला की ख़िदमत से उसे बाज़ ना रखते। और अपनी ख़िदमत में उसे मशगूल ना करते। आपको तो खुद ख़ादिम बनना चाहिए। ना के आप मखदूमी की आरज़ू करें। याद रखिये के मख़दूमी हक़ तआला की सिफात में है। और ख़ादिमी बन्दे की सिफात में से पस बन्दे को बन्दा ही रहना चाहिए। और जब बन्दा हक़ तआला की सिफात की आरज़ू करे तो ऐसा जानना चाहिए के वो फिरऔनित इख़्तियार करना चाहता है। और ये आपने लिखा है के मुझे तुम्हारे दीदार की आरज़ू है तो उसका जवाब ये है के मालूम होता है के आप खुदा तआला से ग़ाफ़िल हैं। अगर आप खुदा तआला से बाख़बर होते तो मैं आपको कभी याद ना आता आपको लाज़िम है के हक़ तआला की याद इस तरह रखें। के आपको भाई की याद ना आए। मेरे भाई अगर आपने हक़ तआला को पा लिया। तो फिर मेरी क्या हाजत? और अगर उसको ना पाया तो मुझे पा लेने से क्या फायदा। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 368)

सबक़:- इंसान को लाज़िम है के वो हक़ तआला की याद और नेक आमाल से अपने आपको बेहतरीन व मुबारक बना ले फिर वो चाहे कहीं भी रहे। नेक ही है। और इंसान को लाज़िम है के वो जहाँ तक मुमकिन हो। ख़िदमत व तवाज़ो इख़्तियार करे और तकब्बुर व अनानियत और मख़दूमीयत का शौक़ नज़दीक ना आने दे और हमातन अल्लाह की ख़िदमत व इबादत में मसरूफ रहे और अल्लाह तआला की याद में इतना महू व मुसतग़रिक़ रहे के दुनयवी रास्ता उसकी मोहब्बत हक़ में हायल ना हो सके।

हिकायत नम्बर (457) ख़्वाब की ताबीर

हज़रत याहिया मआज़ राज़ी रहमत-उल्लाह अलेह ने एक मर्तबा अपने एक अज़ीज़ को ख़त लिखा के दुनिया मिस्ल ख़्वाब के है। और आख़िरत मिस्ल बैदारी के। और जो शख़्स ख़्वाब में देखे के रो रहा है तो ताबीर इसकी

उल्टी होती है। यानी बैदारी में वो हंसेगा। और शाद होगा। पस ऐ अज़ीज़! तुम को इस दुनिया में जो मिस्ल ख़्वाब के है। ख़ौफे खुदा से रोना चाहिए ताके आख़िरत की बैदारी तुम हंसी और खुशी पा सको। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 369)

सबक़:- इंसान को लाज़िम है के वो आखिरत को संवारने के लिए इस दुनिया में अच्छे काम करे और खुदा के हुज़ूर खड़े होने का हर वक़्त खयाल रखे। और ख़ौफे खुदा से आँसू बहाए। ताके उसकी आख़िरत अच्छी हो जाए। इसी लिए मौलाना रूमी ने फ़रमाया के

हर कजा आब रवाँ गुनचा बोद
हर कजा अश्क रवाँ रहमत शोद

यानी जहाँ पानी बहता है, वहाँ फूल उगते हैं। इसी तरह जहाँ खुदा के ख़ौफ से आँखों से आँसूं बहते हों वहाँ रहमत के फूल उगते हैं।

हिकायत नम्बर(458) शर्मे ईमान

एक रात हज़रत याहिया मआज़ राज़ी रहमत-उल्लाह अलेह के सामने एक शमादान रोशन थी। जो हवा के एक झोंके से बुझ गई। हज़रत ने रोना शुरू कर दिया, मुरीदों ने अर्ज़ किया। हुज़ूर! शमा फिर रोशन कर देते हैं। आप रोते क्यों हैं? आपने फ़रमाया। मैं इसलिए नहीं रो रहा के ये शमा क्यों बुझ गई, मैं तो इस खयाल से रोने लगा हूँ के ईमान की शमा और तौहीद का जो चिराग़ बुतों में रोशन है। कहीं ऐसा ना हो के खुदा तआला की बेनियाज़ी की हवा लगे तो ये शमा भी गुल हो जाए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 270)

सबक़:- अल्लाह तआला से हर वक़्त अंजाम व आक़्बत की बेहतरी माँगना चाहिए और ये दुआ करते रहना चाहिए के खुदा तआला हमारा ईमान सलामत रखे। और हर वक़्त हम इस दौलत ईमान से माला माल दुनिया से रूख़्सत हों।....

या खुदा जिस्म में जब तक के मेरी जान रहे
तेरे सदक़े तेरे मेहबूब के क़ुर्बान रहे
कुछ रहे या ना रहे पर ये दुआ हैं के अमीर
नज़अ के वक़्त सलामत मेरा ईमान रहे

हिकायत नम्बर(459) चार दुआयें

एक शख़्स जो बड़ा अमीर था, हर वक़्त फिस्क़ो फिजूर में मुबता रहता

था। और कभी भूल कर भी खुदा की याद नहीं करता था। एक रोज़ अपने गुलाम को चार दरहम दिए ताके वो बाज़ार से मीठाई खरीद कर लाए। चुनाँचे वो गुलाम गया। रास्ते में उसने देखा के एक जगह हज़रत मनसून रहमत-उल्लाह अलेह एक मजमअे में वाज़ फ़रमा रहे हैं। गुलाम ने सोचा थोड़ी देर हज़रत मनसूर का वाज़ ही सुन लूं। चुनाँचे वो इस मजलिस में हाज़िर हो गया। उस वक़्त हज़रत मनसूर एक मुसतहिक़ दुरवैश की ख़िदमत करने के लिए लोगों से अपील कर रहे थे और फ़रमा रहे थे के जो शख़्स इस दुरवैश को चार दरहम देगा मैं उसके लिए चार दुआएँ करूंगा। गुलाम ने दिल में सोचा के ये चार दरहम जो मेरे पास हैं। मैं इस दुरवैश को दे दूं। और चार दुआएँ अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ करा लूं। चुनाँचे उसने वो चार दरहम दुरवैश को दे दिए। हज़रत मनसूर ने फ़रमाया के *जज़ाकल्लाह* अब बताओ के मैं तुम्हारे वास्ते कौन कौन सी दुआ करूं। गुलाम ने कहा पहली तो ये दुआ कीजिए के खुदा तआला मुझे गुलामी से आज़ादी दे दे। दूसरी ये के अल्लाह तआला मेरे मालिक को तौबा कर लेने की तौफीक़ दे दे। तीसरे ये के मुझे चार दरहम और मिल जाए। चौथे ये के अल्लाह तआला मुझे और हाज़ीने मजलिस को और मेरे मालिक को सब को बख़्श दे। हज़रत मनसूर ने ये चारों दुआएँ कीं और वो गुलाम ये चारों दुआएँ कराके घर वापस आ गया। मालिक ने उससे पूछा के तुम ने इतनी देर कहाँ लगाई। तो उसने सारा क़िस्सा बयान किया और कहा के मैं वो चार दरहम हज़रत मनसूर की मजलिस में देकर आया हूँ और उनके अवज़ हज़रत मनसूर से चार दुआएँ करा ली हैं। मालिक नू पूछा के वो चार दुआएँ कौन कौन सी हैं ज़रा मुझे भी तो सुना। गुलाम ने कहा के एक तो ये के खुदा तआला मुझे आज़ादी अता फ़रमाए। और दूसरे ये के इन चार दरहमों के अवज़ चार दरहम मिल जाएँ। तीसरे ये के खुदा तआला आपको तौबा की तौफीक़ अता फ़रमाए। चौथे ये के खुदा तआला मुझ पर आप पर हज़रत मनसूर और सारे हाज़रीन जलसा पर अपनी रहमत फ़रमाए। और सबकी मग़फिरत फ़रमा दे। मालिक ने ये सुना। तो कहने लगा। पहली दुआ तो क़बूल हुई। जाओ मैंने तुझे आज़ाद किया। दूसरी भी क़बूल हुई लो उन दरहमों के अवज़ में तुझे चार सौ दरहम देता हूँ और तीसरी भी क़बूल हुई। सनो! मैं सच्चे दिल से तौबा करता हुँ आईंदा कभी खुदा की नाफरमानी ना करूंगा। और किसी गुनाह के क़रीब ना फटकूंगा। अब जो कुछ के मेरी क़द्रत में था मैंने उसको पूरा कर दिया लेकिन चौथी बात मेरे इख़्तियार में नहीं। उसमें मैं मजबूर हूँ। और वो काम मैं नहीं कर सकता। उसी

वक़्त हातिफ़ से एक आवाज़ आई। ऐ बन्दे! जो कुछ तेरे इख़्तियार में था, बन्दा होकर तुम ने वो काम कर दिखाया। तो जो कुछ हमारे इख़्तियार में है। रहीम होकर हम वो काम क्यों ना करें। जाओ हम ने तुझे तुम्हारे ग़ुलाम, मनसूर और सारे हाज़ीने मजलिस को अपनी रहमत में ले लिया। और सबको बख़्श दिया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 415)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूलों की मजलिस में शिर्कत मौजिबे रहमत हक़ और बाइस निजात है। और मुसतेहक़ीन की मदद व एआनत से अल्लाह तआला खुश होता है। और मदद करने वाले पर रहमत फ़रमाता है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूल बन्दों से दुआ कराने में मक़सद जल्दी हल हो जाता है। इसलिए के अल्लाह तआला अपने मक़्बूल बन्दों की दुआ मुताबिक़ हदीस *लइन साअलनी लाअतीन्नाहू* (यानी मेरा मक़्बूल जब मुझ से कुछ मांगे तो मैं उसे ज़रूर अता फ़रमाता हूँ) जल्दी सुनता है। और ये भी मालूम हुआ के बुज़ुर्गों की दुआओं से गुनाहगारों की काया पलट जाती है। इसी लिए शायर ने लिखा है के...

बुज़ुर्गों की दुआओं से बदल जाती हैं तक़दीरें

हिकायत नम्बर (460) फिरासत मोमिन

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमत-उल्लाह अलेह के ज़माने में एक मजूसी रहता था। एक रोज़ उसने अपने गले में ज़िनार पहना। और उसके ऊपर मुसलमानों का लिबास पहन कर हज़रत जुनैद के पास आया। और कहने लगा, हुज़ूर! एक हदीस का मतलब दरयाफ़्त करने आया हूँ। हदीस में आया है के *इत्तक़ू बिफिरासतिल मोमिनी फइन्नहू यनज़ुरू बिनूरिल्लाही* यानी मोमिन की फिरासत से डरो। इसलिए के वो अल्लाह के नूर से देखता है। इस हदीस का क्या मतलब हैं हज़रत जुनैद मुसकुराए और फ़रमाया "इस हदीस का मतलब ये है के तू अपना ज़िनार तोड़। कुफ्र छोड़। और कलमा पढ़कर मुसलमान हो जा" मजूसी ने जब ये सुना तो फौरन पुकार उठा। *अशहद अनलाइलाहा इलल्लाह व अशहदूअन्ना मोहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू* (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 433)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे जो सही मानों में साहबे ईमान होते हैं। उनकी नज़र से कोई पौशीदा बात पनेहाँ नहीं रहती। और वो मुताबिक़ हदीसे पाक के नूरे हक़ के साथ सब कुछ देख लेते हैं। इसी लिए मौलाना रूमी ने फ़रमाया... लोह महफ़ूज़ अस्त पैश औलिया

फिर खुद सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से जिनके सदके में उन अल्लाह वालों को ये वुसअत नज़र अता हुई। कायनात की कोई शै पौशीदा कैसे रह सकती है? सच फ़रमाया आँहज़रत ने के....

दिल फर्श पर है तेरी नज़र, सरे अर्श पर है तेरी गुज़र
मलकूत व मुलक में कोई शै नहीं वो जो तुझ पर अयाँ नहीं

हिकायत(461) ग़ीबत

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमत-उल्लाह अलेह ने एक शख़्स को देखा, जो सवाल कर रहा था। हज़रत जुनैद के दिल में खयाल आया के ये शख़्स तनदुरूस्त होकर सवाल कर रहा है। हालाँके खुद कमा भी सकता है। शब को सोए तो ख़्वाब में देखा के एक ख़्वान सर पोश से ढका हुआ सामने रखा है। और लोग कहते हैं। के खाओ हज़रत जुनैद ने सर पोश उठाया। तो देखा वही सायल दुरवैश मुर्दा उसमें रखा हुआ है। जुनैद फ़रमाने लगे के मैं मुर्दाखौर तो नहीं हूँ? लोगों ने जवाब दिया। तो फिर आपने इस दुरवैश को दिन के वक़्त क्यों खाया था? जुनैद फ़रमाते हैं मैं समझ गया के शायद ये इशारा इसी मेरे दिली खयाल की तरफ़ हैं। पस मैं मारे हैबत के जाग उठा। और वज़ू करके दो रकात नमाज़ पढ़ी। और इस दुरवैश की तलाश में निकला। देखा के वो दरया के किनारे बैठा हुआ है। और साग जो लोग धोकर चले गए हैं। उसके टुकड़े पानी से चुन चुन कर खा रहा है मैं उसके क़रीब पहुँचा तो उसने सर उठाया और कहा। ऐ जुनैद! मेरे हक़ में जो तुम्हारे दिल में खयाल आया था। उससे तौबा कर ली! मैंने कहा हाँ! कहने लगा अब जाओ *हुवल्लज़ी युक़्बलूत्तोबाता अन इबादिही* यानी खुदा अपने बन्दों से तौबा क़बूल फ़रमाता हैं जुनैद अब दिल की हिफाज़त करना। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 440)

सबक़:- बदगुमानी व ग़ीबत बहुत बुरी चीज़ है और किसी मुसलमान भाई की ग़ीबत करना ऐसा है जैसे अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों से कोई बात छुपी नहीं रहती।

हिकायत नम्बर(462) मुंह की सियाही

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमत-उल्लाह अलेह का एक मुरीद था। जो बसरा में रहता था। उसके दिल में एक रोज़ किसी गुनाह का खयाल पैदा हुआ ये खयाल बद आते ही उसके मुंह पर सियाही फैल गई। उसने आईना में जो

अपना मुंह देखा तो बड़ा घबराया और शर्म के मारे घर से बाहर निकलना छोड़ दिया। अलग़र्ज़ तीन रोज़ के बाद उसके मुंह की सियाही कम होते होते दूर हो गई। और मुंह फिर उसी तरह रोशन हो गया। उसी रोज़ एक शख़्स आया। और हज़रत जुनैद बग़दादी अलेह अर्रहमा का एक ख़त दे गया। एक ने ख़त जो पढ़ा तो उसमें लिखा था के अपने दिल को अपने क़ाबू में रखे और बारगाहे बन्दगी के दरवाज़े पर अदब से रहो। आज मुझे तीन रात तीन दिन गुज़र गए हैं के धोबी का काम करना पड़ा ताके तुम्हारे मुंह की सियाही दूर हो। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 446)

सबक़:- पीरो मुर्शिद की बदौलत इंसान गुनाहों से बचता रहता है और अगर कोई लग़ज़िश वाके़ हो भी जाए तो पीरो मुर्शिद की एआनत व इम्दाद से उसका तदारूक भी हो जाता है। पस किसी मुर्शिद का दामन ज़रूर पकड़ना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के खुदा की याद से मुंह पर एक ख़ास नूरानियत का जलवा नज़र आता है। और गुनाहों के इरतिकाब से दिल भी सियाह हो जाता है और मुंह पर भी नहूसत छा जाती है।

हिकायत नम्बर(463) दो तलवारें

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमत-उल्लाह अलेह के पास एक सय्यद साहब तशरीफ़ लाए आप ने दरयाफ़्त किया। सय्यद साहब! आप कहाँ से तशरीफ़ लाए हैं सय्यद साहब ने जवाब दिया। गीलान से फ़रमाया आप किस की औलाद हैं? सय्यद साहब ने जवाब दिया। अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत अली रज़ी अन्ह की औलाद से हूँ। आपने फ़रमाया। आपके दादा दो तलवारें मारते थे। एक काफ़िरों को। दूसरी नफ़्स को। सय्यद साहब आप उनकी औलाद से हैं। फ़रमाईये आप कौन सी तलवार मारते हैं? सय्यद साहब ये सवाल सुनकर रोने लगे और कहने लगे आप मेरी रहनुमाई करें। और पंदो निसायह फ़रमाएँ। चुनाँचे आपने सय्यद साहब को बहुत कुछ इर्शाद फ़रमाए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 448)

सबक़:- हर मुसलमान को अपने नफ़्स से मुक़ाबला करना चाहिए और *मौतू क़बला अन तमूतू* के मुताबिक़ इस नफ़्स सरकश को मार डालना चाहिए। हज़रत अमीर-उल-मोमिनीन मौला अली रज़ी अल्लाहो अन्ह की तरह जहाँ कुफ़्फ़ार से जिहाद करने पर आमादा रहना चाहिए। वहाँ अपने नफ़्स से भी जिहाद करना ज़रूरी है इसलिए के ये भी मर्दे मोमिन का बड़ा दुश्मन है। और इसका मारना भी बहुत बड़ा जिहाद है।

नहंग व अज़दहा शेर नर मारा तो क्या मारा
बड़े मूज़ी को मारा नफ़्से अम्मारा को गर मारा

हिकायत नम्बर(664) तवाज़ौ

हज़रत उस्मान अलजीरी रहमत-उल्लाह अलेह बाज़ार में से गुज़र रहे थे के किसी गुसताख ने राख से भरा हुआ एक तबक़ अपने कोठे से आपके सर पर फैंक दिया। आपके मुरीद इस गुसताख़ पर ब्रिहम हुए तो आपने फ़रमाया के ये गुस्सा का मुक़ाम नहीं। बल्के ये तो मुक़ाम शुक्र है के जो शख़्स इस क़ाबिल था के उसके सर पर आग डाली जाए। ज़रा सी राख डालकर उसको कह दिया गया के बदला हो गया सो मैं तो शुक्र कर रहा हूँ के अल्लाह ने आग की बजाए राख पर मामला ख़त्म कर दिया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 491)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे बुराई का बदला बुराई से नहीं देते और हर वक़्त तवाज़ौ पसंद रहते हैं।

हिकायत नम्बर(465) शैतान का जाल

हज़रत अब्दुल्लाह जला रहमत-उल्लाह अलेह एक रोज़ एक खूबसूरत मजूसी लड़के को देखा और उसके हुस्नो जमाल से आप इस क़द्र मुतास्सिर हुए के उसे देखते ही रहे। थोड़ी देर के बाद हज़रत जुनैद बग़दादी अलेह अर्रहमा वहाँ से गुज़रे। तो आपने उनसे अर्ज़ की। या उस्ताद! मैं इस लड़के का हुस्नो जमाल देखकर ये सोच रहा था के ऐसी अच्छी सूरत दोज़ख़ की आग में जलेगी। हज़रत जुनैद बग़दादी ने फ़रमाया। ऐ अब्दुल्लाह! ये शैतान का एक जाल और फ़रैब नफ़्स है। जो तुझे यूं लुभा रहा है। और याद रख! के ये नज़्ज़ारा-ए-इब्रत नहीं। बल्के नज़्ज़ारा-ए-शेहवत है। अगर नज़्ज़ारा-ए-इब्रत होता तो अट्ठारह हज़ार आलम में बहुत से अजायबात हैं। तों उनसे इब्रत हासिल करता मगर ये शैतानी जाल है के उस लड़के ही के हुस्नो जमाल को तू नज़्ज़ारा-ए-इब्रत समझने लगा। अनक़रीब तुम इसकी पादाश में गिरफ़्त में आओगे। चुनाँचे अबु अब्दुल्लाह जो हाफ़िज़े क़ुरआन भी थे। क़ुरआन को भूल गए। फिर वो बरसों रोते रहे। और अपनी लग़्ज़िश की माफ़ी चाहते रहे। और तौबा करते रहे। तब जाकर अल्लाह तआला ने अपना फ़ज़्ल फ़रमाया और क़ुरआन फिर याद हो गया। उसके बाद हज़रत अबु अब्दुल्लाह फिर किसी चीज़ की तरफ़ इलतिफ़ात ना फ़रमाते थे।

(तज़्करत-उल-औलिया, सफ़ा 498)

सबक़:- जो लोग पराई औरतों को देखते और यूं कहते हैं के हम ख़ालिक हुस्नो जमाल की क़ुद्रत व सनअत को देखते हैं और जो लोग सिनेमा व तमाशा देखकर यूं कहते हैं के हम इब्रत हासिल करने के लिए सिनेमा देखते हैं। वो दरअसल शैतान के जाल में फंस चुके होते हैं। क्योंके इब्रत के लिए तो और भी हज़ारों लाखों चीज़ें मौजूद हैं। फिर एक "तमाश बीनी और नज़रबाज़ी" ही को मौजिबे इब्रत समझना शैतानी चाल व जाल नहीं तो और क्या है।

हिकायत नम्बर(466) गंवार

हज़रत अबु अलहसन बूशिंजी रहमत-उल्लाह अलेह के शहर में एक गंवार का गधा गुम हो गया वो गंवार सीधा हज़रत अबु अलहसन के पास आया। और कहने लगा मेरा गधा आपने लिया है, हज़रत ने फ़रमाया ये क्या कह रहे हो। मैंने तुझे आज ही देखा है, मुझे तुम्हारे गधे से क्या ग़र्ज़। जाओ इस इलज़ाम व इतहाम से बाज़ आओ वो गंवार कहने लगा मैं तो हरगिज़ ना जाऊँगा। और मैं शौर मचाऊँगा और मेरा गधा आप ही ने चुराया है। हज़रत अबु अलहसन ने हाथ उठाकर दुआ माँगी के इलाही! मुझे इस गंवार के मख़मसे से निजात दे दुआ माँगते ही गंवार के पास एक आदमी आया जिसने बताया के गधा मिल गया है। गंवार हज़रत के क़दमों में गिर गया। और कहने लगा हज़रत माफ फ़रमाईयेगा मुझे यक़ीन था के गधा आपने नहीं लिया मगर अपना गधा पाने की मैंने तरकीब सोची थी के हज़रत अबु अलहसन जो मक़्बूले खुदा है। उसे तंग करो तो वो अल्लाह से दुआ माँगेगा। अल्लाह क़बूल फ़रमाएगा और मेरा गधा मिल जाएगा। चुनाँचे ऐसा ही हुआ। (तज़्करत-उल-औलिया, सफ़ा 529)

सबक़:- एक गंवार तक को भी ये इल्म है के अल्लाह वालों की दुआएँ क़बूल होती हैं और उनकी बारगाह में हाज़िर होने से मुश्किलात टल जाती हैं। फिर जो पढ़ा लिखा होकर भी उन अल्लाह वालों को अपने बराबर समझे तो वो इस गंवार से भी गया गुज़रा हुआ या नहीं?

हिकायत नम्बर(467) ज़माना नबुव्वत से बाद

हज़रत हकीम तिरमीज़ी रहमत-उल्लाह अलेह बड़े हसीनो जमील थे एक बार एक मालदार औरत उनके सामने आई और उन पर फ़रीफ़्ता हो गई। और

हज़रत से अपनी दिली कैफियत बयान की। हज़रत ने लाहोल पढ़ी और वहाँ से भागे। फिर जब तीस बरस के बाद आप बूढ़े हो गए तो आपको एक मर्तबा यही जवानी के आलम का वाक़ेया याद आया और दिल में सोचने लगे के अगर मैं उस वक़्त उस औरत का दिल ना तोड़ता और बाद में तौबा कर लेता तो क्या मुज़ायक़ा था। ये खयाल आते ही आप चौंके और रोने लगे। और नफ़्स को मलामत करने लगे के ऐ बदज़ात! गुनाहों के दिलदादा! जवानी में तो ये आरज़ू ना हुई। अब बुढ़ापे में इस क़द्र मुजाहिदे और रियाज़त के बाद भी गुनाह करने पर ये पशेमानी? हीहात! हीहात! और बहुत ग़मगीन हुए के ये खयाल क्यों आया? तीन रोज़ इसी परेशानी में रहने के बाद ख़्वाब में सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत हुई। हुज़ूर ने फ़रमाया: ऐ तिरमिज़ी रंजीदा मत हो। इस खयाल के आने में तुम्हारा क़सूर नहीं। इसकी वजह ये है के मेरे इन्तिक़ाल को तीस बरस और गुज़र गए और तुम्हारा ये बुढ़ापे का ज़माना मेरे ज़माने से तीस बरस और दूर गुज़र गया और इस क़िस्म के खयाल मेरे ज़माने से दूरी और बाद की वजह से हैं। तुम मतलक़ ना घबराओ और अल्लाह अल्लाह करते रहो। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 535)

सबक़:- अल्लाह वालों के दिल में किसी क़िस्म का बुरा खयाल भी पैदा हो जाए तो इस पर रंजीदा और परेशान हो जाते हैं। फिर ऐसे लोग बुरे कामों से क्यों ना मेहफ़ूज़ होंगे? और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को अपनी उम्मत की परेशानियों और सारी कैफियतों का बादअज़ विसाल शरीफ भी इल्म है। और हुज़ूर अपने ख़ास ग़ुलामों की तसल्ली व तसकीन के लिए अब भी तशरीफ़ फ़रमा होते हैं और ये भी मालूम हुआ के ज़माना नबुव्वत बड़ा ही बाबर्कत व रहमत का ज़माना था। और नमाज़ जिस क़द्र इस मुबारक ज़माने से दूर होता चला जा रहा है। इसी क़द्र मसायब व आलाम और ज़नूब व मआसी बढ़ रहे हैं।

हिकायत नम्बर (468) दो सूफी

हज़रत अब्दुल्लाह हनीफ रहमत-उल्लाह अलेह के मिलने को दो सूफी दूरराज़ मुल्क से आए जब आपकी ख़ानक़ाह में पहुँचे तो उन्हें मालूम हुआ के हज़रत अब्दुल्लाह बादशाह के दरबार गए हैं। उन दो सूफ़ियों ने दिल में सोचा के ये कैसा वली है जो बादशाहों के दरबार में जाता है। फिर वो वहाँ से निकल कर शहर में घूमने लगे। जब वो एक दर्ज़ी की दुकान के पास

पहुँचे तो उन्होंने सोचा के हमारा खिरक़ा फट रहा है उसे सी लें। चुनाँचे दर्ज़ी की दुकान पर गए और उससे सुई तलब करके अपना खिरक़ा सीने लगे। इत्तिफाक़न दर्ज़ी की कैंची खो गई। और दर्ज़ी ने गुमान किया के मेरी कैंची इन्हीं दो सूफियों ने चुराई है। चुनाँचे वो इन दोनों को पकड़ कर बादशाह के पास ले गया। और कहने लगा के ये दोनों मेरी कैंची के चोर हैं। हज़रत अब्दुल्लाह हनीफ वहीं तशरीफ़ फ़रमा थे। आपने बादशाह से फ़रमाया ये तो दो सूफी मनशन इंसान हैं इनका ये काम नहीं हो सकता। इन्हें छोड़ दो। बादशाह ने हज़रत के कहने पर उनको छोड़ दिया। फिर आप ने इन दोनों सूफियों से फ़रमाया। भाई तुम्हारी बदगुमानी दुरूस्त ना थी मैं ऐसे ही कामों के लिए यहाँ आया हूँ। ये बात देखकर दोनों आपके मुरीद हो गए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 571)

सबक़:- अल्लाह वालों से जो बदगुमान होता है वो मुश्किलात में घिर जाता है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की हर अदा में कोई ना कोई हिकमत होती है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों को दिली कैफियात का भी इल्म होता है।

हिकायत नम्बर(469) सफेद बाज़

हज़रत अबु मोहम्मद जरीरी रहमत-उल्लाह अलेह ने एक मर्तबा फ़रमया के चालीस साल से मैं एक सफे बाज़ की तलाश में हूँ। लेकिन वो आज तक नहीं मिला। मुरीदैन ने अर्ज़ किया। हुज़ूर इस राज़ से मतलअ फ़रमाएँ। आपने फ़रमाया के आज से चालीस साल पहले मैं एक रोज़ नमाज़ अस्र से फारिग़ होकर मस्जिद में बैठा था के मैंने एक नोजवान को देखा। जो नंगे पाँव और ज़र्दरू और बिखरे हुए बालों वाला और सर झुकाए हुए था। वो मस्जिद में दाखिल हुआ और वज़ू करके नमाज़ पढ़ने लगा। और नमाज़ पढ़ने के बाद फिर सर झुकाए वहीं बैठा रहा। फिर नमाज़ मग़रिब का वक़्त हुआ तो जमात के साथ उसने भी नमाज़ पढ़ी। और नमाज़ के बाद फिर वो सर झुका कर बैठ गया। इस रात ख़लीफा के हाँ सब सूफियों की दावत थी। मैंने उस नोजवान से कहा। ऐ दुरवैश मैं ख़लीफा के हाँ दावत में जा रहा हूँ। तुम भी चलोगे? उसने कहा। मुझे ख़लीफा की दावत की परवाह नहीं है हाँ अगर आपका जी चाहे तो थोड़ा सा हलवा मेरे लिए लेते आईयेगा। मैंने उसकी इस बात पर तवज्जह ना की। और दावत पर चला गया। और जब वापस आया तो देखा के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाए हैं। और

हमराह हज़रत इब्राहीम हज़रत मूसा कलीम अलेहिमस्सलाम भी हैं और दीगर अंबिया इक्राम अलेहिम अस्सलाम भी हैं। मैंने सलाम अर्ज़ किया। तो हुज़ूर अनवर ने अपना रूख अनवर फैर लिया। मैंने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! क्या मुझ से कोई खता वाके हो गई है? हुज़ूर ने फ़रमाया हाँ! हमारे दोस्तों में से एक ने तुम से हलवा माँगा। और तुम ने पेहलूतही की मैं उसी वक़्त ख़्वाब से चौंक पड़ा और रोने लगा। और दौड़ा हुआ मस्जिद में आया। क्या देखता हूँ के वही नोजवान मस्जिद से निकल कर बाहर जा रहे हैं। मैंने जाकर अर्ज़ की, के जनाब ज़रा ठहर जाइये मैं अभी हलवा लाता हूँ। उन्होंने फ़रमाया सच है। जब कोई दुरवैश हुज़ूर सय्यद-उल-अंबिया और दीगर अंबिया अलेहिम अस्सलाम को सिफारशी लाए तब कहीं आप से हलवा पाए। बेशक बड़ा मुश्किल काम था पस ये कहा और चले गए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 574)

सबक़:- ख़ाकसाराने जहाँ राबक़ारत मंगर
तू चै दानी के दरीं गर्द सवारे बाशिद

हदीस के मुताबिक़ बहुत से गर्द आलूद चेहरों और बिखरे हुए बालों वाले खुदा के मक़्बूल व मुक़र्रिब बन्दे होते हैं। पस इन बज़ाहिर सादा मिज़ाज बन्दों को हिक़ारत की नज़र से ना देखना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूलों का लिहाज़ खुद सरवरे अंबिया सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को भी होता है। लिहाज़ा उन अल्लाह वालों की दिलशिकनी रसूल अल्लाह सल-अल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नाराज़गी का मौजिब है। और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उम्मत के जुमला हालात से बाख़बर हैं और हुज़ूर के सदके में जो अल्लाह वाले हैं वो भी सब कुछ जान लेते हैं।

हिकायत नम्बर (470) तेल और पानी

हज़रत अबु इसहाक़ इब्ने इब्राहीम रहमत-उल्लाह अलेह एक रोज़ वाज़ फ़रमा रहे थे मजमआ बहुत ज़्यादा था और इस मजमअे में खरासान के एक आलिम भी थे। लोगों पर वाज़ का बड़ा असर हो रहा था। और सब हाज़ीन पर एक कैफियत तारी थी। वो आलिम दिल मे सोचने लगे के में भी बड़ा आलिम हूँ। लेकिन मेरे वअज़ में ये बात क्यों नहीं? और उनके वअज़ में इतना असर क्यों है? हज़रत अबु इसहाक़ ने वअज़ फ़रमाते हुए ही क़नदील की तरफ़ नज़र फ़रमाई। और फ़रमाया। इस क़नदील में पानी और तेल का मुनाज़रा हो

रहा है। पानी तेल से कह रहा है के मैं तुम से ज़्यादा अज़ीज़ हूँ। सारी ख़लक़त की ज़िन्दगी मुझ से है। मगर ये क्या बात! के तू मेरे सर पर आके बैठा है। तेल जवाब दे रहा है के मुझे ये मर्तबा इसी वजह से हासिल हुआ है के मैंने तरह तरह के रंज उठाए हें मैं बोया गया। फिर काटा गया। फिर मुझ पर चक्की चली। फिर मैं ओरों को रोशनी देने के लिए अपने आपको जलाता हूँ। इसी वजह से मैं तुम से बरतर हूँ। वो आलिम ये सुनकर उठे। और ख़िदमत में हाज़िर होकर अपने खयाल से तौबा की। (तज़रकत-उल-औलिया, सफ़ा 618)

सबक़:- अल्लाह वाले बड़े बड़े मुजाहिदों के बाद मंज़िल तक पहुँचते हैं और मख़लूक़ के खयालात को भी जान जाते हैं।

हिकायत नम्बर(471) दाना मुरीद

हज़रत जुनैद रहमत-उल्लाह अलेह का एक मुरीद था। जिसकी तरफ़ आप ज़्यादा मुतवज्जह होते थे। बअज़ों को बुरा मालूम हुआ। तो हज़रत ने फ़रमाया के ये मेरा मुरीद अबद और अक़्ल में तुम से बढ़ा हुआ है। इस वजह से मैं उसे बहुत चाहता हूँ। लो मैं दिखाता हूँ ताके तुम्हें भी मालूम हो जाए के इसमें क्या ख़सूसियत है। आपने फिर हर मुरीद को एक एक मुर्ग़ी दी। और एक एक छुरी और फ़रमाया के ऐसी जगह इन मुर्ग़ियों को ज़िबह कर लाओ जहाँ कोई देखने वाला ना हो। चुनाँचे सब गए और पौशीदा जगहों में इन मुर्ग़ियों को ज़िबह करके ले आए। मगर वो दाना मुरीद वैसे ही ज़िन्दा मुर्ग़ी फैर लाया। हज़रत ने पूछा, के तुम ने ज़िबह क्यों ना की? तो बोला, हुज़ूर मैं जिस जगह भी पहुँचा। वहाँ अल्लाह तआला देखने वाला मौजूद था। इसलिए मजबूरन वापस ले आया हूँ। हज़रत ने फ़रमाया देख लो। ये है इसका वस्फ़ खास जिसकी वजह से में उसे बहुत चाहता हूँ। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 447)

सबक़:- इंसान अगर इस बात पर सही मअनों मं यक़ीन कर ले, के खुदा हर जगह हर फैल को देखने वाला मौजूद है तो कभाी कोई गुनाह करे।

हिकायत नम्बर(472) आँसू

हज़रत अबु बक्र शिबली रहमत-उल्लाह अलेह ने एक मर्तबा चूलहे में एक लकड़ी को जलते देखा जो एक तरफ़ से जल रही थी और उसकी दूसरी तरफ़ से पानी निकल रहा था। आप ये देखकर रो पड़े। और फ़रमाया। लोगा! अगर तुम भी आतिश शौक़ में जलते हो और इस दावे में सच्चे हो तो तुम्हारी

आँखों से आँसू क्यों नहीं बहते। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 427)

सबक़:- जिनके दिलों में आतिशे शौक़ मौजूद है उनकी आँखों से अक्सर आँसू भी बहते हैं।

हिकायत नम्बर(473) इसतम्दाद

एक क़ाफले वाले सफर को जाते हुए पहले अबु अलहसन ख़रक़ानी रहमत-उल्लाह अलेह की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ करने लगे के हुज़ूर! राह ख़तरनाक है। कोई दुआ सिखाईये, जिसकी बदौलत हम महफूज़ व मामून रहें। हज़रत अबु अलहसन ने फ़रमाया जब किसी मुश्किल का सामना देखो। तो मुझे याद कर लेना। क़ाफले वालों को ये बात पसंद ना आई। और वो आपस में कहने लगे के मुश्किल के वक़्त हम अल्लाह को क्यों याद ना करें। उन्हें याद करें? चुनाँचे वो चले गए। इत्तिफाक़ से रास्ते में डाकूओं ने आ घेरा। और वो उनके नरगे में घिर गए एक शख़्स ने उसी वक़्त हज़रत अबु अलहसन का नाम लिया। और अर्ज़ किया के हुज़ूर! इम्दाद फ़रमाईये। वो शख़्स ये कहते ही ग़ायब हो गए। डाकूओं ने बाक़ी सारे क़ाफ्ले वालों को लूट लिया। मगर वो शख़्स जिसने हज़रत अबु अलहसन को याद किया था। बच गया। डाकू अपना काम करके जब चले गए तो वो शख़्स फिर ज़ाहिर हुआ। और लुटे हुए साथियों ने उससे पूछा, तुम कैसे बच गए। और कहाँ ग़ायब हो गए थे! तो उसने सारा क़िस्सा सुनाया। फिर जब ये लोग लौट कर हज़रत अबु अलहसन के पास पहुँचे। और दरयाफ़्त किया। के हज़रत उसकी वजह क्या है? के हम सब तो ख़ुदा को पुकारते रहे। मगर ना बचे। और जिसने आपको याद किया वो बच गया। आपने फ़रमाया भाई! तुम लोग ख़ुदा को पुकारते तो हो मगर महज़ ज़बान से दिल से नहीं और अबु अलहसन दिल से पुकारता है बल्के दिल कें भी दिल से। पस तुम अबु अलहसन को याद करो। ताके अबु अलहसन तुम्हारे लिए ख़ुदा को याद करे। और तुम अपने मक़्सद में कामयाब हो जाओ। इसलिए के महज़ रसमन और आदतन हज़ार बार भी पुकारना ग़ैर मुफीद है। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 632)

सबक़:- असल मदद और हक़ीक़ी एआनत अल्लाह ही की तरफ़ से है। और अल्लाह के मक़्बूल बन्दे मज़हरऊने इलाही हैं। उन अल्लाह के बन्दों को मुश्किल के वक़्त याद करना सिर्फ इसलिए होता है के वो हुज़ूर क़ल्ब से अल्लाह के हुज़ूर दुआ करके हमारी मुश्किल आसान करा दें।

हिकायत नम्बर(474) सुलतान मेहमूद दर खरक़ानी पर

हज़रत अबु अलहसन ख़रक़ानी रहमत-उल्लाह अलेह के कशफ व करामात का तज़करह जब सुलतान मेहमूद ग़ज़नवी रहमत-उल्लाह अलेह ने सुना। तो सुलतान को आपकी ज़ियारत व मुलाक़ात का शौक़ पैदा हुआ और कई दफा आपको ग़ज़नी आने की दावत दी लेकिन हज़रत ने क़बूल ना फ़रमाई। आख़िर सुलतान मेहमूद ग़ज़नी से रवाना होकर ख़रक़ान पहुँचा। और शहर के बाहर शाही ख़ैमा गाड़ दिया। और एक क़ासिद हज़रत की ख़िदमत में रवाना करके उसके हाथ कहला भेजा। के बादशाह वक़्त आपकी ज़ियारत के लिए ग़ज़नी से आपके वतन ख़रक़ान आया है। आप ज़रा क़दम रंजा फ़रमा कर बादशाह के ख़ैमे तक अगर तशरीफ़ ले चलें तो बड़ी मेहरबानी होगी। साथ ही क़ासिद को समझा दिया के अगर शेख़ यहाँ आने से मअज़ूरी का इज़हार करें तो इन्हें ये आयत सुना देना *अतीउल्लाहा व अतीऊर्रसूला व ओलिल अमरी मिनकुम* "यानी इताअत करो अल्लाह और उसके रसूल की और *ओलिल अमरी* यानी बादशाहे वक़्त की।"

जिस वक़्त क़ासिद शेख़ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और बादशाह का फ़रमान सुनाया तो शेख़ ने बादशाह के ख़ैमे तक जाने से मअज़ूरी ज़ाहिर की। तो उस पर क़ासिद ने आयात मज़कूरा पढ़कर कहा के उसकी रू से बादशाह की इताअत आप पर फर्ज़ है। आपने जवाब दिया के बादशाह से कह दो के मैं अभी *अतीउल्लाह* के फ़रमान ही से सबुकदोश नहीं हो सका हूँ। और उसके बाद *अतीऊर्रसूला* के बेशुमार फ़रामीं भी आदा करने बाक़ी हैं। ख़ुदा जाने *ओलिल अमरी* की। इताअत की बारी ज़िन्दगी में पेश आएगी या नहीं? अभी तो अतीउल्लाह से ही लम्हा भर फ़ुरसत नहीं। क़ासिद ने जब सुलतान के पास हज़रत की तरफ़ से ये मसकत और माक़ूल जवाब दिया तो सुलतान ने कहा के हज़रत ने हमें ला जवाब कर दिया। अब हमें हज़रत के हुज़ूर चलना चाहिए। चुनाँचे सुलतान मेहमूद ने हज़रत के बातिनी कशफ का इम्तिहान लेने का ये हीला बनाया के अपने ग़ुलाम अयाज़ को शाही लिबास पहना कर शाही ताज उसके सर पर रख दिया। और ख़ुद अयाज़ का ग़ुलामाना लिबास पहन लिया और लोंडियों को मर्दों का लिबास पहना कर अपने साथ ले लिया और इस तरह उल्टे रूप में हज़रत की कुटिया की तरफ़ रवाना हुआ। चुनाँचे जब ये क़ाफ़ला हज़रत की बारगाह में हाज़िर हुआ। तो

हज़रत ने अयाज़ के शाहाना लिबास की तरफ़ मतलक़ तवज्जह ना फ़रमाई। बल्के सुलतान को जो उस वक़्त एक ग़ुलाम के लिबास में पीछे खड़े झाँक रहे थे। मुख़ातिब होकर फ़रमाया के इन ना मेहरम औरतों को बाहर निकाल दो। चुनाँचे उन मर्दों के लिबास में लोंडियों को बाहर निकाला गया। बअदहू हज़रत ने सुलतान से फ़रमाया के बड़ा दाम फ़रैब उठा कर लाए हो। उस पर सुलतान ने अर्ज़ किया। के आप जैसे अनक़ा के लिए हमारा दाम ना कारा व हैच साबित हुआ।

सुलतान ने उस वक़्त हज़रत से कुछ तबर्रूक तलब किया। हज़रत ने जौ की रोटी का एक सूखा टुकड़ा पेश किया। सुलतान ने बड़े एहत्राम के साथ वो टुकड़ा लेकर अशर्फ़ियों की चन्द थेलियों बतौर नज़राना हज़रत की ख़िदमत में पेश कीं और हज़रत का दिया हो तबर्रूक मुंह में डाल कर खाने लगा। इत्तिफाक़न बादशाह के नाज़ुक गले में जौ का रूखा सूखा टुकड़ा अटक गया और बादशाह खाँसने लगा। जिस पर हज़रत इन अशर्फ़ियों की तरफ़ इशारा करके फ़रमाने लगे। के ऐ मेहमूद! पैग़म्बरों की ग़िज़ा आपके गले से नीचे नहीं उतरती। और ये अशर्फ़ियाँ जो फिरौना की मीरास हैं। इस फक़ीर के गले से क्योंकर उतरेंगी? चुनाँचे सुलतान के बे शुमार इसरार, और मिन्नत व समाजत के बावजूद भी हज़रत ने अशर्फ़ियाँ लेने से इंकार कर दिया। और फ़रमाया मुझे उनकी ज़रूरत नहीं और ना ही मैं उनके लेने का हक़दार हूँ। जिनका ये माल है वही उसके हक़दार हैं। उस पर सुलतान मेहमूद और भी ज़्यादा गरवीदा हो गया। और सच्चे दिल से आपका मौतक़िद हो गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 638)

सबक़:- अल्लाह वालों को अल्लाह ने ऐसा इल्म व कशफ अता फ़रमाया है। के उनकी निगाह बातिनी से कोई चीज़ पनेहाँ नहीं रहती। और ये भी मालूम हुआ के पहले बादशाहों के दिलों में अल्लाह वालों की बड़ी अक़ीदमत व मोहब्बत होती थी। और वो लोग उन अल्लाह वालों के पास हाज़िर होते और उनके फयूज़ बर्कात से मुसतफीद हुआ करते थे।

हिकायत नम्बर(475) सोमनात

सुलतान मेहमूद ग़ज़नवी रहमत-उल्लाह अलेह को हज़रत अबु अलहसन ख़रक़ानी से बड़ी अक़ीदत थी और वो हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। तो हज़रत ने उसे अपना एक पीराहन मुबारक बतौर तबर्रूक दिया।

सुलतान मेहमूद ग़ज़नवी ने जब सोमनात पर हमला किया तो इस अज़ीम

लड़ाई में सुलतान का लश्कर लड़ते लड़ते थक गया। बहादुरों के दिल दहल गए। तलवारें कुंद हो गईं। नेज़े टूट गए। और तीर ख़त्म हो गए। ज़ाहिरी ताक़तों और मादी सामानों ने जवाब दे दिया। उस वक़्त सुलतान मेहमूद ने लाचार और मजबूर होकर रूहानी मदद की तरफ़ तवज्जह की और लश्कर से अलेहदा होकर दो रकअत नमाज़ नफिल अल्लाह की बारगाह में अदा किए। और हज़रत अबु अलहसन का दिया हुआ पीराहन हाथ में लेकर दुआ माँगी। के इलाही! इस पीराहन वाले तेरे मक़्बूल बन्दे की आबरू का सदक़े मुझ इन पर फतह अता फ़रमा। ये दुआ माँगते ही जंग का नक़्शा पलट गया।

और मेहमूद ग़ज़नवी ने जवाँ मर्दी से मुक़ाला किया। ये था हज़रत अबु अलहसन की दुआओं का असर।

सबक़:- जब मादी कोशिशें ख़त्म हो जायें वहाँ रूहानी मदद काम आती है और जो मुश्किल बड़ी बड़ी तलवारों और फौजों से हल ना हो सके। अल्लाह वालों के एक कुर्ते के सदक़े में वो मुश्किल हल हो जाती है। फिर जिन पाक लोगों के बदन से लग जाने वाले एक कपड़े का अल्लाह को इस क़द्र लिहाज़ मंज़ूर है तो जो बन्दा उन अल्लाह वालों से ताल्लुक़ पैदा करेगा उस पर अल्लाह की क्यों रहमतें नाज़िल ना होंगी। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह तआला की बारगाह में उन अल्लाह वालों की बड़ी इज़्ज़त और बड़ी आबरू है। फिर उन सब के आक़ा व मौला हुज़ूर सरवरे अंबिया सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की इज़्ज़त व आबरू और आपकी रफ़अत व अज़मत का कोई अंदाज़ा ही नहीं कर सकता। बावजूद उसके अगर यूं कहा जाने लगे के वो हमारी मिस्ल एक बशर है। तो ये किस क़द्र जहालत और ज़ुल्म है।

हिकायत नम्बर(476) सरवरे आलम(स॰अ॰स॰) और ग़ौसे आज़म(र॰अ॰)

हुज़ूर ग़ौस आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह फ़रमाते हैं के मैंने एक दिन क़ब्ल अज़ ज़ोहर जागते हुए हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत की। तो हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने मुझ से फ़रमाया, बेटा! तुम वअज़ क्यों नहीं कहते? मैंने अर्ज़ किया हुज़ूर! मैं बग़दाद के बड़े बड़े फ़ुसुहा के सामने बोल नहीं सकता। हुज़ूर ने फ़रमाया। अच्छा अपना मुंह खोलो, चुनाँचे मैंने अपना मुंह खोल दिया। हुज़ूर ने मेरे मुंह में सात मर्तबा

अपना थूक मुबारक थूका। और फ़रमाया। लो अब मजमअे में बिला ख़ौफ़ वअज़ कहना शुरू कर दो। चुनाँचे मैं नमाज़ ज़ोहर के बाद वअज़ के लिए बैठ गया। तो लोग खुद ब खुद ही मेरा वअज़ सुनने के लिए जमा होने शुरू हो गए हत्ता के एक अज़दहाम कसीर हो गया। इस मजमअे में हज़रत मौलाना अली रज़ी अल्लाह तआला अन्ह भी मेरे सामने तशरीफ़ फ़रमा नज़र आए। और मुझ से फ़रमाने लगे। बेटा! अब वअज़ क्यों नहीं कहते। मैंने अर्ज़ किया हुज़ूर! इतने बड़े मजमअे में बोलने की हिम्मत नहीं पड़ती। हज़रत अली ने फ़रमाया। अच्छा अपना मुंह खोलो। चुनाँचे मैंने अपना मुंह खोला। तो हज़रत अली ने मेरे मुंह में छः मर्तबा थूका मैंने पूछा के आपने क्यों थूका? तो हज़रत अली ने फ़रमाया अदबाअन रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम। यानी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के अदब के लिए इसलिए के हुज़ूर ने सात मर्तबा थूका था। तो मैं भी अगर सात ही मर्तबा थूकता। तो ये हुज़ूर से बराबरी हो जाती। जो बे अदबी है। इसलिए मैंने एक मर्तबा कम थूका है।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म फ़रमाते हैं। फिर मेरे सारे हिजाब उठ गए और मैं खूब वअज़ कहने लगा। (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 25। नीज़ फतावा हदीसिया इमाम इब्ने हज्र मक्की रहमत-उल्लाह अलेह, सफ़ा 213)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआा अलेह व सल्लम अपने विसाल शरीफ के बाद भी बदस्तूर ज़िन्दा हैं। और अपने ग़ुलामों के पास तशरीफ़ भी ले जाते हैं। और अहले नज़र खुश नसीब अफ़राद जागते हुए भी हुज़ूर की ज़ियारत करते हैं और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपने ग़ुलामों की आज भी मदद करते हैं और आपका थूक मुबारक भी मुनब्बअे सद उलूम व असरार है। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर(स॰अ॰स॰) के फ़ैज़ व सदक़े से सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़्वान भी ज़िन्दा हैं। और अपने ग़ुलामों के पास तशरीफ़ ले जाते हैं। और अहले नज़र जागते हुए भी उनकी ज़ियारत से मुशर्रफ होते है। और उनका थूक मुबारक भी उलूम व असरार का मख़ज़न व मुनब्बअे है। फिर जिनकी थूक हज़ारों जरासीम और बीमारियों को लिए हुए बेहूदा लोग उन पाक हस्तियों के मुमासिल कैसे हो सकते हैं। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की नस्ल पाक से हैं और सय्यद हैं। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला

अलेह व सल्लम और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के मंज़ूरे नज़र और रूश्दो हिदायत के लिए उन्हीं की तरफ़ से मामूर हैं। फिर अगर ग़ौसे आज़म से मोहब्बत ना होगी तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम और हज़रत अली रज़ी अन्ह क्यों कर राज़ी हो सकते हैं।

हिकायत नम्बर(477) बारिश

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह एक मर्तबा वअज़ फ़रमा रहे थे के बारिश होने लगी। और लोग उठने लगे। हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने आसमान की तरफ़ मुंह किया और कहा *अना अजमाऊ व अनता तुफर्रिक़ू इलाही!* मैं तेरे ज़िक्र के लिए, लोगों को जमा कर रहा हूँ और तू उन्हें मुनतशिर कर रहा है" इतना कहना ही था के बारिश फौरन थम गई। और जलसे गाह के बाहर बाहर तो बदस्तू बारिश जारी रही। मगर जलसे गाह में बारिश बिलकुल बन्द हो गई। (बहुज्जत-उल-असरार-उल-शेख अबु अलहसन अली इब्ने यूसुफ़ इब्ने जवीर-उल-खमी अलशाफई, सफ़ा 75)

सबक़:- अल्लाह वालों की जो मर्ज़ी हो, वही मर्ज़ी खुदा की भी होती है। और हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह की इतनी बड़ी शान है। के आपकी मर्ज़ी के मुताबिक़ अल्लाह तआला ने जलसे गाह के बाहर बाहर तो बारिश जारी रखी। और जलसे गाह के अन्दर बन्द करके दिखाया दिया। के मेरे मक़्बूल बन्दों की मेरे यहाँ इतनी क़द्र है। के वो जो कुछ भी चाहें मैं वैसे ही कर देता हूँ।

फायदा:- इसी किताब के इसी सफहे पर लिखा है के बाज़ दीगर बुज़ुर्गों का भी ये तजुर्बा है के वो भी किसी वक़्त बारिश में घिर गए तो उन्होंने हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ही करामत बयान की। तो बारिश फौरन थम गई।

हमारे क़स्बे "कोटली लोहाराँ" में एक मर्तबा रमज़ान शरीफ में आख़िरी जुमआ पढ़ने के लिए क़स्बे के बाहर एक खुले मैदान में बहुत बड़ा इजतिमा था। जिसमें हज़रत फिक़िया आज़म रहमत-उल्लाह अलेह वअज़ फ़रमा रहे थे के इतने में बारिश आ गई। और लोगों में इंतिशार फैलने लगा। हज़रत फिक़िया आज़म अलेह अर्रहमा ने हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की यही करामत बयान की तो बारिश फौरन थम गई। और जुमआ बड़े इतमीनान से पढ़ा गया। इस वाक़ये के अहबाब कोटली शाहिद हैं।

हिकायत नम्बर(478) दजला की तुग़यानी

एक दफा दरयाऐ दजला में सैलाब आ गया। लोग घबराए हुए हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पास आए *व यसतग़ीसूना बिही* और आपसे इसतिग़ासा करने लगे। और मदद चाहने लगे। हज़रत ग़ौसे आज़म ने अपना असाऐ मुबारक लिया। और दरया की तरफ़ चल पड़े। और किनारे दरया पर पहुँच कर आपने पानी की असल हद पर वो असा गाढ़ दिया और फ़रमाया *इलाही हाहुना* ऐ पानी बस यहीं तक! इतना फ़रमाना था के पानी ने घटना शुरू कर दिया। और इस असाऐ मुबारक तक आ गया! (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 75)

सबक़:- अल्लाह वालों की हकूमत दरयाओं पर भी जारी रहती है और एक हम भी हैं के घर का परनाला भी हमारे बस में नहीं रहता।

हिकायत नम्बर(479) ग़ौसे आज़म(र०अ०) का इल्म

एक मर्तबा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमाया, यानी अगर मेरी ज़बान पर शरीअत की रोक ना हो, तो तुम अपने अपने घरों में जो जो कुछ खाते, और जो जो कुछ जमा रखते हो, मैं उन सबकी तुम्हें ख़बर दे दूं, तुम सब मेरे सामने उन कांच की बोतलों की मानिंद हो जिनका बाहर भी नज़र आता है। और जो कुछ इन बोतलों के अन्दर हो वो भी दिखाई देता है। (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 24)

सबक़:- हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह का इल्म इस क़द्र अमीक़ और वसी था के ज़ाहिर और बातिन की कोई शै उनसे पनेहाँ ना रही। फिर अगर वो शख़्स जो एक बोतल का ज़ाहिर भी बग़ैर ऐनक के ना देख सके, उन अल्लाह वालों के इल्म में कलाम करने लगे तो किस क़द्र बेख़बर है। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का ये कमाल इल्म हुज़ूर सरवरे अंबिया सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मोहब्बत व मुताबेअत की बदौलत है। फिर जिस ज़ात वाला सिफात के एक ग़ुलाम का इस क़द्र वसी इल्म है, तो खुद इस ज़ातग्रामी के उलूम की वुसअत का क्या आलम होगा?

हिकायत नम्बर(480) डाकूओं का सरदार

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह अभी बच्चे ही थे के आपको

इल्म का और मक़्बूलाने हक़ की सोहबत का शौक़ पैदा हुआ। आपने अपनी वालिदा से अर्ज़ किया के अम्मी जान! मुझे इजाज़त दीजिए ताके मैं बग़दाद जाकर इल्मे दीन हासिल करूं। वालिदा ने फ़रमाया बेटा! जाओ इजाज़त है। और फिर चालीस दीनार लाकर हुज़ूर ग़ौसे आज़म को दिए के लो ये अपने ख़र्च के लिए साथ लेते जाओ। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने वो दीनार ले लिए। और एक बटवे में सी कर कमर के साथ बाँध लिए और बग़दाद जाने के लिए तैयार हो गए, वालिदा ने रूख़्सत करते वक़्त इर्शाद फ़रमाया के बेटा! हमेशा सच बोलना। और झूट से हमेशा किनारा कश रहना।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म वालिदा से रूख़्सत पाकर एक क़ाफ़ले के हमराह बग़दाद को चल दिए। ये क़ाफ़ला एक जंगल में पहुँचा तो साठ घोड़े सवार डाकूओं ने इस क़ाफ़ले पर हमला कर दिया। और क़ाफ़ले को लूटना शुरू कर दिया। एक डाकू हुज़ूर ग़ौसे आज़म के पास भी आया और कहा ओ फक़ीर लड़के! बता तेरे पास भी कुछ है? ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया! मेरे पास चालीस दीनार हैं। डाकू ने पूछा कहाँ हैं? फ़रमाया। ये कमर में बंधे हैं। डाकू ने इस बात का मज़ाक़ समझा और चला गया। फिर दूसरा डाकू आया। और उसने भी आपसे यही सवाल किया। और आपने उसे भी यही जवाब दिया और वो भी मज़ाक़ समझ कर चला गया। फिर तीसरा डाकू आया। और उससे भी यही सवाल जवाब हुआ। उसी तरह मुतअद्दिद डाकूओं ने आप से यही सवाल किया। तो आपने सभी से फ़रमाया के हाँ मेरे पास चालीस दीनार हैं। डाकूओं को कुछ शक गुज़रा तो वो आप को पकड़ कर अपने सरदार के पास ले आए। डाकूओं के सरदार ने भी आप से सवाल किया के क्यों ऐ फक़ीर लड़के! तुम्हारे पास भी कुछ है? आपने फ़रमाया के हाँ है! सरदार ने पूछा क्या है, फ़रमाया, चालीस दीनार। सरदार ने पूछा कहाँ हैं? फ़रमाया कमर के साथ बंधे हैं। सरदार ने आगे बढ़कर तलाशी ली तो वाक़ई चालीस दीनार निकल आए। डाकूओं का सरदार बड़ा हैरान हुआ। के इस लड़के ने अपना माल बताया क्यों? जब के डाकूओं से माल छुपाया जाता है। चुनाँचे डाकूओं के सरदार ने बड़े ताज्जुब के साथ हुज़ूर ग़ौसे आज़म से पूछा के लड़के तुम ने ये माल हम से छुपाया क्यों नहीं। और साफ साफ बता क्यों दिया? आपने फ़रमाया के मेरी वालिदा ने मुझ से सच बोलने का वादा लिया था। इसी लिए मैंने सच ही बोला। और सच ही बोलता रहूंगा। ताके वालिदा के साथ वादा शिकनी ना हो जाए। डाकूओं के सरदार ने ये बात सुनी तो चीख़ मार कर

रोने लगा। और कहा के अफसोस! ये लड़का तो अपनी वालिदा के साथ किए हुए वादे की इतनी पासदारी करे और मैं जो अपने रब से वादा कर के आया हूँ। आज तक उसे निभा ना सका। ऐ लड़के! इधर ला हाथ! मैं तेरे हाथ पर आईंदा के लिए तौबा करता हूँ। ये कहकर उसने सच्चे दिल से तौबा की। और फिर अपने मातेहत डाकूओं से कहा के जाओ भई! मेरे साथ अब तुम्हारा कोई वास्ता नहीं। उन डाकूओं ने जवाब दिया के आप हमारे सरदार हैं हमारे सरदार ही रहेंगे और वो इस तरह के हम भी सब इस बुरे काम से तौबा करते हैं। और अब हम तौबा करने वालों में भी आप ही हमारे सरदार हैं। चुनाँचे उन सब ने भी सच्चे दिल से तौबा की। और लूटा हुआ माल वापस कर के आईंदा अच्छी और शरई ज़िन्दगी गुज़ारने लगे। (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 57)

सबक़:- अल्लाह वाले कभी झूट नहीं बोलते हैं। और उनकी रास्त बाज़ी व सिद्क़ पसंदी की बदौलत हज़ारों गुमराह हिदायत पा जाते हैं। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह बचपन ही से गुमराहों के लिए हावी और मुरशिद थे।

हिकायत नम्बर (481) रमज़ान का चाँद

एक मर्तबा रमज़ान शरीफ के चाँद के बारे कुछ इख़्तिलाफ पैदा हो गया। बअज़ कहते थे के रात को चाँद हो गया। बअज़ कहते नहीं हुआ। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की वालिदा ने इर्शाद फ़रमाया के मेरा ये बच्चा (ग़ौसे आज़म) जब से पैदा हुआ है। रमज़ान शरीफ के दिनों में सारा दिन दूध नहीं पीता। और आज भी चूंके अब्दुलक़ादिर (रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह) ने दूध नहीं पिया। इसलिए रात को वाक़ई चाँद हो गया है। चुनाँचे फिर तहक़ीक़ करने पर यही साबित हुआ के चाँद हो गया है। (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 79)

सबक़:- अल्लाह वालों की सीरत बचपन ही से अच्छी होती है और उनकी आदत इब्तिदा ही से शरई आदत होती हैं, फिर अगर एक ऐसा शख़्स जिसने उम्र भर एक रोज़ा ना रख हो। हुज़ूर ग़ौसे आज़म की शान वाला में कोई गुस्ताख़ी करे। तो वो किस क़द्र गुसताख़ है।

हिकायत नम्बर (482) ग़ौसे आज़म की फूफी

एक मर्तबा जीलान में बारिश ना होने की वजह से बड़ी परेशानी वाक़े

हो गई। लोगों ने बहुत दुआएँ की। मगर बारिश ना हुई। आख़िर बहुत से लोग जमा होकर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की फूफी हज़रत आयशा रहमत-उल्लाह अलेहिमा की ख़िदमत में हाज़िर हुए। और अर्ज़ की के बारिश ना होने के बाइस बड़ी परेशानी हो रही है। दुआ फ़रमाइये ताके अल्लाह तआला हमें बारिश से मुसतफ़ीद फ़रमाए। ग़ौसे आज़म की फूफी उठीं और झाड़ू देकर अपने घर का सहन साफ करने लगीं। और फिर हाथ उठा कर कहने लगीं। इलाही! सहन को साफ मैंने कर दिया है। अब छिड़काओ तू कर दे। इतना फ़रमाना ही था के अब्र आ गया। और बारिश होने लगी। (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 98)

सबक़:- हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के वालदैन और मुतअल्लिक़ैन सभी अल्लाह के मक़्बूलों में से थे। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह तआला अपने मक़्बूलों की दुआ जल्दी सुनता है।

हिकायत नम्बर(483) कुम बिइज़निल्लाही

एक औरत अपने बच्चे को लेकर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पास हाज़िर हुई। और कहने लगी, इस मेरे बच्चे को हुज़ूर से बड़ी मोहब्बत है। मैं उसको आपके पास छोड़ती हूँ। इसकी तरबीयत फ़रमाइये और अपने फयूज़ व बर्कात से इसे माला माल कीजिए। चुनाँचे वो औरत अपने बच्चे को हज़रत ग़ौसे आज़म की ख़िदमत में छोड़ गई। कुछ दिनों के बाद अपने बच्चे को देखने के लिए आई तो देखा के उसका बच्चा कमज़ोर नातवाँ हो गया है और जौ की खुश्क रोटी खा रहा है। फिर हुज़ूर ग़ौसे आज़म की ख़िदमत में गई तो देखा के आपके आगे पकी हुई मुर्ग़ी रखी है जिसे आप तनावुल फ़रमा रहे हैं। उस औरत ने अर्ज़ किया। हुज़ूर! आप खुद तो मुर्ग़ी खा रहे हैं। और मेरा बेटा जौ की खुश्क रोटी खा रहा है। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह ने इस खाई हुई मुर्ग़ी की हड्डियों पर अपना हाथ रखा और फ़रमाया *क़ौमी बिइज़निल्लाह* इतना फ़रमाना ही था के वो मुर्ग़ी ज़िन्दा होकर बोलने लगी। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया देख जब तुम्हारा बेटा भी इस दर्जे तक पहुँच जाएगा तो जो चाहेगा खाया करेगा। (बहज्जत-उल-असरार, सफ़ा 65)

सबक़:- हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को अल्लाह तआला ने ये शान अता फ़रमाई थी के मुर्दों को क़ुम बिइज़निल्लाह फ़रमाते तो वो ज़िन्दा हो जाते थे।

हिकायत नम्बर (484) चील का सर

एक मर्तबा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह वअज़ फ़रमा रहे थे के ऊपर हवा मे एक चील चीखने लगी। और बार बार एक ही जगह चक्कर लगाने लगी हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने ऊपर देखा। और फ़रमाया *या रीहू खूज़ी रासा हाज़ीहिल हुदाती* ऐ हवा, इस चील का सर पकड़ ले" इतना फ़रमाना ही था के वो चील तड़पती हुई नीचे आ गिरी। और सर उसका अलग जा गिरा। फिर जब आप वअज़ फ़रमा चुके तो उस मुर्दा चील के पास तशरीफ़ लाए। और उसका सर और धड़ पकड़ कर इकठ्ठा किया। और फ़रमाया। बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। इतना फ़रमाना ही था के चील ज़िन्दा हो गई। और हवा में उड़ गई और इस अम्र का सारे मजमअे में मुशाहेदा किया। (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 65)

सबक़:- हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को अल्लाह ने ये शान बख़्शी थी के अल्लाह के अज़्न व अता से ज़िन्दों को मुर्दा और मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमा लेते थे।

हिकायत नम्बर (485) बायज़ीद बसतामी और सम्‌आन का बुत खाना

हज़रत बायज़ीद अलेह अर्रहमत फ़रमाते हैं के मैं एक दिन अपनी ख़ल्वत में खुश, अपने फ़िक्र में मुसतग़रिक़ और ज़िक्र में मानूस था के नागहाँ मुझे ग़ैब से आवाज़ आई। के ऐ बायज़ीद सम्‌आन के बुत खाने में आओ। और उनकी ईद में लिबास रिहबान पहन कर हाज़िर होकर शामिल हो जाओ। मैंने ये बात सुनकर कहा के मैं खुदा की पनाह माँगता हूँ इस खयाल से। फिर जब रात हुई तो हातिफ ने मेरे ख़्वाब में इसी बात का फिर एयादा किया। तब मैं इस जवाब के हातिफ से मरऊब होकर ख़्वाब से फौरन ख़ौफज़दा होकर चौंक पड़ा। उसके बाद फिर मुझे ज़ाहिरी तौर पर आवाज़ आई के (ऐ बायज़ीद) तुझ पर इसमें कोई गुनाह नहीं। तो इससे मत डर। तू मेरे नज़दीक औलिया और अख़्यार में से है। तो रिहबान का लिबास पहन ले और गले में ज़िनार डाल ले और तुझ पर कोई गुनाह नहीं उससे इंकार मत कर। बायज़ीद रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं के तब मैं जल्दी से उठा और हुक्म की तामील की और रिहबान का लिबास पहना। और समआन के बुत खाने में जाकर उनमें शामिल हो गया। फिर जिस वक़्त उनका बड़ा रिहबान

हाज़िर हुआ और वो सब जमा हुए तो उसकी बात सुनने के लिए चुप हो गए। मगर ये बड़ा रिहबान बोल नहीं सकता था गोया मुंह में लगाम दे दी गई है। तब दूसरे रिहबानों ने कहा। के ऐ रिहबान ये क्या बात है के तुम कुछ गुफ़्तगू नहीं करते। ताके तुम्हारी बात से हिदायत पाकर तेरे इल्म की पैरवी करें। रिहबान ने कहा के मुझे किसी शख़्स ने गुफ़्तगू करने से नहीं रोका। के मैं बात ना करूं। लेकिन बात ये है के कोई शख़्स मोहम्मदी तुम्हारे में बैठा हुआ है और वो तुम्हारे दीन के इम्तिहान लेने को आया है। उन लोगों ने कहा हमें दिखलाइये। वो कौन है, ताके हम उसको इसी वक़्त क़त्ल कर डालें। रिहबान ने कहा के नहीं उसे क़त्ल मत करो। लेकिन दलील और हुज्जत से उसे मारो। उन्होंने कहा। के जैसा आप चाहें वैसा करें।

हज़रत बायज़ीद फ़रमाते है। के उनका बड़ा रिहबान खड़ा हुआ। और आवाज़ दी ऐ शख़्स मोहम्मदी तुम को हज़रत मोहम्मद (सल-लल्लाहो तआला अले व सल्लम) की क़सम है के तुम उठ के खड़े हो जाओ। ताके हम देखें। तब बायज़ीद उठकर खड़े हो गए और ज़बान से तसबीह और तक़्दीस और तमहीदे इलाही जारी थी। तब रिहबान ने कहा के ऐ मोहम्मदी! मैं आपसे कुछ मसायल पूछना चाहता हूँ। अगर उनके जवाब आपने दे दिए तो हम तेरे ताबअे हो जाएंगे। अगर तुम जवाब देने से आजिज़ हो गए तो हम तुझे क़त्ल कर डालेंगे। हज़रत ने फ़रमाया मंज़ूर है। मक़ूल व मनक़ूल से जो चाहो पूछ लो। मैं जवाब दूंगा। चुनाँचे रिहबान ने सवालात शुरू किए और पूछने लगा। बताओ के:-

वो एक चीज़ क्या है जिस जैसी दूसरी कोई चीज़ नहीं।
वो दो क्या हैं, जिनका तीसरा नहीं।
वो तीन क्या हैं, जिनके साथ चौथा नहीं।
वो चार क्या हैं, जिनके साथ पाँचवा कोई नहीं।
वो पाँच क्या हैं, जिनके साथ छठा नहीं।
वो छः क्या हैं, जिनके साथ सातवाँ नहीं।
वो सात क्या हैं, जिनके साथ आठवाँ नहीं।
वो आठ क्या हैं, जिनके साथ नवाँ नहीं।
वो नो क्या हैं, जिनके साथ दसवाँ नहीं
वो दस क्या हैं जो कामिल हैं।

और ग्यारह क्या हैं। बारह क्या हैं। तेरह क्या हैं और चौदह क्या हैं जो अल्लाह से बातें करती हैं। और बतलाओ! के एक क़ौम ने झूट बोला। और

वो जन्नत में दाखिल हो गई और एक क़ौम ने सच बोला और वो दोज़ख़ में डाली गई। और *ज़ारियाते ज़रवन* क्या हैं और *हामिलाते वक़रन* क्या है। और *जारियाते युसरन* क्या है और *मुक़स्सिमाती अमरन* क्या है?

और बताओ! के वो क्या चीज़ है के बग़ैर रूह के दम लेती है। और वो क़ब्र कौनसी है जो साहब क़ब्र को लिए फिरती है। और वो पानी कौन सा है जो ना आसमान से आया और ना ज़मीन से निकला।

और बताओ! वो चार चीज़ें क्या हैं जो ना जिन्न है ना आदमी ना फरिश्ता। और ना वो बाप की पुश्त से हैं और ना माँ के शिकम से।

और बताओ! के सबसे अव्वल ज़मीन में किस ने ख़ून किया, और वो क्या चीज़ है जिसको खुदा ने पैदा किया और उसको अज़ीम फ़रमाया। और सबसे अफ़्ज़ल औरत कौन सी है। और सब से अफ़्ज़ल दरया कौन सा और सब से अफ़्ज़ल पहाड़ कौन सा है और सबसे अफ़्ज़ल चारपाया कौन सा है। और सबसे अफ़्ज़ल महीना कौन सा है और सबसे अफ़्ज़ल कौन सी रात है और अलतामिया क्या है। और वो कौन सा दरख़्त है जिसकी बारह टहनियाँ हैं। और हर टहनी में तीस पत्ते हैं और हर पत्ते में पाँच शगूफे हैं। और दो इन में धूप के अन्दर हैं और तीन साये में। और वो क्या चीज़ है जो बैत–उल–हराम का हज करती है। मगर उसमें रूह नहीं और ना उस पर हज फर्ज़ है।

और बताओ! के कितने अल्लाह तआला ने पैदा किए। और कितने मुरसिल हैं और कितने ग़ैर मुरसिल हैं। और वो चार चीज़ें क्या हैं। जिनका मज़ा और रंग मुतलिफ है। लेकिन उनकी असल क्या है।

और बताओ! के फक़ीर और फतील और क़तमीर क्या हैं और सब्द और लब्द और तम और रम क्या हैं।

और बताओ! जब कुत्ता भोकता है तो क्या कहता है और गधा हींकता है तो क्या कहता है और बैल बोलता है। तो क्या कहता है। और घोड़ा जब हिनहिनाता है तो क्या कहता है। और ऊँट जब बोलता है तो क्या कहता है और मोर जब बोलता है तो क्या कहता है और तीतर अपनी आवाज़ में क्या कहता है और बुलबुल अपनी आवाज़ में क्या कहती है। और मेंढक अपनी आवाज़ तसबीह में क्या कहता है और संख जब बजता है तो वो क्या कहता है।

और बताओ! के वो कौन सी क़ौम है जिस पर अल्लाह ने वही की ना वो जिनों में है ना आदमियों में से। और ना फरिश्तों में।

और बताओ! रात कहाँ जाती है, जब दिन निकलता है और जब रात

हो जाती है, दिन कहाँ चला जाता है।

जब रिहबान ये सवालात कर चुका तो हज़रत बायज़ीद ने पूछा के कोई और सवाल भी बाक़ी है। रिहबान ने जवाब दिया नहीं! तब हज़रत ने फ़रमया के अगर मैं ने जवाबात इन सवालों के दे दिए तो तुम अल्लाह तआला और उसके रसूल मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम पर ईमान लाओगे? तब सबने इक़्रार करके कहा के हम ईमान ले आऐंगे। पस हज़रत बायज़ीद ने फ़रमाया के ऐ अल्लाह तू गवाह है इस बात का जो कुछ ये लोग कहते हैं।

लो सुनो अपने सवालों के जवाब! जो सवाल किया तुम ने, के वो एक क्या है जिस जैसा दूसरा नहीं, पस वो अल्लाह तआला अज़्ज़ोजल है। और जो दो हैं तीसरा उनके साथ नहीं वो रात और दिन हैं। बमौजिब क़ौल अल्लाह तआला के *व जअलनल्ल लैली वन्नहारी आयातीन।* और जो तीन हैं चौथा उनके सानहीं वो अर्श है। कुर्सी और कलम हैं। और चार हैं पाँचवाँ उनके साथ नहीं। वो चार किताबें हैं, तौरेत और ज़बूर और इंजील और क़ुरआन हैं। और जो पाँच हैं छटा उनके साथ नहीं। वो पाँच फर्ज़ हैं नमाज़ पंज वक़्ता जो तमाम मुसलमान मर्दों और औरतों पर फर्ज़ हैं। और जो छः हैं सातवाँ उनके साथ नहीं। वो छः दिन हैं जिनकी बाबत अल्लाह तआला फ़रमाता है *वलक़द ख़लक़नस समावाती वलअर्ज़ी वमा बैनाहुमा फी सित्ताती अय्यामिन।* और जो सात हैं आठवाँ उनके साथ नहीं। वो सात आसमान हैं। जैसे अल्लाह तआला फ़रमाता *ख़-ल-क़ समावातिन तिबाक़ा।* और जो आठ हैं नवाँ उनके साथ नहीं। वो अर्शे अज़ीम के उठाने वाले आठ फरिश्ते हैं। जैसे अल्लाह तआला फ़रमाता है *व यहमिल अर्शा रब्बिका फोक़ाहुम योमाईज़िन समानिय्यत।* और जो नो हैं दसवाँ उनके साथ नहीं। वो नो आदमियों का गिरोह है। जिन्होंने ज़मीन पर फसाद किया था। जैसे अल्लाह तआला ने ख़बर दी है *वकाना फिल मदीनती तिसअतू रहूतिन युफ़्सिदूना फिल अर्ज़ी वला युसलीहून।* और जो दस कामिला का सवाल है वो दस फ़रायज़ हैं, जो मक्के में हाजियों पर वाजिब हैं। जब के वो हरम में हों। जैसे अल्लाह तआला फ़रमाता है *फसियामू सलासती अय्यामिन फिल हज्जी व सबअतू इज़ा रजअेतुम तिलका अशरतुन मिलातुन।* और जो ग्यारह हैं, वो हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के ग्यारह भाई हैं और जो बारह हैं महीने साल के हैं और जो तेरह है। वो यूसुफ़

अलेहिस्सलाम के ख़्वाब हैं जैसे अल्लाह तआला फ़रमाता है *इन्नी रायतू अहदा अशरा कोकबवँ वश्शम्सा वलक़मरा।* और जो तुम्हारा सवाल है के वो क़ौम कौन है जिसने झूट बोल और बहिश्त में दाखिल हुई वो हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के भाई हैं जैसे अल्लाह तआला ने फ़रमायाः *व जाअऊ अला क़मीसिही बिदामिन कज़िब।* और वो क़ौम जिसने सच बोला और दोज़ख़ में डाली गई वो यहूद और नसारा हैं। जैसे अल्लाह तआला ने फ़रमायाः *वक़ालातिल यहूदो लेसातिन्न नसारा अला शेइन व क़ालातिन्न नसारा लेसातिल यहूदा अला शेइन फहुम सदाक़ व उदखिलून्नार।* और *ज़ारियाती ज़रवन* चार हवायें हैं। और *हामिलाती वक़रन।* बादल हैं। और *जारियाती युसरन* वो दरया में चलने वाली कशतियाँ हैं *मुक़स्सिमाती अमरन* वो फरिश्ते हैं जो निस्फ शब शअबान को लोगों पर रिज़्क़ तक़सीम करते हैं। और जो चौदह चीज़ें खुदा के साथ कलाम करती हैं। वो सात आसमान और सात ज़मीनें हैं जैसे अल्लाह तआला ने *फक़ाला लहा व लिलअर्ज़ी ईतिना तौअन ओ कराहन क़ालिता अतीना ताईअीन।* और वो क़ब्र जो अपने क़ब्र वाले को लिए फिरती थी। वो यूनुस अलेहिस्सलाम की मछली है। और ये सवाल के अल्लाह ने कितने नबी पैदा किए। और कितने मुरसिल और कितने ग़ैर मुरसिल। सो अल्लाह तआला ने एक लाख कई हज़ार नबी पैदा किए। इनमें से तीन सौ तेरह मुरसिल हैं, और वो चीज़ जो बग़ैर रूह के सांस लेती है। वो सुबह है। और वो पानी जो ना आसमान से है और ना ज़मीन से निकला है। वो शीशा है जिस में बिलक़िस ने हज़रत सुलैमान अलेहिस्सलाम के पास घोड़े का पसीना भेजा था। वो चार चीज़ें जो ना जिन्न हैं ना आदमी ना फरिश्ता ना बाप की पुश्त से और ना माँ की शिकम से। वो चार ये हैं। एक उनमें दुंबा हज़रत इसमाईल अलेहिस्सलाम का, दूसरी ऊंटनी सालेह अलेहिस्सलाम की तीसरी आदम अलेहिस्सलाम। चौथी माई हव्वा हैं। और ये सवाल के वो क्या चीज़ है, और ये सवाल के वो क्या चीज़ है, जिसको अल्लाह तआला ने पैदा किया। और फिर उससे कराहत की। वो गधे की आवाज़ है जैसे फ़रमाया अल्लाह तआला ने। *इन्नल अनकरल असवती लसोतुल हमीर* और ये सवाल के सबसे पहले क़त्ल या खून ज़मीन पर किस ने किया। वो खून है जो क़ाबील ने अपने भाई हाबील को क़त्ल किया। और ये के वो कौन सी चीज़ है जिसको अल्लाह तआला ने पैदा किया। और उसको अज़ीम फ़रमाया। वो औरतों का मक्र है। जैसे अल्लाह तआला ने फ़रमाया *इन्ना केदाकुन्ना अज़ीम।* और ये

सवाल के औरतों में अफ़्ज़ल कौन है। सो वो ये हैं जो उम्मुल बशर हज़रत ख़दीजा, हज़रत आयशा, हज़रत आसिया, हज़रत मरयम बिन्ते इमरान रज़ी अल्लाहो अनहन। और दरयाओं में अफ़्ज़ल सीहून, जीहून, फ़िरात, नील, मिस्र। और पहाड़ों में अफ़्ज़ल तूर है। और चार पायों में अफ़्ज़ल घोड़ा है। और महीनों में अफ़्ज़ल रमज़ान है। और *अत्तामतू* क़यामत का दिन है। और ये सवाल के वो कौन सा दरख़्त है जिसकी बारह टहनियाँ हैं और हर टहनी के तीस पत्ते और हर पत्ते में पाँच शगूफे हैं और दो उन में धूप में हैं और तीन साये में। सो वो एक साल है, टहनियाँ उसकी बारह माह हैं, और पत्ते उसके हर माह में तीस दिन हैं और पाँच शगूफे पाँच नमाज़ें हैं, दो दिन के वक़्त और तीन रात को। और ये सवाल के वो क्या चीज़ है जिसने मक्का मोअज़्ज़मा का हज किया और तवाफ किया मगर उसमें रूह नहीं। और ना उस पर हज फर्ज़ है। सो वो नूह अलेहिस्सलाम की कश्ती है। और ये के वो चार चीज़ें क्या हैं, जिनका रंग और मज़ा जुदा जुदा है। लेकिन असल एक है। वो दोनों आँखें। और वो कान और नाक और मुंह हैं। यानी आँखों का पानी नमकीन और कानों का पानी कड़वा है। और नाक का पानी तुर्श है। और मुंह का पानी शीरीं। और असल उनका दिमाग़ है जो एक है और नफीर्दा है। जो गुठली खुर्मा के पुश्त पर है और जो उसके अन्दर है। और क़तमीर उसको कहते हैं जो ऊपर का छिलका है। और सब्द और लब्द भेड़ों और बकरियों के बाल हैं। और तम और रम वो उम्मतें है। जो हज़रत आदम अलेहिस्सलाम से पहले थीं। और ये सवाल के गधा जब हींकता है तो क्या कहता है। सो वो शैतान को देखकर कहता है *लअनल्लाहुल ईशार* और कुत्ता अपने भोकने में कहता है, वैल है दोज़खियों के लिए और *गज़ब-उल-जब्बार।* और घोड़ा अपने हिनहिनाने में कहता है। अल्लाह तआला मेरा मुहाफिज़ है। जिस वक़्त झूट फैले और मर्द मर्द के साथ मशग़ूल हो। ऊँट अपनी आवाज़ में कहता है *हसबियल्लाहू व काफा बिल्लाही वकीला।* और बुलबुल कहती है पाक है अल्लाह जब सुबह हुई और शाम हुई। और मेंढक अपनी तसबीह में कहता है *सुबहानल मअबूद फिल बरारी व ग़फ़्फ़ार सुबहानल्लाही हक्कन हक्का उज़ुर या इब्ना आदम फी हाज़िहिद्दुनिया ग़रबन व शरक़न मा तरा फीहा अहदन यब्क़ा।* और ये सवाल के वो कौन क़ौम है जिसकी तरफ़ वही की गई, ना वो जिन्न में ना आदमी ना फरिश्ते। वो शहद की मक्खि है। जैसे फ़रमाया अल्लाह तआला ने *व ओहया रब्बुका इलन्नहली आयात।* और ये सवाल

के रात कहाँ जाती है, जब दिन निकलता है और दिन कहाँ जाता है। जब रात होती है तो वो दोनों अल्लाह तआला के इल्म के गढ़े में पौशीदा हो जाते हैं। (जवाबात ख़त्म हुए)

अब हज़रत बायज़ीद बसतामी अलेह अर्रहमा ने पूछा के क्या कोई और सवाल बाक़ी है? तब उन सब ने कहा के नहीं, अब हज़रत ने सवाल किया। के अब तुम बताओ के मुफ़्ताह-उल-जन्नत और मुफ़्ता-उस-समावात क्या है। यानी बहिश्त और आसमान की कुंजियाँ क्या हैं? रिहबान ने अपने लोगों से कहा के चुप रहो, बात ना करो। बायज़ीद अलेह अर्रहमा ने फ़रमाया के तुम ने मुझ से बहुत से सवालात किए। और मैंने उनके जवाबात दिए और मैंने तुम से सिर्फ एक सवाल किया और तुम जवाब नहीं देते। क्या तुम जवाब देने से आजिज़ हो। उन्होंने कहा। हाँ! हम सब जवाब देने से आजिज़ हैं। फिर वो सब लोग अपने बड़े सरदार रिहबान की तरफ़ मुतवज्जह हुए और कहा के क्या तुम भी जवाब देने से आजिज़ हो गए हो। रिहबान ने कहा के मैं जवाब देने से आजिज़ नहीं हूँ। लेकिन मैं डरता हूँ के तुम मेरी मवाफ़्क़त ना करोगे। सबने कहा के हम बेशक तेरी मवाफ़्क़त करेंगे। क्योंके तुम हमारे बड़े सरदार हो। जो कुछ आप कहेंगे हम उसको सुनेंगे और उस आपकी मवाफ़्क़त करेंगे। तब रिहबान ने कहा के कुंजी बहिश्त और आसमानों की मुसमानों के लिए *ला इलाहा इलल्लाहू मोहम्मदुर्रसूल अल्लाह* है। ये सुनते ही सब लोगों की ज़बान पर कलमा तय्यबा जारी हो गया और उसी वक़्त सबके सब दीने इस्लाम पर ईमान ले आए। और बहुत अच्छा हुआ, उनका इस्लाम लाना और बुत खाने से निकल गए और उसे गिरा दिया। और अपने ज़िनार तोड़ डाले। और उस बुतखाने को मस्जिद बना दिया।

उसी वक़्त हज़रत बायज़ीद को इलहाम हुआ के तूने हमारे लिए एक ज़िनार पहना था इसलिए हम ने तेरे लिए पाँच सौ ज़िनार तुड़वा डाले। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 40)

हिकायत नम्बर (486) चुड़िया और अंधा सांप

डाकूओं का एक गिरोह डाका ज़नी के लिए एक ऐसे मुक़ाम पहुँचा जहाँ खजूर के तीन दरख़्त थे। इन दरख़्तों में से एक दरख़्त खुश्क था। और दो फल दार थे। डाकू वहाँ आराम के लिए लेटे तो डाकूओं के सरदार ने देखा के एक चुड़िया फल दार दरख़्त से उड़कर खुश्क खजूर पर जा बैठी है और थोड़ी देर के बाद फिर वहाँ से उड़ती है और फल दार दरख़्त पर जा बैठती है

और वहाँ से उड़कर फिर उसी खुश्क दरख़्त पर आ बैठती है इसी तरह उसने कई चक्कर लगाए। सरदार ने ये देखा तो तजस्सुस के लिए खुश्क दरख़्त पर चढ़ा। और जाकर देखा के एक अंधा सांप सब से बुलंद टहनी पर लेटा बैठा है। और मुंह खोले हुए है। वो चुड़िया उसके लिए कुछ लाती है और उसके मुंह में डाल देती है। सरदार ने ये देखा तो मुतास्सिर हुआ। और वहीं कहने लगा। इलाही! ये एक मूज़ी जानवर है जिसके रिज़्क़ के लिए तूने एक चुड़िया मुक़र्रर फ़रमा रखी है। फिर मेरे लिए जो अशफ-उल-मख़लूक़ात में से हूँ। ये डाका ज़नी कब मुनासिब है? ये कहा। तो उसने हातिफ की ये आवाज़ सुनी के:-

"मेरी रहमत का दरवाज़ा हर वक़्त खुला है; अब भी तौबा कर लो तो मैं क़बूल कर लूंगा।"

सरदार ने ये आवाज़ सुनी तो रोने लगा। और नीचे उतरकर उसने अपनी तलवार तोड़ डाली और चिल्लाने लगा के मैं अपने गुनाहों से बाज़ आया, बाज़ आया, इलाही! मेरी तौबा क़बूल फ़र ले। आवाज़ आई।

"हम ने तुम्हारी तौबा क़बूल कर ली।"

सरदार के साथियों ने ये माजरा देखा तो दरयाफ़्त किया, के बात क्या है? सरदार ने सारा क़िस्सा सुनाया। तो वो सब भी रोने लगे और कहने लगे के हम भी अपने अल्लाह से मुसालेहत करते हैं। चुनाँचे उन्होंने भी सच्चे दिल से तौबा की। और बइरादा-ए-हज सारे मक्का मुकर्रमा को चल पड़े। तीन दिन की मुसाफत के बाद एक गाँव में पहुँचे। तो वहाँ एक नाबीना बुढ़िया देखी। जो इस सरदार का नाम लेकर पूछने लगी के इस जमात में वो भी है। सरदार आगे बढ़ा और कहने लगा के हाँ ऐ ज़ईफा है। और वो मैं हूँ। कहो क्या बात है? बुढ़िया उठी। और अन्दर से कपड़े निकाल लाई और कहने लगी। चन्द रोज़ हुए मेरा नेक फ़रज़ंद इन्तिक़ाल कर गया है। ये उसके कपड़े हैं। मुझे तीन रात मुतावातिर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआलास अलेह व सल्लम ने ख़्वाब में तशरीफ़ लाकर तुम्हारा नाम लेकर इर्शाद फ़रमाया है के वो आ रहा है ये कपड़े उसे देना। लिहाज़ा ऐ मर्द खुश नसीब! ये अपनी अमानत लो। सरदार ये सुनकर आलमे वज्द में आ गया। और वो कपड़े पहन कर मक्का मोअज़्ज़मा हाज़िर हुआ। और फिर अल्लाह के मक़्बूलों में शुमार होने लगा। रहमत-उल्लाह अलेह। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 126)

सबक़:- इंसान चाहे कितना ही गुनाहगार क्यों ना हो। मगर वो जब सच्चे दिल से तौबा कर ले खुदा तआला उसके पिछले गुनाह माफ फ़रमा

देता है। और अपने मक्बूलों में शामिल कर लेता है। और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपनी उम्मत के हर अमल से आज भी बा ख़बर हैं। और उनका कोई गुनाहगार उम्मती सच्चे दिल से तौबा कर ले तो आप खुश होते हैं। और उम्मत के नेक व बद अमल हुज़ूर पर सब आशकार हैं।

हिकायत नम्बर(487) शेर पर हकूमत

हज़रत सफयान सूरी रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के एक बार मैं और हज़रत सफयान दोनों हज के लिए जा रहे थे के रास्ते में एक जंगल में शेर बैठा हुआ नज़र आया। मैंने शीबान से कहा। के आपने देखा। वो रास्ते में शेर बैठा हुआ है? शीबान बोले! परवाह नहीं। चुनाँचे हम आगे बढ़े। तो हज़रत शीबान ने शेर के पास जाकर उसके कान पकड़ लिए। और फ़रमाया, हमारा रास्ता छोड़ दो शेर उठा और कुत्ते की मानिंद अपनी दुम हिलाने लगा और हुक्म पाकर वहाँ से जाने लगा। मैंने कहा। शीबान तुम ने कमाल कर दिया। वो बोले ऐ सफयान! अगर शौहरत का डर ना हो तो बखुदा मैं अपना सामान इसकी पीठ पर लाद कर उसे मक्का मोअज़्ज़मा तक ले चलूं। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 128)

सबक़:- अल्लाह वालों की ये शान है के वो अल्लाह के ताबअे होते हैं। और अल्लाह तआला हर चीज़ को उनके ताबअे कर देता है। वो अल्लाह से डरते हैं। और हर चीज़ उनसे डरने लगती है। फिर वो शख़्स जो चूहे से भी डर जाता हो उन अल्लाह वालों के मिस्ल कैसे हो सकता है।

हिकायत नम्बर(488) या लतीफ

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं के एक साल मुझे ऐसा ख़ौफ और ख़तरा पेश आया के मैं हैरान रह गया। के क्या करूं। और क्या ना करूं? उसी ख़ौफो हिरास के आलम में मैं मक्का शरीफ की तरफ़ रवाना हो गया। और रवाना इस तरह हुआ। के ना कोई सवारी पास थी। और ना रास्ते का खर्चा। इसी तरह तीन दिन चलता रहा। अेर जब चौथा दिन आया। तो मुझे गर्मी और प्यास ने बड़ा तंग किया। हत्ता के मुझे अपनी हलाकत का ख़ौफ लाहक़ हो गया। रास्ते में कोई ऐसा दरख़्त भी ना था जिसके साये में बैठता। इसी हालत में मैं *तवक्कलन अलल्लाही* क़िबला की तरफ़ रूख करके बैठ गया। ताके अगर मरूं तो रू बक़िबला होकर मरूं। बैठने के बाद नींद आ

गई और मैं बैठा बैठा ही सो गया। फिर ख़्वाब में मैंने एक नूरानी शख़्स को देखा जो मेरे पास आया। और अपना हाथ बढ़ा कर कहने लगा। अपना हाथ बढ़ाओ। मैंने हाथ बढ़ाया तो उसने मुसाफहा किया। और फ़रमाया। तुम्हें बशारत हो के तुम अनक़रीब मक्का मोअज़्ज़मा पहुँच जाओगे। और रोज़त-उल-नबी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत करोगे। मैंने कहा। आप कौन हैं? वो बोला! मैं हाज़िर हूँ। मैंने कहा। हुज़ूर मेरे लिए दुआ फ़रमाइये। वो बोले मुझ से ये दुआ सीख लो। और इस तीन मर्तबा पढ़ो। *या लतीफन बिख़ल्क़िही या अलीमन बिख़ल्क़िही या ख़बीरन बिख़ल्क़िही अलतफ़ू बी बिल्लुत्फी या अलीमू या खबीरू* "लो ये हमारे जानिब से हमशा के लिए तुम्हारे वास्ते एक तोहफा है। जब कभी कोई मुश्किल पेश आए, या कोई ख़तरा दरपेश हो, या कोई तकलीफ लाहक़ हो तो इस दुआ को तीन मर्तबा पढ़ा करो। इंशा अल्लाह वो तकलीफ दूर हो जाएगी। और खतरा टल जाएगा।" इतने में मुझे किसी ने जगा दिया। मेरी आँख खुली, तो एक शख़्स ने जो ऊँट पर सवार था, मुझे जगाया। और मुझ से पूछने लगा के मेरा लड़का इस शक्लो सूरत का तुम ने गुज़रते देखा है? मैंने नफी में जवाब दिया और असल वाक़ेया पूछा। तो वो बोला के हम दोनों बाप बेटा हज को जा रहे हैं। रास्ते में हम एक दूसरे से बिछड़ गए हैं। और मैं उसकी तलाश में हूँ। फिर उसने पूछा तुम कहाँ जाओगे। मैंने कहा मैं भी हज के लिए जा रहा हूँ। तो उसने अपना ऊँट बिठाया। और मुझे खाने को रोटी और पीने को पानी दिया। और फिर ऊँट पर बिठा लिया। और हम आगे बढ़े। थोड़ी देर चलने के बाद एक क़ाफला नज़र आ गया। जिसमें वही गुमशुदा लड़का भी मिल गया। और हम उसी क़ाफले के साथ बखैरियत मक्का मोअज़्ज़मा पहुँच गए। मक्का मोअज़्ज़मा में एक शख़्स मिला जिसने मुझे एक थेली नज़्र पेश की। जिसमें बहुत से रुपये थे। गोया अल्लाह ने मुझे वापसी के लिए ज़ादे राह भी अता फ़रमा दिया। फिर मैं मदीना मुनव्वरह भी हाज़िर हुआ। और बा इतमिनान घर वापस आया और बफज़्ल अल्लाह मेरा वो ख़तरा भी दूर हो चुका था। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 175)

सबक़:- मुश्किल व ख़ौफ के वक़्त जब अल्लाह की तरफ़ रूजू कर लिया जाए तो खुदा अपने मक़्बूल बन्दों की वसातत एआनत फ़रमाता है और ये भी मालूम हुआ के किसी तकलीफ या ख़ौफ के वक़्त हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम का बताया हुआ वज़ीफा बड़ा ही ज़ोदे असर और मफीद है। लिहाज़ा ये वज़ीफा हमें भी याद कर लेना चाहिए। ١٧

हिकायत नम्बर(489) मेहमान या मेज़बान

एक सय्यद बुज़ुर्ग एक पहाड़ी पर रहा करते थे जहाँ दिन रात वो अल्लाह की याद में मशगूल रहा करते थे। ईद का दिन आया। तो वो पहाड़ी पर से उतरे। ताके नमाज़ ईद जमात के साथ अदा करें। नमाज़ पढ़कर वो वापस पहाड़ आए। तो अपनी क़याम गाह पर उन्होंने एक ऐसे नूरानी शख़्स को नमाज़ पढ़ते हुए देखा। जिस पर सफर का कोई निशान ना था। वो बुज़ुर्ग उसे देखकर हैरान रह गए। के ये कौन है? और यहाँ कैसे और कब आया है। और फिर दिल में सोचने लगे। के आख़िर ये मेरा मेहमान है। और आज ईद का दिन है। और इस मेहमान के खिलाने को कुछ ना कुछ ज़रूर चाहिए। मगर यहाँ तो ऐसी चीज़ है नहीं फिर क्या किया जाए। इतने में इस शख़्स ने सलाम फैरा। और कहा मेरी फिक्र ना कीजिए। मुझे खिलाने वाला खुद ही कुछ खिला देगा। और फिर फ़रमाया। और अगर ज़रूर ही कुछ खिलाना पिलाना है तो थोड़ा पानी पिला दो जब पानी लाने के लिए बर्तन के पास पहुँचा तो बर्तन के पास दो ताज़ा रोटियाँ और साथ ही सालन रखा हुआ देखा। वो रोटियाँ और सालन बिलकुल ताज़ा और गर्म था। जैसे अभी अभी तैयार हुआ हो। मैं देखकर हैरान रह गया। इतने में वो पुर असरार मेहमान बोला हैरान क्यों होते हो। *फइन्ना लिल्लाही इबादन एनामा कानू वजदू मा अरादू* "अल्लाह के बअज़ बन्दे ऐसे भी हैं जो जहाँ भी कुछ चाहें पा लेते हैं, फिर फ़रमाया खाना लाओ मिलकर खायें। चुनाँचे हम दोनों ने वो खाना खाया और खाना खाने के बाद फिर उस मेहमान ने अस्सलाम अलेकुम कहा और ग़ायब हो गया।" (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 178)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों की अजीब शानें होती हैं। वो अवाम से बहुत मुमताज़ और बरगज़ीदा होते हैं और वो जहाँ भी चाहें और जो कुछ भी चाहें पा लेते हैं और दूसरों की इम्दाद एआनत फ़रमाते हैं।

हिकायत नम्बर(490) दाना दीवाना

हज़रत हारून रशीद एक साल हज को गए, तो कूफे में चन्द रोज़ ठहरे फिर वहाँ से कूच किया तो उसकी सवारी शाहाना शान से हज़रत बहलूल मजनूँ अलेह अर्रहमत के पास से गुज़री, हज़रत बहलूल ने हारून रशीद को देखा तो आगे बढ़कर कहा। ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! मुझ से एक हदीस सुनते जाओ। सुनो हज़रत अब्दुल्लाह आमरी रज़ी अल्लाहो अन्ह से रिवायत है

के एक साल हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हज को तशरीफ़ ले गए तो मिना में आपकी सवारी इस सूरत में गुज़री के आप एक ऊँट पर सवार थे और आपके नीचे एक सादा सा कजावा था और हुज़ूर की ये शाही सवारी बग़ैर किसी दुनयवी दबदबे के गुज़री। यानी ऐ हारून रशीद! तुम भी बग़ैर किसी तकब्बुर व दबदबे के इन्तिहाई तवाज़ौ से गुज़रो। हारून रशीद ये हदीस पाक सुनकर रोने लगा और कहने लगा ऐ बहलूल! कुछ और नसीहत करो। बहलूल बोले। ऐ अमीर-उल-मोमिनीन जिस शख़्स को अल्लाह ने मालो जमाल अता किया हो और वो शख़्स माल में से फ़ी सबीलिल्लाह खर्च करे और जमाल में अफ़्फ़त क़ायम रखे तो अल्लाह तआला उसे अपने मक़्बूलों में शामिल कर लेता है। हारून रशीद ने कहा *अहसनता या बहलूलु* फिर कहा ऐ बहलूल! अगर तुम पर किसी का क़र्ज़ हो तो बताओ मैं अदा कर दूं। बहलूल बोले। मगर क़र्ज़ क़र्ज़ के साथ कैसे अदा हो सकता है बेहतर है के आपके नफ़्स पर खुदा का क़र्ज़ है उसकी अदायगी की फ़िक्र कीजिए। हारून रशीद ने कहा के अच्छा आपके नाम कोई जागीर कर दूं। बहलूल ने आसमान की तरफ़ मुंह उठाया और कहा ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! मैं और आप दोनों ही खुदा के बन्दे हैं। फिर ये कैसे हो सकता है के खुदा एक बन्दे को याद रखे और दूसरे को भूल जाए। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 31)

सबक़:- अल्लाह वाले दुनिया वालों की नज़र में मजनून व दीवाने हों तो हों मगर वो दरअसल बड़े ही दाना और अक़्ल के मालिक होते हैं। और उनकी नसीहत आमोज़ बातें दीन व दुनिया के संवारने वाली होती हैं और ये भी मालूम हुआ के पहले ज़माने के बादशाहों के दिल में खुदा का ख़ौफ़ और हदीसे पाक की बड़ी अज़्मत मौजूद थी।

हिकायत नम्बर(491) गठरी

हज़रत अबु अलहुसैन नूरी रहमत-उल्लाह अलेह की एक ख़ादिमा थी। आपने इस ख़ादिमा से फ़रमाया के मेरे लिए रोटी और दूध लाओ। चुनाँचे ख़ादिमा ले आई। हज़रत अबु अलहुसैन नूरी ने कोयले सुलगा कर दूध गर्म किया। और रोटी दूध के साथ खाने लगे। ख़ादिमा ने देखा हज़रत अबु अलहुसैन के हाथ पर कोयलों की सियाही लग रही है और आप इसी हाथ से रोटी खा रहे हैं। खादिमा ने दिल में कहा के ये अल्लाह के वली हैं। मगर इनमें निज़ामत नहीं है दिल में ये कहकर बाहर निकली। तो एक औरत ने उसे पकड़ लिया और कहा के मेरे कपड़ों की गठरी चुरा ली गई है। और उसकी

चुराने वाली तुम हो। लिहाज़ा मैं तुम्हें थाने ले चलूंगी। चुनाँचे वो ज़बरदस्ती इस ख़ादिमा को थाने ले गई। हज़रत अबु अलहुसैन को पता चला तो आप थाने पहुँचे और फ़रमाया ये बेक़सूर है इसे छोड़ दो। सिपाही ने कहा उसकी बेगुनाही का आपके पास क्या सबूत है? आपने फ़रमाया वो देखो। लोगों ने इधर देखा तो इस औरत के घर वालों से एक औरत वही गठरी लेकर आई और बोली गठरी मिल गई है। चुनाँचे खादिमा को छोड़ दिया गया। और हज़रत अबु अलहुसैन रहमत-उल्लाह अलेह न खादिमा से फ़रमाया क्या आईंदा फिर भी यूं कहोगी के अल्लाह के वलियों में निज़ाफत नहीं होती। ख़ादिमा ने कहा हुज़ूर! मेरी तौबा! (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 126)

सबक़:- अल्लाह वालों को कभी हिक़ारत की नज़र से ना देखना चाहिए और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की दिल के खयालों पर भी नज़र जा पड़ती है।

हिकायत नम्बर(492) गोदड़ी में लअल

हज़रत शफ़ीक़ बलखी रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मैं एक मर्तबा हज के लिए घर से निकला तो जब क़ादसिया पहुँचा तो वहाँ एक खूबसूरत नूरानी शक्ल वाले शख़्स को देखा जो सादा कपड़े पहने हुए लोगों की राह में बैठा था। मैंने उसे देखकर दिल में खयाल किया के ये शख़्स कोई सूफी है और लोगों की राह में लोगों पर बोझ बनने के लिए बैठा है ये सोच कर में उसके पास पहुँचा तो उसने देखते ही फ़रमाया। ऐ शफीक़ *इजतनीबू कसीरन मिनज़्ज़न्नी इन्ना बाज़ज़ ज़न्नी इसमुन* ये कह कर वो उठकर चले गए। मैं भी पीछे पीछे चल दिया और दिल में सोचने लगा के ये तो कोई बड़ा ही कामिल शख़्स है जिसने मेरे दिल के खयाली को भी जान लिया। मैं उससे ज़रूर माफी चाहूंगा। चुनाँचे मैं आगे बढ़ा तो देखा वो एक जगह नमाज़ पढ़ रहे हैं और नमाज़ में उनकी आँखों से आँसू जारी है और आज़ा कांप रहे हैं। मैं वहीं बैठ गया और जब वो नमाज़ से फारिग़ हुए तो मुझ देखते ही फ़रमाया। ऐ शफीक़! ये आयत पढ़ो *इन्नी लग़फ़्फ़ारून लिमन ताबा व आमना व अमिला सालिहन* फिर वो वहाँ से भी चले गए और नज़रों से ग़ायब हो गए। फिर जब मैं मिना में पहुँचा तो एक कुएँ पर उन्हें बैठा हुआ देखा। और वो कह रहे थे। इलाही मेरे पास डोल नहीं है और मुझे पानी दरकार है। क्या देखता हूँ के कुएँ का पानी उबल कर ऊपर आ गया और उन्होंने बर्तन भर कर वज़ू किया और नमाज़ पढ़ी और फिर उसी बर्तन में रेत की मुट्ठी डाल

कर और बर्तन को हिला कर वो पानी पीना शुरू कर दिया। मैं आगे बढ़ा सलाम अर्ज़ किया और कहा के ये जो अल्लाह ने आप पर इनाम फ़रमाया है उसमें से कुछ मुझे अता फ़रमाइये। चुनाँचे उन्होंने वही बर्तन मुझे दिया। और फ़रमाया। लो पियो! मैंने पिया। तो खुदा की क़सम इसमें नफीस सत्तू बेहतरीन मीठे में मिले हुए थे जिन्हें मैंने खाया और पिया। बख़ुदा इतने लज़ीज़ थे के आज तक उनकी लज़्ज़त नहीं भूली। फिर वो वहाँ से भी ग़ायब हो गए और अगले दिन मैंने उनको आधी रात को हरम शरीफ में नमाज़ पढ़ते देखा। फिर सुबह को मैंने देखा के वो जिस रास्ते से गुज़रते हैं। लोग बड़े अबदो तअज़ीम के साथ उन्हें सलाम अर्ज़ करते हैं। मैंने लोगों से उनके मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो मालूम हुआ के वो हज़रत ज़ैन-उल-आबेदीन रज़ी अल्लाहो अन्ह के पोते हज़रत इमाम मूसा बिन जाफर सादिक़ रज़ी अल्लाहो अन्हुमा हैं। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 59)

सबक़:- हज़रत इमाम मूसा (र०अ०) सय्यदों के सरदार होने के बावजूद अल्लाह की इबादत में इस क़द्र मशगूल रहते हैं। फिर अगर कोई शाह साहब क़िबला नमाज़ ना पढ़ें। मोहर्रमात से ना बचें तो किस क़द्र अफसोस का मुक़ाम है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की नज़र से दिल की बातें भी पौशीदा नहीं रहतीं।

हिकायत नम्बर(493) सायल हरम

हज़रत अबु सईद खराज़ रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं। मैंने हरम शरीफ में एक सायल को देखा जिसने एक फटी सी चादर ओढ़ रखी थी और वो लोगों से कुछ तलब कर रहा था। मैंने दिल में कहा इस क़िस्म के लोग लोगों पर बोझ बनते हैं। मेरा इतना सोचना ही था के वो मेरी तरफ़ मुखातिब होकर कहने लगा *इन्नल्लांहा यालमू मा फी अनफुसीकुम फलयहज़ुरूहू* यानी अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों की बातें जानता है पस उससे डरो।

मैं ये सुनकर दिल ही दिल में असतग़फार करने लगा। तो उसने फिर हंसते हुए ये आयत पढ़ी के *वहुवल्लज़ी यक़बलू तौबता अन इबादाहू व यअफू अन सय्यात* वो अल्लाह अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता है और गुनाह माफ फ़रमाता है। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 59)

सबक़:- किसी को भी हिक़ारत से ना देखना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों के सामने दिल के खयाल भी पौशीदा नहीं रहते। फिर जो इन मक़्बूलों के भी आक़ा व मौला सल-लल्लाहो तआला

अलेह व सल्लम हैं जिनके सदके में सबको सब कुछ मिला। उनसे कोई चीज़ किसी तरह ग़ायब रह सकती है।

हिकायत नम्बर(494) पुर असरार जवान

हज़रह सहल बिन अब्दुल्लाह रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं के मैं एक रोज़ जुमआ पढ़ने के लिए जामअे मस्जिद में गया। तो हुजूम बहुत था और मस्जिद में कोई जगह बाक़ी ना थी। मैंने जहाँ जगह प'ई वहीं बैठ गया। क्या देखता हूँ के मेरी दायें जानिब एक खूबसूरत और नूरानी चेहरे वाला नोजवान बैठा है और उसने सादा से सूफ के कपड़े पहन रखे हैं और उसके बदन से बड़ी आला खुश्बू आ रही है।

जब उसने मुझे देखा तो कहा। ऐ सहल! क्या हाल है? मैंने कहा अलहम्दू लिल्लाह, खैरित से हूँ। मगर मैं हैरान रह गया, के मेरी उसकी कोई जान पहचान नहीं। फिर उसने मुझे पहचान कैसे लिया। और मेरा नाम लेकर मेरा हाल कैसे पूछा? खैर मैं बैठा रहा। इत्तिफाक़न मुझे पैशाब की हाजत हुई और बड़ी शिद्दत के साथ ये हाजत मेहसूस होने लगी। हत्ता के बैठना मुश्किल हो गया। खलक़त बहुत थी और जमात का वक़्त भी क़रीब था इसलिए बाहर निकलना भी मुश्किल था और बैठे रहना भी मुश्किल था। मैं इस शशो पंज मं था के वही खूबरू जवान मुझ से मुखातिब होकर कहने लगा क्यों जनाब आपको पैशाब की हाजत है? मैंने कहा हाँ! फिर उसने अपनी चादर उतार कर मेरे मुंह पर डाल दी और कहा लीजिए पैशाब कर के जल्द फारिग़ हो जाइये के जमात तैयार है। मेरे मुंह पर इस चादर के पड़ने से मुझ पर ग़नूदगी सी तारी हुई और मैंने अपनी आँख खोली तो मैंने एक दरवाज़ा खुला हुआ देखा जिसके अन्दर से आवाज़ आई के अन्दर आ जाइये मैं अन्दर गया तो एक बड़ा अज़ीम-उश्शान महल देखा जिसमें हर क़िस्म की सहूलत मयस्सर थी। वहाँ एक दरख़्त नज़र आया। जिसके साथ ही एक ग़ुस्ल खाना बना हुआ था और एक तोलिया भी वहाँ मौजूद था और एक कोज़ा भी पानी का भरा हुआ रखा था। और मिसवाक भी साथ ही रखी हुई थी। मैंने वहाँ पैशाब किया और फिर ग़ुस्ल भी और वज़ू भी कर लिया। इतने में आवाज़ आई के क्या आप फारिग़ हो गए? मैंने कहा हाँ तो फौरन मेरे मुंह पर से चादर उतार ली गई मैंने देखा के वही जामअे मस्जिद है। वही सफ वही जगह, वही मैं और दायें तरफ़ वही खूबरू जवान बैठा है। और वही वक़्त है और मेरी इस सरगुज़िश्त से वहाँ कोई भी मतलअ नहीं हुआ। मैं ये माजरा देखकर हैरान

रह गया और कुछ समझ में ना आया के ये क्या हुआ। जब इस वाक़ेये की तरफ़ ध्यान करता तो यक़ीन करना पड़ता। इतने में जमात खड़ी हुई और नमाज़ अदा की गई। नमाज़ के बाद मैं उसी जवान के साथ हो लिया उसने मुझे देखकर मुसकुराते हुए कहा के ऐ सहल! शायद तुम ने जो कुछ देखा है इस पर तुम को यक़ीन नहीं आ रहा, मैंने कहा हाँ! उसने कहा तो आप मेरे साथ आइये मैं उसके हमराह चल पड़ा इतने में वही दरवाज़ा सामने आ गया जो मैं देख चुका था। वो जवान उसी दरवाज़े के अन्दर दाखिल हो गया। मैं भी उसके साथ अन्दर चला गया। क्या देखता हूँ के वही महल है। वही दरख़्त, वही ग़ुस्ल खाना और वही लौटा और मिसवाक वहाँ मौजूद है और वही तोलिया है जो अभी तक भीगा हुआ था। मैंने ये सब कुछ देख कर कहा *आमन्तू बिल्लाही* इस जवान ने फ़रमाया। ऐ सहल! *मन अताअल्लाहा तआला अताअहू कुल्लु उतलुबहू तजिदहू* जो शख़्स अल्लाह की इताअत करता है तो हर चीज़ उसकी इताअत करती है। उसे ढूंडो, ज़रूर मिलेगा।

मैं ये सुनकर रोने लगा। उस जवान ने मेरे आँसू पोंछे। मैंने आँखें खोलीं तो ना वो जवान नज़र आया ना वो मकान। और मैं हैरान रह गया और उस रोज़ से अल्लाह की इबादत में और भी ज़्यादा मह्व हो गया। (रोज़-उल-रियाहीन-उल-इमाम याफई रहमत-उल्लाह अलेह, सफ़ा 105)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उम्मत में ऐसे कामिल और खुदा रसीदा बन्दे भी मौजूद हैं जो बड़ी बड़ी ताक़तों और तसर्रूफात के मालिक हैं और जो मुश्किलात को पल भर में दूर कर देते हैं और ये ताक़तें उन्हें अल्लाह ही की तरफ़ से अल्लाह की इताअत के बदले हासिल होती हैं उनकी इन ताक़तों का इंकार अल्लाह की दैन व बख़्शिश का इंकार है। और ये भी मालूम हुआ के जिस आक़ा (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के ग़ुलामों की ये शान है वो आक़ा अगर खुद शबे मैराज पल भर में फर्श से अर्श पर जा पहुँचा और वहाँ सारी मलकूत की सैर फ़रमा कर फौरन वापस भी तशरीफ़ ले आया और जब वापस आया तो वही वक़्त था और वहीं वज़ू का पानी चल रहा था। और वही ज़ंजीर बदस्तूर हिल रही थी तो इसमें ताज्जुब की कौन सी बात है।

हिकायत नम्बर(495) बग़दाद का ताजिर

बग़दाद शरीफ का एक ताजिर औलिया इक्राम से बड़ा बुग़्ज़ रखता था। एक रोज़ नमाज़े जुमआ पढ़ने के बाद उसने हज़रत बशर हाफी

रहमत-उल्लाह अलेह को देखा के वो नमाज़ पढ़ते ही फौरन मस्जिद से बाहर निकल गए हैं। ये देखकर वो दिल में कहने लगा के देखो तो ये वली बना फिरता है। लेकिन मस्जिद में इस का दिल नहीं लगा और नमाज़ पढ़ते ही फौरन मस्जिद से बाहर निकल गया है। वो ताजिर यही कुछ सोचता और कहता हुआ उनके पीछे पीछे चलने लगा। हज़रत बशर हाफी ने एक नानबाई की दुकान से रोटी खरीदी और शहर से बाहर की जानिब चल पड़े। ताजिर को ये देखकर और गुस्सा आया के ये शख़्स महज़ रोटी के लिए मस्जिद से जल्दी निकल आया है। और अब रोटी खरीदकर शहर से बाहर किसी सब्ज़ा ज़ार में बैठकर खाएगा। ताजिर ने इरादा किया के मैं उसके साथ ही चलता हूँ और जहाँ बैठकर रोटी खाने लगेगा मैं वहीं उससे गुफ़्तगू करूंगा और पूछुंगा के क्या वली ऐसे ही होते हैं जो रोटी के लिए मस्जिद से फौरन निकल आएँ। चुनाँचे ताजिर पीछे पीछे हो लिया हत्ता के हज़रत बशर हाफी एक गाँव में दाखिल हुए और फिर उस गाँव की एक मस्जिद में तशरीफ़ ले गए। ये ताजिर भी साथ ही मस्जिद में पहुँचा उसने देखा के इस मस्जिद में एक बीमार आदमी लेटा हुआ है। हज़रत बशर हाफी उस बीमार के सिरहाने बैठ गए और उसे अपने हाथ से रोटी खिलाना शुरू किया। ताजिर ये मामला देखकर हैरान हुआ फिर गाँव देखने के लिए बाहर निकला। थोड़ी देर के बाद फिर मस्जिद में आया तो देखा के बीमार आदमी वहीं लेटा है मगर हज़रत बशर हाफी वहाँ मौजूद नहीं हैं। उसने इस बीमार से पूछा के बशर हाफी कहाँ गए तो उसने बताया के वो बग़दाद चले गए हैं। ताजिर ने पूछा बग़दाद यहाँ से कितनी दूर है। वो बोला के चालीस मील। ताजिर ने इन्नालिल्लाह पढ़ी और सोचने लगा के मैं अच्छी मुश्किल में फंस गया। के उनके पीछे इतनी दूर निकल आया। और ताज्जुब ये है के आते हुए कुछ पता ही नहीं चला मगर अब वापसी मुश्किल है फिर उसने पूछा के अब वो यहाँ कब आयेंगे तो वो बोला, के अगले जुमअे को। नाचार ताजिर अगले जुमअे तक वहीं रूका रहा। फिर जब अगला जुमआ आया तो हज़रत बशर हाफी अपने वक़्त पर तशरीफ़ लाए। इस बीमार ने हज़रत बशर से कहा के हुज़ूर ये शख़्स पिछले जुमअे को बग़दाद से आपके साथ यहाँ आया था और बेचारा आठ दिन से यहीं पड़ा है। हज़रत बशर ने ग़ुस्से से इस ताजिर को देखा और फ़रमाया तुम क्यों मेरे पीछे आए थे। ताजिर ने कहा मेरी ग़लती थी, हज़रत ने फिर ग़ुस्से से फ़रमाया के उठ और मेरे पीछे पीछे चला आ। चुनाँचे ताजिर उठा और

हज़रत के पीछे पीछे चलने लगा और थोड़ी देर के बाद वो बग़दाद पहुँच गए। फिर बशर हाफी ने उससे फ़रमाया के जाओ अपने घर पहुँचो और ख़बरदार आईंदा ऐसी हरकत ना करना। ताजिर ने औलिया इक्राम की बुग्ज़ से तौबा की और आईंदा उन पाक लोगों का दिल से मौतक़िद हो गया। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 118)

सबक़:- अल्लाह वालों को कभी हिक़ारत की नज़र से ना देखना चाहिए। उन पाक लोगों की हर अदा में लिल्लाहियत और खलूस होता है। और उनके दिलों में मख़लूक़े खुदा का दर्द होता है और ये पाक लोग दिनों का सफर पल भर में तय कर लेते हैं।

हिकायत नम्बर(496) शेर ने हुक्म माना

हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम रहमत-उल्लाह अलेह के पास चन्द लोग आए और कहने लगे के हुज़ूर! फलाँ रास्ते में एक शेर आ बैठा है और रास्ता बन्द हो गया है वो शेर वहाँ से जाता ही नहीं। जिससे लोग बड़े परेशान हो रहे हैं। फ़रमाइये क्या करें? हज़रत इब्राहीम उठे और जहाँ शेर बैठा था वहाँ तशरीफ़ ले गए और वहाँ जाकर शेर से मुखातिब होकर फ़रमाने लगे के ऐ शेर! अगर हम में से किसी पर हमला करने का तुझे हुक्म हो चुका है तो अपना काम कर और अगर ऐसा नहीं। तो यहाँ से उठ और अपनी जगह चला जा। शेर ने ये सुना तो फौरन उठा और हज़रत इब्राहीम की तरफ़ देखने लगा और फिर वहाँ से वापस जंगल में चला गया। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 128)

सबक़:- अल्लाह वालों की हकूमत शेरों पर भी है। वो खुदा के ज़ेरे फ़रमान हो जाते हैं और सारी खुदाई उनके ज़ेरे फ़रमान हो जाती है।

हिकायत नम्बर(497) शेर ने क़दम चूमे

एक बादशाह ने एक वली अल्लाह पर नाराज़ होकर उसे शेर के पिंजरे में डाल दिया ताके शेर इस अल्लाह के मक़्बूल को हलाक कर डाले। तमाशाईयों ने देखा के जब शेर ने इस मक़्बूले हक़ को अपने पिंजरे में देखा तो वो दौड़ता हुआ आया और इस मक़्बूले हक़ के क़दमों पर अपना सर रखकर चाटने लगा। गोया उस वली के क़दम चूमने लगा। ये करामत देखकर बादशाह ने बड़ी इज़्ज़त के साथ उस मक़्बूल हक़ को पिंजरे से निकाल दिया। लोगों ने उनसे पूछा के जनाब जब शेर आपके क़दमों को चाट रहा

था तो उस वक़्त आपके दिल में क्या खयाल आ रहा था? वो बोले उस वक़्त में एक शरई मसला सोच रहा था के शेर मेरे पैर चाट रहा है। शेर का लुआब पाक है या नापाक? और क्या मेरे पैर नापाक तो नहीं हो गए? (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 129)

सबक़:- जो खुदा से डरता है हर चीज़ उनसे डरने लगती है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों का क़दम चूमना शेरों का काम है।

हिकायत नम्बर (498) सालेह नोजवान

हज़रत ज़ुलनून मिस्री अलेह अर्रहमा फ़रमाते हैं, मैंने मुल्क शाम के मुज़ाफात में एक मकान देखा जिसके अन्दर एक नोजवान एक सेब के दरख़्त के नीचे नफिल पढ़ रहा था। मैं उस आबिद नोजवान के क़रीब बैठ गया। जब उसने सलाम फैरा तो मैंने अस्सलाम अलेकुम कह कर पूछा के आप कौन हैं? और इस ग़ैर आबाद इलाक़े में क्यों मुक़ीम हैं? इस नोजवान ने कुछ जवाब ना दिया। मैंने फिर पूछा तो उसने इस अपनी उंगली से ज़मीन पर ये शैर लिखा के

मुनिअल लिसानू अनिल कलामी लीअन्नाहू
कहफुल बलाई रजालिबुल अफाती
फइज़ा नतक़्ता फकुन लिरब्बिका ज़ाकिरन
ला तनसीहू वहमदहू फिलहालाती

यानी ज़बान कलाम करने से रोक ली गई है। इसी लिए ये बलाओं का घर और आफतों को ले आने वाली है। पस तुम भी जब कोई बात करो तो अपने रब का ही ज़िक्र करो और उसे ना भूलो। और हर हाल में उसकी हम्द करते रहो।"

हज़रत ज़ुलनून फ़रमाते हैं मैं ये शैर पढ़ कर रोया। और फिर मैंने ज़मीन पर ये शैर लिखा के

वमा मिन कातिबिन इल्ला सयबला
व यबक़दहरू मा कताबत यदाहू
फला तकतुब बीकफ़्फीका ग़ैरा शेईन
यसऊकू फिलक़यामती अन तराहू

यानी जो भी लिखने वाला है वो अनक़रीब आज़माया जाएगा। और उसका लिखा हुआ हमेशा बाक़ी रहेगा। पस तुम अपने हाथ से कुछ लिखो तो कोई ऐसी बात ना लिखो जिसे देखकर कल क़यामत के दिन पछताना पड़े।

बल्के ऐसी चीज़ लिखो के क़यामत को उसे देखो तो खुशी हासिल हो।"

ये शैर इस नोजवान ने पढ़ा तो चीख मारकर गिरा और उसका इन्तिक़ाल हो गया। मैंने चाहा के मैं अब उसकी तजहीज़ व तकफीन कर चलूं। तो मुझे हातिफ से एक आवाज़ आई के तुम इस बात की फिक्र ना करो। उसका अल्लाह अपने फरिश्तों के ज़रिये खुद ये काम पूरा फ़रमाए। चुनाँचे हज़रत ज़ुलनून अलग हो गए और थोड़ी देर के बाद उस तरफ़ देखा तो उस नोजवान की नअश वहाँ से ग़ायब थी। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 22)

सबक़:- अपनी ज़बान से बेहूदा, लग़ू और ग़ैर शरई गुफ़्तगू हर गिज़ करना चाहिए। और अपनी हर तक़रीर और तहरीर में ये अम्र मलहूज़ होना चाहिए के क़यामत के रोज़ हर बात का हिसाब होगा और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों को अल्लाह तआला से एक ख़ास निसबत होती है।

हिकायत नम्बर(499) दवाऐ ज़नूब

हज़रत ज़ुलनून मिस्री रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं। मैंने बसरा के एक बाज़ार में एक हुजूम देखा के आगे बढ़कर देखा तो एक पुर वक़ार शख़्स बैठा हुआ लोगों को मुख़्तलिफ अमराज़ के नुस्खे लिख कर दे रहा था। हज़रत ज़ुलनून फ़रमाते हैं मैंने उससे दरयाफ़्त किया, क्या तुम्हारे पास गुनाहों की दवा है? तबीब ने मुझे बग़ौर देखा और कहा हाँ है, मैंने कहा तो मुझे भी वो नुस्ख़ा लिखवा दो। वो बोला, लो लिख लो, ईमान के बाग़ में जाकर नीयत व यक़ीन और तवक्कुल की चन्द टहनियाँ ले आओ और शर्म व नदामत के बीज और ज़हदो वरअे के कुछ पत्ते भी ले लो। नीज़ इख़लास का मग़्ज़, इजतिहद का छिलका, और फिक़ह का कुछ फल लेकर अनाबत व तवाज़ौ के तरयाक़ में डाल दो। और फिर तौफीक़ के हाथ और तसदीक़ की उंगलियों से उन चीज़ों को तहक़ीक़ के तबक़ में डाल कर उन सब चीज़ों को आँसूंओं के पानी से खूब धो लो, फिर इन चीज़ों को उम्मीद की हंडिया में डाल कर शौक़ की आग से खूब पकाओ हत्ता के हिर्सो हवा की मैल कुचैल अलग हो जाए। जिस दस्ते हिम्मत से निकाल कर फिर रज़ा के पियाले में डाल लो। और असतग़फार के पंखे से फिर उसे ठंडा कर लो। उसके बाद ये एक मज़ेदार शर्बत बन जाएगा और उसके पीने की तरकीब ये है के एक ऐसी जगह पिया जाए जहाँ खुदा के सिवा कोई ना देखता हो। बस उसके पिते ही गुनाहों का मर्ज़ जाता रहेगा। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 29)

हिकायत नम्बर (500) आफियत

एक बुज़ुर्ग "इलाही आफियत" बड़ी कसरत से कहा करते थे। लोगों ने पूछा उसकी वजह क्या है? तो फ़रमाया मैं हमाल था। एक दफ़ा में ने गंदम की बोरी उठाई तो थक गया और मुंह से ये दुआ निकली। "इलाही! मुझे बग़ैर किसी मेहनत के हर रोज़ दो रोटियाँ दे दिया कर" थोड़ी देर के बाद दो आदमी आपस में लड़ते हुए देखे मैं उनको छुड़ाने के लिए गया तो एक ने दूसरे को मारा तो उसकी वो ज़र्ब मेरे मुंह पर पड़ी, इतने में पुलिस आ गई। और उनके साथ मुझे भी पकड़ कर ले गई। और मुझे लड़ाई में शरीक समझ कर उनके साथ ही जेल में डाल दिया। जेल में हर रोज़ दो रोटियाँ मिलने लगीं। एक दिन रात को मैंने सुना के कोई कह रहा है के तुम ने बग़ैर मेहनत के हर रोज़ दो रोटियाँ माँगी थीं वो तुझे मिल रही हैं। अगर तुम आफियत माँगते तो आफियत मिलती। मैंने उसी वक़्त कहा। इलाही आफियत। इलाही आफियत। सुबह आँख खुली तो मेरे बे गुनाह ज़ाहिर होने पर मुझे रिहा कर दिया गया। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 79, जिल्द 1)

सबक़:- जिस तरह जान बचाने के लिए हज़ार जतन करके दुनयवी तबीब के बताने के मुताबिक़ नुस्खा तैयार किया जाता है उसी तरह ईमान की हिफाज़त के लिए भी रूहानी तबीब के बताए हुए नुस्खे को ज़रूर तैयार करके इसतेमाल करना चाहिए ताके रूहानी अमराज़ से निजात मिले।

हिकायत नम्बर (501) हसीन लोंडी की क़ीमत

हज़रत मालिक बिन दीनार रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा बसरा के बाज़ार से गुज़र रहे थे, आपने एक लोंडी को देखकर उसके मालिक से उसकी क़ीमत पूछी। वो कहने लगा। आप दुरवैश आदमी हैं। आप उसकी क़ीमत ना दे सकेंगे। हज़रत मालिक बिन दीनार ने फ़रमाया ये बेचारी क्या माल है मैंने बड़ी बड़ी ग्राँक़द्र लोंडियों का बीअनामा दे रखा है। इस लोंडी की क़ीमत तो मेरे नज़दीक़ कुछ भी नहीं। अगर है तो खजूर की दो गुठलियाँ हैं और वो इसलिए के उस लोंडी में बहुत ऐब हैं। दो दिन इत्र ना लगाए तो बदन और कपड़ों से बदबू आने लगे। मिसवाक ना करे तो गंदा दहन हो जाए। कंघी चोटी से ग़ाफिल रहे तो सर में जूएँ पड़ जायें। ज़्यादा उम्र वाली होकर बुढ़िया कहलाने लगे। किसी महीने में हैज़ और किसी वक़्त निजासत से खाली नहीं। भाई जान! मैंने उन लोंडियों का बीअनामा दे रखा है जो

काफूर व मुश्क और सरासर नूर से पैदा हुई हैं। जिनका लुआब दहन दरयाए शौर को मीठा कर दे, जिनका तबस्सुम मुर्दा को ज़िंदा कर दे, जिनका चेहरा चश्मे आफताब को गदला, और जिनका हल्ला जान को मोअत्तर कर दे और जिनकी सिफ्त हूरून *मक़्सूरातुन फिल खिय्यमी* है। उस शख़्स ने पूछा के ऐसी हसीन व जमील लौंडियों की क्या क़ीमत है। हज़रत मालिक ने फ़रमाया। तर्क ख़्वाहिशाते नफ़्सानी और रात को दो रकातें पढ़ लेना। उस शख़्स ने अपने तमाम ग़ुलाम और लौंडियों को आज़ाद कर दिया और खुदा क़ी राह में सब कुछ लुटाकर गोशा नशीन हो गया। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 434, जिल्द 1)

सबक़:- दुनिया की हर चीज़ फानी और ग़ैर मुकम्मल है और अख़रवी नअेमतें बाक़ी और अयूब से पाक हैं। और तर्के ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया से बड़े बड़े इनाम हासिल होते हैं।

हिकायत नम्बर (502) गुनाह करने का तरीक़ा

एक शख़्स इब्राहीम अदहम अलेह अर्रहमा के पास आया, और कहा। कोई ऐसा तरीक़ा बताइये जिससे में बुरे काम करता रहूं और गिरफ़्त ना हो। हज़रत इब्राहीम ने फ़रमाया। छः बातें क़बूल कर लो। फिर जो चाहे करो। तुझे कोई गिरफ़्त ना होगी। अव्वल ये के जब तू कोई गुनाह करे खुदा का रिज़्क़ मत खा। उसने कहा ये तो बड़ी मुश्किल है के रज़्ज़ाक तो वी है फिर मैं कहाँ से खाऊँ। फ़रमाया! तो ये कब मुनासिब है के तो जिसका रिज़्क़ खाए फिर उसकी नाफरमानी करे। दूसरे ये के अगर तू कोई गुनाह करना चाहे तो उसके मुल्क से बाहर निकल कर कर। उसने कहा तमाम मुल्क ही उसका है फिर मैं कहाँ निकलूं। फ़रमाया तो ये बात बहुत बुरी है के जिसके मुल्क में रहो उसकी बग़ावत करने लगो। तीसरे ये के जब तू कोई गुनाह करे तो ऐसी जगह कर जहाँ वो तुझे ना देखे। उसने कहा ये तो बहुत ही मुश्किल है इसलिए के वो तो दिलों का भेद भी जानता है। फ़रमाया तो ये कब मुनासिब है के तू उसका रिज़्क़ खाये और उसके मुल्क में रहे और उसी के सामने गुनाह करे। चौथे ये के जब मलक-उल-मौत तेरी जान लेने आए तो उसे कह के ज़रा ठहर जा। मुझे तौबा कर लेने दे। उसने कहा के वो मोहलत कब देता है। फ़रमाया तो ये मुनासिब है के उसके आने से पहले तौबा कर ले और उस वक़्त को ग़नीमत समझ। पाँचवीं ये के क़यामत के दिन जब हुक्म हो के उसे दोज़ख़ में ले जाओ तो कहना के मैं नहीं जाता। उसने कहा वो

ज़बरदस्ती भी ले जायेंगे। फ़रमाया तो अब खुद ही सोच ले के क्या गुनाह तुझे ज़ैबा है। वो शख़्स क़दमों में गिर गया और सच्चे दिल से तायब हो गया। (तज़्करत-उल-औलिया, सफ़ा 130)

सबक़:- जो बन्दा खुदा का रिज़्क़ खाता है और उसके मुल्क में रहता है, फिर उसका रिज़्क़ खाकर और उसके मुल्क में रह कर और फिर उसी के सामने उसकी नाफ़रमानी करना खुदा की नाराज़गी का मौजिब है इसलिए बन्दे को गुनाहों से बचना चाहिए।

हिकायत नम्बर(503) रफ़ीक़ा जन्नत

हज़रत इब्राहीम अदहम ने एक रोज़ जनाब इलाही में अर्ज़ किया, इलाही जो औरत जन्नत में मेरी रफ़ीक़ होगी उसे मुझे दिखा दे। जब सो गए तो ख़्वाब में उनसे कहा गया के तुम्हारी रफ़ीक़ा-ए-जन्नत सलामा नामी एक औरत है जो फलाँ फलाँ मोज़ै में बकरियों का रैवड़ चरा रही है। ये ख़्वाब देखकर हज़रत इब्राहीम अदहम उठे और जिस मोज़ै का निशान व पता खवाब में बताया गया था उसकी तरफ़ चल दिए और उस मोज़ै में पहुँच गए। वहाँ आपने एक औरत को बकरियाँ चराते देखा और उसे सलाम किया। इस औरत ने जवाब में कहा *व अलेकुम अस्सलाम या इब्राहीमू।* इब्राहीम ने कहा भला तुझे किस ने बताया के मै। इब्राहीम हूँ। वो बोली जिसने आपको इस बात की इत्तिला दी है के मैं आपकी रफ़ीक़े जन्नत हूँ। इब्राहीम बोले ऐ सलामा! मुझे कुछ नसीहत कर। कहा शब बैदारी और रात को नमाज़ तहज्जुद पर मदावमत इख़्तियार कीजिए इसलिए रात का क़याम बन्दे को अपने रब की तरफ़ पहुँचा देता है। आपको अगर मोहब्बते इलाही का दावा है तो रात की नींद छोड़ दीजिए। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 227, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह वाले इसरार व रमूज़ पर वाक़िफ़ हैं। और शब बैदारी व नमाज़ तहज्जुद बड़ी मुफीद चीज़ है।

हिकायत नम्बर(504) जमाले हक़

एक औरत हज़रत जुनैद बग़दादी अलेह अर्रहमा के पास आकर कहने लगी के या हज़रत! मेरा शौहर दूसरा निकाह करना चाहता है, फ़रमाया! अगर इस वक़्त उसके निकाह में चार औरतें नहीं हैं तो उसे दूसरा निकाह करना जायज़ है। औरत बोली। या हज़रत! अगर ग़ैर मर्दों को औरतों की तरफ़ देखना जायज़ होता तो मैं अपना चेहरा खोल कर आपको दिखाती ताके आप

मुझे देखकर बताते के जिस शख़्स के निकाह में मेरे जैसी साहबे जामल औरत हो उसे मेरे सिवा दूसरी औरत से निकाह करना लायक़ है। हज़रत जुनैद ने औरत की ये बात सुनकर एक नारा मारा। और रोने लगे और उसका सबब पूछने पर बताया। के मेरे ज़हन में उस वक़्त ये खयाल आया है के हक़ तआला फ़रमाता। अगर दुनिया में किसी को मुझे देखना जायज़ होता तो मैं अपने जमाल से हिजाब उठाकर इस पर ज़ाहिर हो जाता। ताके वो मुझे देखता। फिर उसे मालूम होता के जिसका मुझ जैसा रब हो, उसके दिल में मुझे छोड़ कर किसी और से मोहब्बत होनी चाहिए। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 11, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह तआला को छोड़ कर उसके ग़ैर से मोहब्बत करना बहुत बड़ी नादानी है।

हिकायत नम्बर(505) एक बाक़ी

एक शीर फ़रोश दूध भरे पियाले बेच रहा था। और आवाज़ लगा रहा था के *लम यबक़ा इल्ला वाहिदन* एक ही बाक़ी रह गया है। हज़रत शिबली ने आवाज़ सुनी तो एक नारा मारा और फ़रमाया *व लायब्क़ा इला वाहिदुन* और ही बाक़ी रह जाएगा। (तज़्करत-उल-औलिया, सफ़ा 698)

सबक़:- खुदा के सिवा सब पर फना आने वाली है।

हिकायत नम्बर(506) वली का तसर्रुफ

एक शख़्स हज़रत मनसूर बताएही रहमत-उल्लाह अलेह की ज़ियारत को आया, हज़रत ने उसे देखकर फ़रमाया। के मैंने इन आँखों के दरमियान बदबख़्ती की सत्र लिखी देखी है। इस शख़्स ने जब सुना तो बड़ा परेशान हुआ और उल्टा फिरा। और हज़रत शेख़ अहमदी रूमी रहमत-उल्लाह अलेह की मजलिस में दाखिल हुआ। शेख अब्दुल्लाह ने उसे देखकर हवा में कुछ इस तरह इर्शाद फ़रमाया। जिससे मालूम होता था के किसी शै को मिटाते हैं और साथ ही ये आयत पढ़ी *यमहूहुल्लाहू मा यशाऊ व युसब्बितू* उसके बाद फिर ये शख़्स हज़रत मनसूर की मजलिस में गया तो उन्होंने देखकर फ़रमाया। अल्लाह तआला शेख अहमद रफ़ाई की बर्कत से उसे शिक़ावत के दफ़्तर से निकाल कर सआदत के दफ़्तर में दाखिल कर दिया। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 277, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह ने अपने ख़ास बन्दों को बड़े बड़े इख़्तियार बख्शे हैं

और अल्लाह के वली अपनी तसर्रूफ व बर्कत से तक़्दीर भी बदल देते हैं...

निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती है तक़्दीरें

हिकायत नम्बर(507) तवंगर व मुफलिस

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमत-उल्लाह अलेह बड़े मालदार थे। एक मर्तबा हज को जा रहे थे तो रास्ते में एक ग़रीब दुरवैश मिला उससे आपने फ़रमाया ऐ दुरवैश। हम तवंगर हैं उसके बुलाए हुए जा रहे हैं मगर तुम तो एक मुफलिस आदमी हो। तुम तुफ़ैली होरक कहाँ जाते हो। उस दुरवैश ने जवाब दिया। ऐ अब्दुल्लाह! मेज़बान जब करीम होता है तो तुफ़ैली की ज्यादा ख़ातिर करता है। अगर उसने तुम को अपने घर बुलाया है तो मुझ को खुद अपने पास बुलाया है। अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने फ़रमाया जानते हो? खुदा ने हम तवंगरों से क़र्ज़ लिया है। दुरवैश ने जवाब दिया। मगर ये भी तो देखिए के उसने अगर तुम से क़र्ज़ लिया है तो लिया किन लोगों के वास्ते है। ऐ अब्दुल्लाह! उसनें हमारे ही वास्ते क़र्ज़ लिया है। गोया हमारी ख़ातिर मंज़ूर है। हज़रत अब्दुल्लाह ने ये बात सुनकर फ़रमया वाक़ई तुम सच कहते हो। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 170)

सबक़:- ग़रीबों को हिक़ारत की नज़र से ना देखना चाहिए। क्या ख़बर के एक ग़रीब आदमी मक़्बूले हक़ हो, नीज़ ये तवंगरी और मुफलिसी कोई क़ाबिले एतबार शै नहीं। बक़ौल शायर

कितने मुफलिस हो गए कितने तवंगर हो गए
खाक में जब मिल गए दोनों बराबर हो गए

हिकायत नम्बर(508) ईफा अहद

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमत-उल्लाह अलेह एक दफा जिहाद को गए। उसमें आप एक काफिर से जंग कर रहे थे के नमाज़ का वक़्त क़रीब आ गया। आपने काफिर से मोहलत चाही और नमाज़ अदा की। फिर जब उस काफिर की इबादत का वक़्त हुआ तो उसने भी मोहलत चाही। जब वो बुत की तरफ़ इबादत के वास्ते मुतवज्जह हुआ तो अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने सोचा के इस वक़्त इस पर हमला कर दूं तो फतह पा लूंगा। चुनाँचे आपने तलवार खींची और उस पर हमला करने की ख़ातिर क़रीब पहुँचे ही थे के एक आवाज़ सुनी। के ऐ अब्दुल्लाह!

ओफू बिलअहदी काना मसऊला "यानी अहद पूरा करो, के उससे

सवाल किए जाओगे।"

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रोने लगे। उस काफिर ने जो अब्दुल्लाह बिन मुबारक को देखा के तलवार खींचे हुए रो रहे हैं तो वजह पूछी। आपने सारा क़िस्सा सुनाया तो उस काफिर ने एक चीख़ मारी और कहा बड़े शर्म की बात है के ऐसे खुदा की नाफरमानी करूं। जो दुश्मन की ख़ातिर अपने दोस्त पर अत्ताब कर रहा है। और फिर मुसलमान हो गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 171)

सबक़:- इस्लाम में ईफा अहद की बड़ी ताकीद है और मुसलमान हत्ता-उल-इमकान अपना वादा पूरा करता है।

हिकायत नम्बर (509) दुश्मन की नुक्ता चीनी

हज़रत शफीक़ बलखी रहमत-उल्लाह अलेह बहुत बड़े वली अल्लाह थे। एक रोज़ मजलिस गर्म थी के शहर में गुल पड़ा के काफिर आ गए। हज़रत शफीक़ फौरन बाहर निकले और कुफ़्फ़ार को भगा कर लौट आए। एक मुरीद ने चन्द फूल हज़रत के मुसल्ले पर रख दिए थे। आप उन फूलों को सूंघने लगे। एक बद अक़ीदा ने देखकर कहा। के लश्कर तो शहर के दरवाज़े पर आ पहुँचा। और मुसलमानों के इमाम अभी तक फूल ही सूंघ रहे हैं। हज़रत ने फ़रमाया। मुनाफिक़ फूल सूंघना तो देखते हैं मगर लश्कर को शिकस्त देना नहीं देखते। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 185)

सबक़:- औलिया अल्लाह के मआंद बद अक़ीदा अफ़राद को अल्लाह वालों की ख़ूबियाँ तो नज़र नहीं आती। और उन पाक लोगों की बज़अम खवैश वा नुक्ता चीनियाँ ही बयान करते रहते हैं।

हिकायत नम्बर (510) बादशाह को नसीहत

एक दिन हज़रत शफीक़ बलखी रहमत-उल्लाह अलेह हज़रत हारून रशीद के पास आए, तो हारून रशीद ने हज़रत बलखी से कहा। जनाब मुझे कोई नसीहत कीजिए। फ़रमाया ऐ हारून! खुदा तआला ने तुझे सिद्दीक़े अक्बर की जगह बिठाया है। तो तुझ से सच्चाई और रास्त बाज़ी चाहता है। और जब फारूक़े आज़म की मसनद पर बिठाया है तो चाहता है के तू हक़ और नाहक़, सच और झूट में तफरीक़ करे और जब तुझे उस्मान ज़ुलनूरैन के मुक़ाम पर बिठाया है तो वो तुझ से शर्म व हया का तालिब है। और जब उसने तुझे अली अलमुर्तज़ा के मुक़ाम

पर बिठाया है तो वो तुझ से अद्लो इंसाफ और इल्मो अमल का ख़्वाहाँ है। हारून रशीद ने कहा कुछ और भी फ़रमाईये। फ़रमाया खुदा का बनाया हुआ एक घर है। जिसे दोज़ख़ कहा जाता है उसका खुदा ने तुझे दरबान बनाया है। के लोगों को उसमें दाखिल होने से बचाए और ऐ हारून रशीद तू दरया है और तमाम रूइय्यत नहरें हैं। अगर तूने सफाई हासिल की। तो सब सफाई के साथ रहेंगे और अगर तूने ही अपने अन्दर कदूरत पैदा कर ली तो सब मक्दूर हो जायेंगे। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 100, जिल्द 2)

सबक़:- बादशाह और हाकिम को सदाक़त, हक़ व बातिल में तफरीक़, शर्म व ग़ैरत और इल्मो अमल से काम लेना चाहिए और अपनी रूय्यत के लिए एक बेहतरीन नमूना बनकर दिखाना चाहिए।

हिकायत नम्बर(511) शराबी का मुंह

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रहमत-उल्लाह अलेह एक रास्ते से गुज़र रहे थे। आपने एक शराबी को देखा जो शराब के नशे में राह में गिरा हुआ था। और बेहोशी के आलम में अपनी ज़बान से बहुत बकवास कर रहा था। हज़रत इब्राहीम उसके पास ठहर गए और फ़रमाया। ये ज़बान तो ज़िक्रे हक़ के लिए थी। उसे कौन सी आफत पहुँची के ये ऐसे बकवास कर रही है। फिर आपने पानी मंगवाया और उसका मुंह और उसकी ज़बान धोने लगे और धोकर आगे तशरीफ़ ले गए। शराबी होश में आया तो लोगों ने उसे ये सारा क़िस्सा सुनाया। शराबी ये सुनकर के हज़रत इब्राहीम अदहम मेरा मुंह और ज़बान धो गए हैं। रोया। और कहने लगा। इलाही! तेरे मक़्बूल बंदे की शर्म खाकर मै। सच्चे दिल से तौबा करता हूँ। तू अपने मक़्बूल बन्दे के तुफैल मुझे बख़्श दे।

रात को इब्राहीम ने ख़्वाब में देखा के कोई कहने वाला कह रहा है के ऐ इब्राहीम तून इस शराबी का हमारी ख़ातिर मुंह धोया। हम ने तुम्हारी ख़ातिर उसका दिल धोया। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 117)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों की क़ुर्बत व मईयत से इंसान की काया पलट जाती है और अल्लाह की रहमत से सब गुनाह धुल जाते हैं और आक़्बत अच्छी हो जाती है। फिर जो लोग ये कहें के उन वलियों के पास क्या पड़ा है और उनके पास जाने से क्या फायदा? वो बद नसीब और बदबख़्त हैं। या नहीं?

हिकायत नम्बर(512) रास्त गोई

हज्जाज बिन यूसुफ़ ने एक दफ़ा एक शख़्स को कअबा शरीफ का तवाफ करते हुए देखा उस शख़्स से हज्जाज को एक ख़ास कशिश नज़र आई। चुनाँचे अपने मुक़ाम पर पहुँच कर हज्जाज ने हुक्म दिया के उस शख़्स को हाज़िर किया जाए। अम्माल ने तामीले हुक्म की और उस शख़्स को दरबार में बुला लाए, वो शख़्स कोई मक़्बूले हक़ था। दरबार में पहुँचकर वो बड़ी बेनियाज़ी से खड़ा हो गया। हज्जाज ने उसे देखा और यूं गोया हुआ।

हज्जाजः- तुम कौन हो?

वो शख़्सः- मुसलमानों में से एक मुसलमान हूँ।

हज्जाजः- मेरा मतलब ये नहीं। बल्के मेरा मतलब ये है के तुम कहाँ के रहने वाले हो?

वो शख़्सः- मैं यमन का रहने वाला हूँ।

हज्जाजः- यमन का हाकिम मोहम्मद बिन यूसुफ़ मेरा भाई है। तुम ने उसे कैसा देखा।

वो शख़्सः- वो बड़ा क़दआवर जिस्म और अच्छे कपड़े पहनने वाला शख़्स है।

हज्जाजः- मेरा मतलब ये नहीं। मेरा मतलब ये है के उसकी सीरत कैसे है?

वो शख़्सः- वो बड़ा ज़ालिम। मख़लूक़ का फ़रमाँबर्दार और ख़ालिक़ का नाफरमान।

हज्जाजः- गुसताख़ इतनी बड़ी गुसताखी। क्या तुम्हें इल्म नहीं के मेरा उससे क्या ताल्लुक़ है। मैं उसका भाई हूँ।

वो शख़्सः- और क्या तुम्हें इल्म नहीं। के मेरा खुदा से क्या ताल्लुक़ है। मैं उसका बन्दा हूँ। और उसके घर की ज़ियारत के लिए यहाँ आया हूँ। और उसके रसूल सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की तसदीक़ करने वाला हूँ।

हज्जाज ख़ामोश हो गया और कोई जवाब ना दे सका और वो शख़्स बग़ैर इजाज़त लिए दरबार से निकल गया (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 115)

सबक़ः- अल्लाह वाले रास्त बाज़ होते हैं और ज़ालिम हाकिम के सामने भी सच्ची बात कहने से नहीं चूकते। ऐसे रास्त बाज़ों की अल्लाह मदद फ़रमाता है। और ज़ालिम उनसे मरऊब होता है।

हिकायत नम्बर(513) जेलखाने से बाग़ में

एक नोजवान वली अल्लाह ने किसी नेक काम का हुक्म दिया और बुरे काम से रोका तो ये बात ख़लीफा हारून को नागवार गुज़री और उसने हुक्म दिया के उस नोजवान को जेल के एक ऐसे बन्द कमरे में क़ैद कर दिया जाए जिसमें हवा भी दाख़िल ना हो सके और ये वहीं घुट कर मर जाए। चुनाँचे उस नोजवान को जेल में ले जाया गया और एक बन्द और तारीक कमरे में डाल दिया गया। दूसरे दिन लोगों ने देखा के वो नोजवान एक बाग़ में टहल रहा है। लोगों ने बादशाह को बताया। बादशाह ने उस नोजवान को फिर तलब किया और उससे पूछा।

हारून रशीदः- तुम्हें जेल से किस ने निकाला?

नोजवानः- उसने जिसने मुझे बाग़ में पहुँचाया।

हारून रशीदः- और तुम्हें बाग़ में किस ने पहुँचाया।

नोजवानः- उसने जिसने मुझे जेल से निकाला

हारून रशीदः- ये अजब बात हैं

नोजवानः- अल्लाह के सामने ये बात ना मुश्किल है ना अजब।

हारून रशीद ये सुनकर बहुत रोया और उसकी बड़ी इज़्ज़त व तौक़ीर की और एक खलअत खास से उसे नवाज़ा। और एक घोड़ पर बिठा कर एक मनादी को हुक्म दिया के वो एलान करता हुआ उसके साथ चले। के

ये वो बन्दा-ए-हक़ है जिसे अल्लाह ने इज़्ज़त दी। हारून रशीद ने उसकी तोहीन करना चाही। मगर वो इस बात पर क़ादिर ना हो सका। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 104)

सबक़:- अल्लाह वालों की इज़्ज़त व अज़मत को कोई छीन नहीं सकता और जो उनकी तोहीन करना चाहे वो खुद ही शर्मिंदा हो जाता है। उन अल्लाह वालों का मुक़ाबला दरअसल अल्लाह से मुक़ाबला है लिहाज़ा उन पाक लोगों का दिल में अदबो एहत्राम पैदा करना चाहिए।

हिकायत नम्बर(514) शाही महल

एक बादशाह ने अपने लिए बहुत बड़ा एक शाही महल बनावाया और जब वो बन कर तैयार हो गया तो एक दावते आम करके अपने दोस्त व अहबाब को बुलाया और खाना खिलाने के बाद सबसे कहा। के इस महल को देखो। और जिसे इसमें कुछ ऐब नज़र आए वो हमें बताए चुनाँचे सब

ने इस महल को देखा और सभी ने तारीफ की। और बताया के ये महल हर लिहाज़ से मुकम्मल है और इसमें कोई ऐब नहीं है।

उन लोगों में एक मर्दे हक़ भी था। बादशाह ने जब उससे पूछा। तो उसने जवाब दिया के इसमें दो बड़े ऐब हैं। बादशाह ने हैरान होकर पूछा के वो कौन से? उसने बताया के एक ये के ये महल एक दिन बर्बाद हो जाएगा और दूसरे ये के इसमें रह । वाला एक दिन मर जाएगा।

बादशाह ने पूछा। तो कोई ऐसा महल भी है जो कभी बर्बाद ना हो और जिसका मकीन कभी ना मरे। फ़रमाया, हाँ! और वो जन्नत है। फिर इस मर्दे हक़ ने जन्नत की तरग़ीब और जहन्नुम की तख़वीफ में एक ऐसा वाज़ फ़रमाया के बादशाह रोने लगा। और हकूमत से किनारा कश होकर अल्लाह अल्लाह करने लगा। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 108)

सबक़:- ये दुनिया नापायदार है और आख़िरत की नओमतें अब्दी और लाज़वाल हैं। इंसान को इस दुनिया में दिल नहीं लगाना चाहिए।

हिकायत नम्बर (515) इम्तिहान

एक बादशाह ने चन्द अल्लाह वालों का इम्तिहान लेने की ख़ातिर उन की दावत की। और दावत में कुछ खाने तो हलाल रखे। और कुछ हराम भी रख दिए और अपने मसाहिबों से कहने लगे। देखें ये अल्लाह वाले हलाल व हराम में तमीज़ कर सकते हैं या नहीं? चुनाँचे जब वो अल्लाह के वली दसतरख़्वान पर बैठे तो बादशाह अपने मसाहिबों समेत उनके साथ बैठ गया। और देखने लगा के ये लोग हराम खाने भी खाते हैं या नहीं, चुनाँचे खाना शुरू हुआ तो उन अल्लाह वालों में से एक बुज़ुर्ग अपने साथियों से फ़रमाने लगे के आज मैं आपकी ख़िदमत करूंगा और आपके सामने और बादशाह और उसके मसाहिबों के सामने खाना मैं रखूंगा। फिर जिन पलेटों में हलाल खाना था वो अपने साथियों के सामने अैर जिन में हराम खाना था वो बादशाह और उसके मसाहिबों के सामने रखने लगे और साथ साथ ये आयत पढ़ने लगे।

अत्तय्यीबातू लित्तय्यीबीना वल खबीसातू लिल खबीसीना

बादशाह ने ये माजरा देखा तो वहीं तौबा की और उन सबके सामने अपने क़सूर का एत्राफ किया और सच्चे दिल से अल्लाह वालों का मौतक़िद हो गया। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 228)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों का इल्मो इर्फ़ान बड़ा वसी होता

है। और उनकी नज़रों के सामने पौशीदा और राज़ की बातें भी ज़ाहिर होती हैं और ये सब सद्क़ा है हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का जिनकी इत्तिबा की बदौलत उन्हें ये वुसअते नज़र हासिल होती है। फिर खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नज़रे पाक से कोई राज़ की बात कैसे पौशीदा या ग़ायब रह सकती है।

हिकायत नम्बर(516) गोश्त और हलवा

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं, मैं बाद अज़ नमाज़ इशा एक मस्जिद में गया तो देखा के वहाँ एक रईस ताजिर बैठा है। और साथ ही एक खूबसूरत नूरानी चेहरे वाला कोई मक़्बूले हक़ भी बैठा है, मैं नमाज़ पढ़ चुका तो देखा के वो मक़्बूले हक़ अपने हाथ उठा कर खुदा से दुआ माँग रहा है और कह रहा है। इलाही! "भुना हुआ गोश्त और हलवा खिला दे" उस रईस ताजिर ने सुना तो हंस कर कहने लगे के ये फक़ीर दरअसल मुझे सुना रहा है। खुदा की क़सम! अगर मुझ से माँगता तो मैं उसे देता मगर अब मैं इसे कुछ ना दूंगा। थोड़ी देर के बाद वो मक़्बूल सो गया और मैंने देखा के एक शख़्स एक ढका हुआ तबाक़ लेकर आया और हम सब को देखने के बाद उस सोए हुए मक़्बूल हक़ को देखकर तबाक़ नीचे रखकर उसके पास बैठ गया। और उसे जगा कर अर्ज़ करने लगा। भुना हुआ गोश्त और हलवा हाज़िर है। खाईये। इस मक़्बूले हक़ ने हस्बे तलब इसमें से कुछ खा लिया और फिर वो तबाक़ वापस कर दिया। उस ताजिर ने इस खाना लाने वाले से क़सम देकर पूछा। के ये क्या क़िस्सा है? बयान तो करो। वो बोला, मैं एक मज़दूर हूँ। आज बड़े दिनों के बाद मज़दूरी में कुछ ऐसे पैसे मिल गए थे। मेरी बीवी ने भुने हुए गोश्त और हलवा की ख़्वाहिश का इज़हार किया। हम ने ये चीजें तैयार कीं। मैं थोड़ी देर के लिए सो गया। तो हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया तुम्हारी मस्जिद में एक "वली" बैठा है जो भुना हुआ गोश्त और हलवा चाहता है। तुम ये भुना हुआ गोश्त और हलवा पहले उसे खिलाओ। उसके अवज़ में तुम्हें जन्नत ले चलूंगा। चुनाँचे मैं फौरन ये खाना लेकर यहाँ पहुँचा और खुश हूँ के आज मुझे जन्नत मिल गई।

वो ताजिर कहने लगा इस खाने पर तुम्हारा क्या खर्च आया है। उसने बताया के दो दीनार। ताजिर ने कहा के ये लो दो दीनार तुम मुझ से ले लो और अपने अज्र में से कुछ मुझे भी दे दो, वो बोला हर गिज़ नहीं। ताजिर ने

दस दीनार ले लो। वो बोला नहीं। ताजिर ने कहा सौ दीनार ले लो। उसने कहा सारी दुनिया के ख़ज़ाने भी दे दो तो रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से किए हुए सौदे में तुम्हें शरीक ना करूंगा। तुम्हारी क़िसमत में ये चीज़ होती तो तुम मुझ से पहल कर सकते थे। मगर अब तुम अपने आपको महरूम समझो। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 153)

सबक़:- अल्लाह वालों की ये शान है के वो अल्लाह की मर्ज़ी पर चलते हैं और अल्लाह उनकी मर्ज़ी पूरी फ़रमा देता है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह तआला अपना इनामो इक्राम अपने मेहबूब हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के वास्ते व वसीले से मख़लूक़ पर फ़रमाता है। और ये भी मालूम हुआ के अपनी दौलत फानी के नशे में रह का अल्लाह वालों को नज़रे हिक़ारत से देखने वाले खुदा के फज़्ल और रसूले खुदा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के करम से महरूम रह जाते हैं।

हिकायत नम्बर(517) नूरानी औरत

हज़रत ज़ुलनून रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं, के एक दफा कअबा शरीफ का तवाफ कर रहा था के मैंने एक नूर देखा जो आसमान तक बुलंद हो रहा था। मैंने तवाफ ख़त्म किया तो एक नूरानी औरत को देखा जो पर्दा कअबा को पकड़ कर ये शैर पढ़ रही थी।

अन्ता तदरी मिन हबीबी
मन हबीबी अन्ता तदरी
क़द कतअतुल हुब्बा हत्ता
ज़ाक़ बिलकितमानी सदरी

"ऐ मेरे हबीब तू जानता है के मेरा हबीब कौन है। मैंने मोहब्बत को छुपाया। यहाँ तक के इस राज़दारी से मेरा सीना तंग हो गया।"

"फिर उसने रोते हुए यूं दुआ माँगना शुरू की। इलाही! तुझे इस मोहब्बत का वास्ता है जो तुझे मुझ से है मेरी मग़फिरत फ़रमा दे" मैंने इस नूरानी औरत से कहा। ऐ अल्लाह की बन्दी यूं कहो के तुझे उस मोहब्बत का वास्ता है। जो मुझे तुम से है। तुम जो यूं कह रही हो के जो मोहब्बत तुम्हें मुझ से है ये तुम्हें कैसे पता चल गया। तो वो बोली ऐ ज़ुलनून! क़ुरआन की ये आयत नहीं पढ़ी *फसोफा याती अल्लाहू बिक़ोमी युहिब्बूहुमुल्लाहू व युहिब्बूनाहू* देख लो इस आयत में अल्लाह तआला ने पहले अपनी मोहब्बत का ज़िक्र फ़रमाया है और यूं फ़रमाया है के अल्लाह उनसे मोहब्बत फ़रमाएगा और

वो अल्लाह से मोहब्बत करेंगे" गोया जो अल्लाह से मोहब्बत करते है। उनसे पहले अल्लाह मोहब्बत फ़रमाता है।

मैंने कहा तुम ने मेरा नाम कैसे जान लिया। वो बोली जो ख़ालिक़ को जान ले वो मख़लूक़ को क्यों ना जान लेगा। फिर उसने कहा। ज़रा इस तरफ़ देखना मैंने दूसरी तरफ़ मुंह मोड़ लिया तो वो नज़रों से ग़ायब हो गई। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 219)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे अल्लाह के महबूब हैं और अल्लाह उन से मोहब्बत फ़रमाता है और अल्लाह की याद से एक नूर पैदा होता है जिससे ग़ाफ़िल महरूम होते हैं। और ये भी मालूम हुआ के जो अल्लाह को जान लेते हैं वो मख़लूक़ से बे ख़बर नहीं रहते और उनको सब ख़बरें होती हैं।

हिकायत नम्बर (518) कमसिन लड़का

हज़रत अब्दुल्लाह बिन दासान रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मैंने एक दफ़ा बसरा के बाज़ार में एक लड़के को देखा। जो रो रहा था। मैंने उससे पूछा। बेटा क्यों रोते हो? वो बोला दोज़ख की आग से डरकर रो रहा हूँ। मैंने कहा तुम कमसिन हो। तुम्हें दोज़ख़ की आग का क्या डर है? वो बोला! मैंने अपनी माँ को देखा है के जब वो चूलहा जलाती हैं तो बड़ी बड़ी लकड़ियों को जलाने के लिए नीचे छोटी छोटी लकड़ियाँ भी रख देती हैं। तो मैं डरता हूँ के खुदा तआला बड़े बड़े नाफरमानों को जलाने के लिए मुझ जैसे छोटों को भी आग में डाल दे।

मैं उस कमसिन लड़के की इस गुफ़्तगू से बड़ा मुतास्सिर हुआ और उससे कहा। बेटा! क्या तुम मेरे पास रहना मंज़ूर करोगे? मगर चन्द शर्तों पर। मैंने कहा बोलो क्या शर्तें हैं। तो कहने लगा।

के मुझे भूक लगे तो खाना खिलाओ।

प्यास लगे तो पानी पिलाओ।

और मुझ से ग़लती हो जाए तो माफ कर दो।

और मैं मर जाऊँ तो मुझे ज़िन्दा कर दो।

मैंने कहा। बेटा! इन सब बातों पर में क़ुद्रत नहीं रखता। तो वो बोला तो फिर जाइये अपना काम कीजिए। मैं जिस आक़ा के दर पर मुलाज़िम हूँ वो इर सब बातों पर क़ादिर है। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 94)

सबक़:- अल्लाह के अज़ाब से डरते रहना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के पहले ज़माने में छोटे छोटे बच्चे भी अल्लाह के अज़ाब से डरते थे

और आज कल बड़े बड़े भी ग़फ़्लत की ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं।

हिकायत नम्बर(519) हरगिज़ नमीरद आँके दिलिश ज़िंदा शद बअश्क़

हज़रत अहमद बिन मनसूर रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मेरे उस्ताद अबु याकूब मूसा अलेह अर्रहमा ने मुझे सुनाया के मेरे एक मुरीद का इन्तिक़ाल हो गया। तो उसका गुस्ल मैंने खुद किया। जब मैं उसे गुस्ल दे रहा था तो मेरे मुरीद ने मेरा अंगूठा पकड़ लिया। हालाँके वो पटरे पर पड़ा हुआ था और मैं उसे नहला रहा था। मैंने उससे कहा। बेटा मेरा अंगूठा छोड़ दो मैं जानता हूँ तुम मरे नहीं। बल्के एक घर से इन्तिक़ाल करके दूसरे घर चले गए हो। तुम ज़िन्दा ही हो। छोड़ दो मेरे अंगूठे को ये सुनकर मेरे मुरीद ने मेरा अंगूठा छोड़ दिया। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 71)

सबक़:- अल्लाह वाले मरते नहीं, बल्के इस जहान से उस जहान में इन्तिक़ाल फ़रमा जाते हैं

कौन कहता है के मोमिन मर गए
क़ैद से छूटे वो अपने घर गए

हिकायत नम्बर(520) कुआँ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हनीफ रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मैं बारादाऐ हज घर से निकला और जब बग़दाद शरीफ पहुँचा। तो हज़रत जुनैद बग़दादी रहमत-उल्लाह अलेह की ख़िदमत में हाज़िर ना हुआ। सोचा के वापसी पर हाज़री दूंगा। रास्ते में प्यास ने बहुत सताया। तो एक कुएँ पर पहुँचा वहाँ देखा के किनारे पर खड़े होकर एक हिरन पानी पी रहा है। मैं खुश हुआ के कुएँ का पानी बहुत क़रीब है। मैं जब कुएँ के पास पहुँचा तो हिरन वापस चला गया तो पानी भी नीचे चला गया। मैं बड़ा हैरान हुआ और वापस होते हुए इतनी बात ज़बान से निकली। के मेरा दर्जा हिरन के बराबर भी ना हुआ। इतने में पीछे से आवाज़ आई बेसब्र आदमी तुम्हारा तजुर्बा किया गया है मगर तुम बे सब्र निकले चलो वापस कुएँ पर और पानी पी लो। मैं फिर कुएँ पर पहुँचा, तो कुआँ पानी से किनारों तक भरा हुआ था मैंने पानी पिया और मशकीज़ा भी भर लिया। फिर ये पानी मदीना मुनव्वरह तक ख़त्म ना हुआ। हज से वापसी पर जब बग़दाद पहुँचा हूँ तो हज़रत जुनैद की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो हज़रत जुनैन ने मुझे देखते ही फ़रमाया ऐ

अब्दुल्लाह! अगर कुएँ पर थोड़ी देर और सब्र करते तो पानी तुम्हारे पेरों के नीचे से उबलने लगता। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 71)

सबक़:- अल्लाह वालों का ये इल्मो इर्फान है के जो बात एक जंगल में वाक़े हुई वो हज़रत जुनैद को बग़दाद शरीफ में मालूम हो गई और एक वो लोग भी हैं जो उनके मिस्ल बनते हैं के घर बैठे हुए घर बात का इल्म भी नहीं के क्या हो रहा है।

हिकायत नम्बर (521) जानवर भी ग़ुलाम

हज़रत अबु अय्यूब हम्माल रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के अबु अब्दुल्लाह दीलमी रहमत-उल्लाह अलेह जब कहीं तशरीफ़ ले जाते तो अपनी सवारी के गधे को कहीं बाँधा नहीं करते थे बल्के उसके कान में ये कह देते के जा जंगल में कुछ खा पी के आ। और फलाँ वक़्त यहाँ पहुँच जाना। चुनाँचे गधा जंगल में चला जाता और ठीक उस वक़्त यहाँ पहुँच जाना। चुनाँचे गधा जंगल में चला जाता और ठीक उस वक़्त पर जिस वक़्त का उसे कहा जाता वो वापस वहीं पहुँच जाता था। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 72)

सबक़:- ये है अल्लाह वालों का इक्तिदार के जानवर भी तामीले हुक्म करते हैं। एक ये भी हैं जो उनकी मिस्ल बनते हैं के किसी गधे के क़रीब आयें तो दूलत्तियाँ खायें।

हिकायत नम्बर (522) रेत की चीनी

हज़रत इब्ने अबी अयास रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं। असक़लान में एक नोजवान मर्दे खुदा को देखा जो हमारे पास आकर बैठता और अच्छी अच्छी बातें सुनाता। एक दिन उसने बताया के वो इसकंद्रिया जा रहा है उसकी नेक सोहबत के असर से मैं भी उसके साथ जाने को तैयार हो गया। मैंने कुछ रुपये साथ ले लिए और रास्ते में वो रुपये उसे देना चाहे। मगर उसने लेने से इंकार कर दिया। मैंने ज़ोर दिया के ज़रूर ले लो। उसने रेत मुठ्ठी भर कर अपने पियाले में डाली और दरया का कुछ पानी उसमें डाला। और वो पियाला मेरे आगे बढ़ा दिया के लो खाओ मैंने देखा के पियाला में शक्कर में मिले हुए लज़ीज़ सत्तू हैं। मैं ये देखकर हैरान रह गया और वो कहने लगा के जिसका काम इस तरह चल रहा है उसे रूपों की क्या ज़रूरत। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 72)

सबक़:- ये हैं अल्लाह वाले के उनके लिए रेत भी चीनी बन जाए

और एक उनकी मिस्ल बनने वाले भी हैं जिन्हें देसी चीनी भी ना मिले।

हिकायत नम्बर(523) भेड़ियों और बकरियों में सुलह

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रहमत-उल्लाह फ़रमाते हैं के मैंने तीन रात अल्लाह से ये दुआ की। के ऐ अल्लाह! मुझे बता दे के कल जन्नत में मेरा साथी कौन होगा? तीसरी रात मुझ हातिफ से एक आवाज़ आई के तुम्हारी जन्नत में साथी मेमूना वलीद होंगी जो कूफे में रहती है। मैं कूफे गया और मेमूना का दरयाफ़्त किया। लोगों ने बताया के वो तो एक दीवानी औरत है जो हमारी बकरियाँ चराने जाया करती है। और शाम को वापस आती है। मैंने चरागाह का पता लिया और शहर से बाहर जंगल में निकला। देखता क्या हूँ के मेमूना नमाज़ पढ़ रही है। और बकरियाँ और कुछ भेड़िये मिले जुले फिर रहे हैं। ना बकरियाँ भेड़ियों से डरती हैं और ना भेड़िये बकरियों पर हमला करते हैं। मैं वहाँ बैठ गया। इतने में मेमूना ने सलाम फैरते ही कहा। ऐ अब्दुल्लाह! वादा तो जन्नत में मिलने का है। यहाँ नहीं। मैंने कहा तुम्हें मेरा नाम किस ने बताया। वो बोली जिसने तुम्हें मेरा पता बताया। मैंने कहा ये तो बताओ के इन भेड़ियों ने बकरियों से सुलह कब से कर ली है? उसने कहा जब से मेमूना ने खुदा से सुलह कर ली है (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 73)

सबक़:- अल्लाह वाले इसरार के वाक़िफ़ होते हैं और उनके दम क़दम से भेड़ियों और बकरियों में भी अमन क़ायम रहता है। एक ये मिस्ल बनने वाले भी हैं। के उनके "दमक़दम" से बाप बेटे में, भाई भाई में, सास बहू में और घर भर में जंग जारी है।

हिकायत नम्बर(524) शराबी

हज़रत सरी सक़्ती रहमत-उल्लाह अलेह ने एक शराबी को देखा जो मदहोश ज़मीन पर गिरा हुआ था और अपने शराब आलूदा मुंह से अल्लाह अल्लाह कह रहा था, हज़रत सरी ने वहीं बैठ कर उसका मुंह पानी से धोया, और फ़रमाया। इस बेख़बर को क्या ख़बर? के नापाक मुंह से किस पाक ज़ात का नाम ले रहा है? मुंह धोकर आप चले गए। आपके जाने के बाद शराबी को होश आया तो लोगों ने उसे बताया के तुम्हारी बेहोशी के आलम में हज़रत सरी यहाँ आए थे और तुम्हारा मुंह धोकर गए हैं। शराबी ये सुनकर बड़े पशेमान और नादिम हुआ और रोने लगा और नफ़्स को मुखातिब करके बोला। बेशर्म! अब तू सरी भी तुझे इस हाल में देख गए हैं। खुदा से डर और

आईंदा के लिए तौबा कर। रात को हज़रत सरी ने ख़्वाब में किसी कहने वाले को ये कहते सुना के ऐ सरी तुम ने शराबी का हमारी ख़ातिर मुंह धोया है। हम ने तुम्हारी ख़ातिर उसका दिल धोया। हज़रत सरी तहज्जुद के वक़्त मस्जिद में गए तो उसी शराबी को तहज्जुद पढ़ते हुए पाया। आपने उससे पूछा के तुम में ये इंक़िलाब कैसे आ गया। तो वो बोला। आप मुझ से क्यों पूछते हैं जब के अल्लाह ने आपको बता दिया है। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 169)

सबक़:- अल्लाह वालों की बर्कत व निसबत से काया पलट जाती है और मरदूद भी मक़्बूल बन जाता है।

हिकायत नम्बर (525) अल्लाह के इनाम

एक आरिफ़ ने एक मग़रूर शख़्स को घोड़े पर सवार देखकर अज़ राह ताज्जुब उससे पूछा के भई इतना क्यों अकड़ते हो। उसने कहा बादशाह का ख़ास मौतमिद आला मसाहिब और उसकी खलवत का मोनिस हूँ। वो सोता है तो पेहरा मैं देता हूँ। उसे भूक लगती है तो खाना मैं खिलाता हूँ। प्यास लगती है तो पानी मैं पिलाता हूँ और मुझे इस बात पर बड़ा नाज़ है के बादशाह हर रोज़ दिन में तीन मर्तबा मुझ प्यार से देखता है। आरिफ़ ने पूछा अगर तुम से किसी काम में ग़फ़्लत या ख़ता हो जाए तो क्या होता है। वो बोला कोड़े लगते हैं और मारा जाता हूँ। आरिफ़ ने फ़रमाया अगर ये बात है तो फिर फख़्र व नाज़ तो मुझे तुम से बढ़कर करना चाहिए। क्योंके मैं जिस बादशाह का ग़ुलाम हूँ वो मुझे खुद खिलाता पिलाता है। सो जाऊँ तो मेरी हिफाज़त करता है। और तनहाई में मेरा मोनिस बन जाता है। और मुझ से कोई ग़फ़्लत या ख़ता हो जाए तो माफ कर देता है। और हर रोज़ दिन में तीन सौ साठ मर्तबा नज़रे रहमत से मुझे देखता है वो बादशाही ग़ुलाम इस बात से मुतास्सिर हुआ और घोड़े से उतर पड़ा। और कहा मुझे भी उस बादशाह का ग़ुलाम बना लीजिए। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 440, जिल्द अव्वल)

सबक़:- जो इनामो इक्राम अल्लाह ने अपनी मख़लूक़ पर किए हैं। ऐसे इनामो इक्राम कोई बड़े से बड़ा बादशाह भी नहीं कर सकता है।

हिकायत नम्बर (526) तुम्हारे मुंह से जो निकली वो बात हो के रही

सय्यद मोहम्मद यमनी रज़ी अल्लाहो अन्ह के एक साहबज़ादे थे जो मादरज़ाद वली थी। एक मर्तबा जब उम्र शरीफ चन्द साल की थी। बाहर

तशरीफ़ लाए और अपने वालिद माजिद की जगह तशरीफ़ रखी। एक शख़्स से कहा लिख *फुलानुन फिल जन्नती* यानी फलाँ शख़्स जन्नत में है। यूंही नाम बनाम बहुत से शख़्स को लिखवाया। फिर फ़रमाया लिख *फुलानुन फिन्नारी* यानी फलाँ शख़्स दोज़ख़ में है। उन्होंने लिखने से हाथ रोक लिया। आपने फिर फ़रमाया। उन्होंने ना लिखा। आपने तीसरी बार फ़रमाया। उन्होंने लिखने से इंकार कर दिया। इस पर आपने फ़रमाया अन्ता फिन्नारी तू आग में है" वो घबराए हुए उनके वालिद के पास पहुँचे। हज़रत ने फ़रमाया *अन्ता फिन्नारी* कहा। या *अन्ता फी जहन्नम?* अर्ज़ की *अन्ता फिन्नार* फ़रमाया। हज़रत ने इर्शाद फ़रमाया। मैं उसके कहे को बदल नहीं सकता तुझे इख़्तियार है। दुनिया की आग पसंद कर या आख़िरत की। अर्ज़ की दुनिया की आग पसंद है। उनका जल कर इन्तिक़ाल हुआ। (आला हज़रत मुजद्दिद बरैलवी रहमत-उल्लाह अलेह के मलफ़ूज़ात, सफ़ा 18, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूलों के मुंह से जो बात निकल जाए *लौ अक्सम अलल्लाह ला बर्राह* के मुताबिक के मुताबिक़ अल्लाह तआला वो बात पूरी फ़रमा देता है। लिहाज़ा उन अल्लाह वालों का हमेशा अदबो एहत्राम मलहूज़ रखना चाहिए और उनसे दुआएँ लेना चाहिए। और उनकी ख़फ्गी से बचना चाहिए।

हिकायत नम्बर (527) आंजोरा

हज़रत सरी सक़्ती रहमत-उल्लाह अलेह का रोज़ा था। ताक़ में ठंडा पानी होने के लिए आंजोरा रख दिया था। अस्र के मुराक़्बे में थे, हवारने बहिश्त ने यके बाद दीगरे सामने से गुज़रना शुरू किया। जो सामने आती उससे दरयाफ़्त फ़रमाते तो किस के लिए है। वो एक बन्दा खुदा का नाम लेती है। एक आई उससे पूछा। उसने कहा उसके लिए हूँ जो रोज़े में पानी ठंडा होने को ना रखे। फ़रमाया। अगर तू सच कहती है तो उस कोज़ह को गिरा दे। उसने गिरा दिया। उसकी आवाज़ से आँख खुल गई। देखा तो आंजोरा टूटा पड़ा था। (मलफ़ूज़ात, सफ़ा 86)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे आक़्बत की ख़ातिर दुनिया के ऐशो आराम को ख़ातिर में नहीं लाते।

हिकायत नम्बर (528) निसबत का लिहाज़

एक फक़ीर भीक माँगने वाला एक दुकान पर खड़ा कह रहा था। एक

रुपा दे दो। वो ना देता था। फकीर ने कहा। रुपया देना है तो दे दो। वरना तेरी सारी दुकान उलट दूंगा।" इस थोड़ी देर में बहुत लोग जमा हो गए। इत्तिफाक़न एक साहबे दिल का गुज़र हुआ जिनके सब लोग मौतक़िद थे। उन्होंने दुकानदार से फ़रमाया। जल्द रुपया दे दो वरना दुकान उलट जाएगी। लोगों ने अर्ज़ की, हज़रत! ये बे शरअे जाहिल क्या कर सकता है? फ़रमाया मैंने इस फकीर के बातिन पर नज़र डाली के कुछ है भी? मालूम हुआ बिलकुल खाली है। फिर उसके शेख को देखा। उसे भी खाली पाया। उसके शेख के शेख को देखा उन्हें अहले अल्लाह से पाया और देखा वो मुंतज़िर खड़े हैं के कब ज़बान से निकले और उसकी दुकान को उलट दूं। (अलमलफ़ूज़, सफ़ा 15, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह वालों के सिलसिला नसब में जो बड़ा भी आ जाए उस निसबत की बर्कत से वो मुसतफीद ज़रूर होता है। पस उन अल्लाह वालों से ताल्लुक़ पैदा करना चाहिए और उनकी ग़ुलामी इख़्तियार करना चाहिए।

हिकायत नम्बर (529) बूढ़ा ग़ुलाम

एक साहब सालेहीन से थे। बहुत ज़ईफ हुए। पंजगाना नमाज़ की हाज़री ना छोड़ते। एक शब इशा की हाज़री में गिर पड़े चोट आई। बाद नमाज़ अर्ज़ की। इलाही अब मैं बहुत ज़ईफ हुआ। बादशाह अपने बूढ़े ग़ुलामों को खिदमत से आज़ाद कर देते हैं। मुझे आज़ाद फ़रमा। उनकी दुआ क़बूल हुई। मगर यूं के सुबह उठे तो मजनून थे। यानी जब तक अक़्ल तकलीफी बाक़ी है नमाज़ माफ नहीं। (मलफ़ूज़ात, सफ़ा 82, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे जवानी और बूढ़ापे हर हाल में फ़रायज़ इलाही से ग़ाफिल नहीं रहते। और ये भी मालूम हुआ के जब तक होश क़ायम है नमाज़ का पढ़ना फर्ज़ है और जो शख़्स चंगा भला होकर नमाज़ ना पढ़े वो बड़ा ही पागल है।

हिकायत नम्बर (530) जिन्दा पीर

हज़रत सय्यदी अहमद जाम ज़िन्दा पीर रज़ी अल्लाहो अन्ह एक मर्तबा तशरीफ़ लिए जाते थे। राह में एक हाथी मरा पड़ा था। लोगों का मजमआ था आप तशरीफ़ ले गए। फ़रमाया क्या है? अर्ज़ की हाथी मर गया है। आपने फ़रमाया। उसकी सूंड भी वैसी ही। आँखें भी वैसी ही हैं हाथ भी वैसे हैं। पैर भी वैसे ही हैं। फिर मर कैसे गया? ये फ़रमाना था के हाथी फौरन

ज़िन्दा हो गया। जब से उनका लक़ब ज़िन्दा पीर हो गया। (मलफ़ूज़ात, सफ़ा 16, जिल्द 1)

सबक़:- उन अल्लाह वालों की ज़बान में वो असर व तासीर होती है के उसकी बदौलत मुर्दों को ज़िन्दगी मिल जाती है। फिर वो लोग जो खुद ही मुर्दा हों इन ज़िन्दा बल्के ज़िन्दा करने वालों से दावा बराबरी कैसे कर सकते हैं?

हिकायत नम्बर (531) तीन क़लंदर

तीन क़लंदरों ने निज़ाम-उल-हक़ वालदैन महबूबे इलाही क़ुद्स सरहू से खाना माँगा खुद्दाम को लाने का हुक्म दिया। ख़ादिम ने जो उस वक़्त मौजूद था उनके सामने रखा। उनमें से एक ने वो खाना उठा कर फैंक दिया और कहा अच्छा खाना लाओ। हज़रत ने इस नाशायस्ता हरकत का कुछ खयाल ना फ़रमाया। खुद्दाम को इससे अच्छा खाना लाने का हुक्म फ़रमाया। ख़ादिम ने पहले से अच्छा लाया। उन्होंने फिर फैंक दिया। और उससे भी अच्छा माँगा। हज़रत ने और अच्छे का हुक्म दिया। ग़र्ज़ उन्होंने इस बार भी फैंक दिया और इससे अच्छा माँगा इस पर क़लंदर को अपने पास बुलाया और कान में इर्शाद फ़रमाया के ये खाना इस मुर्दार बैल से तो अच्छा था जो तुम ने रास्ते में खाया था। ये सुनते ही क़लंदर का हाल मुतग़य्यर हुआ। राह में तीनों फाक़ों के बाद एक मरा हुआ बैल जिस पर कीड़े पड़े हुए थे। मिला था। उसका गोश्त खाकर आए थे। क़लंदर हुज़ूर के क़दमों पर गिर पड़ा। हुज़ूर ने उसका सर उठाकर अपने सीने से लगा लिया। और जो कुछ अता फ़रमाना था अता फ़रमा दिया। (मलफ़ूज़ात आला हज़रत, सफ़ा 12, जिल्द 1)

सबक़:- बुज़ुर्गों को हर बात का इल्म होता है और वो अपने इल्म का इज़्हार वक़्त पर और ज़रूरत के मौक़े पर करते हैं।

हिकायत नम्बर (532) ख़्वाजा तौरे बलिहारी जाऊँ

भागल पुर से एक साहब हर साल अजमेर शरीफ हाज़िर हुआ करते थे। एक मुनकिर औलिया रईस से मुलाक़ात हुई। उसने कहा। मियाँ हर साल कहाँ जाया करते हो। बेकार इतना रुपया सर्फ करते हो। उन्होंने कहा चलो और इंसाफ की आँखों से देखो। फिर तुम्हें इख़्तियार है। खैर एक साल वो साथ में आया देखा एक फक़ीर सोंटा लिए रोज़ा शरीफ का तवाफ कर रहा है। और ये सदा लगा रहा है ख़्वाजा पाँच रुपये लूंगा और एक घंटा के अन्दर लूंगा

और एक ही शख़्स से लूंगा। जब इस मुनकिर औलिया रईस को खयाल हुआ के अब बहुत वक़्त गुज़र गया। एक घंटा हो गया होगा और अब तक किसी ने उसे कुछ ना दिया। जब से पाँच रुपये निकाल कर उसके हाथ पर रखे और कहा। लो। मियाँ तुम ख़्वाजा से माँग रहे थे। भाई ख़्वाजा क्या देंगे लो हम देते हैं फक़ीर ने वो रुपये जैब में रखे और एक चक्कर लगा कर ज़ोर से कहा।

ख़्वाजा तोरे बलिहारी जाऊँ। दिलवाए भी कैसे....मुनकिर से।(मलफ़ूज़ात, सफ़ा 41, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह वाले ऐसा वसी इख़्तियार रखते हैं के मुनकिरों की जैब से भी उन्हें दिलवालने का तसर्रूफ़ हासिल है।

दर फ़ैज़ हक़ बन्द जब था ना अब कुछ
फक़ीरों की झोली में अब भी है सब कुछ
ये अल्लाह वाले हैं देते हैं सब कुछ
मगर चाहिए उनसे लेने का ढब कुछ

हिकायत नम्बर(533) दिल की बात

एक साहब औलिया इक्राम रहमत-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन में से थे। आपकी ख़िदमत में बादशाहे वक़्त क़दम बोसी के लिए हाज़िर हुआ। हुज़ूर के पास कुछ सेब नज़्र में आए थे। हुज़ूर ने एक सेब दिया। और कहा खाओ अर्ज़ की हुज़ूर भी नोश फ़रमायें आपने भी खाए और बदाशाह ने भी। उस वक़्त बादशाह के दिल में खयाल आया के ये जो सब में बड़ा खुश रंग सेब है अगर अपने हाथ से उठा कर देंगे। तो जान लूंगा के ये वली हैं। आपने वही सेब उठा कर फ़रमाया। हम मिस्र में गए थे वहाँ एक जलसा बड़ा भारी था। देखा के एक शख़्स है। उसके पास एक गधा है उसकी आँखों पर पट्टी बंधी है। एक चीज़ एक शख़्स की दूसरे के पास रख दी जाती है। उस गधे से पूछा जाता है। गधा सारी मजलिस में दौरा करता है। जिसके पास होती है सामने जाकर सर टेक देता है। ये हिकायत हम ने इसलिए बयान की के अगर ये सेब हम न दें तो वली ही नहीं और अगर दे दें तो इस गधे से बढ़कर क्या कमाल किया। ये फ़रमा कर सेब बादशाह की तरफ़ फैंक दिया (मलफ़ूज़ात, सफ़ा 10, जिल्द 4)

सबक़:- अल्लाह वाले दिलों के भेदों और छुपी बातों को जान लेते हैं। और ये भी मालूम हुआ के दिल की बातें जान लेना उन अल्लाह वालों के सामने कोई ऐसा बड़ा कमाल नहीं और वो इस बात को एक मामूली बात कहते हैं।

हिकायत नम्बर(534) रूबाई का जवाब

अमीर खुसरो के वालिद अपने दो बेटों को लेकर ख़्वाजा निज़ामउद्दीद औलिया का मुरीद होने के लिए हाज़िर हुए। लकिन जब अन्दर ख़ानक़ाह में घुसने लगे तो अमीर खुसरो ने जो छोटे बेटे थे, कहा मैं अंधाधुंद मुरीद बनना नहीं चाहता। आप और भाई तशरीफ़ ले जाइये और मुझे दरवाज़े पर ही छोड़िये। चुनाँचे वो अन्दर चले गए। और अमीर खुसरो ने दरवाज़े पर बैठे बैठे ये रूबाई तसनीफ की।

तो आँ शाहे के बर एवाने क़सरत
कबूतर गरनशीद बाज़ गर्दो
ग़रीबे मस्तमंदे बर दरे आमद
बयायद अंदुरूं या बाज़ गर्दो

"यानी ऐ ख़्वाजा निज़ामउद्दीन! तू वो बादशाह है के तेरे क़स्र के ऊपर अगर कबूतर बैठे तो बाज़ बन जाए। एक मुसाफिर और हाजतमंद तेरे दर पै आया है उसके लिए क्या हुक्म है। अन्दर चला आए या वापस जाए।"

इस रूबाई को कहकर अमीर खुसरो ने सोचना शुरू किया। के अगर ख़्वाजा साहब बातिन हैं तो मुझे जवाब देंगे तो फिर मैं उनका मुरीद हो जाऊँगा। के इतने में ख़्वाजा निज़ामउद्दीन औलिया ने अपने एक ख़ादिम से फ़रमाया के बाहर एक तुर्क बच्चा बैठा है उसे जाकर ये शैर सुना दो...

बयायद अंदरून मर्द हक़ीक़त
के बामा यक नफ़्स हम राज़ गर्दो
अगर अबला बूद आँ मर्दे ना.दाँ
अज़ाँ रा है के आमद बाज़ गर्दो

"यानी खुसरो मैदाने हक़ीक़त का मर्द है तो अन्दर आ जाए ताके थोड़ी देर हमारा हमराज़ बन सके। और अगर वो मर्दे नादान अबला है तो जिधर से आया है उधर चल दे।"

अमीर खुसरो ये सुनकर हज़रत ख़्वाजा साहब की ख़िदमत में हाज़िर हो गए। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 224)

सबक़:- अल्लाह वाले साहबे बातिन होते हैं और दिली इसरार रमूज़ पर उन्हें आगाही हासिल होती है। पस उन अल्लाह वालों के मुतअल्लिक़ कोई बदगुनामी दिल में ना रखनी चाहिए।

हिकायत नम्बर(535) खयानत

वाली-ए-लाहोर ने एक मर्तबा ने एक मर्तबा हज़रत बाबा फ़रीदउद्दीन शकर गंज रहमत-उल्लाह अलेह की ख़िदमत में सौ दीनार आपके दोस्त शहाबउद्दीन ग़ज़नवी के हाथ भेज। शहाबउद्दी ने पचास दीनार अपने पास रख लिए और पचास हज़रत की नज़्र किए। आपने क़बूल फ़रमा कर फ़रमाया। शहाबउद्दीन! खूब बिरादराना निस्फ़न निस्फ़ी तक़सीम की। दुरवैशों के लिए ये बात मुनासिब नहीं। शहाबुउद्दीन बड़ा शरमिंदा हुआ और बक़िया दीनार पेश किए। आपने तमाम दीनार उनको दे दिए। फ़रमाया ये बात सिर्फ़ इसलिए की गई के खयानत बड़ा गुनाह है। खायन को कोई इबादत क़बूल नहीं। शहाबउद्दीन ने दोबारा आपकी बैत की। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 224)

सबक़: सच्चे मुसलमान कभी खयानत नहीं करते और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों पर हर बात अयाँ हो जाती है।

हिकायत नम्बर(536) गिरफ़्तारी

हज़रत ख़्वाजा अजमेरी अलेह अर्रहमा विलायते हिन्द मिलने के बाद कुछ रोज़ देहली में ठहरे। उस वक़्त शाहान हनूद में से राय पथूरा हकूमत करता था। एक मर्तबा राय पथूरा हुज़ूर ग़ारीब नवाज़ के एक मुसलमान खादिम पर गुस्सा हुआ और उसे बे वजह तकलीफ दी। खादिम ने हुज़ूर ग़रीब नवाज़ से शिकायत की। आपने राय पथूरा को एक ख़त लिखा और हुक्म दिया के आईंदा मेरे ख़ादिम को तकलीफ ना दी जाए। लेकिन बदबख़्त पथूरा ने उसकी परवाह की। बल्के गुसताखी से कहने लगा के ये मुसाफिर जब से यहाँ आया है। ग़ैब की ख़बरें देता है। मगर मुझे इस शख़्स की कुछ परवाह नहीं। हुज़ूर ग़रीब नवाज़ ने जब उसका ये रऊनत आमेज़ जवाब सुना तो अपनी ज़बान मुबारक से फ़रमाया।

"हम ने राय पथूरा को ज़िन्दा पकड़ लिया और पकड़कर लश्करे इस्लाम के हवाले कर दिया"

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ज़बान से जो निकल गया वही होकर रहा। लश्करे इस्लाम शहर ग़ज़नी से बसर कर्दगी सुलतान शहाबउद्दीन ग़ौरी दफअतन आ पहुँचा और लश्कर हनूद को लड़ाई में शिकस्त दी। (इक़्तिबास-उल-अनवार, सफ़ा 128)

सबक़:- अल्लाह वालों की ज़बान से जो बात निकल जाए वो होकर रहती है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों पर ग़ैब जानने की फबतियाँ कहना और उनसे बे परवाह रहना मुसलमानों का काम नहीं। पस उन अल्लाह वालों को सताने के दरपे ना होना चाहिए।

हिकायत नम्बर(537) एक सय्यद बुज़ुर्ग

एक बुज़ुर्ग सय्यद साहब के पास उलमाऐ बाकमाल के हर एक उनमें से एक एक फन में माहिर था। हाज़िर हुए और अर्ज़ उनकी आपका इम्तिहान लेना था। क्योंके मशहूर था के सय्यद साहब उलूम दरसिया में कोई साहबे कमाल नहीं। ये उलमा आपको दिक़ करने की ग़र्ज़ से हाज़िर हुए थे। ग़र्ज़ उन्होंने आपसे मुखतलिफ फिनून के कुछ सवालात किए। सय्यद साहब कभी दाहिनी तरफ़ देखकर जवाब देते थे और कभी बायीं तरफ़। जब उलमा चले गए तो किसी ने पूछा के आप दायीं तरफ़ देखकर क्यों जवाब देते थे। फ़रमाया। जब ये उलमा आए तो मैंने हक़ तआला से दुआ की। के एक अल्लाह मेरी सुबकी ना हो। अल्लाह तआला ने अबु हनीफा की रूह को मेरी दाहिनी तरफ़ और शेख बू अली सीना की रूह को बायें जानिब हाज़िर कर दिया। जब उलमा मनकूलात का वाल करते। मैं हज़रत अबु हनीफा से दरयाफ़्त करके जवाब दे देता था। और माकूलात का सवाल करते तो शेख से दरयाफ़्त करके बयान कर देता था। (देवबंदी हज़रात के हकीम-उल-उम्मत मोलवी अशरफ़ अली साहब थानवी रिसाला अलबक़ा अप्रेल 1950)

सबक़:- मोलवी अशरफ़ अली साहब थानवी की भी इस तहरीर से साबित हो गया के अल्लाह वाले विसाल के बाद भी मुश्किल के वक़्त इम्दाद करते हैं। फिर जो सारे वलियों और नबियों के भी सरदार हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हैं उनके इम्दाद फ़रमाने और बाद अज़ विसाल भी मुश्किल कुशा होने का इंकार करना क्यों बेख़बरी और नादानी और अदावत पर महमूल ना होगा।

हिकायत नम्बर(538) अब्दाल

शाह अब्दुल अज़ीज़ रहमत-उल्लाह अलेह से किसी शेख़ ने शिकायत की के हुज़ूर आज कल देहली का इन्तिज़ाम बहुत सुस्त है उसकी वजह क्या है? फ़रमाया आज कल यहाँ के साहबे ख़िदम (अब्दाल देहली) सुस्त हैं। पूछा के कौन साहब हैं शाह साहब ने कहा के एक कुंजड़ा बाज़ार में ख़रबूज़े

फ़रोख़्त कर रहा है। वो आज कल साहबे खिदमत है। उसके इम्तिहान के लिए आ गए। और इम्तिहान इस तरह किया के खरबूज़े काट काट कर और चख चख कर सब नापसंद करके टोकरे में रख दिए। वो कुछ नहीं बोले। चन्द रोज़ के बाद देखा के इन्तिज़ाम बिलकुल दुरूस्त है। उसी शख़्स ने फिर पूछा के आज कल कौन हैं? शाह साहब ने फ़रमाया के एक सक़्क़ा है जो चाँदनी चौक में पानी पिलाता है। मगर एक प्यास की एक छिदाम लेता है। ये छिदाम ले गए और उनसे पानी माँगा। उन्होंने पानी दिया। उसने पानी गिरा दिया। के इसमें तिंका है। और दूसरा कटोरा माँगा। उन्होंने पूछा के और छिदाम है? उसने कहा के नहीं। उन्होंने एक धूल रसीद किया और कहा खरबूज़े वाला समझा होगा। (मोलवी अशरफ़ अली साहब की किताब तादीब अलमअसियत, सफ़ा 12)

सबक़:- अल्लाह वाले रूहानी हाकिम होते हैं और ये भी मालूम हुआ के अगली पिछली सब बातें उन अल्लाह वालों के इल्म में होती हैं और इस हक़ीक़त पर मौलवी अशरफ़ अली अली साहब की भी तहरीर शाहिद है।

हिकायत नम्बर(539) अगर दारिद बराए दोस्त दारिद

मौलाना जामी अलेह अर्रहमत पीर की तलाश में हज़रत ख़्वाजा उबैदउल्लाह अहरार के यहाँ पहुँचे तो ख़्वाजा साहब के यहाँ बड़ा ठाठ था। हर तरह की नअेमतें दुनिया की मौजूद थीं। मौलाना जामी आकर बहुत पछतावे और जोश में आकर ख़्वाजा साहब के सामने ही बे इख़्तियार मुंह से निकला.... ना मर्दअस्त आँके दुनिया दोस्त दारिद

और ये कहकर बहुत हसरत व अफसोस के साथ किसी मस्जिद में जाकर लेट गए। ख़्वाब में देखा के मैदाने हश्र क़ायम है और मौलाना जामी किसी क़र्ज़ ख़्वाह के तक़ाज़े से सख़्त परेशान हैं के एक जानिब से हज़रत ख़्वाजा साहब बातज़क व एहतिशाम तशरीफ़ लाए। और फ़रमाया। दुरवैश को क्यों परेशान किया"। हम ने जो ख़ज़ाना यहाँ जमा किया है। उसमें से उसे क़र्ज़ दे दो। उसके बाद आँख खुल गई। उस वक़्त ख़्वाजा साहब उसी मस्जिद में मशरीफ ला रहे थे। मौलाना जामी ने फौरन हाज़िर होकर पाँव पर सर रख दिया और अर्ज़ किया। हुज़ूर! मेरी गुसताख़ी माफ कीजिए। ख़्वाजा साहब ने फ़रमाया वो मिसरा किस तरह पढ़ा था। अर्ज़ किया हुज़ूर वो तो ग़लती थी। फ़रमाया। उसको हम फिर सुनना चाहते हैं। मौलाना ने फ़रमाया मेरे मुंह से यहाँ के सामान को देखकर ये निकला था। ना मर्दअस्त आँके

दुनिया दोस्त दारिद

फरमाया के ये सही है। मगर मिसरा ना तमाम है उसके साथ ये मिसरा और मिला दो...... अगर दारिद बराऐ दोस्त दारिद (मौलवी अशरफ़ अली साहब की किताब दावत अब्दीयत)

सबक़:- अल्लाह वाले मुश्किल के वक़्त काम आते हैं। और ये भी मालूम हुआ के जो माल मोहताजों की मदद और दीन की ख़िदमत के लिए जमा किया जाए वो माल दुनिया नहीं बल्के सब दीन है।

हिकायत नम्बर (540) जनाज़ा

हज़रत सुलतान औलिया सुलतान निज़ामउद्दीन क़ुद्स सरहू की वफात हुई तो उनके खलीफा ने जनाज़े के साथ ये शैर पढ़े।

सख़्त बे मोहरी के बे मामी रवी
सरो सीमीना बसहरा मै रवी
ऐ तमाशा गाह आलम रूवे तो
तो कजा बहर तमाशा मी रवी

लिखा है के कफन में से हाथ ऊँचा हो गया। लोगों उनको खामोश कर दिया। (मोलवी अशरफ़ अली साहब का वाज़ अलबक़ी, सफ़ा 21)

सबक़:- मालूम हुआ के अल्लाह वाले विसाल के बाद भी ज़िन्दा होते हैं। फिर अगर कोई शख़्स खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ही को हयातउन्नबी ना माने तो वो किस क़द्र बदबख़्त और मुर्दा दिल है।

हिकायत नम्बर (541) ग़ौसे आज़म

हज़रत ग़ौसे आज़म रहमत-उल्लाह अलेह के हमअस्र एक बुज़ुर्ग हैं। हज़रत सय्यद अहमद कबीर रफ़ाई, ये बहुत बड़े औलिया कबार में से हैं। मगर हज़रत ग़ौसे आज़म रहमत-उल्लाह अलेह के बराबर मश्हूर नहीं। एक मर्तबा हज़रत ग़ौसे आज़म रहमत-उल्लाह अलेह के पास एक शख़्स मुरीद होने को आया। फ़रमाया। भई! तेरी पैशानी से शिक़ावते नुमायाँ हैं। तुझ को क्या मुरीद करूं। ये शख़्स सय्यद अहदम कबीर रफ़ाई रहमत-उल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। सूरत देखकर फ़रमाया। आओ भई! मैं खुद भी ऐसा हूँ" (मौलवी अशरफ़ अली साहब की किताब-उल-अज़ाफात अलयोमिया। मनदर्जा अलनूर थाना भवन रजब-उल-मुजर्रिब, सफ़ा 1351हि॰)

सबक़:- ये सारी इबाद मौलवी अशरफ़ अली साहब की अपनी है

और इस मौलवी साहब ने हुज़ूर ग़ौसे आज़म को "ग़ौसे आज़म" लिखा है और "ग़ौस" का मानी है। "फ़रयादरस" (सराह, 122) और आज़म का मानी है "बहुत बड़ा" तो गोया मौलवी अशरफ़ अली साहब भी हुज़ूर ग़ौसे आज़म को "बहुत बड़ा फ़रयादरस" तसलीम करते हैं। फिर अगर कोई शख़्स अल्लाह के मक़्बूल बन्दों से फ़रयाद करने और उनको मुश्किल कुशा मानने को शिर्क बताए तो वो मौलवी अशरफ़ अली साहब के खिलाफ भी हुआ या नहीं?

नवाँ बाब

खुलफा-ए-सलातीन

हिकायत नम्बर(542) सवारी का घोड़ा

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ी अल्लाह अन्ह जब ख़लीफ मुक़र्रर हुए, तो दारोग़ा असतबल आपके लिए ख़ास सवारी का घोड़ा लाया। तो आपने फ़रमाया। के ये क्या है बताया गया। के ये ख़लीफ-ए-वक़्त के लिए सवारी का ख़ास घोड़ा है। आपने फ़रमाया के मेरा अपना जो खच्चर है वही लाओ। मैं इस ख़ास घोड़े पर ना बैठूंगा। (तारीख़-उल-खुलफाअल इमाम सयूती रहमत-उल्लाह अलेह, सफ़ा 160)

सबक़:- हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ बड़े ही खुदा तरस, आदिल और रिआया परवर ख़लीफा थे, और आपकी सीरत हमारे लिए एक मशअले राह है इस हिकायत से मालूम हुआ के इंसान को किसी ओहदा मिलने से अपनी पहली हालत भुला ना देनी चाहिए।

हिकायत नम्बर(543) बैश क़ीमत मोती

हज़रत उमर अब्दुल अज़ीज़ की बीवी फातिमा बिन्ते अब्दुल मलिक के पास एक बैश क़ीमत मोती था, जो उनके वालिद अब्दुल मलिक ने उनको दिया था, एक रोज़ हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने अपनी बीवी से कहा के तुम अपना ज़ेवर या तो बैत-उल-माल में दे दो, या मुझे ना पसंद करो। ताके मैं तुम्हें अलेहदा कर दूं। क्योंके मुझ से ये नहीं देखा जाता के मैं और तुम्हारा ज़ेवर एक घर में हो। आपकी ज़ोजा मोहत्रमा ने जवाब दिया के मैं आपको तरजीह देती हूँ। आप मेरा ताम ज़ेवर बैत-उल-माल में दाखिल कर

दीजिए। चुनाँचे आपने उनका तमाम ज़ैवर बैत-उल-माल में जमा कर दिया। और जब आपका इन्तिक़ाल हो गया। और यज़ीद बिन अब्दुल मलिक तख़्त पर बैठा। तो उसने आपकी हरम मोहत्रम से कहा के आगर आप चाहें तो आपका सारा ज़ैवर बैत-उल-माल से वापस दे दिया जाए। आपने जवाब दिया के जो चीज़ मैं खुशी से उनकी हयात में दे चुकी हूँ। वो उनके इन्तिक़ाल के बाद वापस ना लूंगी। (तारीख-उल-ख़ुलफा सफ़ा 122)

सबक़:- खुदा तरस हाकिम दुनयवी माल से कभी मोहब्बत नहीं करते और वो हर हाल में अपनी रिआया के नफे व फायदे को मलहूज़ रखते हैं, ये भी मालूम हुआ के जो लोग "बैत-उल-माल" का मानी "घर का माल" समझते हैं वो बड़े ही नाअक़्बत अंदेश हैं।

हिकायत नम्बर(544) भेड़िये और बकरियाँ

हसन क़साब ने एक दफा देखा के भेड़िये और बकरियाँ एक साथ फिर रहे और चर हैं। ये अजीब मंज़र देखा वो बोला सुबहान अल्लाह! भेड़िया बकरियों के पास हो और फिर बकरियों का कोई नुक़्सान ना हो। ये अजीब बात है। चरवाहे ने ये बात सुनी तो कहने लगा। *इज़ा सुलह अलरास फलेसा अलल जस्द बास*

यानी जब सर में इस्लाह हो तो फिर बदन को भी कोई किसी क़िस्म का नुक़्सान व ख़तरा नहीं होता। मतलब ये के हमारा हाकिम नेक और आदिल है, इसलिए रिआया भी अमन व आफियत में है। (तारीख़-उल-ख़ुलफा, सफ़ा 162)

सबक़:- हाकिम के अद्ल व इंसाफ से मुल्क भर में अमन व आफियत रहती है।

हिकायत नम्बर(545) बारे हकूमत

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ जब ख़लीफ मुक़र्रर हुए तो आप अपने घर जाकर मुसल्ले पर बैठ कर रोने लगे हत्ता के आपकी तमाम दाढ़ी आँसूओं से तर हो गई। आपकी बीवी ने आपसे दरयाफ़्त किया। के आप रोते क्यों हैं? तो फ़रमाया मेरी गर्दन में उम्मत मोहम्मदिया सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का कुल बोझ डाल दिया गया है। मैं अपनी रिआया के भूके, नंगे फक़ीर, मरीज़ और मज़लूम व मोहताज, क़ैदी व मुसाफिर, बूढ़े और बच्चे और अयाल दार ग़र्ज़ तमाम मुसीबत ज़दों की ख़बर गीरी के मुतअल्लिक़

ग़ौर करता हूँ और डरता हूँ के कहीं उनके मुतअल्लिक़ खुदाऐ तआला मुझ से बाज़ पुर्स ना कर बैठे और मुझ से जवाब ना बन आए। उसी फिक्र में रो रहा हूँ। (तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 164)

सबक़:- हकूमत एक बहुत बड़ा बोझ और ज़िम्मेदारी का काम है खुदा तरस हाकिम मसनदे हकूमत पर बैठ कर अपने भी हाकिम खुदा तआला को भूल नहीं जाते बल्के उसकी बाज़ पुर्स से डरते रहते हैं। और रिआया के हर फर्द का खयाल रखते हैं।

हिकायत नम्बर(546) अपना काम आप

रिजाह बिन हयात कहते हैं। के एक रात मैं किसी काम के लिए हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के पास गया और रात के काफी हिस्से तक वहाँ बैठा रहा, इतने में चिराग़ बुझ गया। और आपका ख़ादिम आपके बराबर सो रहा था। मैंने कहा के मैं उसे जगा दूं? ताके ये चिराग़ जला दे। और आपने फ़रमाया, कोई ज़रूरत नहीं। मैंने कहा। तो मैं जला दूं? आपने फ़रमाया के मेहमान से काम लेना मुरव्वत के खिलाफ है। मैं खुद जलाता हूँ। चुनाँचे आप खुद उठे और चिराग़ में तेल डाल कर उसको रोशन कर दिया। फिर आप मेरे पास आए और फ़रमाने लगे क मैं खुद उठा और चिराग़ जला लिया। और वही उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ बाक़ी रहा जो पहले था। (तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 166)

सबक़:- पहले नेक दिल लोग बावजूद बहुत बड़े ओहदे पर फायज़ हो जाने के भी अपना काम आप कर लिया करते थे ये नहीं के जितना ऊँचा हो जाए उतना ही अपाहज बन जाए। खुद सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम भी जो सारे ऊँचों से ऊँचे हैं अपना काम आप कर लिया करते थे। पस आज हमें भी अपना काम आप करने की आदत डालना चाहिए। और हर काम के लिए नौकर ही रखने की आदत ना रखना चाहिए।

हिकायत नम्बर(547) क़िस्सा

ख़ालिद बिन सफवान एक रोज़ हश्शाम बिन अब्दुल मलिक के यहाँ मेहमान हुए ख़लीफा हश्शाम ने ख़ालिद से कहा के कोई किस्सा सुनाओ। ख़ालिद ने कहा सुनिए।

एक ज़ी इल्म और साहिबे इक़्बाल बादशाह खोरलिक़ की तरफ़ सेर के लिए निकला उसने रास्ते में अपने हमराईयों से पूछा के बताओ जिस

क़द्र मालो मताअ मेरे पास है, उतना कभी किसी बादशाह के पास हुआ है? एक पुराने ज़माने का बूढ़ा भी साथ था। वो कहने लगा के अगर इजाज़त हो तो इस बात का जवाब मैं अर्ज़ करूं। बादशाह ने कहा। बहुत अच्छा तुम ही बताओ। बूढ़े ने कहा। पहले आप ये बतायें के जो कुछ आपके पास है क्या उसमें कमी ना आएगी। और क्या ये सारा मालो मताअ आपको विरसे में नहीं मिला? और क्या आपके बाद ये मालो मताअ आपके जानशीन को विरसे में ना मिलेगा?

बादशाह ने जवाब दिया के ये तीनों बातें वाक़ै होंगी, बूढ़े ने कहा। तो फिर बड़ा ताज्जुब है के आप ऐसी चीज़ से ग़ुरूर में आ गए। जो कम भी होने वाली है। और जिसका ज़्यादा हिस्सा आपके पास से दूसरे के पास मुंतक़िल होने वाला है। और जो कुछ आपने खर्च कर लिया है। उसका हिसाब होने वाला है। बादशाह ये सुनकर कांप उठा और बोला के कहाँ चला जाऊँ और करूं? बूढ़े ने कहा के अगर बादशाही करना चाहता है तो अपने ज़ाहिर व बातिन में अल्लाह तआला की इताअत व फ़रमाँबर्दारी कर। वरना तख़्तो ताज छोड़ और गडरी पहन कर रब की इताअत और फ़रमाँबर्दारी कर। बादशाह ने कहा के मैं रात को सोचूंगा और सुबह जो राय हुई बताऊँगा। चुनाँचे सुबह हुई तो बादशाह ने कहा के मैं बादशाहत छोड़ कर पहाड़ और चटयल मैदान इख़्तिार करता हूँ। और बजाए पोशाक शाही के गुदरी पहनता हूँ। तुम भी मेरे साथ रहो। चुनाँचे उन दोनों ने एक पहाड़ को मिसकिन बना लिया। और मरते दम तक वहीं रहे।"

ये क़िस्सा सुनकर हश्शाम इतना रोया के उसकी दाढ़ी आँसूओं से तर हो गई। और अपने दोनों बेटों के काम सपुर्द करके गोशा नशीनी इख़्तियार कर ली। और अपने महल से नहीं निकला। ये हालत देखकर अराकीने सलतनत ने ख़ालिद बिन सफवान से कहा के तुम ने ये क्या कर दिया। और अमीर-उल-मोमिनीन की राहत व लज़्ज़त को गंवा दिया। ख़ालिद ने कहा के मैं मअज़ूर हूँ। मैंने अपने अल्लाह से अहद कर लिया है के जब कभी किसी बादशाह से मिलूंगा तो उसे खुदा तआला से ज़रूर डराऊँगा। (तारीख़-उल-ख़ुलफा, सफ़ा 173)

सबक़:- दुनयवी मालो मताअ और हकूमत पर कभी मग़रूर ना होना चाहिए ये दुनिया किसी के हाथ से मिलती है। और किसी के हाथ में चली जाती है। उसे बक़ा व क़रार नहीं। और जितनी देर ये हमारे पास रहेगी उतना ही हिसाब भी देना पड़ेगा।

हिकायत नम्बर (548) ताऊन

ख़लीफा मनसूर ने एक मर्तबा मुल्के शाम में एक बदवी से कहा के शुक्र करो के खुदा तआला ने हमारी हकूमत के दौर में तुम लोगों के सर से ताऊन का मर्ज़ उठा लिया है। बदवी ने जवाब दिया। के तुम्हारी हकूमत और ताऊन दोनों बराबर हैं। खुदा तआला का शुक्र है के उसने दोनों को इकट्ठा हम पर मुसल्लत नहीं कर दिया। (तारीख़-उल-ख़ुलफा, सफ़ा 184)

सबक़:- ज़ालिम हकूमत रिआया के हक़ में मर्ज़ ताऊन से कम नहीं होती।

हिकायत नम्बर (549) मर्दे खुदा

ख़लीफा मनसूर ने एक रोज़ हज़रत उमरो बिन उबैद को बुला भेजा वो तशरीफ़ लाए। तो मनसूर ने उन्हें कुछ माल देना चाहा। उन्होंने क़बूल करने से इंकार फ़रमा दिया। मनसूर ने क़सम खाकर कहा के आपको ये माल लेना ही पड़ेगा। हज़रत उमरो बिन उबैद ने भी क़सम खा कर फ़रमाया के मैं हरगिज़ ना लूंगा। मनसूर का बेटा मेहदी जो पास ही बैठा था। कहने लगा के अमीर-उल-मोमिनीन ने क़सम खा ली है। आप ये माल ले लें आपने फ़रमाया। क़सम मैंने भी खा ली है। अमीर-उल-मोमिनीन को क़सम तोड़ने का कुफ़्फ़ारा अदा कर देना मेरी निसबत ज़्यादा आसान है। मनसूर ने कहा अच्छा कोई हाजत बयान कीजिए। आपने फ़रमाया। मेरी हाजत ये है के जब तक मैं खुद यहाँ ना आऊँ। मुझे बुलवाया ना जाए। और जब तक मैं खुद आप से कुछ ना माँगूं। मुझे कुछ ना दिया जाए। मनसूर ने कहा। क्या आपको इल्म है के मैंने मेहदी को अपना वली अहद कर दिया है। आपने फ़रमाया के तुम्हें मौत आएगी। तो तुम दूसरी बातों की तरफ़ इस तरह मशगूल हो जाओगे के तुम्हें इस बात का खयाल तक भी ना आएगा। (तारीख़-उल-ख़ुलफा, सफ़ा 184)

सबक़:- मर्दे खुदा बड़े से बड़े हाकिम के सामने भी जाकर मरऊब नहीं होते। और वो अपनी हक़ परस्ती की बदौलत अहले दुनिया और दुनिया से बे नियाज़ होते हैं।

हिकायत नम्बर (550) ज़नदीक़

अबु मुआविया ज़रीर फ़रमाते है। के मैंने एक रोज़ ख़लीफा हारून रशीद के दरबार में रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ये हदीस सुनाई के "हज़रत आदम और हज़रत मूसा अलेहिमा अस्सलाम की बेहस हुई"। इत्तिफाक़ से एक मौअज़्ज़िज़ शख़्स वहाँ बैठा था जिसके मुंह

से ये बात निकल गई के इन दोनों पैग़म्बरों की मुलाक़ात कहाँ हो गई थी? हारून रशीद को इस पर इतना गुस्सा आया के फौरन हुक्म दिया के ऐसे शख़्स की सज़ा तलवार है। ज़ंदीक़ हदीस रसूल अल्लाह सल-लल्लाो तआला अलेह व सल्लम पे तान करता है। मैंने अमीर-उल-मोमिनीन से कहा के उससे नादानिस्ता तौर ये बात निकल गई है। ये बात कहकर बमुश्किल हारून रशीद का गुस्सा ठंडा किया। (तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 197)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो ताअला अलेह व सल्लम की हदीसे पाक के सामने अपनी समझ व अक्ल को पेश करना। और हदीसे पाक पर किसी क़िस्म का तान करना अलहादू ज़िंदक़ा है और ये भी मालूम हुआ के पहले ज़माने में बड़े बड़े बादशाहों के दिलों में भी अज़मत हदीस मौजूद थी।

हिकायत नम्बर(551) तअज़ीमे इल्म

एक रोज़ अबु मुआविया ज़रीर (नाबीना) हारून रशीद के साथ खाना खाने बैठे। जब खाना खा चुके तो मामूल के मुताबिक़ अबु मुआविया के हाथ धुलाए गए। अबु मुआविया हाथ धो चुके तो हारून रशीद ने पूछा आप जानते हैं के ये आपके हाथ धुलाने वाला कौन था? अबु मुआविया बोले। के नहीं मैं नहीं जानता। हारून रशीद ने बताया के महेज़ तअज़ीमे इल्म के लिए आपके हाथ मैंने खुद धुलाए हैं। (तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 197)

सबक़:- आलिम की इल्म के सदक़े में बड़े बड़े बादशाह भी तअज़ीमे इल्म करते हैं और पहले ज़माना के बादशाह भी इल्म नवाज़ और उलमा दोस्त थे।

हिकायत नम्बर(552) बादशाह रोम

187हि० में बदाशाह रोम यक़फूर ने हारून रशीद को एक ख़त लिखा। जिसमें मलिका रोम ज़बनी के साथ किए गए अहद का ज़िक्र था। और लिखा था के ये ख़त यक़फूर बादशाह रोम की जानिब से हारून बादशाह अरब की तरफ़ है। वाज़ेह हो के मुझ से पहले जो मल्किा रोम पर क़ाबिज़ थी। उसके ज़माने में तुम लोगों की हैसियत रही थी जो शतरंज में रूख की होती हैं। और मलिका उसकी हिमाक़त के बाइस बमंज़िला पैदल के थी। इसीलिए उसने बहुत सा माल तुम्हें दे दिया। और सुलह कर ली। मगर अब जबके ये मेरा ख़त तुम्हारे पास पहुँचे तो वो सारा माल जो तुम आज तक उससे ले चुके हो। फौरन वापस कर दो। वरना तुम्हारे हमारे दरमियान अब

तलवार फैसला करेगी। फक़्त

ये ख़त पढ़कर हारून रशीद को इस क़द्र गुस्सा आया के गुस्से की वजह से मुशतईल हो गया यहाँ तक के उसके चेहरे को देखने की किसी को ताब ना रही। चै जायका उससे कोई बात कर सकता। उसके वज़ीर वुज़रा सब उसके पास से उठ कर चले आए। हारून रशीद ने बग़ैर किसी वज़ीर से मशवरा किए हुए क़लम दवात मंगवा कर उसकी पुश्त पर लिख दिया।

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम!" हारून अमीर-उल-मोमिनीन की तरफ़ से यक़्फूर रोम के कुत्ते को मालूम हो। के ओ काफिरा के बच्चे! मैंने तेरा ख़त पढ़ा जिसका जवाब तू अनक़रीब आँखों से देखेगा सुनने की ज़रूरत नहीं। फक़्त

और फिर खुद बनफ़्स नफीस लश्कर को लेकर उसी रोज़ रवाना हो गया। और रोम पहुँच कर वो मआरका आरा जंग लड़ी जो आज तक मश्हूर चली आती है और फतह हासिल की। यक़्फूर ने बा मजबूरी सुलह की दरख़्वास्त की। और हर साल खिराज देना मंज़ूर किया। जिसको हारून रशीद ने मंज़ूर कर लिया। और फौज को वापसी का हुक्म दे दिया। (तारीख़-उल-खुलफ़ा, सफ़ा 199)

सबक़:- मुसलमान *अशिदाऊ अलल कुफ़्फारी* की तफसीर होता है और गुरूर कुफ्र को तोड़ने के लिए हर वक़्त तैयार रहता है। और जब ये आला कलमत-उल-हक़ के लिए मैदान में निकल आए तो अल्लाह तआला की मदद व नुसरत उसके शामिले हाल होती है।

हिकायत नम्बर(553) पैंतीस हज़ार दीनार

ख़लीफा अबु नस्र मोहम्मद के ख़ज़ाने के तराज़ू में निस्फ क़ीरात के क़रीब कान थी। ख़ज़ाना के अम्माल चीज़ लेते तो हल्के पलड़े की तरफ़ तोल कर लेते थे और जब देते तो भारी पलड़े की तरफ़ तोल कर देते थे। इस बात का अबु नस्र को इल्म अहुआ तो उसने अमीर की तरफ़ एक तहदीद आमेज़ चिट्ठी लिखी जिसके अव्वल में चन्द क़ुरआनी आयतें लिखीं। जो कम तोलने वालों के मुतअल्लिक़ आई हैं। और फिर हुक्म दिया के हमें पता चला है के ख़ज़ाने तराज़ू का एक पलड़ा हल्का है। और चीज़ लेते वक़्त उस तरफ़ से और देते वक़्त भारी पलड़े की तरफ़ से तोल किया जाता है अगर ये इत्तिला दुरूस्त है तो आमिल ख़ज़ाने को हिदायत की जाए। के लोगों को बुला बुला कर अब वज़न करके पिछली तमाम कमी पूरी कर दी जाए। वज़ीर

ने जवाब में लिखा के तहक़ीक़ात करने से पता चला है के ये खराबी बड़ी मुद्दत से चली आती है जिसका हर रोज़ हिसाब हम ने लगा कर देखा तो 35 हज़ार दीनार हमें लोगों को देने पड़ेंगे। ख़लीफा ने जवाब में लिखा के अगर 35 करोड़ भी देने पड़ें तो कोई हर्ज नहीं। (तारीख़-उल-ख़ुलफा, सफ़ा 319)

सबक़:- कम तोलना बहुत बड़े अज़ाब का मौजिब है। क़ुरआने पाक में *वैलुन लिलमुतफ़्फ़ीन* का इर्शाद है। यानी कम तोलने वालों के लिए वैल है" पस हर मुसलमान को इस खयानत से बचना चाहिए और ये भी मालूम हुआ के क़यामत की गिरफ़्त से बचने के लिए दुनिया में करोड़ों रुपये भी खर्च करने पड़ें। तो इसी में फायदा है।

हिकायत नम्बर(554) सौदागरों का काम

ख़लीफा अबु नस्र एक रोज़ ख़ज़ाना में दाखिल हुए। तो ख़ादिम ख़ज़ाने ने अर्ज़ किया के हुज़ूर! ये आपके बाप के ज़माने में भरा रहता था। और अब आपकी सखावत के बाइस खाली है। अबु नस्र ने कहा। आख़िर मैं क्या तदाबीर इख़्तियार करूं के ये ख़ज़ाना भरा रहे। मुझे अल्लाह की राह में खर्च करना ही आता है। जमा करना तो सौदागरों का काम है। (तारीख़-उल-ख़ुलफा, सफ़ा 319)

सबक़:- माल दुनिया जहाँ तक हो सके अल्लाह की राह में खर्च करना चाहिए उसे जमा करके रख देना दीनदार लोगों का काम नहीं। बल्के ये दुनयावी सौदागरों का काम है।

हिकायत नम्बर(555) निराली तदबीर

ख़लीफा मनसूर अपने शहर में एक जगह बैठे थे के आपने एक ग़मगीन और परेशान हाल शख़्स को वहाँ से गुज़रते हुए देखा। ख़लीफा ने अपने ख़ादिम को हुक्म दिया के उसे मेरे पास बुला लाओ। चुनाँचे इस परेशान हाल शख़्स को ख़लीफा के रूबरू बुलाया गया। ख़लीफा ने उससे हाल पूछा तो वो बोला। के मैं तिजारत की ग़र्ज़ से बाहर गया हुआ था। और बहुत सा माल लेकर घर आया। और सारा माल अपनी बीवी के सपुर्द कर दिया। कुछ दिनों के बाद मेरी बीवी ने मुझे बताया। के सारा माल चोरी हो गया है। हालाँके घर में ना कोई नक़ब लगी देखी और ना ही छत उखड़ने का कोई निशान। ख़लीफा ने पूछा, के तुम्हारे निकाह को कितना अर्सा गुज़रा? उसने बताया के एक साल। फिर पूछा, के क्या वो कुंवारी थी? उसने कहा। नहीं। फिर पूछा,

के दूसरे ख़ाविंद से उसकी कोई औलाद है? कहा नहीं। फिर पूछा, के क्या वो ज़वान उम्र है या सन रसीदा? उसने बताया के नो उम्र है।

मनसूर ने एक इत्र की शीशी मंगाई। उस इत्र में बड़ी तेज़ खुश्बू थी। और ये इत्र सिर्फ मनसूर ही के लिया तैयार किया जाता था। ये शीशी उसे देकर कहा के इसे इस्तेमाल करो। इसके असर से तुम्हारा ग़म जाता रहेगा। जब ये परेशान हाल शख़्स वापस हो गया तो मनसूर ने अपने चार मौतमिद ख़ादिमों को बुलाकर वो इत्र सूंघाया। और कहा। के तुम में से हर एक शहर के एक एक दरवाज़े पर जाकर चक्कर लगाओ। और जो आने जाने वाला तुम्हारे क़रीब से गुज़रे। और उसमें से तुम्हें यही खुश्बू आए। तो उसको मेरे पास ले आओ।

इधर वो परेशान हाल शख़्स इत्र की शीशी लेकर घर गया। और वो शीशी अपनी बीवी को दी। और कहा के ये मुझे अमीर-उल-मामिनीन ने दी है। उसने सूंघकर अपने इस आशना को बुला भेजा। जिसे उसने सारा माल दिया था। और उसे वो शीशी दी। और कहा। के ये बेमिस्ल इत्र लो। और इसे लगाओ। ये इत्र अमीर-उल-मोमिनीन ने मेरे शौहर को दिया है। उसने वो इत्र लिया। और अपने कपड़ों पर और बदन पर मल लिया। और फिर शहर के एक दरवाज़े से गुज़रा। उस दरवाज़े पर जो ख़ादिम मुतय्यन था। उसने उसके बदन से वही खुश्बू मेहसूस की और उसे पकड़ कर मनसूर के पास ले आया। मनसूर ने उससे पूछा के ये इत्र कहाँ से लिया? उसने कहा। मैंने ये ख़रीदा है। मनसूर ने पूछा कहाँ से? तो वो घबरा गया। मनसूर ने पुलिस अफ़्सर को बुलाया और कहा के इसको ले जाओ। अगर ये चुराया हुआ माल जो इस क़द्र है वापस कर दे तो उसको छोड़ देना। और अगर ना दे तो उसे एक हज़ार कोड़े मारना। जब वो दोनों चले गए तो पुलिस अफ़्सर को फिर तनहा बुलाया। और कहा उसे डराओ धमकाओ और मारना मत। चुनाँचे उस पुलिस अफ़्सर ने उसे जेल खाने में बन्द कर दिया। और उसे डराया धमकाया। तो उसने चुराए हुए सारे माल का इक़्रार कर लिया। और बजन्सही हाज़िर कर दिया। मनसूर को उसकी इत्तिला दी गई। तो उसने मालिक को तलब किया और पूछा, के अगर हम तुम्हारा सारा माल तुम्हें दे दें तो तुम अपनी बीवी के बारे में मुझे इख़्तियार दोगे? उसने कहा, ज़रूर। मनसूर ने कहा। अच्छा ये अपना माल संभालो और मैं तुम्हारी बीवी को तलाक़ देता हूँ। तुम उसे इस तलाक़ की इत्तिला दे दो। (किताब-उल-अज़किया-उल-इमाम इब्ने जोज़ी रहमत-उल्लाह अलेह, सफ़ा 71)

सबक़:- ऐसी बुरी औरत परेशानी और नुक़्सान का मौजिब होती है और उससे किनारा ही बेहतर होता है। और ये भी मालूम हुआ के अरबाब हकूमत को खुदा तआला फिरासत व दूर अंदेशी की नअेमत भी अता फ़रमाए। तो बड़ी से बड़ी मुश्किल को भी वो अपनी तदबीर व हिकमत से हल कर लेते हैं।

हिकायत नम्बर(556) क़ातिल

ख़लीफा मौतज़िद बिल्लाह का मकान तामीर हो रहा है और एक रोज़ वो बैठे हुए कारीगरों को देख रहे थे के एक सियाह रंग बदसूरत मज़दूर को देखा जो बड़े मज़ाक़ कर रहा था। और सीढ़ियों के दो दो दर्जे फैलांग कर और दूसरे मज़दूरों से दोगुना बोझ उठा कर काम कर रहा था। उसे देखकर ख़लीफ के दिल में कुछ शुबह पैदा हुआ और उसे बुला कर उसका सबब पूछा तो वो कुछ घबरा सा गया। ख़लीफा ने इब्ने हमदून से जो वहाँ मौजूद था। कहा। उसे या तो बग़ैर मेहनत के कुछ रुपया कहीं से मिल गया है या ये शख़्स चोर है और मिट्टी गारे के काम से ये अपना राज़ छुपाना चाहता है। चुनाँचे ख़लीफा ने कोड़े मारने वाले को बुलाया। और कहा। उसे कोड़े मारे जायें। जब सौ कोड़े उसे लग चुके और ख़लीफ ने क़सम खा ली के अगर उसने सच मुच अपना हाल बयान ना किया तो उसे क़त्ल कर दिया जाएगा। और तलवार और चमड़े का फर्श भी मंगवा लिया। तो उस वक़्त वो सियाह रंग मज़दूर बोला। के मुझे अमान दीजिए। तो मैं सच्ची बात बता देता हूँ। ख़लीफा ने कहा। अमान दी जाती है। बजुज़ इस सूरत के जिसमें हद वाजिब हो" आख़री लफ़्ज़ों को वो समझ ना सका और उसने खयाल किया के अब मैं महफ़ूज़ हो चुका हूँ। तो उसने बताया के मैं मुद्दत से ईंटों के भट्टे पर काम करता था। कुछ दिन गुज़रे के मैं वहाँ बैठा हुआ था। के एक शख़्स मेरे पास से गुज़रा जिसकी कमर में एक हमयानी बंधी हुई थी। मैं उसके पीछे लग गया। उस शख़्स ने एक भट्टी के क़रीब बैठकर हमयानी खोली। और एक दीनार निकाला। उसे मेरी मौजूदी का कोई इलम ना था। मैंने देखा के उसकी सारी हमयानी दीनारों से भरी हुई है। तो मैंने उस पर हमला करके उसके हाथ पैर जकड़ के उसकी हमयानी छीन ली। और उसका मुंह बन्द करके कंधे पर उठा कर उसे भट्टे के एक गढ़े में डाल कर मिट्टी से भर दिया। चन्द दिनों के बाद उसकी हड्डियाँ निकाल कर दजला में बहा दीं। वो दीनार मेरे पास मौजूद हैं। जिनसे मैं खुश रहता हूँ। ख़लीफा मौतक़िद ने एक

शख़्स को हुक्म दिया के उसके मकान से दीनार ले आए। चुनाँचे दीनार मअे हमयानी के मंगवा लिए गए। हमयानी पर मक़्तूल का नाम व पता लिखा था। ख़लीफा ने शहर में मनादी कराई, तो एक औरत एक छोटे बच्चे समेत हाज़िर हुई। और कहने लगी। के ये मेरे शौहर का नाम है और ये उसी का बच्चा है। फलाँ वक़्त वो घर से निकला था। और उसके पास एक हमयानी थी। जिसमें हज़ार दीनार थे। वो अब तक ग़ायब है। ख़लीफा ने वो हमयानी मअे हज़ार दीनारों के उस औरत को दी। और उस काले कातिल को क़त्ल करा दिया। और हुक्म दिया के उसकी लाश को भी वहीं भट्टी में डाल दिया जाए। (किताब-उल-अज़्किया, सफ़ा 80)

सबक़:- बुरे काम को लाख छुपाया जाए। मगर एक ना एक दिन उसका होलनाक अंजाम सामने आकर रहता है। और बुरे काम का नतीजा हमेशा बुरा ही होता हैं और ये भी मालूम हुआ के तदबीर व हिकमत और नेक नीयती से बड़े बड़े जरायम का पता चल जाता है।

हिकायत नम्बर(557) मोतियों का हार

एक खरासानी शख़्स हज के लिए घर से निकला। तो शहर बग़दाद में पहुँचा। और अपना एक क़ीमती मोतियों का हार जिसकी क़ीमत एक हज़ार दीनार थी। बग़दाद में बैचना चाहा। मगर हार बिक ना सका। नाचार उसने ये क़ीमती हार एक अत्तार के पास जिसकी शौरहत अच्छी थी, अमानत रखा और हज को चला गया। फिर जब हज करके वापस आया और उस अत्तार से अपना हार वापस तलब किया तो वो अत्तार फिर गया। और कहने लगा के मैं ना तुम्हें जानता हूँ और ना किसी हार को। और इस बेचारे खरासानी को धक्के देकर दुकान से नीचे उतार दिया। लोग जमा हुए। तो सब ने अत्तार की हिमायत की और इस खरासानी हाजी की किसी ने तरफ़दारी ना की। ये बडा हैरान हुआ। और बार बार अपना क़िस्सा सुनाने लगा। मगर उसकी कोई सुनता ही ना था। नाचार ये ख़लीफा-ए-वक़्त अज़्द-उल-दौला के पास पहुँचा। और अपना पूरा वाक़ेया पेश किया। अज़्द-उल-दौला ने कहा। तुम कल सुबह जाकर इस अत्तार की दुकान पर बैठ जाओ। वो ना बैठने दे तो उसके सामने की किसी दुकान पर जाओ। और मग़रिब तक बैठे रहो। और अत्तार से कोई बात ना करो। इसी तरह तीन दिन करो। चौथे दि हम वहाँ से गुज़रेंगे और खड़े होकर तुम से अस्सलाम अलेकुम कहेंगे,

तुम खड़े ना होना। और व अलेकुम अस्सलाम के सिवा और कोई लफ़्ज़ ना कहना। और जो सवाल मैं करूं सिर्फ़ उसी का जवाब देना। और कुछ ना कहना। और फिर हमारी वापसी के बाद तुम इस अत्तार से हार का क़िस्सा छेड़ देना। फिर जो कुछ वो जवाब दे हमें उसकी इत्तिला करना। और अगर हार वापस कर दे तो मेरे पास ले आना। चुनाँचे इस परोग्राम के मुताबिक़ वो खरासानी हाजी दूसरी सुबह को इस अत्तार की दुकान पर बैठने के लिए पहुँचा तो उसने ना बैठने दिया तो वो सामने की एक दुकान पर बैठ गया। और तीन दिन तक वहीं बैठता रहा। जब चौथा दिन हुआ तो ख़लीफ़ा अज़्द-उल-दौला एक शानदार जलूस के साथ इधर आए और जब इस खरासानी को देखा तो वहीं खड़े हो गए और अस्सलाम अलेकुम कहा। उसने अपनी जगह पर बैठे हुए व अलेकुम अस्सलाम कहा। ख़लीफ़ा ने कहा। भाई साहब! आप यहाँ तशरीफ़ लाए हैं। मगर हम से नहीं मिलते। और ना ही कोई ख़िदमत हमारे सपुर्द करते हैं। उसने कोई बात ना की। और मामूली तौर पर हाँ हूँ कर दी। अज़्द-उल-दौला उससे बार बार इसरार करते रहे और खड़े रहे। और उनकी वजह से पूरा लश्कर खड़ा रहा। इस बात से लोगों को यक़ीन हो गया के ये शख़्स अज़्द-उल-दौला का कोई बड़ा मोहत्रम दोस्त है। इधर अत्तार ने ये नज़्ज़ारा देखा तो उस पर ख़ौफ़ के मारे ग़शी तारी होने लगी। और उसने गुमान किया के इस ख़रासानी ने अज़्द-उल-दौला को अभी हार का क़िस्सा बताया नहीं। और अगर उसने बता दिया तो ख़ुदा जाने मेरा क्या हष्र होगा। अज़्द-उल-दौला जब वहाँ से चला गया, तो अत्तार ख़ुद उस खरासानी के पास आया। और कहा के आपने ये ना बताया के वो हार आपने कब और किस चीज़ में लिपटा हुआ हमारे पास रखा था। आप मुझे याद दिलायें। शायद याद आ जाए। उसने सब कुछ बताया। तो उस अत्तार ने इधर उधर हाथ मारने के बाद एक थेला उल्टा। जिसमें से हार गिरा। तो कहने लगा, के मैं असल में भूल ही गया था। शुक्र है के आपका हार मिल गया। ये लीजिए अपना हार। खरासानी अपना हार पाकर सीधा ख़लीफ़ा अज़्द-उल-दौला के पास पहुँचा। अज़्द-उल-दौला ने उसके साथ अपने हाजिब को वो हार देकर अत्तार की दुकान पर भेजा। जिसने अत्तार को पकड़कर वो हार उसके गले में डाल दिया। और उसको दुकान के दरवाज़े ही पर फाँसी देकर लटका दिया। और मनादी करा दी के ये इस शख़्स की सज़ा है के जिसके सपुर्द एक अमानत की गई मगर

वा मुनकिर हो गया। जब दिन गुज़र गया तो हाजिब ने उसकी गर्दन से हार निकाल कर हाजी के सपुर्द कर दिया। और जाने की इजाज़त दे दी। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 93)

सबक़:- अमानत में खयानत करना बहुत बड़ा जुर्म है। और खायन आदमी कभी फलाह नहीं पाता। नुक़्सान ही उठाता है। और ये भी मालूम हुआ के पहले बादशाह मुज्रिमों को ठिकाने पहुँचाने के लिए खुदादाद फिरासत से अजीब अजीब तरीक़ों से मुज्रिमों को पकड़ लेते थे।

हिकायत नम्बर (558) ज़ेहर आलूद हलवा

ख़लीफा अज़्द-उल-दौला के ज़माने में कुर्द क़ौम के डाकूओं ने बड़ा ऊधम मचाया। ये लोग पहाड़ी घाटियों में छिपे रहते। और आने जाने वाले क़ाफलों को लूट लेते थे। इन डाकूओं पर क़ाबू पाना मुश्किल हो गया। तो अज़्द-उल-दौला ने एक ताजिर को बुलाया। और उसे एक खच्चर दिया जिस पर दो संदूक़ लदे हुए थे उन संदूक़ में एक ऐसा हलवा बन्द था जिसमें बहुत तेज़ और नफीस खुश्बू मिली हुई थी। और इस हलवे को बड़े खूबसूरत बर्तनों में बन्द करके संदूक़ में रखा गया था। अज़्द-उल-दौला ने इस ताजिर को ये खच्चर देकर हुक्म दिया। के फलाँ क़ाफले के साथ रवाना हो जाओ। और ज़ाहिर ये करो। के उन बाज़ हुक्काम और उनकी औरतों के लिए बतौर हदिया शाही हलवा भेजा रहा है। ताजिर ने शाही हुक्म की तामील की और क़ाफले के आगे आगे रवाना हो गया। जब क़ाफला डाकूओं के मुक़ाम के पास पहुँचा। तो डाकूओं ने क़ाफले पर हमला कर दिया। और क़ाफले वालों को लूट लिया। और इस खच्चर को भी अपने क़ब्ज़े में कर लिया। जिस पर हलवे के संदूक़ लदे थे। फिर उन्होंने जब संदूक़ों को खोला। तो हलवे की नफीस और तेज़ खुश्बू से सब डाकू उस हलवे के गिर्द जमा हो गए। भूके थे। इसलिए सब ही उस पर टूट पड़े और खूब सैर होकर खाया। बस खाकर लौटे ही थे के सबके सब हलाक हो गए फिर तो सब क़ाफले वालों ने दौड़कर उनके मालो मता पर क़ब्ज़ा कर लिया। और उनके हथियार भी ले लिए। और जिस क़द्र माल लूटा हुआ था वो भी मिल गया। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 97)

सबक़:- झूट, मक्र, फ़रैब और लूट खसूट से जमा कर्दा दुनिया का अंजाम अच्छा नहीं होता। और ज़ालिम लोग कभी कामयाब नहीं होते और उनका दीन और दुनिया भी बर्बाद हो जाती है।

हिकायत नम्बर (559) तरबूज़

सुलतान जलाल-उल-दौला एक रोज़ शिकार को निकले तो उनको एक दीहाती मिला। जो रो रहा था। पूछा क्यों रोते हो? तो कहा, के मेरे पास तरबूज़े थे जो मेरी कुल पूंजी थी, तीन लड़कों ने वो तरबूज़ मुझ से छीन लिए हैं। सुलतान ने कहा। तुम मेरे लश्कर में चले जाओ। और वहाँ फलाँ मुक़ाम पर जाकर बैठ जाओ। मैं शाम को वापस आऊँगा और तुम्हें खुशहाल कर दूंगा। चुनाँचे वो दीहाती लश्कर में गया और सुलतान के बताए हुए मुक़ाम पर बैठ गया। सुलतान जब लश्कर में आया। तो अपने मुलाज़मीन से कहा के मुझे तरबूज़ की ख़्वाहिश है। लश्कर और खैमों में पता लो शायद मिल जाए। मुलाज़िमों ने इधर उधर पता लिया। तो एक मुलाज़िम तरबूज़ लेकर आ गया। सुलतान ने पूछा के ये तरबूज़ किस से मिला? तो उसने बताया के फला हाजिब के खै़मे में था। सुलतान ने हुक्म दिया के इस हाजिब को हज़िर करो। हाजिब आया तो उससे पूछा के ये तरबूज़ कहाँ से लिया। उसने बताया के कुछ लड़के लाये थे। सुलतान ने कहा उन लड़कों को हाज़िर करो। वो हाजिब गया तो ये मालूम करके के मामला कोई संगीन मालूम होता है। लड़के कहीं क़त्ल ही ना कर दिए जायें। उन लड़कों को भगा दिया। और सुलतान से कह दिया के वो लड़के कहीं भाग गए हैं। सुलतान ने इस दीहाती से पूछा। क्या यही वो तरबूज़ है जो तुझ से छीना गया था। उसने कहा हाँ। तो उससे कहा के इस साहब को ले जाओ। ये हमारा ग़ुलाम है। हम तुझे बख्शते हैं इसलिए के उसने उन लड़कों को हाज़िर नहीं किया जिन्होंने तुम्हारे तरबूज़ छीने थे। और खुदा की क़सम! अगर तूने उसे छोड़ दिया तो मैं तेरी गर्दन उड़ा दूंगा। चुनाँचे दीहाती ने उस साहब का हाथ पकड़कर उसे बाहर ले आया। अब हाजिब ने अपने आप को आज़ाद कराने पर उससे तीन सौ दीनार पर सौदा तय कर लिया, और उसे तीन सौ दीनार देकर उसके पंजे से आज़ाद हो गया। फिर वो दीहाती सुलतान के पास आया और कहा हुज़र! जो ग़ुलाम आपने मुझ दिया था वो मैंने तीन सौ दीनार पर बैच दिया है। सुलतान ने कहा। और तुम इस सौदे पर खुश भी हो। वो बोला बड़ा खुश हूँ फ़रमाया अच्छा जा क़ीमत अपने क़ब्ज़ा में कर और सलामती के साथ रूख़सत हो जा। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 100)

सबक़:- आदिल हाकिम फ़रयादी और मज़लूम की किसी ना किसी तरह इम्दाद और एआनत ज़रूर करते हैं।

हिकायत नम्बर (560) जौ का दलिया

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ी अल्लाह अन्ह को एक रोज़ इत्तिला मिली के सिपह सालार अफ़वाज के बावर्ची खाने का रोज़ाना खर्च एक हज़ार दरहम है। ये इत्तिला पाकर हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने अफसोस ज़ाहिर किया और फ़रमाया के अफसोस बेकसों, यतीमों और बेवाओं का हक़ यूं उड़ाया जा रहा है। सिपह सालार को अमीर-उल-मोमिनीन ने हुक्म दिया, के कल दोपहर का खाना हमारे दसतरख़्वान पर खाया जाए। और फिर अपने बावर्चियों को हुक्म दिया के हर क़िस्म के पुर तकल्लुफ खाने तैयार किए जायें और साथ ही जौ का दलिया भी तैयार किया जाए। सिपह सालार जब दूसरे दिन दावत पर पहुँचा तो खलीफा ने खाना मंगवाने में देर कर दी और खाने के लिए हुक्म देने में इस क़द्र ताम्मुल किया के सिपह सालार के पेट में भूक से चूहे क़लाबाज़ियाँ करने लगा। अदब के मारे कुछ तो कह सकता नहीं था के भूक लग रही है। मगर उसके चेहरे पर हवाईयाँ ऐसी दौड़ रही थीं के जिससे उसकी भूक का बखूबी अंदाज़ा हो रहा था। जब वो भूक से बेताब हो गया तो अमीर-उल-मोमिनीन ने खाना लाने का हुक्म दिया। और पहले जौ का दलिया मंगवाया। सिपह सालार चूंके बहुत भूका था इसलिए अपने मोहत्रम ख़लीफा के साथ ही जौ का दलिया खाना शुरू कर दिया। और जब पुर तकल्लुफ खाने आए। उस वक़्त उसका पेट जौ के दलिये के साथ ही भर चुका था। दाना ख़लीफ ने उसके बाद फिर पुर तकल्लुफ खानों की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया। के आपका खाना तो अब आया है खाईये। सिपह सालार ने इंकार किया और कहा के मेरा पेट तो दलिया ही से भर चुका है। अमीर-उल-मोमिनीन ने फ़रमाया। सुबहान अल्लाह! क्या अच्छा खाना है। के पेट भी भर देता है और और ज़्यादा खर्च भी नहीं करता। एक दरहम में दस आदमी भी पेट भर कर खा सकते हैं जब ये बात है तो आप पर अफसोस है के आप एक हज़ार दरहम हर रोज़ अपने खाने पर खर्च करते हैं। सिपह सालार साहब! खुदा से डरिये और अपने आप को ज़्यादा खर्च करने वालों में दाखिल ना कीजिए। जो रुपया आप अपने बावरची खाने में बे फायदा सर्फ करते हैं। भूकों, हाजतमंदों और ग़रीबों को दें। खुदा उससे खुश होता है। मुत्तक़ी ख़लीफा के इन नसीहत आमेज़ कलमात ने सिपह सालार के दिल पर गहरा असर किया और उसने अहद किया के आईंदा में इतना खर्च ना करूंगा। (मुग़नी अलवाज़ैन, सफ़ा 491)

सबक़:- फिज़ूल खर्ची से बचना चाहिए और खूराक व लिबास में हमेशा सादगी और मियाना रवी इख़्तियार करना चाहिए। जो लोग अपनी खूराक व लिबास में अंधा धुंद खर्च करते हैं। वो ग़रीबों और बे कसों का हक़ तलफ करते हैं।

हिकायत नम्बर(561) उल्लू की कहानी

अब्दुल मलिक बिन मरवान को एक रात नींद नहीं आती थी। उसने अपने क़िस्सा गौ दरबारी को बुलाया और कहा के कोई कहानी सुनाओ। क़िस्सा गौ ने अर्ज़ किया। आज एक अनोखी कहानी सुनता हूँ। और फिर बयान करना शुरू किया। के एक था बसरे का उल्लू और एक था मवस्सल का उल्लू। एक दिन मवस्सल का उल्लू ने बसरे के उल्लू से कहा के वो अपनी बेटी उसके बेटे से बियाह दे। बसरे के उल्लू ने जवाब दिया के इस शर्त पर अपनी बेटी तुम्हारे बेटे को देता हूँ। अगर तुम मेहर में उजड़े हुए सौ गाँव देना मंज़ूर करो। मवस्सल के उल्लू ने जवाब दिया के मैं इतनी जल्दी तो इतने बर्बाद गाँव मोहय्या नहीं कर सकता। हाँ दुआ करो। खुदा हमारे बादशाह अब्दुल मलिक को सलामत रखे। ये अगर एक साल भी हम पर हाकिम रह गया। तो एक सौ उजड़े हुए गाँव बड़ी आसानी से दे सकूंगा।

अब्दुल मलिक ये सुनकर चौंका और समझ गया और उसी वक़्त अपने मज़ालिम से बाज़ रहने का एहद कर लिया। (हयात-उल-हैवान, सफ़ा 135, जिल्द 1)

सबक़:- ज़ुल्म करने से मुलक वीरान हो जाता है इसलिए ज़ुल्मो सितम से बाज़ रहना चाहिए।

हिकायत नम्बर(562) हश्शाम और हज़रत ताऊस

ख़लीफा हश्शाम इब्ने अब्दुल मलिक जब मदीना में पहुँचा तो उसने हुक्म दिया के सहाबा इक्राम रज़ी अल्लाहो अन्हुम में से किसी को मेरे पास लाओ। लोगों ने अर्ज़ किया के तमाम सहाबा इक्राम इन्तिक़ाल फ़रमा चुके हैं। कहा के ताबेईन में से किसी को मेरे पास लाओ। चुनाँचे हज़रत ताऊस को ख़लीफा के पास ले गए। उन्होंने अन्दर जाकर जूता उतारा। और कहा अस्सलाम अलेकुम या हश्शाम, हश्शाम सख़्त ग़ज़बनाक हुआ। और उन्हें क़त्ल कर डालने का अज़्म बिलजज़्म कर लिया। लोगों ने अर्ज़ किया के ये जगह हरम रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम है।

और ये [illegible] अकाबिर उलमा में से है। इस इरादे से बाज़ आ। उससे पूछा ऐ ताऊस! तुम ने ये क्या दिलैरी और गुसताखी की? फ़रमाया मैंने क्या किया? ये सुनकर हश्शाम और भी बुरा फ़रोख़्ता हुआ और कहने लगा। तुम ने चार बे अदबियाँ की हैं।

1) जूता लबे फर्श उतारा (याद रहे के हश्शाम के नज़दीक ये अम्र मअयूब था। बल्के उसके सामने मोज़ा और जूता पहने हुए बैठना चाहिए था)

2) मुझे अमीर-उल-मोमिनीन ना कहा।

3) मेरा नाम लेकर पुकारा। मेरी कनियत ना कही। (इस बात को भी अरब बनज़र इसतहसान नहीं देखते)

4) मेरी इजाज़त के बग़ैर बैठ गए।

हज़रत ताऊस रहमत-उल्लाह अलेह ने इन चारों बातों का ये जवाब दिया।

1) तेरे सामने जूता उतारने का मतलब ये है के हर रोज़ पाँच बार उस रब्बुल इज़्ज़त के सामने जो सबका मालिक और अहकम-उल-हाकिमीन है। जूता उतार कर ही जाता हूँ। और इस हरकत से वो भी मुझ से खफा नहीं होता।

2) तुझे अमीर-उल-मोमिनीन इसलिए नहीं कहा के तेरी इमारत पर सब लोग राज़ी नहीं इसलिए क़ौल-उल-ज़ोर से मोहतरिज़ रहा।

3) तुझे नाम लेकर पुकारा और कनियत से नहीं पुकारा। इसकी वजह ये है के हक़ तआला ने अपने दोस्तों को नाम लेकर पुकारा है। या दाऊद, या याहिया, या ईसा वग़ैरा और अपने दुश्मनों को कनियत से या फ़रमाया है। जैसे *तब्बत यदा अबी लहब*

4) तेरे सामने जो बग़ैर इजाज़त के बैठ गया हूँ उसका सबब ये है के हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमाया है के अगर कोई किसी दोज़खी को देखना चाहे तो उसे कह दो के ऐसे शख़्स को देख ले जो खुद तो बैठता हो। बन्दगाने खुदा उसके सामने दस्त बस्ता खड़े हों।

हश्शाम को ये बातें बेहद पसंद आईं। कहा मुझे नसीहत कीजिए। फ़रमाया। हज़रत अली रज़ी अल्लाह अन्ह ने फ़रमाया है के दोज़ख़ में पहाड़ के बराबर साँप और ऊँट के बराबर बिच्छू हैं। वो सब ऐसे अमीर की राह देखा करते हैं जो रिआया पर अद्ल ना करे, या फ़रमाया और चले गए। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 217)

सबक़:- खुदा के मक़्बूल बन्दे किसी दुनयवी दबदबे से मरऊब नहीं होते। और नेक दिल अमीर सच्ची बातों की क़द्र करते हैं।

हिकायत नम्बर(563) ग़रीब परवरी

ख़लीफा मामून अलरशीद एक मर्तबा जंगल में शिकार के लिए जा रहा था, एक गंवार पानी की एक मश्क भरकर लश्कर में लाया और ख़लीफा से कहने लगा। मैं आपके लिए निहायत सर्द और शीरीं पानी तोहफा लाया हूँ। मामून ने पिया तो सख़्त बदबूदार और कड़वा पानी था। मगर अपने अख़लाक़ की वजह से मामून ने कुछ ना कहा। बल्के ये कहा के वाक़ई हम ने आज तक ऐसा पानी नहीं पिया था। अच्छा ये पानी हमारे बर्तन में डाल दो। और ख़ज़ांची के पास जाकर अनी मश्क अशर्फियों से भरा लो। और फौरन यहाँ से वापस अपने घर लौट जाओ"। उसके चले जाने के बाद मुसाहिबों पूछा। के पानी जब इतना सख़्त कड़वा था तो आपने उससे क्यों नहीं कहा। और क्यों पिया? और फिर उसे ईनाम भी क्यों दिया? और इसमें क्या मसलेहत थी के उसे आगे जाने से रोक दिया।

मामून ने कहा। वो बद्दू बड़े शौक़ से इतनी दूर से किसी जोहड़ से मेरे लिए पानी भरकर लाया था। मैं उससे पानी के कड़वे होने की क्या शिकायत करता। जब उसने कटोरा मुझे दिया तो मुझे शर्म आई के मैं उसे ना पियूँ। क्योंके इस तरह ग़रीब की दिल शिकनी होती। ईनाम इसलिए दिया के बेचारा ईनाम की लालच ही मैं तो इतनी दूर से मश्क भरकर लाया था। मैंने उसे आगे जाने से इसलिए रोका। के अगर ये बग़दाद जाकर दरया-ए-दजला का पानी पियेगा तो अपने दिल में शर्मिंदा होगा। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 319)

सबक़:- ग़रीबों के खुलूस की क़द्र करना चाहिए और उनसे हमदर्दी के साथ पेश आना चाहिए।

हिकायत नम्बर(564) दो मलऊन

सुलतान नूरउद्दीन शहीद बिन ज़ंगी रहमत-उल्लाह अलेह को एक रात ख़्वाब में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत हुई। और हुज़ूर ने दो शख़्सों की तरफ़ इशारा फ़रमा कर फ़रमाया "नूरउद्दीन! मुझे उनके शर से बचा" और फिर तीसरी रात भी तशरीफ़ लाकर दो शख़्सों की तरफ़ इशारा फ़रमाकर इर्शाद फ़रमाया। के नूरउद्दीन! मुझे उनके शर से बचा।

सुलतान नूरद्दीन ने जब मुतावातिर तीन रात हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी देखी और हुज़ूर का दो शख़्सों की तरफ़ इशारा फ़रमा कर फ़रमाना के मुझे इनके शर से बचा" सुना तो वो बेचैन हो गया और अपनी फिरासत ईमानी

से समझ गया के मदीना मुनव्वरह में ज़रूर कोई वाक़ेया फाजिआ ऐसा ज़हूर पज़ीर हुआ है। जिसके बाइस आक़ाऐ दो जहाँ सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने मुझे ये इर्शाद फ़रमाया है। तीसरी बार जब हुज़ूर तशरीफ़ लाए तो रात का कुछ हिस्सा बाक़ी था। सुलतान उसी वक़्त बिस्तर से उठा और बहुत सा ख़ज़ाना हमराह लेकर बीस मक़रबान दौलत के साथ दमिश्क़ से मदीना मुनव्वरह की तरफ़ रवाना हो गया।

सोलह दिन के सफर के बाद मदीना मुनव्वरह पहुँच कर सुलतान ने ख़ज़ाना का मुंह खोल दिया और मनादी करा दी। के अहले मदीना पर आज दरहम व दीनार की बारिश होगी। हर छोटा बड़ा इस ख़बर को सुनते ही बारगाहे सुलतानी की तरफ़ दौड़ पड़ा। हर शख़्स बारी बारी से बारयाब होता था। और ईनामो इक्राम से माला माल होकर रूख़्सत हो जाता था। इसी तरह सारा शहर सुलतान की नज़र से गुज़र गया मगर वो मूज़ी जो ख़्वाब में दिखाए गए थे और जिनका हुलिया पत्थर की लकीर की तरह सुलतान के दिमाग़ पर नक़्श था। नज़र ना आए। आख़िर सुलतान ने रोज़ा-ए-नबव्वी के बाज़ ख़िद्दाम से दरयाफ़्त किया के कोई ऐसा शख़्स तो बाक़ी नहीं रहा जो ईनाम लेने ना आया हो। उन्होंने अर्ज़ किया के और तो सब लोग हाज़िर हो चुके हे। फक़्त दो खुदा रसीदा बुज़ुर्ग नहीं आए जो मग़रिब के रहने वाले हैं और दिन रात इबादत करते रहते हैं। सुलतान ने हुक्म दिया के उन दोनों को भी हाज़िर किया जाए।

कुछ देर के बाद दो आदमी सुलतान के पास लाए गए। सुलतान ने आँख उठाकर देखा और एक नज़र में पहचान लिया के ये वही दो शख़्स हैं जिनकी तरफ़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने ख़्वाब में इशारा फ़रमाया था। पूछा के तुम दोनों कहाँ रहते हो? कहने लगे के राज़ा-ए-मतहर के मग़रिब की जानिब मस्जिद की दीवार से बना हुआ एक वीरान सा मकान है, हम उसमें रहते हैं। सुलतान ने उन्हें तो वहीं छोड़ा। और खुद सीधा उस मकान में दाखिल होकर उसने हर तरफ़ मुतजस्सुसाना निगाह डाली। मकान का सामान मुख़्तसिर था। मगर जिस क़द्र था ज़बाने हाल से मकीनों के ज़ैहदो वरअे की शहादत दे रहा था। ताक़ पर क़ुरआन मजीद रखा हुआ था। उसके अलावा कुछ और किताबें भी थीं। जिनके मज़ामीन पंदो निसायह से ममलू थे। एक कोने में फक़ीरों और मिसकीनों में तक़सीम करने की ग़र्ज़ से ग़ल्ले का एक ढेर लगा हुआ था। फर्श पर एक बहुत बड़ा बोरिया बिछा हुआ था। उनमें से कोई चीज़ बजाए खुद क़ाबिले एत्राज़ ना थी। सुलतान हैरान था के

अब क्या करे। आख़िर उसी क़ुद्सी जज़्बे ने जो उसे दमिश्क से कुशाँ कुशाँ मदीने ले आया था। उसका हाथ बोरिये की तरफ़ बढ़ाया के देखे तो सही के इसके नीचे क्या है। बोरिये का उठना था के एक ख़ौफनाक हक़ीक़त का इंकेशाफ हुआ। इन मलऊनों ने जिनके तक़द्दुस का घर घर चर्चा था एक नक़ब लगा रखी थी। जिसका रूख हुजरा नबव्वी की तरफ़ था। पास ही एक गढ़ा था जिसमें खुदी हुई मिट्टी भर दी जाती थी। और जब रात होती थी तो दोनों नक़ब ज़न इस मिट्टी को थेलों में भर भर कर बक़ीअ के मैदान में डाल आते थे।

सुलतान ने उन दोनों खबीसों को मौक़े पर तलब करके ग़ज़रनाक लहजे में पूछा के सच सच बाताओ, के तुम कौन हो और तुम ने ये हरकत क्यों की? पहले तो उन्होंने इधर उधर की बातें करना शुरू कीं। लेकिन मौत को सर पर मंडलाती देखकर सोचा के अब अखफाए राज़ बेसूद है। निडर होकर बोले। के हम नसरानी हैं। हमारी क़ौम ने हमें इस मक़द्दस ख़िदमत पर मामूर किया था। के मराकशी हाजियों के भेस में मदीना पहुँच कर नक़ब लगा कर तुम्हारे पैग़म्बर की क़ब्र तक जा पहुँचें और उसकी लाश को निकाल लें और बे आबरू करें। (मआज़ अल्लाह) हमारा काम ख़त्म ही हो चुका था और नक़ब क़ब्र तक पहुँच गई थी। के दफअतन आसमान पर बादल गर्जा। झक्कड़ चलना शुरू हुआ। ज़लज़ला आया और उसके बाद तुम आ पहुँचे।

सुलतान की उस वक़्त अजीब हालत थी। दिल उलट गया और जिगर पानी होकर आँखों में आ गया इतना रोया इतना रोया के दाढ़ी आँसूओं से तर हो गई। फिर सरापा जलाल होकर उठा। और तलवार खींचकर नक़ब ही के किनारे उन दोनों मलऊनों की गर्दनें उड़ा दीं और उनकी नापाक लाशें आग के एक दहकते हुए लावे में डलवा दीं। के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की जनाब में गुसताखी करने वालों का यही हश्र होना चाहिए। उसके बाद सुलतान के हुक्म से हुजरे नबव्वी के इर्दगिर्द एक गहरी ख़ंदक़ खोदी गई। जिसे पिघले हुए सीसे से पाट दिया गया ताके फिर किसी खबीस नक़ब ज़न का हाथ हुज़ूर रहमते आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की आराह गाह तक ना पहुँच सके। (हज-उल-करामा फी आसार-उल-क़यामा, बहवाला जज़्ब-उल-क़लूब, सफ़ा 124)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम क़ब्र अनवर में इसतराहत फ़रमा होकर भी ज़िन्दा हैं और सारे आलम के नेक व बद आमाल को देख रहे हैं और सब कुछ जानते हैं और ये भी मालूम हुआ

के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का हयात-उन्नबी होना और आपके जिस्म अनवर का मेहफ़ूज़ होना एक ऐसी हक़ीक़त है जिसे नसरानी तक भी तसलीम करते हैं। जभी तो वो हुज़ूरे अनवर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के जस्दे अतहर को क़ब्र अनवर से निकाल लाने के लिए इतनी दूर दराज़ से आए थे। फिर जो बराऐ नाम मुसलमान हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को मर कर मिट्टी में मिल जाने वाला लिखे वो नसरानियों से भी गया गुज़रा हुआ या नहीं? और ये भी मालूम हुआ के बज़ाहिर क़ुरआन पढ़ना, इबादत करना और सदक़ा व खैरात करना और नेकूं की सूरत बनाए रखना इस अमर का मौजिब नहीं है के वो शख़्स वाक़ई ऐसा हो। बल्के बाज़ अफ़राद ऐसे भी होते हैं जो बज़ाहिर बड़े पारसा नज़र आते हैं। मगर बातिन सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के बेअदब और गुसताख होते हैं इसीलिए खुद हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने ऐसे लोगों के लिए इर्शाद फ़रमाया के *ज़ियाब फी सियाब* के ये लोग इंसानों के लिबास में भेड़िये हैं। और मौलाना रूमी ने भी फ़रमाया है के

ऐ बसा इबलीस आदम रूए हस्त
पस ना दर हर दस्त बायद दाद दस्त

यानी बहुत से शैतान भी इंसानों के भेस में फिर रहे हैं। लिहाज़ा हर शख़्स का मौतक़िद ना होना चाहिए बल्के कुछ पहचान भी पैदा करना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के सुलतान नूरउद्दीन रहमत-उल्लाह अलेह बड़ा ही खुशक़िस्मत सुलतान था, जिसे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने अपनी इस ख़िदमत के लिए मुंतख़िब फ़रमाया।

हिकायत नम्बर (565) जंडियाला का क़िला

अहमद शाह दुर्रानी एक एक मर्तबा क़ंधार में सो रहा था। के आधी रात के वक़्त उठा और बाहर आते ही बग़ैर किसी को इत्तिला दिए घोड़े पर सवार होकर सिर्फ उन तीन सौ सवारों के साथ जो हरम सराऐ के दरवाज़े पर पहरा दे रहे थे रवाना हो गया और चलते हुए किसी को कह दिया के फौरन वज़ीरे आज़म शाह वली खाँ को ख़बर कर दो के बादशाह हिन्दुस्तान की तरफ़ जिहाद के लिए रवाना हो गया। शाह वली खाँ को उसी वक़्त बेदार करने के बाद इत्तिला की गई वो हैरान था के क्या वाक़ेया पेश आ गया। के बग़ैर मुझ से मशवरा किए हुए बादशाह इस तरह रवाना हुआ मगर उसने

हवास बजा कर के फौरन पचास साठ फ़रामीन इस मज़मून का लिखा कर मुल्क के हिस्सों में सरदारों के नाम रवाना कर दिए के बदाशाह बग़र्ज़ ग़ज़ा हिन्दुस्तान की तरफ़ रवाना हो गया है उसके हुक्म पहुँचते ही बहुत जल्द तुम सब अपने आपको बादशाह तक पहुँचाओ। इस इन्तिज़ाम के बाद शाह वली खाँ फौरन इस जमीअत के साथ जो इस वक़्त मौजूद थी बादशाह की तरफ़ रवाना हो गया। बादशाह दुर्रानी पहाड़ों पर अक़ाब, दरयाओं में नहंग और मैदानों में हवा की तरह उड़ता, तेरता, दौड़ता इस सरअत के साथ चला के सिंध, झेलम, चिनाब दरावी को उबूर करके जब लाहोर पहुँचा है तो तीन सौ आदमियों में से उसके हमराह सिर्फ बारह आदमी थे। बाक़ी सब पीछे रह गए थे।

दरयाऐ रावी उबूर करने के बाद बादशाह ने एक शख़्स से जो सरे राह गुज़रता मिला। दरयाफ़्त किया के सिख कहाँ ठहरे हुए हैं उसने जवाब दिया के तमाम पंजाब के सिखों ने जमा होकर क़िले जंडियाला का मुहासरा कर रखा है जो अमृतसर से सात कोस के फासले पर है। और क़िले में चन्द नानक शाही फक़ीर जो राग़िब अललइस्लाम और मती–उल–इस्लाम हो चुके हैं। महसूर हैं जिनको अज़ान से रोका जाता है और मुहासरे की सख़्ती से उनकी हालत बड़ी ख़तरनाक है। लेकिन वो तर्के अज़ान पर राज़ी नहीं होते हैं। सिखों की तादाद जिन्होंने मुहासरा कर रखा है तिरासी हज़ार है। बादशाह इस ख़बर को सुनते ही जंडियाला की तरफ़ रवाना हुआ। सिखों को ख़बर लगी के शाह दुर्रानी आ पहुँचा है तो वो यकबारगी क़िले का मुहासरा छोड़कर भाग गए। फक़रा नानक शाही ने देखा के सिख बग़ैर किसी हमला किए मुहासरा छोड़ कर भाग गए हैं। तो वो समझे के हम को धोका दिया गया है। के हम ग़ाफिल होकर दरवाज़ा क़िला खोल दें। और वो यकायक क़िले में दाखिल होकर हम पर हमला कर दें। जासूस रवाना हुए और ख़बर लाए के सिखों का दूर दूर तक कहीं नामो निशान नहीं है। मगर दो कोस के फासले पर एक शख़्स क़िबला रू एक दरख़्त के नीचे बैठा हुआ है। दो शख़्स बानात की चादर से उसके ऊपर साया किए हुए हैं। दस आदमी थोड़े फासले पर अपनी बंदूकें ज़मीन पर टेके हुए मौद्दिब और मुसतअद खड़े हैं उस शख्स के सर पर ताज है ये ख़बर जब उन फ़ुक़रा को पहुँची तो वो समझ गए के ये अहमद शाह दुर्रानी है जो हमारी मदद को पहुँचा है। चुनाँचे ज़मीनदारों की रसम के मुताबिक़ नज़्रो नियाज़ और हमराहियों को साथ लेकर सरदार जंडियाला दुर्रानी की हकूमत में हाजिर हुआ। देखा तो बादशाह दुर्रानी तकिया लगाए बैठा है और

दो आदमी उसकी ख़िदमत के लिए मौजूद हैं। सरदार जंडियाला आदाब बजा लाकर गौया हुआ के अभी घंटे भर का अर्सा हुआ के सिखों की अफवाज कसीरा ने हमारा मुहासरा कर रखा था। आपकी आमद की ख़बर सुनकर खुद भाग गए हैं और अभी ज़्यादा दूर ना गए होंगे। क़रीब ही होंगे। इसलिए मुनासिब है के हुज़ूर क़िले के क़रीब नुज़ूल इजलाल फ़रमायें। बादशाह ने फ़रमाया के नहीं कोई ख़ौफ का मुक़ाम नहीं। हम यहीं फ़रोकश रहेंगे।

उसके बाद क़िले वालों ने देखा के अफवाज शाही गिरोह दर गिरोह येके बाद दीगरे चली आती हैं शाम के वक़्त वज़ीरे आज़म शाह वली खाँ भी आ पहुँचा। और क़रीबन तीन हज़ार फौज जमा हो गई। वहीं ख़ैमे नसब हुए। सुबह के वक़्त छः हज़ार सवार जमा हो गए। जासूस सिखों की ख़बर लाने के लिए मुतय्यन हुए। शाह वली खाँ ने अर्ज़ किया के हुज़ूर इस तरह उजलत और बे सरोसामानी के साथ तशरीफ़ लाना और फिर दुश्मनों के मुल्क में आना बज़ाहिर मसलेहत के ख़िलाफ था। मैं चाहता हूँ के मुझ को इस सबब से आगाह फ़रमाया जाए। अहमद शाह दुर्रानी ने फ़रमाया के मैंने उस रोज़ आधी रात के वक़्त ख़्वाब में हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को देखा। के मुझ से मुखातिब होकर फ़रमाते हैं के ऐ अहमद शाह दुर्रानी! उठ और पंजाब की तरफ़ जल्द रवाना हो के वहाँ एक गिराह मती इस्लाम को क़स्बा जंडियाला में सिखों ने महसूर कर रखा है और इस गिरोह मती इस्लाम की हालत बहुत नाज़ुक है। मैं उसी वक़्त बैदार हुआ और मैंने ना चाहा के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इर्शाद की तामील में एक लमहा का भी ताम्मुल हो। इसीलिए मैं लश्कर के जमा करने और लवाज़िम फौज कशी करने में देर करना मुनासिब नहीं समझा। और महेज़ खुदा तआला के फज़्लो करम पर भरोसा करके रवाना हो गया।

अलक़िस्सा दो तीन दिन जंडियाला के क़रीब मुक़ाम किया और फिर सिखों की गोशमाली के लिए रवाना हुआ। और इस काम से फारिग़ होकर अफग़ानिस्तान को वापस चला गया। (याद माज़ी, 114)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हयात-उन्नबी और ज़िन्दा हैं। और क़यामत तक के होने वाले हालात से बाख़बर हैं और आज भी मसायब में घिरे हुओं की मदद फ़रमाते हैं और ये भी मालूम हुआ के अहमद शाह दुर्रानी भी बड़ा खुश क़िस्मत बादशाह था जिसे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ख़्वाब में मिले और इस ख़िदमत के लिए उसे मुंतख़िब फ़रमाया।

हिकायत नम्बर(566) बेवा की गाय

सुलतान मलिक शाह सलजोक़ी एक मर्तबा असफहान के जंगलों में शिकार खेल रहा था। इत्तिफाक़न उसी दौरान में एक गाँव में उसका क़याम हुआ। शाही ग़ुलामों ने एक मोटी ताज़ी गाय देखी। और लावारिस खयाल करके ज़िबह कर डाली और कबाब बना कर खा गए। वो गाय एक ग़रीब बेवा की थी। जिसके तीन कमसिल बच्चे उस गाय के दूध से परवरिश पा रहे थे। जब बेवा को इस हाल की ख़बर हुई तो सुबह सवेरे ज़िन्दा रोद के पुल पर जो असफहान के क़रीब वाक़े है आ खड़ी हुई। इतनें में सुलतान की सवारी का जलूस इस पुल से गुज़रा। अब बुढ़िया को ताब कहाँ थी। बे ख़ौफी से सुलतान की सवारी के क़रीब पहुँची और निहायत बेबाकी से कहने लगी।

अवालप अरसलान के फ़रज़ंद! तू मेरा इंसाफ यहाँ ज़फदरोद के पुल पर करेगा। या क़यामत में पुल सिरात पर? जो जगह पसंद हो इख़्तियार कर ले।

खुदा तरस सुलतान बेवा की फ़रयाद से ख़ौफ के मारे कांप उठा और बे इख़्तियार घोड़े से उतर पड़ा और बोला।

"बड़ी बी मुझे पुल सिरात की ताब नहीं है मैं तुम्हारा इंसाफ करने के लिए इसी पुल पर तैयार हूँ। क़रीब आकर अपना हाल बयान करो।"

बेवा औरत आगे बढ़ी, सुलतान चित्र शाही के नीचे खड़ा था। उसने अपनी गाय का सारा माजरा कह सुनाया। सुलतान सब हाल सुनकर बोला। मैं तुम्हारी गाय के अवज़ सत्तर गायें देने के लिए तैयार हूँ। अगर तुम राज़ी हो जाओ"।

बेवा औरत को और क्या चाहिए था उसने फौरन रज़ामंदी ज़ाहिर कर दी और सुलतान उसे हर तरह खुश करके वहाँ से रवाना हुआ। (तारीखे इस्लाम, सफ़ा 134)

सबक़:- क़यामत के रोज़ जज़ा से डरना चाहिए। वहाँ हर बात का जवाब देना पड़ेगा और वो लोग बड़े ही आक़्बत अंदेश और दाना हैं जो क़यामत की बाज़ पुर्स से बचने के लिए यहीं सामान मोहय्या कर लेते हैं और मज़लूमों की दादरसी करके अपनी आक़्बत अच्छी कर लेते हैं और ये भी मालूम हुआ के नेक दिल हाकिम कभी किसी पर ज़ुल्मो सितम नहीं होने देते।

हिकायत नम्बर(567) आलमगीरी अद्ल

हजरत आलमगीर रहमत-उल्लाह अलेह एक रात आराम फ़रमा थे के

किसी फ़रयादी ने शाही महल में लटकी हुई ज़ंजीर को हिलाया। ये ज़ंजीर इस मक़सद के लिए लटकाई गई थी ताके जो फ़रयादी शहनशाह के हुज़ूर कोई फ़रयाद सुनाने आना चाहे वो ज़ंजीर हिला दे ताके शहनशाह को पता चल जाए के कोई फ़रयादी सुनाने आया है।

ज़ंजीर हिली तो हज़रत आलगीर फौरन क़िले के दरवाज़े पर तशरीफ़ ले आए और हुक्म दिया के फ़रयादी को हाज़िर किया जाए।

थोड़ी देर के बाद ज़ईफा को हाज़िर किया गया। ज़ईफा ने आदाब शाही बजा लाने के बाद अर्ज़ किया। हुज़ूर! मैं राम नगर)जो आगरा से 15 मील पर है) से आ रही हूँ। मेरी एक जवान बेटी है। जिसकी मंगनी मेरी खुशी से एक रिश्तेदार से हो चुकी है। गाँव के ज़मीनदार का बेटा मेरी बेटी से शादी करना चाहता है। मैंने इंकार कर दिया है लेकिन अब उसने इरादा कर लिया है के वो ज़बरदस्ती मेरी बेटी को अपनी हवस का शिकार करे। मैं बेवा हूँ, और ग़रीब। और वो ज़मीनदार है। मैं किस तरह उसका मुक़ाबला कर सकती हूँ? हज़रत आलमगीर ने फ़रमाया घबराओ नहीं, उसका इन्तिज़ाम कर दिया जाएगा। ज़ईफा ने कहा। मुझे आज ख़बर मिली है के आज रात वो अपने दोस्तों की मदद से ज़बरदस्ती घर से निकाल कर ले जाएगा। और मुझे यक़ीन है के ऐसा हो जाएगा। मैं ये सुनते ही इधर भागी हूँ और ज़ौफ व पीरी के बाइस बमुश्किल इस वक़्त तक पहुँच सकी हूँ। आप इन्तिज़ाम फ़रमायेंगे मगर बेसूद। जो कुछ होने वाला था हो चुका होगा। या अनक़रीब हो जाएगा।

हज़रत आलगीर ने उसी वक़्त हुक्म दिया के दो घोड़े हाज़िर किए जायें और फिर थोड़ी देर ही में तैयारी करके ज़ईफा से कुछ बातें दरयाफ़्त फ़रमा कर हुक्म दिया के ज़ईफा को इज़्ज़त व असाइश के साथ महल खास में पहुँचा दिया जाए और खुद मुसल्लह होकर और वज़ीरे आज़म को मुसल्लह करके अपने साथ लिया और घोड़ों को सरपट दौड़ाते हुए राम नगर को रवाना हो गए। थोड़ी देर के बाद गाँव के क़रीब ही पहुँचे थे के गुनजान दरख़्तों में से कुछ आदमियों के बोलने की आवाज़ सुनाई दी, दोनों घोड़ों से उतर पड़े और उस तरफ़ हुए क़रीब पहुँचे तो इस क़िस्म की आवाज़ें सुनाई दीं।

एक आवाज़ः- देखो ज़िद्दी लड़की, क्यों जान गंवाती हो। अब भी समझ जाओ और मेरा कहना मान लो।

दूसरी मग़मूम आवाज़ः- वो! आबरू का सदक़ा जान है। मेरे नज़दीक जान की कोई क़ीमत नहीं।

पहली आवाज़ः- मैं जवान हूँ, ज़मीनदार और साहिबे दौलत हूँ।

खूबसूरत हूँ। फिर इंकार की वजह।

दूसरी आवाज़:- वजह कुछ भी नहीं। मेरी माता ने आपका पैग़ाम वापस कर दिया। मैं माता की अमानत हूँ।

पहली आवाज़:- हम तुझे जान से मार डालेंगे।

दूसरी आवाज़:- जो परमेशवर की मर्ज़ी

पहली आवाज़:- बादा सिंह व मोरसिंह वग़ैरा पहुँचो। इस आवाज़ को सुनते ही बहुत से नोजवान इधर उधर से निकले ओर ये हुक्म पाकर उसे मारो। उस लड़की पर हमला कर दिया। और क़रीब था के इस बेचारी लड़की को ख़त्म कर दें के शहनशाह आलमगीर अपनी तलवार सूंत कर वहाँ जा पहुँचे और बादल की तरह गरज कर फ़रमाया। ख़बरदार! और फिर बादशाह वज़ीर दोनों ने उन बदमाशों पर हमला कर दिया। ज़मीनदार के गिरोह ने शहनशाह को इस लड़की का होने वाला मंगेतर समझा और दिल खोल कर मुक़ाबला किया। गंवारों की हड़बोंग और लाठियों की बोछाड़ ने शहनशाह और वज़ीर को ज़ख़्मी कर दिया। लेकिन इक़्बाल शाही और असफहानी तलवारों की काट ने आख़िर कई एक को मौत के घाट उतार दिया। और कितनों ही के पाँव कट गए बाक़ी माँदा भाग गए।

ज़ख़्मों में चूर शहनशाह ने उस लड़की को जो इस मंज़र को देखकर बेहोश हो चुकी थी। घोड़े की पीठ पर डाला। और पीछे आप बैठ कर वापस रवाना हुए। वज़ीर भी ज़ख़्मों से निढाल हो चुका था। बादशाह इसे भी संभाले हुए आ रहे थे। घढ़याल ने अभी दो ही बजाए थे के शहनशाह आगरा के क़िले में दाखिल हुए और लड़की को उसकी माँ के सपुर्द किया। और उसी वक़्त हकीमों और जर्राहों को तलब फ़रमाया। और उन्हें हुक्म दिया के वज़ीर की मरहम पट्टी की जाए और हमें मरहम पट्टी की ज़रूरत नहीं। ज़ख़्म आप ही अच्छे हो जायेंगे। मर्दान कारी इन बातों की परवाह नहीं किया करते।

सुबह उठकर शहनशाह ने कोतवाल को हुक्म दिया और दोपहर तक राम नगर के ज़ख़्मी और मफरूर तमाम आदमी जिनमें वो ज़मीनदार भी शामिल था हाज़िर कर दिए गए। शहनशाह ने हुक्म फ़रमाया के हमारे वज़ीर की तरफ़ से कोई इसतग़ासा उनकी ज़ात पर नहीं। हम ने अपना जुर्म माफ कर दिया। हाँ इस मज़लूम बुढ़िया और उसकी लड़की पर जो ज़ुल्म हुआ है उसकी हस्बे क़ानून सज़ा दी जाएगी।

ज़ईफा को पाँच सौ अशर्फियाँ आलमगीर अलेह अर्रहमा ने ख़ज़ाने शाही से दिलवाईं और जब उस लड़की की शादी हुई तो शहंशाह उस शादी

में शरीक भी हुए। (याद माज़ी, सफ़ा 119)

सबक़:- हज़रत आलमगीर अलेह अर्रहमा बड़े ही खुदा तरस, आदिल और ग़रीबों की हमदर्दी रखने वाले शहनशाह थे और आप बिला इम्तियाज़ मज़हब व मिल्लत मज़लूमों की हिमायत फ़रमाया करते थे और रिआया की ख़बरगीरी व राहत के लिए अपनी नींद तक कुर्बान कर देने वाले थे। और बड़े जवाँमर्द और बहादुर थे।

हिकायत नम्बर(568) सुलतान आलमगीर और एक बहरूपिया

हज़रत आलमगीर अलेह अर्रहमा को एक बहरूपिये ने धोका देना चाहा, बादशाह ने फ़रमाया अगर धोका दे दिया तो जो माँगेगा वो पाएगा। उसने बहुत कोशिश की लेकिन हज़रत आलमगीर ने जब देखा पहचान लिया आख़िर मुद्दत मदीद का भलावा देकर सूफी ज़ाहिद आबिद बनकर एक पहाड़ की खो में जा बैठा। रात दिन इबादते इलाही में मशग़ूल रहता। पहले दीहातियों का हजूम हुआ। फिर शहरियों का फिर उमरा का फिर वुज़रा। सब आते ये किसी तरफ़ इलतिफात ना करता। शुदा शुदा बादशाह तक ख़बर पहुँची सुलतान को अहले अल्लाह से ख़ास मोहब्बत थी। खुद तशरीफ़ ले गए। बहरूपिये ने दूर से देखा। बादशाह की सवारी आ रही है। गर्दन झुका ली और मुराक़बे में मशग़ूल हो गया। सुलतान मुंतज़िर रहे। देर के बाद नज़र उठाई। और बैठने का इशारा किया। सुलतान मौद्दिब बैठ गए उनका मौद्दिब बैठना था के बेहरूपिया उठा और झुक कर सलाम किया के जहाँ पनाह मैं फलाँ बेहरूपिया हूँ। बादशाह शर्मिंदा हुए और फ़रमाया। वाक़ई इस बार मैं ना पहचान सका। अब माँग जो कुछ माँगना है। उसने कहा। अब मैं आप से क्या माँगूं। मैंने उनका नाम झूटे तौर पर लिया। उसका तो ये असर हुआ के आप जैसा जलील-उल-क़द्र बादशाह मेरे दरवाज़े पर बा अदब हाज़िर हुआ। अब सच्चे तौर पर उसका नाम ले देखूं। ये कहा और कपड़े फाड़े और जंगल को चला गया। (मलफ़ूज़ात अला हज़रत, सफ़ा 60, जिल्द 2)

सबक़:- अल्लाह का नाम लेना बड़ा बाइस बर्कत है और उसकी याद की बर्कत से दुनिया के बड़े बड़े लोग भी खुदाया व हज़रत के दर पर हाज़री देने लगते हैं।

हिकायत नम्बर(569) अशर्फियों की थेली

एक ताजिर हज़रत सुलतान मेहमूद ग़ज़नवी के पास फ़रयादी हुआ।

उसने कहा के मैंने दो हज़ार की बन्द थेली आपके क़ाज़ी को दी थी। के ये मेरा अमानत है अपने पास रखो। मैं सफर से वापस आकर लूंगा। क़ाज़ी ने थेली ले ली और मैं सफर पे चला गया। हमारे क़ाफले पर डाका पड़ा। जिस पर मेरा बाक़ी मांदा सामान भी लुट गया। अब मैं अपनी बन्द थेली आपके क़ाज़ी से वापस लाया हूँ। मगर ये देखिये उसमें अशर्फियों की बजाए पैसे भरे हुए हैं।

मेहमूदः- क्या तुम ने क़ाज़ी से उसकी शिकायत नहीं की?

ताजिरः- जहाँ पनाह! मैं उसके पास गया था। उन्होंने कहा के तुम ने मुझे बन्द थेली दी थी। मैंने बन्द थेली तुझे वापस कर दी है। अलावा अज़ीं तुम ने खुद ही अपनी थेली शनाख़्त की। और कहा था के मेरी थेली यही है और ठीक हालत में है।

मेहमूदः- क्या थेली ठीक हालत में थी?

ताजिरः- जहाँ पनाह! थेली बिलकुल ठीक हालत में थी।

मेहमूदः- ये बड़ी अजीब बात है। अच्छा तुम जाओ और मैं कोई तदबीर करता हूँ। ताजिर की वापसी के बाद सुलतान ने थेली को चारों तरफ़ से देखा वो कहीं से दरीदह ना थी। फिर भी सुलतान इस नतीजे पर पहुँचा के थेली ज़रूर फाड़ी गई है और इसमें अशर्फियाँ निकाल कर पैसे भरे गए हैं। और फिर उसे रफ़ू किया गया है। अब ये मालूम करना चाहिए के शहर में कौन ऐसा रफ़ूगर है जो रफ़ू कर दे तो असल और नक़्ल में फर्क़ में ज़ाहिर नहीं होता। सुलतान जब थेली के मामले पर ग़ौर कर रहा था तो उस वक़्त एक मसनद ज़र निगार पर बैठा हुआ था। यहाँ बैठे बैठे उसने छुरी निकाली और अपनी मसनद को चीर दिया। और फिर उसी वक़्त उठा और तीन दिन के लिए शिकार को चला गया।

थोड़ी देर के बाद फिराश सुलतान के कमरे में दाखिल हुआ। देखा के मसनद खास फटी हुई है इसलिए दारोग़ा को इत्तिला दी। महल के तमाम मुलाज़िम जमा हो गए। उस वक़्त फिराश फर्ते ख़ौफ से कांप रहा था। आखिर एक बूढ़े ने कहा। ऐ दोस्त तुम इस क़द्र डरो मत। तुम अभी अहमद रफ़ूगर के पास जाओ। वो तुम्हें इस मसनद को इस तरह रफ़ू कर देगा के अगर सुलतान सौ मर्तबा भी उसे देखेगा तो शनाख़्त ना कर सकेगा।

फिराश ने मसनद उठाई और रफ़ूगर के यहाँ पहुँच गया।

अहमदः- इसकी उज्रत दो अर्शफी होगी।

फिराशः- चार अशर्फियाँ हाज़िर हैं। मगर तीन दिन से पहले उसे

मुकम्मल कर दो ताके सुलतान की आमद से पहले ये तख़्त शाही पर बिछ जाए। और ये समझ लो। के मेरी ज़िन्दगी और मौत का सवाल है। अगर सुलतान ने इसका ऐब पहचान लिया तो फिर मेरी सज़ा मौत होगी।

अहमदः- तौबा करो ऐ दोस्त! अगर सुलतान ने पहचान लिया तो मेरे हाथ कटवा देना। अहमद ने दो दिन में मसनद रफू कर दी। इस तरह तार के साथ तार जोड़ दी के पूरी मसनद एक जान हो गई। फिराश ने उसका शुक्रिया अदा किया। और क़ब्ल उसके के सुलतान वापस आए ये मसनद पूरे इतमीनान के साथ शाही तख़्त पर बिछा दी गई।

सुलतान मेहमूद शिकार से वापस आ गया। उसके कमरे में मसनद बिछी थी। सुलतान ने कई मर्तबा फटी हुई जगह को पहचानने की कोशिश की मगर वो कामयाब ना हो सका।

सुलतानः- फिराश!

फिराशः- जहाँ पनाह हाज़िर!

सुलतानः- ये मसनद फटी हुई थी।

फिराशः- हुज़ूर बिलकुल नहीं।

सुलतानः- कज़ाब! मैंने खुद छुरी से फाड़ी थी (अब फिराश डर के मारे कांपने लगा। सुलतान ने कहा डरो मत! सिर्फ इस रफूगर को बुलाओ जिसने उसे रफू किया था। अहदम रफूगर को दरबार में हाज़िर किया गया।

सुलतानः- ये मसनद तुम ने रफू की है?

अहमदः- हुज़ूर इसी ख़ादिम ने।

सुलतानः- शाबाश! तुम बड़े बा कमाल रफूगर हो।

अहमदः- हुज़ूर का इक़्बाल!

सुलतानः- ये थेली देखो ये तुम ने रफू की थी।

अहमदः- हुज़ूर! हुज़ूर के क़ाज़ी साहब ने उसे रफू कराया था।

सुलतानः- क़ाज़ी को दरबार में हाज़िर करो (क़ाज़ी दरबार में हाज़िर हो गया) सुलतान ने क़ाज़ी से मुखातिब होकर कहा।

"ऐ ज़ालिम तेरे बाल सफेद हैं। मैंने इस शहर की क़ज़ा तेरे सपुर्द की थी और तुझे मखलूक़ खुदा के जानो माल का मुहाफिज़ बनाया था। क्या मेरे इस एतमाद का यही नतीजा है के मुहाफिज़ व अमीन कहलाए और लोगों के माल में खयानत करे।"

क़ाज़ीः- जहाँ पनाह खयानत के इलज़ाम से पाक हूं। मैंने सुलतान के एतमाद को कभी मजरूह नहीं किया। मेरे मुखालफीन मेरे खिलाफ ग़लत

बयानी की है।

सुलतानः- तुम ने इस थेली में अशर्फियों की बजाए पैसे भर दिए और फिर अमानत दार को धितकार दिया।

क़ाज़ीः- जहाँ पनाह! मैं अभी इस थेली को देख रहा हूँ।

सुलतान ने हुक्म दिया, ताजिर और रफ़ूगर दोनों दरबार में हाज़िर हो गए। अब क़ाज़ी अर्क़ नदामत में ग़र्क था। वो सर से पाँव तक कांप रहा था। उसने कई दफा माफी माँगने की कोशिश की मगर अलफाज़ उनकी ज़बान से नहीं निकलते थे। सुलतान ने हुक्म दिया के इस बददियानत को पकड़ लो उस आवाज़ के साथ ही क़ाज़ी ज़मीन पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

उसी वक़्त दो हज़ार मोहरें लाई गईं और ताजिर के हवाले कर दी गईं। जब क़ाज़ी दरबार से निकला उसका चेहरा सियाह और उसका जिस्म पसीने में ग़र्क़ था। उसके आज़ा कांप रहे थे। तमाम मख़लूक़ उसे देख रही थी और उस पर लानत बरसा रही थी।

क़ाज़ी बड़ी मुश्किल से अपने घर में दाखिल हुआ और अपने बिस्तर पर लेट गया। रात के वक़्त उसके घर वालों ने बहुत कोशिश की के वो कुछ खा पी सके। मगर ग़िज़ा का एक ज़र्रा और पानी का एक क़तरा भी उसके हलक़ से नीचे ना उतर सका। सुबह के वक़्त जब घर के सब लोग बैदार हुए तो क़ाज़ी अपने बिस्तर पर मरा पड़ा था। (माख़ूज़)

सबक़ः- ये दुनयवी दरबार का वाक़ेया है उससे आख़िरत की जवाब दही का अंदाज़ा करना चाहिए। के क़ाज़ी एक जुर्म खयानत का मुरतकिब था। मगर हमारा एक एक बाल जुर्मों और गुनाहों में ग़र्क है। हमारे हाथ मुज्रिम। हमारे कान मुज्रिम, हमारी ज़बान मुज्रिम और आँखें मुज्रिम हैं। हमारे दिल और रूहें मुज्रिम हैं। हम सरापा जुर्म व गुनाह हैं। क़ाज़ी की खयानत पर गवाही देने वाला एक ताजिर था। और रफ़ूगर। मगर हमारे आज़ा अल्लाह की बारगाह में खुद हमारे खिलाफ गवाही दे रहे होंगे। पस हमें अल्लाह के सामने जवाब दही से पहले। अपने जुर्मों की सफाई का इन्तिज़ाम कर लेना चाहिए।

हिकायत नम्बर (570) वाली-ए-खरासान

वाली-ए-खरासान इसमाईल बिन मोहम्मद फ़रमाते हैं के मैं एक रोज़ समरकंद में दरबारी मामलात व मुक़द्मात की समाअत में मसरूफ था। के यकायक शेख़-उल-इस्लाम आलम रब्बानी हज़रत मोहम्मद बिन नस्र मरोज़ी तशरीफ ले आए। मैं उनको देखकर ताज़ीमन खड़ा हो गया। और अदब से

लाकर अपने पास बिठाया। वो कुछ बात चीज करके जब वापस तशरीफ़ ले गए तो मेरे भाई इसहाक़ ने मुझ से फ़रमाया।

तक़ोमू लिरजूलिम मिनर्रअय्यती के तुम रिआया के किसी आदमी के आने पर ताज़ीम के लिए खड़े होते हो।"

मक़्सद ये के ये इंकिसारी व खाकसारी वक़ार सलतनत के ख़िलाफ है। वाल-ए-ख़रासान कहते हैं के उसी रात मैंने ख़्वाब में देखा के हुज़ूर सरवरे दो आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाए हैं और मेरा बाज़ू पकड़ कर मुझ से फ़रमाते हैं।

सब्बित मुलकाका व मुल्का बनीका बिइजलालिका मोहम्मदिब्नी नस्र तुम्हारी और तुम्हारी औलाद की सलतनत मोहम्मद बिन नस्र की ताज़ीम व तकरीम के सबब से दायम अलसबूत कर दी गई है। और तुम्हारे भाई इसहाक़ का मुल्क अनक़रीब छिन जाएगा। क्योंके उसने मोहम्मद बिन नस्र की तख़फीफ की है। (तज़करत-उल-हफ़्फाज़, सफ़ा 203, जिल्द 1 व तहज़ीब-उल-असमा, सफ़ा 93, जिल्द 1)

सबक़:- मालूम हुआ के उलमा व औलिया की ताज़ीम व तकरीम से खुदा और रसूल की खुशनूदी हासिल होती है। और ये भी मालूम हुआ के किसी मक़्बूले हक़ के लिए क़याम ताज़ीमी करना जायज़ है। बल्के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की रज़ा व खुशनूदी का मौजिब है। फिर अगर खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ताज़ीम व तकरीम के लिए क़याम किया जाएगा तो क्यों ना हुज़ूर भी खुश होंगे। और खुदा भी खुश होगा। और ये भी मालूम हुआ के हमारे हर फैल का आज भी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को इल्म हो जाता है। और ये भी मालूम हुआ के उलमा व औलिया की तख़फीफ व तौहीन से खुदा नाराज़ होता है और हकूमतें भी छिन जाती हैं।

असल हदीसः लोगों के तर्जुमान हफ़्त रोज़ा अख़बार अलअतसाम लाहोर ने भी अपनी 15 जनवरी 1960इ॰ की इशाअत में ये हिकायत दर्ज की है। देखिये, सफ़ा 6।

"पस ये भी मालूम हुआ के शऊरी या ग़ैर शऊरी तौर पर हज़रत अहले हदीस ने भी इस अम्रे हक़ का एलान फ़रमा दिया है। के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ज़िन्दा हैं, हमारे आमाल से बा ख़बर हैं। और क़याम तअज़ीमी से खुश होते हैं। और उन पाक लोगों की तख़फीफ से खुदा नाराज़ होता है।"

हिकायत नम्बर(571) सिकंदर और चीन की शहज़ादी

सिकंदर रूमी जिस वक़्त फतूहात हासिल करता हुआ मुल्क चीन तक पहुँचा तो चीन की शहज़ादी ने पहले से सिकंदर की तसवीर उतरवा कर मंगा रखी थी और इसी वजह से शहज़ादी सिकंदर को पहचानती थी। सिकंदर ने फौज को शहर से बाहर ठहराया। खुद लिबास बदल कर फक़ीर बनकर शहर के अन्दर दाखिल हुआ और शाही महल तक पहुँचा। शहज़ादी ने फक़ीर को देखकर पहचान लिया के ये फक़ीर सिकंदर बादशाह है। हुक्म दिया के इस फक़ीर को गिरफ़्तार करके तीन दिन तक क़ैदखाने में रखो और एक दाना खाने को ना दो। चुनाँचे ऐसा ही किया गया। चौथे रोज़ शहज़ादी ने सिकंदर को क़ैदखाने से तलब करके अपने सामने बिठा कर लाखों रुपया के मोती और जवाहरात उसके सामने रखे और कहा के ये खा लीजिए। मगर सिकंदर ने भूक की शिद्दत से इस तरफ़ निगाह भी ना की। उसके बाद शहज़ादी ने जौ की रोटी सिकंदर के सामने रखी। वो रोटी खा कर सिकंदर ने पानी पिया। तब शहज़ादी ने कहा के इन बैश क़ीमत जवाहरात की तरफ़ आपने तवज्जह ना फ़रमाई और ये आपको बेकार नज़र आए। तो ऐ बादशाह! ऐसी बेकार चीज़ के लिए क्यों दुनिया को क़त्ल करता और तबाह करता फिरता है। जा क़िनाअत इख़्तियार कर। ये नसीहत सुनकर सिकंदर ने मुल्क चीन से फौज को हटा लिया। (सीरत-उल-सालेहीन)

सबक़:- सिर्फ तीन रोज़ के क़ैदखाने की तकलीफ ने करोड़हा रुपया के जवाहरात को बेकार कर दिया और सिर्फ जौ की रोटी का एक टुकड़ा काम आया। इसी तरह एक रोज़ क़ब्र के क़ैदखाने में ये सब दुनयवी जाह व जलाल और ये जौ की रोटी वग़ैरा भी सब कुछ बेकार हो जाएगा और वहाँ सिर्फ नेक आमाल ही कारआमद होंगे...

कहा अहबाब ने ये दफ़्न के वक़्त
के हम क्यों कर वहाँ का हाल जानें
लहद तक आपकी ताज़ीम कर दी
अब आगे आपके आमाल जानें

हिकायत नम्बर(572) सिकंदरे आज़म और एक क़ज़्ज़ाक़

सिकंदरे आज़म के सामने एक दफा एक क़ज़्ज़ाक़ पेश किया गया जिसकी लूट मार से सारे मुल्क में आफत मच रही थी। ये शख़्स बड़ी मुश्किल

से गिरफ़्तार किया गया। सिकंदर के साथ उसकी हस्ब ज़ैल दिलचस्प गुफ़्तगू हुई।

सिकंदरः- हैं! क्या तू थिरैस का क़ज़्ज़ाक़ है? जिसकी लूट मार का मुल्क भर में चर्चा है।

क़ज़्ज़ाक़ः- मैं थिरैस का बाशिन्दा और एक सिपाही हूँ।

सिकंदरः- सिपाही नहीं बल्के चोर, लुटैरा, क़ज़्ज़ाक़ और क़ातिल। मुल्क के लिए आफत, मैं तेरी जुर्रात की दाद देता हूं। मगर तुझ से नफरत भी करता हूँ। और तुझे तेरे जुर्मों की सज़ा भी दूंगा।

क़ज़्ज़ाक़ः- आख़िर मैंने क्या किया। जिसकी आपको शिकायत है।

सिकंदरे आज़मः- क्या तूने मुल्क के अमन में खलल नहीं डाला। मेरी रिआया के जानो माल को नुक़्सान पहुँचाने में सारी उम्र नहीं गुज़ारी?

क़ज़्ज़ाक़ः- सिकंदर इस वक़्त मैं आपका क़ैदी हूँ। जो बात आप कहें उसका सुनना और जो सज़ा दें उसका सहना मेरे लिए ज़रूरी है। मगर मेरी रूह पर आपकी कोई हकूमत नहीं। अगर मुझे आपकी बात का जवाब देना पड़ा तो एक आज़ाद आदमी की तरह जवाब दूंगा।

सिकंदरः- जो कहना हो आज़ादी से कहो मैं ऐसा नहीं हूँ के अपनी हकूमत के ज़ोम में किसी को बोलने से रोक दूं।

क़ज़्ज़ाक़ः- मैं आपकी बात का जवाब देने से क़ब्ल एक और सवाल करना चाहता हूँ। ये तो बताईये के आपने अपनी ज़िन्दगी क्यों कर गुज़ारी?

सिकंदरः- एक बहादुर आदमी की मानिंद, शौहरत आम से पूछो वो तुम को बताएगी के मैं बहादुरों में सबसे बढ़कर ताक़तवर फतहमंद हूँ।

क़ज़्ज़ाक़ः- और क्या यही बातें "शौहरत आम" मेंरी बाबत नहीं कहतीं। क्या कोई कपतान मुझ से बहादुर हुआ है? जिसके पास मेरी फौज से बढ़कर बहादुर फौज रही हो। क्या कभी कोई (कहते कहते रूक गया और फिर बोला) मुझ ग़ुरूर शेखी से नफरत है। आप खुद जानते हैं के मैं आसानी से आपके बस में नहीं आया।

सिकंदरः- खै़र फिर भी तो क़ज़्ज़ाक़ ही है। एक कमीना बेईमान क़ज़्ज़ाक़!

क़ज़्ज़ाक़ः- और फातेह कौन होता है? क्या आप दुनिया में भूत बला की तरह इधर उधर घूमते नहीं रहे। क्या आपने अमनो आसायश और सनत व हर्फत के उम्दा उम्दा समर बर्बाद नहीं किए। क्या आप हकूमत की भूक को सैर करने के लिए जो कभी सैर होने वाली नहीं, बग़ैर क़ानून और बग़ैर

इंसाफ के तबाही व बर्बादी और क़त्ल व ग़ारत नहीं करते रहे? जो काम मैंने सौ हमराहियों की मदद से सिर्फ एक ज़िले में किया है वो काम आप ने लाखों आदमियों की मदद से क़ौमों की क़ौमों के साथ किया है। अगर मैंने मामूली आदमियों को लूटा है तो आपने बादशाहों और शहज़ादों को तबाह किया है। अगर मैंने चन्द घरों को जलाया है तो आपने निहायत आबाद सलतनतों को बर्बाद किया है। और दुनिया के निहायत सर सब्ज़ शहरों को खाक में मिलाया है। फिर मुझ में और आपमें इसके सिवा क्या फर्क है के आप एक बादशाह के घर में पैदा हुए। और मैं एक मामूली आदमी के घर में और इसी लिए आप मुझ से ज़्यादा क़वी क़ज़्ज़ाक़ बन गए।

सिकंदरः- बड़ा फर्क है, ज़मीन व आसमान का फर्क़ है। मैंने बादशाह तरह लिया और बादशाह की तरह दिया। अगर मैंने सलतनतों को तहे व बाला किया है तो उनसे भी ज़्यादा अज़ीम-उश्शान सलतनतों की बुनियाद रखी। इल्मो फन और फलसफे की तरक़्क़ी दी।

क़ज़्ज़ाक़ः- मैंने भी जो कुछ अमीरों से लिया, ग़रीबों को मुफ़्त दिया। मैंने निहायत खूंख़्वार इंसानों में बाक़ायदगी और इन्तिज़ाम क़ायम किया। और मज़लूमों पर दस्त हिफाज़त बढ़ाया। बेशक जिस इल्म व फलसफा का आप ज़िक्र करते हैं उसको मैं नहीं जानता मगर इतना ज़रूर जानता हूँ के जो नुक़्सान दुनिया को हम ने पहुँचाए हैं ना मैं पूरा कर सकता हूँ ना आप!

सिकंदरः- उसकी ज़ंजीरें खोल दो। और उसके साथ अच्छा सलूक करो। क्या हम एक दूसरे से इस क़द्र मुशाबह हैं? सिकंदर और क़ज़्ज़ाक़ दोनों यक्साँ हैं मैं ज़रा इस बात को सोच लूं (माखूज़)

सबक़:- जो बादशाह अपना शुग़्ल जंग व जिदाल और लूट खसूट रखे उसमें और क़ज़्ज़ाक़ व डाकू में कोई फर्क़ नहीं।

हिकायत नम्बर(573) सुलतान मेहमूद और एक हासिद

एक दिन मेहमूद से हासिद कोई
चुग़ली खाता था अयाज़ नेक की
यूं लगा कहने के ये मक्कार है
उससे रहना बाख़बर ग़द्दार है
ज़ाहिरन करता है जाँ तुझ पर फिदा
बातिनन उसको नहीं उल्फत ज़रा

बन्दा-ए-ज़र है लगी है उसको लो
जमा हो जायें ख़ज़ाने। नौ-ब-नौ
सिम्त शिर्की में जो हुजरा है फलाँ
रात को जाता बिला नाग़ा है वाँ
हुजरा देखोगे ना एक दम भी खुला
उसको रखता है मुक़फ़्फ़िल ये सदा
हो प्यारा उसका कैसा ही कोई
उसको ले जाता नहीं अन्दर कभी
दिल को है मेरे यक़ीन ये ना सिपास
जमा रखता है ख़ज़ाना बे क़यास
बादशाह सुनकर ये हैराँ रह गया
हुक्म एक सरदार को फौरन दिया
जा अभी और क़ुफ़्ले हुजरा तोड़ के
हाँ उठा ला जो वहाँ तुझ को मिले
वो गया और हुक्म की तामील की
शेह के आगे ला के एक गठरी रखी
इतनें में दरबार के अरकान सब
आ गए थे मुल्क के अयान सब
बादशाह ने क़िस्सा कुल करके बयाँ
ये कहा खोलो जो है उसमें नेहाँ
खोली गठरी देखते हैं उसमें क्या
घास की पापोश कम्बल की क़बा
थीं पुरानी जूतियाँ टूटी हुई
और क़बा पर तेह चढ़ी थी मैल की
शेह ने फ़रमाया के ऐ मेहर जहाँ
हैं ये चीज़ें क्या तू कर उनका बयाँ
दस्त बस्ता अर्ज़ की उसने शहा
थी यही पोशाक जब घर से चला
देखता हूँ उसको हर रोज़ एक बार
ता ना भूलूं अपना मैं असल व तबार
मेहरबानी शेह की उनको देखकर
सौ गुनी आती है आँखों में नज़र

रह गए जितने थे हासिद सुनके सुन
चुप हुए मुंह से ना निकला कुछ सुख़न

(दरमंज़ूम, सफ़ा 122)

सबक़:-

जाह व इज़्ज़त दूसरे की देख कर
दिल में आए कुछ तिरे ग़ैरत अगर
तू भी उसको देखकर कोशिश करे
ताके उस सा साहब इज़्ज़त बने
रश्क है ये नहीं आदत बुरी
रश्क करने में ना कर हरगिज़ कमी
गर तू चाहे उसकी नअेमत का ज़वाल
ये हसद है उसको तो दिल से निकाल
ये बुरी आदत है उसको तर्क कर
कर दिए बर्बाद उसने घर के घर
कुछ ना उसमें हाथ तेरे आएगा
नेकियाँ तेरी हसद खा जाएगा!

हिकायत नम्बर(574) अमीर अब्दुर्रहमान अमीर काबुल का एक फैसला

ज़िला पिशावर के दो शिराकती इस ग़र्ज़ से काबुल गए ताके वहाँ गोश्त की तिजारत करें। क़लील अर्से में उन्होंने दो तीन हज़ार रूपया कमा लिया। और अपने वतन आने का इरादा किया, दोनों शिराकती अपने मुनाफे की रक़म साथ लेकर अपने वतन की तरफ़ चल पड़े। जलाल आबाद के क़रीब पहुँचकर उन्होंने एक नाबीना गदागर को देखा, जो रास्ते के किनारे एक बड़े दरख़्त के नीचे ये सदा लगा रहा था।

"अफसोस गर्दिश दौराँ ने सब कुछ छीन लिया। हत्ता के आँखों की नज़र भी छीन ली। क्या ही अच्छा हो। अगर फिर एक मर्तबा हथैली पर रुपया रखने का मौक़ा मयस्सर आ जाए।"

बार बार वो गदागर यही जुमले दौहराता था। दोनों शिराकती उसके क़रीब पहुँच गए। और गदागर से दरयाफ़्त किया। भाई! तुम ज़माने की गर्दिश से नालाँ क्यों हो? नाबीना गदागर ने कहा मैं इस इलाक़े में मुमताज़ शख़्सीयत

का मालिक था। मेरी बहुत सी जायदाद थी। लेकिन क़िस्मत ने पलटा खाया। के मेरी आँखों की बीनाई भी साथ लेती गई। मुझे इस बात का बहुत शौक़ है के इस मुफलिसी में अगर अपना नहीं तो दूसरे का कमाया हुआ नक़द रुपया उन हाथों में एक लम्हा के लिए रखकर अपने दिल को तसकीन दूं। ये था वो माजरा जो गदागर ने उनको सुनाया।

उन्होंने ये फैसला करते हुए मुनासिब समझा। के ये एक नाबीना गदागर है। जाएगा कहाँ? अपने रुपों की थेली उसको एक लम्हा के लिए देने में क्या हर्ज है। उसके दिल में अगर यही ख़्वाहिश है तो वो भी पूरी हो जाए। एक ने रुपों की वो थेली गदागर के हाथ में देते हुए कहा, लो भाई फक़ीर! अपनी तमन्ना पूरी कर लो।"

गदागर ने थेली लेते हुए उनका शुक्रिया अदा किया। थोड़ी देर बाद उनमें से एक ने कहा।

"भाई गदागर! अब हम को हमारी रुपों की ये थेली वापस कर दो, लेकिन गदागर ने कमाल संजीदगी से जवाब दिया, थेली! थेली! कैसी थेली? वापस कैसे ये क्या है? दूसरे साथी ने गदागर से कहा।"

"मज़ाक़ मत करो, थेली जल्दी वापस कर दो, हमें दूर जाना है। मगर गदागर थेली वापस करने से इंकार कर दिया। शिराकती हैरान हुए। अजीब मुसीबत में फंस गए।"

गदागर ने कहा। मैंने तमाम उम्र यहाँ बैठे बैठे गुज़ार दी है। पैसा पैसा जमा किया। तुम कहाँ से बदबख़्त डाकू यहाँ पहुँच गए। जो मेरी सारी उम्र की कमाई ऐसी आसानी से छीन लेना चाहते हो।

शिराकतियों ने जब गदागर के ये अलफाज़ सुने तो हवास बाख़्ता हो गए। गदागर उठ कर चलने लगा। तो दोनों ने अपना रुपया उससे ज़बरदस्ती छीन लेने की कोशिश की। लेकिन गदागर ने ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू किया। डाकू, डाकू, कोई मदद को पहुँचे। पास ही बस्ती थी। वहाँ के लोग जाए वक़ू पर पहुँच गए। और हर दो शिराकतियों को डाकू खयाल करते हुए गिरफ़्तार कर लिया। दोनों ने हर चन्द कोशिश की के वो देहाती उनकी बात का एतबार कर लें। लेकिन बेसूद बस्ती के लोगों ने ये तजवीज़ मंज़ूर की के इन डाकूओं को बादशाह के दरबार में हाज़िर करें और उनकी गिरफ़्तारी के सिले में ईनाम हासिल करें। चुनाँचे दोनों को बमअे गदागर बादशाह के दरबार में हाज़िर किया गया।

अमीर अब्दुर्रहमान अदालत की कुर्सी पर मुतमक्किन थे। दरबारी हाज़िर

थे। बादशाह ने पहले गदागर का बयान सुना और फिर मुलज़िमों की दास्तान मज़लूमी सुनी। और फिर हुक्म दिया के एक कड़ाही ले आओ। और उसमें पानी डाल कर खूब गर्म करो। ये सुनते ही दोनों शिराकती बिचारे सहम गए। इस दर्दनाक तरीके से अपनी मौत का खयाल करने लगे। उनकी आँखों में अंधेरा अच्छा गया। कड़ाही लाई गई। पानी डाल कर खूब गर्म करके हुक्म का इन्तिज़ार होने लगा। बादशाह ने गज़बनाक होकर कहा। लाओ वो रुपों की थेली खोल कर पानी में डाल दो। फौरन तामील हुई। बादशाह ने फिर कहा। कड़ा ही सब दूर हट जाओ। चुनाँचे सब अलेहदा हो गए। बादशाह मसनद इंसाफ से उठा। और कड़ा ही के पास आकर गर्म पानी की सतह बग़ौर देखकर वापस चला गया। हुक्म हुआ, कड़ाही का पानी गिराकर रुपया शिराकतियों के हवाले कर दिया जाए। जो थोड़ी देर क़ब्ल अपनी मौत का इन्तिज़ार कर रहे थे। अब खुशी के मारे फूले ना समाते थे। जो थोड़ी देर क़ब्ल अपनी मौत का इन्तिज़ार कर रहे थे। अब खुशी के मारे फूले ना समाते थे। बादशाह ने फ़रमाया। नाबीना गदागर को मुनासिब सिज़ा दी जाए। लोगों में चैह मेगोयाँ शुरू हो गईं। क़ाज़ी ने जुर्रात करते हुए फैसले की तफसील सुनने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। बादशाह ने फ़रमाया जिन दो शख़्सियतों को मुलज़िम ठहराया जाता था। दरहक़ीक़त वो बिलकुल बे गुनाह थे। उन्होंने गोश्त फ़रोख़्त करके रुपया जमा किया था। क्योंके गर्म पानी की सतह पर चर्बी के पिघले हुए ज़र्रात ज़ाहिर हुए। जिससे ये ज़ाहिर हुआ के उन गोश्त फ़रोशों के हाथ का मेल है जो उनके हाथों पर गोश्त की चर्बी की वजह से पड़ता था। वो रुपों को भी लग गया होगा तजुर्बा किया जो सही निकला। बादशाह के इस फैसले से हाज़ीने दरबार बेहद खुश हुए।

हिकायत नम्बर (575) अदालते इस्लाम

बनाया खाना खुदा इक खजिंदी ने!
बहुक्म हज़रत सुल्तान मुराद ज़ी सतवत
मगर पसंद नहीं आई शाह को तामीर
अगरचै सिर्फ की मोअम्मार ने बहुत सनअत
दिया ये हुक्म शहनशाह शेर ख़सलत ने
के हाथ क़तअे हो मोअम्मार का पए इब्रत
ग़रीब राज के बे दस्त हो गया था वो
गया जनाब मैं क़ाज़ी की अब बाई हालत

कहा के ज़ुल्म किया आह मुझ पर सुलतान ने!
बिला गुनाह मिरे सर पर ढाई है आफत
तवक़्क़ो आप से इंसाफ की मगर है मुझे
के आप फज़्ल खुदा से हैं हामिले मिल्लत
तलब किया गया दार-उल-क़ज़ा में अब सुल्ताँ
खड़ा था रूबरू क़ाज़ी के ताक़ थी ताक़त
डरा रही थी उसे बस सियासत क़ुराँ
बदन पर लरज़ा था और थी ज़बान पर लुकनत
किया जवाब तलब जब के उससे क़ाज़ी ने
कहा ये शेह ने हुआ जुर्म मुझ से या हज़रत
मैं मुनफइल हूँ जिसारत पे अपनी लेकिन अब
हक़ीक़तन हूँ मैं ख़ाती व मुज्रिमे मिल्लत
मगर निकाल के आँखें कहा ये क़ाज़ी ने!
क़सास तुम से लिया जाएगा पए इब्रत
के बन्दा मौला बराबर हैं हुक्म क़ुरआन से
नहीं है ताज की इस्लाम में कोई क़ीमत
सुनी ये बात जो सुल्तान अद्ल परवर ने
निकाला हाथ पए क़त्ल अब बायें सतवत
मगर ये देख के चिल्लाया मुद्दई फी अल फौर!
के खूरेज़ी नहीं मेरा मुद्दा हज़रत
माफ करता हूँ सुल्ताँ को मैं बराए खुदा
के इन्तिक़ाम मैं पाता नहीं हूँ कुछ राहत
ग़र्ज़ के फतह हुई इस तरह ख़ज़िंदी की!
शेह मुराद की गर्दन झुकी व ई शौकत

सबक़:-

ये अद्ल वो है के इस्लाम जिस पे नाज़ाँ है
ये वो जनाब है झुकता है याँ सरे नखुव्वत

दसवाँ बाब

मुख़्तलिफ हिकायात

हिकायत नम्बर(576) मौलूद शरीफ

हज़रत शाह वली-उल्लाह साहब मोहद्दिस देहलवी रहमत-उल्लाह अलेह अपने वालिद माजिद हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब रहमत-उल्लाह अलेह के मुतअल्लिक़ फ़रमाते हैं के हज़रत शाह अब्दुर्रहमी मोहद्दिस देहलवी रहमत-उल्लाह अलेह मौलूद शरीफ के दिनों हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मोहब्बत और हुज़ूर से ताल्लक़ पैदा करने के लिए हर साल खाना पकाया करते थे। एक साल उन्हें कुछ मयस्सर ना आया। जिससे खाना पकाते। सिर्फ भुने हुए चने मिल सके। हज़रत शाह साहब ने वही चुने मौलूद शरीफ के दिन तक़सीम कर दिए। फिर आपने ख़्वाब में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को देखा के आपके आगे वही भुने हुए चने रखे हैं। और आप ऐसे खुश हैं के चेहरा अनवर से बशाशत ज़ाहिर हो रही है। (अद्दर अलसमीन फी मुबश्शरात-उन्नबी अलअमीन बाईसवीं हदीस)

सबक़:- साल बसाल मौलूद शरीफ करना और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मलीादे पाक की खुशी में हस्बे तौफीक़ कुछ तक़सीम करना बिदअत नहीं है। बल्के बड़े बड़े बुज़ुर्गों और वलियों का ये तरीक़ा है। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मीलाद पाक की खुशी मनाने से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम खुश होते हैं।

हिकायत नम्बर(577) शहीद ज़िन्दा हैं

हज़रत फारूक़े आज़म(र०अ०) के ज़माने में चन्द मुजाहिदीन मैदाने जिहाद में दुश्मन की गिरफ़्त में आ गए। और काफिर बादशाह के रूबरू पेश किए गए। काफिर बादशाह ने उनसे कहा के सलाम छोड़कर मेरे दीन में आ जाओ। वरना क़त्ल कर दिए जाओगे। मुजाहिदीन ने जवाब दिया। के जान जाए तो जाए। मगर खुदा करे के ईमान ना जाए। कुछ भी करो, मगर दामने इस्लाम ना छोड़ा जाएगा। ज़ालिम काफिर ने सबको शहीद कर दिया। मगर एक मुजाहिद को क़त्ल ना किया। और दोबारा उसे इस्लाम छोड़ने पर मजबूर किया। तरह तरह के लालच दिए। मगर उस मर्दे मुजाहिद ने उसके जुमला

ईनामात को ठुकराते हुए इस्लाम पर क़ायम व दायम रहने का एलान किया। हत्ता के काफिर बादशाह ने उसे जेल में भिजवा कर इस्लाम से बरगश्ता करने की ये तरकीब की के एक खूबसूरत लड़की जेल में ये कहकर भेज दी के अपने हुस्नो जमाल के जाल में उसे फंसा कर इस्लाम से उसे फिराओ। वो लड़की गई तो मर्दे मुजाहिद ने उसकी तरफ़ तवज्जह तक ना की और क़ुरआन की तिलावत में मशग़ूल हो गया। और जब मोहम्मद-उर-रसूल-उल्लाह वल्लज़ीना मआहू तक पहुँचा तो लड़की रोने लगी। और कहने लगी। मुझे मुसलमान कीजिए। मुसलमान होकर फिर इसी लड़की की तरकीब से ये दोनों रातों रात जेल से फ़रार हो गए। और ज़ालिम बादशाह की ममलिकत से बहुत दूर पहुँच गए। सुबह हुई तो उन्होंने चन्द घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनी। डर गए। के शायद ज़ालिम बादशाह ने पीछा करने के लिए अपने आदमी भेज दिए हें जब सवार क़रीब आए। तो क्या देखते हैं के ये वही मुजाहिदीन हैं जिन्हें एक दिन पहले बादशाह ने शहीद कर दिया था। उन मुजाहिदीन ने कहा के भाई! हमें मुर्दा ना जानियो। हम ज़िन्दा हैं और इस बहन के इस्लाम लाने पर मुबारकबाद देने आए हैं। और बशारत हो के ये तुम्हारे निकाह में आएगी। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफा 163, जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह की राह में जानें देने वाले अब्दी ज़िन्दगी पा जाते हैं और वो मुर्दा नहीं होते बल्के ज़िन्दा होते हैं और शहीदों को ये ज़िन्दगी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ग़ुलामी से और हुज़ूर की बदौलत मिलती है। फिर खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम क्यों हयात-उन्नबी ना होंगे? नहर का पानी से भरपूर होना दलील है इस बात की दरया में पानी बकसरत मौजूद है। और अगर कोई नहर को तो पानी से भरपूर माने। और दरया को पानी से खाली और खुश्क बताए। तो उसके बे वक़ूफ होने में क्या शुबह है। पस इसी तरह शहीद जो बहरे मोहम्मद की नहरें हैं जब उनमें ज़िन्दगी पाई जाती है तो बहरे मोहम्मदी में यक़ीनन आबे हयात मौजूद है। फिर जो शख़्स शहीद को तो ज़िन्दा माने और हुज़ूर सल-लल्लाहाहे तआला अलेह व सल्लम को मर कर मिट्टी में मिल जाने वाला बताए उसकी जहालत में क्या शुबह हो सकता है। और ये भी मालूम हुआ के मर्द मोमिन जान पर बन जाए तो बन जाए मगर वो अपना ईमान कभी नहीं छोड़ता।

हिकायत नम्बर (578) गाय की बछेरी

बनी इस्राईल के ज़माने में तीन नामी ग्रामी क़ाज़ी थे। जिनकी खुदा ने

जाँच करना चाही। और दो आदमियों को भेजा जिनमें एक तो घोड़ी पर सवार था जिसकी बछेरी उसके साथ थी। दूसरा गाय पर सवार था। गाय वाले ने घोड़ी के बछेरी को बुलाया। और वो उसके साथ लग गई। इस पर घोड़ी सवार बोला, के बछेरी घोड़ी की है। दूसरा बोला, नहीं, ये मेरी गाय की है। इस पर दोनों झगड़े हुए एक क़ाज़ी के पास पहुँचे। और दोनों ने अपने दावे के सबूत में दलीलें पेश कीं। मगर गाय वाले ने पहले से क़ाज़ी की मुठ्ठी गर्म कर दी थी। और रिश्वमत के तौर पर उनकी जैब में एक काफी रक़म डाल दी थी। जिसका असर ये हुआ के क़ाज़ी साहब ने फैसले में ये लिखा के बछेरी गाय की है। फिर ये दोनों अदालत से निकल कर दूसरे क़ाज़ी के मेहकमा में गए और उन्हें भी रिश्वमत देकर गाय वाले ने अपने ही हक़ में फैसला लिखवा लिया फिर इन दोनों ने तीसरे क़ाज़ी की अदालत में अपना मुक़दमा पेश किया। जिसके जवाब में क़ाज़ी साहब बोले के मुझे हैज़ आ रहा है। हैज़ से फ़रागत के बाद तुम्हारा मुक़दमा सुनूंगा। इस पर दोनों हैरत से बोले, भला मर्दों को भी कहीं हैज़ आता है? इस पर नेक निहाद क़ाज़ी ने बरजस्ता कहा भला गाँय भी बछेरी जन सकती हैं? (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 76, जिल्द अव्वल)

सबक़:- रिश्वत के ज़ोर से खिलाफ अक्ल भी फैसले कराए जा सकते हैं और जो नेक निहाद और सच्चे क़ाज़ी और जज हैं वो किसी वक़्त भी इंसाफ का दामन हाथ से नहीं छोड़ते।

हिकायत नम्बर (579) इंसाफ

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने एक दफा अल्लाह से अर्ज़ किया। इलाही! मुझे अपने अद्लो इंसाफ का कोई नमूना दिखा। फ़रमाया, अच्छा फलाँ मुक़ाम की तरफ़ चले जाओ। वहाँ हमारे इंसाफ का नमूना देख लोगे। मूसा अलेहिस्सलाम उस मुक़ाम की तरफ़ चले गए। जहाँ चन्द दरख़्तों के झुंड थे। और पानी का साफ और सुथरा चश्मा बेह रहा था। आप इन दरख़्तों में छुप कर बैठ गए के एक घुड़ सवार आया और चश्मे से थोड़ा सा पानी पिया। और एक हज़ार अशर्फियों की थेली वहीं भूल कर चला गया। इतने में एक कमसिन लड़का वहाँ आया। और थेली उठाकर चलता बना। उसके बाद एक अंधा शख़्स आया। और चश्मे से वज़ू करने लगा। मगर सवार जब थोड़ी दूर पहुँचा तो उसे थेली याद आई। तो फौरन पलट कर चश्मे पर आया। और अंधे से पूछा। उसने कहा। मुझे

कोई ख़बर नहीं। मैंने कोई थेली नहीं उठाई। उस पर सवार को ग़ुस्सा आया। और उसने अंधे को क़त्ल कर दिया। मूसा अलेहिस्सलाम ये सब माजरा देख रहे थे। अल्लाह ने वही भेजी के मूसा! ताज्जुब की कोई बात नहीं। कमसिन लड़के ने अपना हक़ पा लिया। क्योंके घोड़े सवार ने उस लड़के के बाप से हज़ार अशर्फ़ियाँ ज़ुलमन छीनी थीं। और अंधे ने सवार के बाप को ना हक़ क़त्ल कर डाला था। तो हर एक हक़दार को हक़ मिल गया। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 104, जिल्द 2)

सबक़:- खुदा की हर बात में कोई ना कोई हिकमत ज़रूर होती है और बाज़ अवक़ात किसी अच्छे वाक़ये को हम अच्छा नहीं समझते। लेकिन उसमें यक़ीनन कोई राज़ मुज़्मिर होता है।

हिकायत नम्बर (580) बदला

किसी शहर में एक बहिश्ती रहता था। जो एक सुनार के घर में पानी भरा करता था। और उसे पानी भरते हुए तीस साल का अर्सा हो गया था। उस सुनार की बीवी बड़ी खूबसूरत थी। और जिस क़द्र खूबसूरत थी उसी क़द्र नेक और पारसा भी थी।

एक रोज़ वो बहिश्ती पानी भरने को आया। तो उसने सुनार की बीवी का हाथ पकड़ लिया। और उसे अपनी तरफ़ खींचा। इस औरत ने बमुश्किल हाथ छुड़ाया। और अन्दर जाकर दरवाज़ा बन्द कर लिया। थोड़ी देर के बाद सुनार घर आया। तो उसकी बीवी ने उससे पूछा, के आज दुकान पर कौन सा काम आपने खुदा की रज़ा के खिलाफ किया है? सुनार बोला, के आज एक औरत के हाथ में कंगन पहनाते हुए मुझे उसका बाज़ू बड़ा खूबसूरत नज़र आया। तो मैंने उसका हाथ पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचा था बस यही लग़ज़िश मुझ से वाक़े हुई है। बीवी बोली! तो अब मालूम हुआ के तुम्हारे बहिश्ती ने आज मेरा हाथ क्यों पकड़ कर खींचा था। सुनार ने सारा वाक़ेया सुना तो कहने लगा मैं अपनी ग़लती से तौबा करता हूँ। खुदा मुझे माफ करे। दूसरे रोज़ वो बहिश्ती आया। और कहने लगा, कल वाली ग़लती से मैं तौबा करता हूँ। खुदा मुझे माफ करे। सुनार की बीवी ने कहा। मियाँ बहिश्ती जाओ! इसमें तुम्हारा कोई क़सूर ना था। ये तो मेरे मियाँ ही का क़सूर था। (रूह-उल-बयान, सफ़ा 99, जिल्द 2)

सबक़:- हमारे बाज़ गुनाहों का कुछ बदला यहाँ भी मिल जाता है। और गुनाह की नहूसत अपना रंग लाए बग़ैर नहीं रहती और जो कोई किसी

का बुरा चाहता है वो दरअसल अपना ही बुरा चाहता है। पस अपनी इज़्ज़त को बचाना है तो दूसरों की इज़्ज़त का भी लिहाज़ रखो।

हिकायत नम्बर (581) नहूसते ज़ुल्म

एक बादशाह सैर के लिए निकला, उसने एक गाँव में एक ऐसी गाँय देखी जिसने बादशाह के सामने मन भर के क़रीब दूध दिया। ऐसी उम्दा गाँय देख कर बादशाह की नीयत बदली और इरादा कर लिया के उस गाँय पर मैं अपना क़ब्ज़ा कर लूंगा, चुनाँचे इसी इरादे से बादशाह दूसरे दिन फिर इस गाँव में पहुँचा और देखा गाँय का मालिक दूध दोह रहा है। मगर आ इस गाए ने पहले दिन से निस्फ़ दूध दिया। बादशाह ने मालिक से पूछा। के आज क्या बात हुई? जो उसने पूरा दूध नहीं दिया। मालिक ने जवाब में कहा। शायद हमारे बादशाह ने किसी ज़ुल्म का इरादा कर लिया है। ये सुनकर बादशाह बड़ा नादिम हुआ और उसी वक़्त उस गाँय पर क़ब्ज़ा करने का खयाल दिल से निकाल दिया। गाँय ने भी और दूध देना शुरू कर दिया। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 5, जिल्द 1 व हयात-उल-हैवान, सफ़ा 135, जिल्द 1)

सबक़:- इरादा-ए-बद और ज़ुल्म की नहूसत सारे मुल्क को बर्बाद कर देती है। पस हम सबको बुरी नीयतों और ज़ुल्म करने के इरादों से बाज़ रहना चाहिए।

हिकायत नम्बर (582) नीयत का फल

नोशेरवाँ एक बार शिकार के लिए निकला .से प्यास ने सताया तो एक बाग़ में दाख़िल हुआ। बाग़ में एक लड़का बैठा था। उससे उसने कहा। मुझे पानी पिलाओ, लड़के ने जवाब दिया। पानी नहीं है। बादशाह ने कहा। अच्छा एक अनार खिलाओ। वो लड़का एक अनार तोड़ कर ले आया। अनार बड़ा मीठा था। नोशेरवाँ ने खाते हुए ये नीयत कर ली के ये बाग़ अपने क़ब्ज़े में कर लूंगा। इतने में अनार ख़त्म हुआ तो दूसरा लाने को कहा। लड़का एक और अनार ले आया। बादशाह ने वो खाया तो तुर्श पाया। लड़के से कहा। क्या ये अनार किसी दूसरे दरख़्त से लाए हो? लड़के ने जवाब दिया। नहीं बल्के इसी पहले दरख़्त से लाया हूँ। बादशाह ने कहा तो फिर इसका मज़ा कब से बदल गया? लड़के ने जवाब दिया जब से बादशाह की नीयत बदल गई। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 5, जिल्द 1)

सबक़:- जैसी नीयत। वैसा फल!

हिकायत नम्बर(583) सदके़ की बर्कत

हज़रत दाऊद अलेहिस्सलाम के ज़माने में एक बुढ़िया थी। उसने एक मर्तबा तीन रोटियाँ राहे खुदा में दीं। और फिर आटा गूधने बैठी। अचानक हवा आई और उसका सारा आटा उड़ा कर ले गई। बुढ़िया हज़रत दाऊद के पास फ़रयाद लेकर पहुँची और हवा की शिकायत। दाऊद अलेहिस्सलाम ने हवा को बुलाया। और पूछा। तुम ने उसका आटा क्यों उड़ाया। हवा ने अर्ज़ की। हवा के फरिश्ते से पूछिये। दाऊद अलेहिस्सलाम ने उसे बुलाया। और उससे पूछा। तो उसने अर्ज़ किया। खुदा से पूछिये। खुदा से पूछा। तो खुदा ने फ़रमाया। ऐ दाऊद हमारा कोई काम अबस नहीं होता। समुंद्र में एक कश्ती पर बड़े बड़े ताजिर जा रहे थे के उनकी कश्ती में एक चूहे न सूराख कर दिया और कश्ती को डूबने का ख़तरा पैदा हो गया। मैंने हवा को हुक्म दिया के वो ये आटा उड़ा कर उस कश्ती में डाल दे ताके वो लोग इस आटे से सूराख़ बन्द कर लें। चुनाँचे उन्होंने उसी आटे से सूराख़ बन्द किया। और बसलामती किनारे पर पहुँच गए। ऐ दाऊद! इन कश्ती के ताजिरों से उनके सारे माल का तीसरा हिस्सा इस बुढ़िया को दिलाओ। चुनाँचे दाऊद अलेहिस्सलाम ने ऐसा ही किया। और तीन सौ हज़ार दीनार का माल बुढ़िया को मिला। दाऊद अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। ये उसकी तीन रोटियों के सदके़ की बर्कत है। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 192, जिल्द 1)

सबक़:- खुदा की राह में कुछ खर्च करने से बड़ी बर्कतें हासिल होती हैं। और कई बलायें दफा हो जाती हैं।

हिकायत नम्बर(584) संगदिल हाकिम

हज़रत फारूके़ आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह ने एक शख़्स को एक इलाके़ का हाकिम मुक़र्रर फ़रमाते वक़्त उससे अहदनामा लिखवाना चाहा। जब वो अहद नामा लिख रहा था तो उसका छोटा बच्चा आ गया। और हज़रत फारूक़ की गोद में आ बैठा। फारूके़ आज़म उस बच्चे से प्यार करने लगे। बच्चे के बाप ने कहा, हुज़ूर! मेरे दस बच्चे हैं मगर मैंने आज तक किसी बच्चे से भी इस तरह प्यार नहीं किया। फारूके़ आज़म ने ये सुनकर फ़रमाया के अहदनामे को फाड़ दो और घर की राह लो। जिस शख़्स के दिल में अपने बच्चों के लिए प्यार नहीं। वो रिआया से कब प्यार व मोहब्बत से पेश आएगा। मैं ऐसे संगदिल शख़्स को हाकिम

नहीं बना सकता। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 58, जिल्द)

सबक़:- हाकिम के दिल में रिआया के लिए शफ़्क़त और प्यार का होना ज़रूरी है।

हिकायत नम्बर(585) जज़े व फज़े

हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम के ज़माने में एक शख़्स ने एक खूबसूरत और खुशनवा परिंदा खरीदा। और उसे जब पिंजरे में डाला तो एक दूसरा परिंदा उड़ता हुआ पिंजरे के ऊपर आया। और अपनी ज़बान में कुछ बोल कर चल दिया। उसके बाद इस क़ैदी परिंदे ने पिंजरे में बोलना बन्द कर दिया। और बिलकुल चुप साध ली। मालिक ने ये देखा तो सुलामन अलेहिस्सलाम के पास फ़रयाद लेकर पहुँचा। हज़रत सुलेमान ने वो पिंजरा मंगवाया। और परिंदे से फ़रमाया। परिंदे! तुम्हारे मालिक ने तुम्हें क़ीमत से खरीदा है। उसका तुम पर हक़ है। तुम ने बोला क्यों बन्द किया। परिंदे ने जवाब दिया। हुज़ूर! उससे कह दीजिए के वो मेरा खयाल छोड़ दे। मैं जब तक पिंजरे में हूँ। कभी ना बोलूंगा। फ़रमाया क्यों, उसने कहा, हुज़ूर! मैं वतन और औलाद की मोहब्बत में रोता था। के एक मेरे भाई परिंदे ने मुझ से आकर कहा। नादान जज़े व फज़े छोड़। वरना उम्र भर पिंजरे ही में क़ैद रहेगा। सब्र व सकूत इख़्तियार कर तो फिर देखो तुम आज़ाद होते हो या नहीं? सुलेमान अलेहिस्सलाम ने इस शख़्स से इसका जवाब बयान किया तो उसने कहा। हुज़ूर ! तो फिर उसे आज़ाद कर दीजिए। मैंने तो उसे खुशनवाई के लिए खरीदा था। चुनाँचे सुलेमान अलेहिस्सलाम ने अपनी गिरह से क़ीमत इसे देकर परिंदा को आज़ाद कर दिया। (रूह-उल-बयान, सफ़ा 77, जिल्द अव्वल)

सबक़:- जज़े और फज़े और रोना धोना मौजिब रंज व मलाल और सब्रो शुक्र मौजिब निजात है। पस मुश्किल और मुसीबत के वक़्त कभी गरया वावेला और ना शुक्री का इज़हार ना करना चाहिए। बल्के खुदा की रज़ा पर राज़ी रह कर सब्रो शुक्र से काम लेना चाहिए।

हिकायत नम्बर(586) तोती का पैग़ाम

एक सौदागर के पास एक तोती थी। एक मर्तबा वो सौदागर मुल्क हिन्द में सौदागरी के लिए चला। तो तोती से पूछा, तुम्हारे लिए क्या लाऊँ, तोती ने कहा। मेरा एक पैग़ाम है ले जाईये और उसका जवाब लेते आईये। और वो ये है के आप हिन्द के किसी बाग़ में अगर बहुत से तोते देखें, तो उनसे मेरी

तरफ़ से ये कह दें के ऐ खुली फिज़ा में उड़ने वालो, और आज़ादी के मज़े लूटने वालो! मैं भी एक तुम्हारा भाई हूँ, जो पिंजरे में असीर हूँ। कुछ मेरी भी ख़बर है? मेरे इस पैग़ाम का जो कुछ वो जवाब दें वो मुझे आकर सुना दीजिएगा। सौदागर ने कहा। बहुत अच्छा। चुनाँचे सौदागर मुल्क हिन्द में गया तो इत्तिफाक़न एक बाग़ में बहुत से तोते देखे। सौदागर ने उनको अपनी तोती का पैग़ाम दिया। इतने में क्या देखा के एक तोती ये पैग़ाम सुनकर दरख़्त से गिरा। सौदागर ने बग़ौर से देखा। तो वो मर चुका था। सौदागर बड़ा हैरारन हुआ। के ये क्या बात है। शायद ये मेरे तोती का अज़ीज़ था। सौदागर जब घर वापस आया तो अपने तोती को ये सारा क़िस्सा सुनाया। ये क़िस्सा जब सौदागर ने तोती को सुनाया तो वो भी पिंजरे में तड़पने लगा। और तड़प तड़प कर मर गया। सौदागर बड़ा हैरान हुआ के ये क़िस्सा क्या है मगर कुछ समझ में ना आया। अख़िर पिंजरा का दरवाज़ा खोल कर मुर्दा तोती को निकाल कर बाहर फैंक दिया। सौदागर ने तोती को बाहर फैंका ही था के वो एक दम जी उठा। और उड़कर दरख़्त पर जा बैठा। सौदागर ये तमाशा देखकर हैरान रह गया और तोती से कहने लगा के ये अजीब बात है जो मैंने देखी है। अब तुम आज़ाद तो हो ही गए हो। ज़रा इस सारे क़िस्से की हक़ीक़त तो बयान करते जाओ। वो तोती बोला। ऐ सौदागर! असल में ना मैं मरा था और ना ही वो तोती मरा था। जिसे आपने हिन्द के बाग़ में दरख़्त से गिरते और मरते देखा था। वो तो उसने मुझे पिंजरे से रिहा होने की तरकीब बताई थी के अगर पिंजरे से रिहाई हासिल करना है तो इस तरह मरने से पहले मर जाओ। चुनाँचे मैंने उसकी हिदायत पर अमल किया। और इस पिंजरे से रिहाई हासिल कर ली। (दर मंज़ूम तर्जुमा मसनवी मौलाना रोम, सफ़ा 13)

सबक़:- तफक्कुरात दुनिया के आहिनी पिंजरे से रिहाई पाने के लिए *मोतो क़बाला अन तमूतो* पर अमल करके अपने नफ़्स को मार डालना चाहिए जिन पाक लोगों ने नफ़्सानी ख़्वाहिशात को मार डाला है वो वाक़ई आज़ाद और खुशहाल हैं और जिनका नफ़्स ज़िन्दा है। वो हज़ारहा परेशानियों के पिंजरे में बुरी तरह असीर हैं

हिकायत नम्बर(587) दाना की ख़ामोशी

हज़रत शअबी की मजलिस में एक शख़्स बैठा करता था जो हमेशा ख़ामोश रह कर गुफ़्तगू सुना करता था। और खुद कभी ना बोलता था। एक बार हज़रत शअबी ने उससे फ़रमाया के मियाँ तुम हमेशा चुप ही रहते हो।

कभी तुम भी बोला करो। तो उसने कहा मैं चुप रहता हूँ। सलामत रहता हूँ। और सुनता हूँ और जान लेता हूँ। कान में तो अपना हिस्सा है। और ज़ुबान में दूसरे का हिस्सा। (हयात-उल-हैवान, सफ़ा 119, जिल्द अव्वल)

सबक़:- फिज़ूल बातें और यावह गोई अमन व सलामती के लिए ख़तरा बन जाती हैं। इसलिए फिज़ूल बातों और यावह गोई से बचना चाहिए। शायर ने क्या खूब लिखा है के

बे बस्र हैं वो जो बहसों में यहाँ ख़ूर संद हैं
जिनकी आखें खुल गईं उनकी ज़बानें बन्द हैं

हिकायत नम्बर (588) नादान की ख़ामोशी

इमाम अबु यूसुफ़ रहमत-उल्लाह अलेह की मजलिस में एक शख़्स बैठा करता था, जो हमेशा ख़ामोश रहकर गुफ़्तगू सुना करता था। और खुद कभी ना बोलता था। एक बार हज़रत इमाम अबु यूसुफ़ ने उसे फ़रमाया। के मियाँ तुम हमेशा चुप ही रहते हो। कभी तुम भी बोला करो। तो उसने कहा। अच्छा हुज़ूर! एक मसला बताईये के रोज़ेदार इफ़्तार किस वक़्त करे? इमाम अबु यूसुफ़ ने फ़रमाया? जब सूरज डूब जाए। तो वो बोला, के अगर सूरज आधी रात तक भी ना डूबे तो फिर क्या करे। हज़रत इमाम हंस पड़े और फ़रमाया के तुम्हारा चुप रहना ही बेहतर है। (हयात-उल-हैवान, सफ़ा 19, जिल्द अव्वल)

सबक़:- नादान की चुप ही भली होती है और नादान जब बोलता है तो तूफ़ान ही तोलता है।

हिकायत नम्बर (589) दुश्मन की नेकी

एक शख़्स बोसी दीवार के नीचे सो रहा था के दीवार गिरने लगी। फौरन एक शख़्स आया और उसने सोने वाले शख़्स को जगा कर एक तरफ़ खींच लिया। दीवार गिर गई। और सोने वाला बच गया। उसने अपने मोहसिन का शुक्रिया अदा किया। और पूछा, आप कौन हैं? उसने बताया, के इबलीस हूँ, ये हैरान रह गया और पूछने लगा के शैतान होकर ये नेकी का काम तुम ने क्यों किया? तो इबलीस बोला के चूंके मसला ये है के जो शख़्स दीवार के नीचे दबकर मर जाए वो शहीद मरता है। तो मैंने तुम्हें दीवार के नीचे दब कर मरने से इसलिए बचाया है ताके तुम शहीद ना मरो। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 163, जिल्द अव्वल)

सबक़:- बदमज़हब का हुस्ने ख़ल्क़ और उसकी बज़ाहिर नेकी व मुरव्वत भी ख़तरनाक होती है। पस बदमज़हबों के मुंह से क़ुरआन का सुनना भी ख़तरे से खाली नहीं

ऐ बसा इबलीस आदम रूऐ हस्त

हिकायत नम्बर(590) दुश्मन का वअज़

हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो अन्ह आराम फ़रमा थे के फज्र की नमाज़ के वक़्त किसी ने आवाज़ दी, के मुआविया, उठ फज्र का टाईम हो गया है। और जमात के साथ नमाज़ अदा कर। वरना जमात रह जाएगी। हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो अन्ह उठे। और आपने चारों तरफ़ देखा। मगर जगाने वाला और वअज़ सुनाने वाला नज़र ना आया। आपने फ़रमाया, मियाँ तुम कौन हो, जिसने मुझे आवाज़ देकर जगाया है? फिर आवाज़ आई के हज़रत! मै। शैतान हूँ। आप हैरान होकर बोले, के शैतान का जमात के साथ नमाज़ पढ़ने के लिए जगाना बड़े ताज्जुब की बात है। पहले तुम ये बताओ के तुम इस अम्र नेक की तरग़ीब क्यों दे रहे हो? और तुम्हारा इसमें मक़सद क्या है? आवाज़ आई के हज़रत! पिछले हफ़्ते भी आप जमात फज्र से रह गए थे। और आप इस ग़म में इतना रोये थे के मैंने रहमत के फरिश्तों की आपस में ये गुफ़्तगू सुनी के खुदा तआला ने हज़रत मुआविया के इस रोने को क़बूल फ़रमा कर उनको सत्तर जमातों का सवाब अता फ़रमा दिया है। तो ऐ मुआविया! आज तुम सो रहे थे तो मुझे डर पैदा हुआ के अगर आज भी तुम्हारी जमात रह गई। और तुम ने फिर रोना शुरू कर दिया तो ऐसा ना हो के खुदा आज फिर तुम्हें सत्तर जमातों का सवाब दे दे। इसलिए उठो और जमात के साथ नमाज़ पढ़ो ताके तुम्हें एक ही जमात का सवाब मिले। (मसनवी शरीफ)

सबक़:- बदमज़हब का वअज़ क़ुरआन व हदीस पर भी मुशतमिल हो तो ख़तरनाक ही होता है। और मुसलमान को कभी किसी बदमज़हब का वअज़ नहीं सुनना चाहिए। वरना वो हलवे में ज़हर मिलाकर ईमान को ज़रूर तबाह कर देगा।

हिकायत नम्बर(591) सलतनत व ग़ुर्बत

एक बहुत बड़ा बादशाह एक गाँव से गुज़रा। तो एक ग़रीब आदमी ने बढ़कर बादशाह से कहा। जनाब आप गुज़री हुई लज़्ज़तों को और मैं गुज़री

हुई मुसीबतों को इस वक़्त वापस नहीं दिया सकता। इसलिए मैं और आप दोनों बराबर हैं। आप भी दुनिया से इन्तिक़ाल फ़रमा जायेंगे। और मैं भी एक दिन मर जाऊँगा। पस इस बात में भी हम दोनों बराबर हैं। आपसें सलतनत का हिसाब लिया जाएगा और मुझ से मेरी मेहनत व मुशक़्क़त का। और ज़ाहिर है के आपके लिए हिसाब देने में बड़ी मश्किल होगी। बादशाह ये सुनकर बड़ा रोया। और कहा। अगर खुदा करीम ना होता। और अपनी दी हुई चीज़ वापस ले लिया करता। तो मैं उससे दुआ करता। के वो मुझ से सलतनत वापस ले ले। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 431, जिल्द अव्वल)

सबक़:- ग़रीब की निसबत अमीर को हिसाब ज़्यादा देना पड़ेगा। और अमीर व ग़रीब सबको एक दिन मरना है, मौत आ जाने के बाद सब बराबर हो जाते हैं। बक़ौल शायर।

कितने मुफलिस हो गए कितने तवंगर हो गए
खाक में जब मिल गए दोनों बराबर हो गए

हिकायत नम्बर (592) ईसार का बदला

हज़रत वाक़दी को कुछ रुपों की ज़रूरत पड़ी तो वो क़र्ज़ तलब करने के लिए एक नेक दिल ताजिर के पास गए। ताजिर ने 12सौ की थेली हज़रत वाक़दी के सामने रख दी और कहा। बखुदा इसके सिवा मेरे पास और कुछ भी नहीं। हज़रत वाक़दी वो थेली लेकर चले आए। अभी घर पहुँचे ही थे के एक हाशमी उनके पास क़र्ज़ माँगने आ गए। और अपनी ज़रूरत बयान की। हज़रत वाक़दी ने चाहा के उस थेली में से कुछ उसे दे दें। और कुछ अपने लिए रख लें। हज़रत वाक़दी की बीवी ने कहा। आप एक बाज़ारी ताजिर के पास गए तो उसने अपनी सारी पूंजी आपके हवाले कर दी। और ये आँहज़रत सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के चचा की औलाद है। आप उसे थोड़ा बहुत देते हैं। ये तो बड़ी शर्म की बात है। हज़ा वाक़दी ने ये सुनकर सारी थेली उसके हवाले कर दी। खुदा की कुद्रत के वो हाशमी लेकर घर चले। तो वही ताजिर जिसने हज़रत वाक़दी को थेली दी थी। उनके पास आए। और उनसे क़र्ज़ तलब किया। हाश्मी ने वही थेली उस ताजिर को दे दी। ताजिर ने अपनी थेली को देखा। तो पहचान गया उसके बाद हज़रत वाक़दी हज़रत याहिया बरमुकी के पास गए। तो इस थेली का ये सारा क़िस्सा बयान किया। तो याहिया बरमुकी ने दस हज़ार की एक थेली निकाली। और कहा। इसमें से दो हज़ार तुम्हारे दो हज़ार हाश्मी के, दो हज़ार ताजिर के और चार

हज़ार तुम्हारी बीवी के। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 390, जिल्द अव्वल)

सबक़:- पहले मुसलमान एक दूसरे की मदद करने वाले थे। और अपने भाई की ज़रूरत व मुश्किल के वक़्त अपनी ज़रूरत व मुश्किल को भूल जाया करते थे। और ज़रूरतमंद की मदद करने में ज़रा भी पसो पेश नहीं करते थे। और उनके ईसार व एहसान का कुछ बदला उन्हें इस दुनिया में भी मिल जाया करता था। मगर आज...

आह इस्लाम तिरे चाहने वाले ना रहे
जिनका तू चाँद था अफसोस वो हाले ना रहे

हिकायत नम्बर(593) अता बुज़ुर्गान

हज़रत इमाम इब्ने हज्र असक़लानी रहमत-उल्लाह अलेह जो बहुत बड़े पाया के इमाम हदीस गुज़रे हैं। उनके वालिद के हाँ जो बच्चा पैदा होता था। मर जाता था। आख़िर वो एक रोज़ साहबे करामत बुज़ुर्ग हज़रत शेख सना क़िब्री अलेह अर्रहमा की ख़िदमत में हाज़िर हुए। और अर्ज़ की, के मेरे हाँ जो बच्चा पैदा होता है, मर जाता है। और मैं कबीदा ख़ातिर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ हूँ। हज़रत शेख़ ने फ़रमाया। जाओ तुम्हारी पुश्त से एक ऐसा बच्चा पैदा होगा जो अपने इल्म से दुनिया भर को भर देगा, चुनाँचे आपके कहने के मुताबिक़ हज़रत इमाम इब्ने हज्र असक़लानी अलेह अर्रहमा पैदा हुए। (बस्तान-उल-मोहद्दिसीन तालीफ हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मोहद्दिस देहलवी अलेह अर्रहमा, सफ़ा 114)

सबक़:- मालूम हुआ के उन अल्लाह के मक़्बूलों की ज़बाने पाक से जो बात निकल जाए वो हो के रहती है। और उन पाक लोगों की नज़र अता से खाली झोलियाँ भर जाती हैं। और नामुराद बामुराद होकर लौटते हैं। फिर जो शख़्स उन पाक लोगों के पास जाने और उनके सामने अपने दर्दे दिल के इज़्हार करने और अपनी मुराद पानी के इज़्हार को शिर्क बताए, तो उसने गौया हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मोहद्दिस अलेह अर्रहमा जैसी मुस्लिम बुज़ुर्ग हस्ती की भी तकज़ीब कर दी। पस हक़ीक़त ये है। के

दर फेज़ हक़ बंद जब था ना अब कुछ
बुज़ुर्गों की झोली में अब भी सब कुछ

हिकायत नम्बर(594) इमाम बुखारी अलेह अर्रहमा की आँखें

हज़रत इमाम बुखारी रहमत-उल्लाह अलेह की आँखें बचपन में

जाती रहीं। आपकी वालिदा को इसका बड़ा सदमा हुआ। एक रोज़ इमाम बुखारी अलेह अर्रहमा की वालिदा ने रात को ख़्वाब में हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम को देखा। आपने फ़रमाया। जाओ तुम्हारी दुआएँ सुनी गईं। और अल्लाह ने तुम्हारे बेटे को आँखें अता फ़रमा दी हैं। चुनाँचे सुबह हुई तो हज़रत इमाम बुखारी अलेह अर्रहमत की आँखें बिलकुल ठीक थीं। (मुक़दमा फतह अलबारी, सफ़ा 563)

सबक़:- अंबिया इक्राम अलेहिम अस्सलाम का बाद अज़ विसाल भी फ़ैज़ जारी रहता है। और ये नफ़ूस क़ुद्सिया मुसीबत ज़दा अफ़राद को ख़्वाब में भी मिलकर उनकी मुश्किलात को दूर फ़रमा जाते हैं।

हिकायत नम्बर(595) वली की क़ब्र पर

हज़रत अबु अली रहमत-उल्लाह अलेह पर कोई बहुत बड़ी मुश्किल आ पड़ी। और वो इसी फ़िक्रो ग़म में परेशान रहने लगे। एक रोज़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को उन्होंने ख़्वाब में देखा, हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। ऐ अबु अली! याहिया बिन याहिया की क़ब्र पर जाओ और वहाँ जाकर असतग़फ़ार करो। और अपनी हाजत पेश करो। तुम्हारी हाजत पूरी हो जाएगी। चुनाँचे जब सुबह हुई तो अबु अली रहमत-उल्लाह अलेह हुज़ूर सल-लल्लाहाहे तआला अलेह व सल्लम के इर्शाद के मुताबिक़ हज़रत याहिया बिन याहिया रहमत-उल्लाह अलेह की क़ब्र पर गए और वहाँ जाकर असतग़फ़ार करके अपनी हाजत पेश की। तो उनकी हाजत पूरी हो गई। और सारे फ़िक्रो ग़म दूर हो गए। (तहज़ीब-उल-तहज़ीब, सफ़ा 299, जिल्द11)

सबक़:- इस रिवायत से मालूम हुआ के खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने एक मुसीबतज़दा को एक वली की क़ब्र पर जाकर वही अपनी हाजत पेश करने की हिदायत फ़रमाई। पस साबित हुआ के अल्लाह वालों की क़ब्र पर हाज़िर होना और वहाँ अपनी हाजतें पेश करना मना नहीं हैं। बल्के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने इस बात की हिदायत फ़रमाई हैं फिर अगर कोई शख़्स किसी वली की क़ब्र पर जाने से रोके तो उसने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मुख़ालफत की या नहीं?

हिकायत नम्बर(596) बरसाती नाला

ओहद के पहाड़ के नीचे जो बरसाती नाला बहता है। बनू उमय्या के

ज़माने में एक मर्तबा उसमें तुग़यानी आ गई। और पानी इस ज़ोर से बहने लगा के जंगे ओहद के शोहदा में से एक शहीद (रज़ी अल्लाहो अन्ह) की लाश मुबारक निकल आई। जिस वक़्त लाश मुबारक बाहर निकली तो उससे बदस्तूर खून जारी था। (तफ़्सीर हक़्क़ानी, सफ़ा 151, जिल्द 3)

सबक़:- कई सौ साल गुज़र जाने पर एक सहाबी रज़ी अल्लाहो अन्ह की लाश मुबारक बदस्तूर वैसी की वैसी जिससे खून भी जारी था, निकली। तो जिनकी बदौलत शहीदों को ये रूत्बा मिला, उस ज़ातेग्रामी के मुतअल्लिक़ अगर कोई ये कहे के ा मर कर मिट्टी में मिल गए हैं तो वो किस क़द्र जाहिल और गुमराह है।

हिकायत नम्बर (597) कफनी लिखने का फायदा

एक बुज़ुर्ग ने बसरा के बाज़ार में एक मईयत को देखा जिसे उठाने वाले चार आदमियों के सिवा और कोई उसके साथ ना था। ये बुज़ुर्ग हैरान रह गए के इतने बड़े शहर में इस ग़रीब के जनाज़े के साथ कोई भी नहीं। चुनाँचे वो बुज़ुर्ग भी साथ चल दिए। क़ब्रिस्तान पहुँचे तो उसका जनाज़ा पढ़ा गया। और फिर उसे दफनाया गया। इस बुज़ुर्ग ने लोगों से पूछा के ये क्या बात है के इसके जनाज़े के साथ कोई नहीं आया। तो उन्होंने एक औरत की तरफ़ इशारा किया। जो क़रीब ही खड़ी थी। और कहा। के इससे पूछिये हमें कुछ पता नहीं। चुनाँचे वो इस औरत के पास पहुँचे औरत ने दुआ के लिए हाथ उठा के दुआ की और फिर हंसने लगी। उन्होंने उससे क़िस्सा पूछा। तो वो कहने लगी के ये मरने वाला मेरा बेटा था। और बड़ी ही बदकार था। कोई ऐसा बुरा काम नहीं जो इसने ना किया हो। तीन दिन से ये बीमार था। रात उसने मुझ से कहा। के माँ! जब मैं मर जाऊँ तो किसी को इत्तिला ना करना। इसलिए के लोग मेरे मरने पर खुश होंगे और जनाज़े के लिए कोई ना आएगा। हाँ मेरी अंगूठी पर कलमा शरीफ लिखवा कर मेरी उंगली में पहना देना और फिर अपना पैर मेरे रूख़्सार पर रखकर कहना। ये अल्लाह के मुज्रिम की सज़ा है। और मेरे दफनाने के बाद मेरे लिए दुआ करना। और ये कहना के ऐ अल्लाह! मैं इससे राज़ी हूँ। तू भी इससे राज़ी हो जा। चुनाँचे मैंने हस्ब वसीयत सब कुछ किया है। और अब जबके मैंने दुआ की तो मुझे अपने बेटे की आवाज़ सुनाई दी के माँ! मैं अपने रहीम व करीम रब के पास पहुँच गया हूँ। और वो मुझ से राज़ी हो गया है ये सुनकर मैं हंस पड़ी। (रूह-उल-बयान, सफ़ा 600, जिल्द 1)

सबक़:- मईयत के कफ़न पर कलमा शरीफ लिखना और मईयत के लिए दुआ करना बड़ा मुफीद है। फिर जो लोग कफ़न पे कलमा शरीफ लिखने को जायज़ नहीं समझते गोया वो नहीं चाहते के मईयत की बख़्शिश हो।

हिकायत नम्बर(598) ताज़ीम व तकरीम

क़ाज़ी इसमाईल बिन इसहाक़ रहमत-उल्लाह अलेह के दिल में हज़रत इमाम इब्राहीम खरली रहमत-उल्लाह अलेह से मिलने की बड़ी तमन्ना थी। लेकिन हज़रत इमाम इब्राहीम हमेशा ये कह कर टाल देते थे के वो ममलिकत के क़ाज़ी हैं। और वहाँ दरबान और हाजिब हैं। वहाँ मेरा गुज़र क्यों कर होगा? क़ाज़ी साहब को इस उज़्र का पता चला तो उन्होंने सारे दरबान हटा दिए और बड़े इश्तियाक़ से हज़रत इमाम इब्राहीम को बुलाया। चुनाँचे हज़रत इमाम इब्राहीम तशरीफ़ ले आए। और जब आप पहुँचे और जूता उतार कर फर्श पर चलने लगे तो क़ाज़ी साहब ने हुस्ने अक़ीदत से उनके जूतों को उठा कर एक रेशमी कपड़े में रख दिया। थोड़ी देर के बाद जब इमाम साहब वापस होने लगे तो क़ाज़ी साहब ने रेशमी कपड़े से उनका जूता निकाल कर पेश किया। इमाम साहब ने क़ाज़ी साहब की अक़ीदत का ये हाल देखा तो फ़रमाया *ग़फ़रल्लाहू लका कमा अकरम्तल इल्मा।* "खुदा इल्म की तकरीम के सबब आपकी बख़्शिश फ़रमाए" जब क़ाज़ी इसमाईल साहब का इन्तिक़ाल हुआ तो किसी ने उनको ख़्वाब में देखा और हाल पूछा तो जवाब दिया। इमाम इब्राहीम की ताज़ीम व दुआ की बदौलत खुदा ने मेरी बख़्शिश फ़रमा दी है। (बहवाला मौज्जिम-उल-अदबा हज़रात अहले हदीस का मुफ़्त रोज़ा अख़बार "अलतसाम" 15 जनवरी 1960ई॰ सफ़ा 6)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों की ताज़ीम और उनके तबर्रूकात की तकरीम व इज़्ज़त से खुदा की बख़्शिश व मग़फिरत हासिल होती है। और ये भी मालूम हुआ के पहले मुसलमान अल्लाह के मक़्बूल बन्दों से बड़ी हुस्न अक़ीदत रखते थे। और उनके जूतों को भी रेशमी ग़िलाफों में रख लेते थे। हालाँके ये काम ना क़ुरआन से साबित है और ना हदीस से। और ना ये साबित है के कभी किसी सहाबी ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नअलैन शरीफ के साथ ऐसा किया था। मगर फिर भी अहले हदीस अख़बार लिखता है के क़ाज़ी साहब ने हुस्ने अक़ीदत से ऐसा किया। और यही हुस्ने अक़ीदत उसके लिए मौजिबे निजात हो गया। फिर अगर कोई

मुसलमान खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से मनसूब किसी चीज़ की तअज़ीम व तकरीम करे। आपकी मेहफिल मीलाद को रेशमी कपड़ों की झांडियों से आरास्ता करके अपने हुस्ने अकीदत का मुज़ाहेरा करे, या हुज़ूर के यौम मीलाद को जलसा व जलूस के साथ मनाकर अपनी अकीदत का एलान करे या हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के नाम नामी इस्मे ग्रामी को सुनकर चूम ले। और आँखों से लगा ले। तो इससे ये पूछना के ये कहाँ लिखा है। बेइंसाफी है या नहीं? पस हुज़ूर अलेहिस्सलाम से मनसूब बातों की तअज़ीम करने वाले पर हुज़ूर अलेहिस्सलाम भी क्यों खुश होंगे। और ये बातें क्यों कर बिदअत हो सकती हैं?

"अहले हदीस" अखबार की ये तहरीर शाहिद है के हुज़ूर(स०अ०स०) के गुलामों की जूतियों की तअज़ीम भी हुस्ने अकीदत से की जाए। तो ये हुस्ने अकीदत मौजिब निजात बन जाती है। फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की तअज़ीम व तकरीम भी हुस्ने अकीदत के साथ करने वाला क्यों निजात पाने वाला ना होगा।

हिकायत नम्बर(599) अंगूर का हदया

हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जान जानाँ रहमत-उल्लाह अलेह की ख़िदमत में एक शख़्स ने हदया अंगूर भेजे। हज़रत ने एक दाना चख कर छोड़ दिया। एक रोज़ वही अंगूर भेजने वाला शख़्स आया। और अर्ज़ किया के हज़रत मैंने अंगूर भेजे थे पहुँचे थे? हज़रत ने फ़रमाया पहुँच गए थे। उसने कहा। आपने खाए थे? फ़रमाया मियाँ क्या बताऊँ उनमें मुर्दों की बू आती थी। वो शख़्स हैरान हुआ के अंगूरों को मुर्दों से क्या ताल्लुक? कुछ समझ में ना आया, और फिर तहकीक जो की मालूम हुआ के उन अंगूरों के दरख़्त मुद्दत हुई के मरघट में लगाए गए थे। (देवबंदी हज़रात के हकीम-उल-उम्मत मौलाना अशरफ़ अली थानवी, अशरफ़-उल-मवाइज़, सफ़ा 103, हिस्सा दोम)

सबक़:- ये अल्लाह वालों का इल्म व इर्फान है। फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जिनके सदके में उन्हें ये इल्मो इर्फान हासिल हुआ। उनका अपना इल्मो इर्फान किस क़द्र वसी होगा? और जो उनके इल्म में कलाम करे वो किस क़द्र वो किस क़द्र बे इल्म है।

हिकायत नम्बर(600) ख़िज़्र अलेहिस्सलाम

हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम एक ऐसे मजमअे में पहुँचे जहाँ हदीसों का

तज़करा हो रहा था। और वहाँ एक शख़्स अलेहदा नमाज़ पढ़ रहा था। ख़िज़्र अलेहिस्सलाम ने उससे कहा के तुम इस मजमअे में क्यों शरीक नहीं होते। वो शख़्स बोला के बताओ ये लोग किस से रिवायत हदीस बयान करते हैं? ख़िज़्र अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया मुफ़्तियान औज़ाई वग़ैरहुमा से। कहा के जो ख़ुद अल्लाह तआला से हदीस बयान करे उसको क्या ज़रूरत है के सफयान औज़ाई से बयान करे। ख़िज़्र अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया के इसकी दलील क्या है के तुम ऐसे हो। कहा, दलील इसकी ये है के मैं तुम को पहचानता हूँ। और तुम मुझ को नहीं। तुम ख़िज़्र हो। और तुम बताओ। मैं कौन हूँ। (मौलवी अशरफ़ अली साहब थानवी, अलतज़करह, सफ़ा 93, हिस्सा दोम)

सबक़:- खुदा के मुक़र्रिब बन्दों का इल्म बड़ा वसी होता है। फिर जो शख़्स हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्म को (मआज़ अल्लाह) जानवरों के इल्म से तश्बीह दे वो किस क़द्र गुसताख़ रसूल है।

हिकायत नम्बर(601) जिन्न का क़त्ल

हज़रत शाह वली-उल्लाह मोहद्दिस देहलवी रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा तिलावते क़ुरआन फ़रमा रहे थे के एक जिन्न साँप की शक्ल में नमूदार हुआ। और आपके पास से गुज़रा। आपने साँप समझ कर मार डाला। थोड़ी देर के बाद दो शख़्स मस्जिद में आए। और शाह साहब को अपने मुल्क के बादशाह के पास ले आए। मुद्दई ने बादशाह के रूबरू अर्ज़ किया। के शाह साहब ने मेरे बेटे को क़त्ल कर दिया है। लिहाज़ा शरीअत के मुताबिक़ क़सास मिलना चाहिए। उस पर बादशाह शाह साहब के क़त्ल किए जाने का हुक्म देने ही वाला था। के वहाँ एक बूढ़ा जिन्न मौजूद था। उसने कहा, शाह साहब ये क़सास वाजिब नहीं इसलिए के मैं ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से सुना है।

मन क़ुतिला फी ग़ैरी ज़िय्यीही फदामाहू हदरून "यानी जिस शख़्स का क़त्ल किया जाना जायज़ तो ना हो मगर वो ऐसी क़ौम के लिबास व वज़अ में हो जिसका क़त्ल किया जाना जायज़ है। तो उसे अगर कोई क़त्ल कर दे तो उसका खून माफ है"

तो चूंके ये जिन्न सांप की शक्ल में था। जिसका क़त्ल कर देना जायज़ है। इसलिए शाह साहब का उसे सांप समझ कर क़त्ल कर देना बमौजिब इस हदीस के क़सास का मौजिब नहीं। बादशाह ने ये हदीस सुनकर शाह साहब को रिहा कर दिया। और वो दो जिन आपको अपनी

जगह पर पहुँचा आए। (अलतहरीर-उल-अफ़्खम, सफ़ा 54)

हिकायत नम्बर(602) सलतनत की क़ीमत

हज़रत ख़लीफा हारून रशीद रहमत-उल्लाह अलेह उलमा दोस्त थे। दरबार में उलमा का मजमअ हर वक़्त रहता था। एक मर्तबा पानी पीने के वास्ते मंगवाया। मुंह तक ले गए थे। पीना चाहते थे। के एक आलिम साहब ने फ़रमाया। अमीर-उल-मोमिनीन! ज़रा ठहरिये, मैं एक बात पूछना चाहता हूँ। फौरन ख़लीफा ने हाथ रोक लिया उन्होंने फ़रमाया। अगर आप जंगल में हों, और पानी मयस्सर ना हो और प्यास की शिद्दत हो तो इतना पानी किस क़द्र क़ीमत देकर ख़रीदेंगे । फ़रमाया वल्लाह! आधी सलतनत देकर। फ़रमाया। बस पी लीजिए। जब ख़लीफा ने पानी पी लिया। उन्होंने फ़रमाया। अब अगर ये पानी निकलना चाहे और ना निकल सके तो किस क़द्र क़ीमत देकर उसका निकालना मोल लेंगे। कहा, वल्लाह! पूरी सलतनत देकर। इर्शाद फ़रमाया। पस आपकी सलतनत की हक़ीक़त ये है के एक मर्तबा एक चुल्लू पानी पर आधी बिक जाए। और दूसरी बार पूरी। इस पर जितना चाहे तकब्बुर कर लीजिए। (मलफूज़ात आला हज़रत, सफ़ा 36, जिल्द 3)

सबक़:- दुनिया और सारी दुनिया की सलतनत फानी है। इस पर कभी फख़्रो ग़ुरूर ना करना चाहिए।

हिकायत नम्बर(603) शराबी का अंजाम

एक ताबई एक क़बीला में से होकर गुज़रे। वहाँ एक क़ब्रिस्तान में देखा के अस्र के वक़्त एक क़ब्र शक़ हुई और उनमें से एक आदमी निकला। जिसका सर गधे के सर जैसा था। और बदन आदमी का सा। उसने क़ब्र से निकल कर तीन दफा गधे की मकरूह आवाज़ निकाली। और फिर क़ब्र में घुस गया। और क़ब्र बंद हो गई। उन्होंने इस शख़्स की औरत से सारा हाल दरयाफ़्त किया। तो उसने बताया के ये शख़्स शराब बहुत पीता था। और जब उसकी माँ उसे शराब पीने से रोकती। तो उससे कहता के क्यों गधे की तरह हीचूं हीचूं करती है। एक दिन अस्र के वक़्त उसका इन्तिक़ाल हो गया अब हर रोज़ अस्र के वक़्त उसकी क़ब्र शक़ होती है। और खुद गधे की तरह हीचूं हीचूं करता है। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 367, जिल्द अव्वल)

सबक़:- शराब पीना बहुत ही बुरा है। और उसका अंजाम बेहद होलनाक है। और ये भी मालूम हुआ के माँ की बे अदबी से आक़्बत खराब

हो जाती है।

हिकायत नम्बर (604) पत्थर और फूल

एक दिल हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम का गुज़र यहूद की तरफ़ हुआ। यहूद ने आपकी शान में ना मुलायम और गुसताखाना अलफाज़ कहे। आपने निहायत नर्मी से और ख़ैर भरे अलफाज़ में जवाब दिया। लोगों ने आपसे इसकी वजह दरयाफ़्त की, तो फ़रमायाः *कुल्लु अहादिन युनफिक़ू मिम्मा इनदाहू* "यानी जिस के पास जो कुछ होता है वही खर्च करता है" (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 383, जिल्द अव्वल)

सबक़:- जहाँ तक हो सके, सख़्ती का जवाब भी नर्मी से ही देना चाहिए। ना के नर्मी का जवाब भी सख़्ती से दिया जाए। जैसे के आज कल आम रोश है।

हिकायत नम्बर (605) मेहनत व मज़दूरी

एक शख़्स सात रोज़ तक बे खाये पिये किसी पहाड़ की खो में बैठा इबादत करता रहा। अल्लाह तआला ने उसके नबी पर वही भेजी के उससे कह दो। क्या तू अपने ज़ेहद से हमारी हिकमत के कारखाने को तबाह करना चाहता है। जा और कहीं चल फिर कर दो चार पैसे की मज़दूरी कर। हम बन्दों को बन्दों ही के हाथ से देना पसंद करते हैं। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 444, जिल्द अव्वल)

सबक़:- अल्लाह तआला बे शक रज़्ज़ाक है। लेकिन इंसान को मेहनत व मज़दूरी करना भी ज़रूरी है। और अल्लाह तआला किसी वसीले ही से अपने ईनामो इक्राम से नवाज़ता है।

हिकायत नम्बर (606) छूहारे का दरख़्त

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के ज़माने में एक शख़्स हज़रत अबु दुजाना रज़ी अल्लाहो अन्ह की आदत थी के सुबह नमाज़ पढ़ते ही फौरन मस्जिद से घर चले जाते थे। एक दिन हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने दरयाफ़्त फ़रमाया। के ऐसा क्यों करते हो। तो उन्होंने बयान किया के मेरे पड़ोसी के घर में छुहारे का एक दरख़्त है। रात को उसके छूहारे मेरे सहन में गिरते हैं। तो सुबह को मेरे बच्चे उनको उठा लेते हैं। इसलिए मैं उनको सो उठने से पहले ही वो सारे छूहारे जो रात को गिरते हैं। उठा कर पड़ोसी के घर में फैंक

देता हूँ। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उसके पड़ोसी को बुलाया। और फ़रमाया के अपने छूहारे के दरख़्त को जन्नत के छूहारे के दस दरख़्तों के अवज़ फ़रोख़्त कर दे। ये सुनकर सिद्दीके अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह बोले। या रसूल अल्लाह! मेरे दस दरख़्त दूहारे के फलाँ जगह पर हैं। मैं वो दस दरख़्त उसे दे देता हूँ और जन्नत के दरख़्त आप मुझे दे दें। चुनाँचे इसी तरह बात तय हो गई। और अबु दुजाना के पड़ोसी ने भी ये बात मंज़ूर कर ली। दूसरी सुबह को जो देखा तो वो छूहारे का दरख़्त अबु दुजाना के सहन में खड़ा था। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 387, जिल्द अव्वल)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम रिज़वान में कमाल दर्जे का तक़वा था। और दूसरे की चीज़ पर वो कभी अपना क़ब्ज़ा नहीं जा लेते थे। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जन्नत और जन्नत की हर चीज़ के मालिक व मुख़्तार हैं। वरना जन्नत के दस दरख़्तों के बदले हुज़ूर अलेहिस्सलाम अबु दुजाना के पड़ोसी का दरख़्त क्यों खरीदते? और ये भी मालूम हुआ के सिद्दीके अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर अलेहिस्सलाम की हर बात में सबसे पहले तसदीक़ फ़रमाया करते थे और ये भी मालूम हुआ के दरख़्त भी हमारे हुज़ूर की मर्ज़ी पहचानते थे।

हिकायत नम्बर(607) अब्दुल करीम

हज्जाज बिन यूसुफ़ ने एक शख़्स को मार डालने के लिए बुला भेजा। उसने अदब से कहा के ऐ अमीर! मेरे पास लोगों की अमानतें रखी हुई हैं। आप मुझे इतनी मोहलत दें के मैं जाकर इन्हें वापस कर दूं। हज्जाज ने इस इलतिजा को इस शर्त पर क़बूल कर लिया के वो किसी शख़्स को ज़मानती खड़ा कर दे। ये शख़्स ज़मानती की तलाश में निकला। और एक नेक फित्रत वजीहा मर्द को देखकर कहने लगा। जनाब आपका नाम? कहा अब्दुल करीम! कहा आक़ा को अपने ग़ुलाम में अपने अपने करम की निशानी ज़रूर छोड़नी चाहिए। ये कहकर हज्जाज का सारा वाक़ेया कह सुनाया। वो नेक नफ़्स मर्द बोला। मैं तुम्हारी ज़मानत ज़रूर दूंगा। और उस सरकश नफ़्स की ख़ातिर अपने नाम पर बट्टा ना लगाऊँगा। चुनाँचे ये शख़्स गया। और उसका ज़ामिन बन गया। इधर उस शख़्स ने जाकर लोगों की अमानतें वापस कीं। और ऐसे नाज़ुक वक़्त में वापस आया जब के हज्जाज इस ज़ामिल को बुला कर उसके क़त्ल का हुक्म दे चुका था। ज़ामिन को जब क़त्ल गाह की जानिब ले जाया गया। तो उसने हज्जाज से कहा। के मुझे दो रकआत नमाज़ पढ़

लेने की मोहलत मिलनी चाहिए। चुनाँचे उसे मोहलत दी गई। ये शख़्स दो रकअत नमाज़ पढ़कर और क़िबलारू होकर जनाबे इलाही में गिड़गिड़ाया। ऐ मेरे रब! इस शख़्स को मुझ पर यूं इतमिनान हुआ था। के मैं अब्दुलकरीम हूँ। और तू करीम। अब्दुलकरीम तो ज़ामिन बन चुका। अब तू करम फ़रमा। इतने में जल्लाद ने चाहा। के उसका सर क़लम कर दे के सामने से ग़ुबार उठता हुआ दिखाई दिया। और थोड़े अर्से में वो शख़्स नमूदार हुआ। जल्लाद ने उससे कहा। भला तू जान देने को क्यों आ गया। जबके तुम्हारा ज़ामिन क़त्ल किया जाने वाला था। उसने कहा, मुझे खुदा का ये इतमिनान बख़्श इर्शाद *ओफ़ू बिअहदी ओफी बिअहदीकुम* यहाँ कुशाँ कुशाँ ले आया है। नीज़ ईफाऐ अहद ईमान के दरख़्त की एक बड़ी शाख़ है। तो मैं दुनिया की फानी ज़िन्दगी की ख़ातिर ईमान से बाहर नहीं होना चाहता उस पर हज्जाज ने दोनों ही को रिहा कर दिया। और देनों की साबित क़दमी की तारीफ करने लगा। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 4 जिल्द 2)

सबक़:- सच्चा मुसलमान मुश्किल के वक़्त अपने भाई के काम आता है। और सच्चा मुसलमान अपने अहद को पूरा करने के लिए जान की भी परवाह नहीं करता।

हिकायत नम्बर(608) हिकमत

मसरूक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह कहते हैं के एक शख़्स जंगल में रहा करता था। और उसके साथ एक कुत्ता, एक गधा और एक मुर्ग़ था। गधे पर तो उसके लोग अपना मालो असबाब लाद कर ला या करते थे। कुत्ता उनकी निगहबानी किया करता था। मुर्ग़ उनके लिए वक़्त बताने के काम आता था। यानी नमाज़ के लिए उन्हें जगा दिया करता था। एक दिन का ज़िक्र है के लोमड़ी आई और मुर्ग़ को पकड़ कर ले गई। उस शख़्स ने कहा। अलहम्दू लिल्लाह! इसमें कोई बेहतरी होगी। फिर एक दिन कुत्ता मर गया। उसने उस वक़्त भी कहा के अलहम्दू लिल्लाह! इसमें कोई हिकमत ही होगी। फिर एक दिन ऐसा इत्तिफाक़ हुआ के उसके पड़ोसियों पर दुश्मन आ पड़ा। और उनका तमाम मालो असबाब लूट कर ले गया। क्योंके उनके पास आवाज़ देने वाले जानवर थे। जिनकी आवाज़ से उन चोरों को उनका पता चला। और माल लूट कर ले गए। मगर चूंके उन लोगों के पास कोई ऐसी चीज़ आवाज़ देना वाली ना रही थी जिससे उनका इस मुक़ाम में होना मालूम होता। लिहाज़ा चोरों की दस्त बर्द से महफूज़ रहे। सुबह को जब ये लोग उठे और अपने

पड़ोसियों को तबाह व बर्बाद देखा। तो कहने लगे बिला शुबह इन जानवरों का मरना हमारे हक़ में बेहतर हुआ। वरना आज हम भी बर्बाद हो जाते। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 150, जिल्द अव्वल)

सबक़: खुदा की हर बात में कोई ना कोई हिकमत ज़रूर होती है। और उसकी तरफ़ से कोई भी वाक़ेया पेश आए। तो अलहम्दू लिल्लाह कहकर यही समझना चाहिए के इसमें ज़रूर बेहतरी ही होगी।

हिकायत नम्बर (609) पाखाने का कीड़ा

एक शख़्स ने पाखाने के कीड़े को देखकर कहा। भला इस ज़लील जानवर को पैदा करने में खुदा की क्या हिकमत है? ना तो उसकी सूरत ही अच्छी है। ना कोई इस में खुशबू है। थोड़े दिनों के बाद वो शख़्स एक मोहलिक फोड़े में मुबतला हो गया। जिसके इलाज से तबीब थक गए। एक दिन एक तबीब आया है उस फोड़े को देखकर कहने लगा के इस फोड़े का इलाज एक ही है। और वो ये के पाखाने का कीड़ा लाया जाए और उसे आग में जलाकर उसकी राख से एक मरहम तैयार की जाए। उस मरहम से वो फोड़ा दूर हो सकता है। चुनाँचे पाखाने का कीड़ा लाया गया। और उसे जलाकर उसकी राख से मरहम तैयार किया गया। और उसके ज़ख़्म पर लगाया गया। तो उसका ज़ख़्म अच्छा हो गया। इस पर इस ज़ख्मी शख़्स ने कहा। इलाही! मैं जान गया। के तेरी हर बात में हिकमत है। और कोई चीज़ तूने बेकार पैदा नहीं फ़रमाई। जो कीड़ा मेरी नज़र में हक़ीर व ज़लील था। वही आज अज़ीज़ साबित हुआ। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 155, जिल्द अव्वल)

सबक़:- अल्लाह तआला ने कोई चीज़ बेकार नहीं पैदा फ़रमाई।

हिकायत नम्बर (610) अंधा परिंदा

हज़रत अनस रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं के एक दिन मैं हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के साथ एक जंगल में था। के आपने एक अंधे परिंदे को एक दरख़्त पर ठोंगें मारते हुए देखा। और मुझ से फ़रमाया। ऐ अनस! जानते हो ये परिंदा क्या कह रहा है? मैंने अर्ज़ किया। अल्लाह जाने या उसका रसूल! हुज़ूर ने फ़रमाया। ये कह रहा है। इलाही! तूने मुझे अंधा भी किया और भूका भी। इतने में एक टिड्डी उड़ती हुई आई और उसके मुंह में आकर गिरी। और उस परिंदे ने उसे खा लिया। वो परिंदा फिर ठोंगे मारने लगा। हुज़ूर ने फ़रमाया। ऐ अनस! जानते हो के अब ये क्या कह रहा है। मैंने

अर्ज़ किया, के हुज़ूर आप ही जानें, फ़रमाया। ऐ अनस! अब ये कह रहा है के *मन तवक्कला अललाही कफ़्फ़ाहू* जिसने अल्लाह पर तवक्कल किया। अल्लाह उसका काम पूरा कर देता है। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 442, जिल्द अव्वल)

सबक़:- अल्लाह पर तवक्कल रखने से सारे काम पूरे हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर(611) चोर पकड़े गए

एक बादशह को अपने एक ग़ुलाम से बड़ा प्यार था। दूसरे ग़ुलाम से बहुत जलते थे। एक दफा बादशाह ने सब ग़ुलामों को अपने शाही बाग़ में मेवा लाने के लिए भेजा सब ने बादशाह के इस मंज़ूरे नज़र ग़ुलाम के खिलाफ साज़िश की। और सारा मेवा खुद खा गए। और बादशाह से ये कह दिया के आपका मंज़ूरे नज़र ग़ुलाम सारा मेवा खा गया है। बादशाह ने फौरन एक देग में पानी डलवाया। और उसमें थोड़ा सा लहसन मिलकर उसे आग पर खूब गर्म किया। और फिर उन सब ग़ुलामों को वो पानी पिला कर चन्द सिपाहियों को हुक्म दिया। के इन्हें बाहर मैदान में खूब दौड़ाया जाए। जब वो पानी पीकर थोड़ी देर दौड़े। तो सब ने कै़ कर डाली। और सिवाए उस एक ग़ुलाम के सबके पेट में मेवा बरआमद हो गया। और चोर पकड़े गए। (मसनवी शरीफ)

सबक़:- जिन लोगों ने सूद, रिश्वत, ग़बन, बलैक और दीगर ना जायज़ तरीक़ों से जो माल कमाया और खाया है। कल क़यामत के दिन जब शहनशाह हक़ीक़ी उन्हें जहन्नुम का खोलता हुआ पानी पिलाएगा। तो ये सारा हराम का माल वहाँ उगलना पड़ेगा। और चोर पकड़े जायेंगे। पस आज तौबा के जुल्लाब के साथ मैदा साफ कर लेना चाहिए।

हिकायत नम्बर(612) शऊवाना

शहर बसरा में एक गाने वाली तवायफ शऊवाना नामी रहती थी। जिसका शहर भर में बड़ा चर्चा था। और वो बड़ी बदकार औरत थी। उमरा की हर मेहफ़िल में वो शरीक होती थी। एक दिन वो अपनी लौंडियों के हमराह कहीं जा रही थी के रास्ते में एक मुक़ाम से उसे बहुत से लोगों के रोने की आवाज़ आई। शऊवाना हैरान हुई। और समझी के शायद कोई मातम हो गया है। फिर तहक़ीक़े हाल के लिए उस मुक़ाम पर पहुँची। क्या देखती है। के एक वाज़ बहुत बड़े मजमअे में जहन्नुम की सिफ़्त और खुदा के होलनाक

अज़ाब का ज़िक्र कर रहे थे। और मजमअ खुदा के ख़ौफ से रो रहा था। शऊवाना पर भी इस वाज़ का असर हुआ। और वो भी खुदा के ख़ौफ से कांपने लगी और फिर कहने लगी। क्यों हुज़ूर! अगर मैं तौबा कर लूं, तो खुदा क्या मेरी तौबा क़बूल करेगा और मेरे गुनाह माफ फ़रमा देगा? वो बोले हाँ! शऊवाना ने कहा। मगर मेरे गुनाह बेशुमार हैं। और मैं बड़ी बदकार हूँ। वाज़ ने कहा। तुम तो तुम हो, खुदा की क़सम अगर शऊवाना भी तौबा करे तो खुदा उसे भी माफ फ़रमा देगा। शऊवाना रोते हुए बोली। तो जनाब सुनिये! मैं ही शऊवाना हूँ। और आज सच्चे दिल से तौबा करती हूँ। के आईंदा कभी कोई गुनाह ना करूंगी।

उसके बाद घर लौटी और अपनी सब लोंडियाँ आज़ाद करके अपना सारा माल गुरबा में तक़सीम कर दिया। और खुद इबादत में मशगूल हो गई। और चालीस साल तक ज़िन्दा रही और सारे बसरा में आबिदा व ज़ाहिदा के नाम से मशहूर हो गई। (रौनक़-उल-मजालिस, अल्लामा इब्ने याहिया, सफह 24)

सबक़:- सच्चे दिल के साथ तौबा कर लेने से खुदा तआला बड़े बड़े गुनाह माफ कर देता है।

हिकायत नम्बर(613) ईंट की कहानी

बनी इस्राईल में एक आदमी मर गया। और अपने पीछे एक मकान और दो बेटे छोड़ गया। उसके दोनों बेटे मकान की तक़सीम करने लगे तो दोनों आपस में झगड़ पड़े। और लड़ने मरने पर तैयार हुए। इतने में उस मकान की एक ईंट में से उन्होंने ये आवाज़ सुनी के ऐ लड़को! मेरी ख़ातिर मत लड़ो, मेरी तरफ़ देखो, मैं किसी वक़्त बहुत बड़ा बादशाह थी। तीन सौ सत्तर साल मैंने उम्र पाई। फिर मरने के बाद मैं एक सौ साल तक क़ब्र में रही। हत्ता के मेरी क़ब्र एक मैदान बन गई। और मेरी क़ब्र की जगह से मिट्टी खोदी गई। इस मिट्टी में मैं भी थी। फिर मेरी एक ईंट बनाई गई। और चालीस साल तक मैं ईंट की शक्ल में रही। फिर मुझे तोड़ा गया। और मैं एक रोड़े की शक्ल में एक सौ तीन साल तक राहों में और सड़कों में पड़ी रही। हत्ता के फिर मेरी मिट्टी बन गई। और दोबारा फिर मुझे ईंट बना दिया गया। और इस मकान में लगा दिया गया और इस मकान में मैं तीन सौ साल से चली आ रही हूँ। बच्चो! क्यों झगड़े हो, तुम्हारा भी यही हाल होने वाला है। (रौनक़-उल-मजालिस, सफ़ा 30)

सबक़:- ये दुनिया बड़ी नापायदार है। इसकी ख़ातिर लड़ना झगड़ना अक्लमंदी का काम नहीं।

हिकायत नम्बर (614) बे सिबाती दुनिया

बनी इस्राईल के एक नोजवान आबिद के पास हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम आया करते थे। ये बात उस वक़्त के बादशाह ने सुनी और उस आबिद को बुलाया। और पूछा क्या ये सच है के तुम्हारे पास हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम आया करते थे? उसने कहा। के हाँ! बादशाह ने कहा। अब जब वो आयें तो उन्हें मेरे पास ले आना। अगर ना लाओगे तो मैं तुम्हें क़त्ल कर दूंगा। चुनाँचे ख़िज़्र अलेहिस्सलाम एक रोज़ उसके पास तशरीफ़ लाए। तो उस आबिद ने उनसे सारा वाक़ेया बयान कर दिया। आपने फ़रमाया। चलो मैं उस बादशाह के पास चलता हूँ। चुनाँचे आप उस बादशाह के पास आए। बादशाह ने पूछा, आप ही ख़िज़्र हैं? आपने फ़रमाया, हाँ! बादशाह ने कहा, तो हमें कोई बड़ी अजीब बात सुनाईये, फ़रमाया मैंने दुनिया की बड़ी बड़ी अजीब बातें देखी हैं। मगर उनमें से एक सुनाता हूँ। लो सुनो!

मैं एक मर्तबा एक बहुत बड़े खूबसूरत और आबाद शहर से गुज़रा मैंने इस शहर के एक बाशिन्दे से पूछा, ये शहर कब से बना है? तो वो बोला, के ये बहुत पुराना शहर है। इसकी इब्तिदा का ना मुझे इल्म है ना हमारे आबाओ अजदाद को। खुदा जाने कब से ये शहर चला आता है। फिर मैं पाँच सौ साल के बाद उसी जगह से गुज़रा तो वहाँ उस शहर का नामो निशान ना था। वहाँ एक जंगल था। और एक आदमी वहाँ लकड़ियाँ चुन रहा था। मैंने उससे पूछा के ये शहर बर्बाद कब से हो गया? तो वो शख़्स हंसा, और कहने लगा के यहाँ शहर कब था। ये जगह तो मुद्दतों से जंगली चली आ रही है। हमारे आबाओ अजदाद ने भी यहाँ जंगल ही देखा है। फिर मैं पाँच सौ साल के बाद वहाँ से गुज़रा तो वहाँ एक अज़ीम-उश्शान दरया बह रहा था। और किनारे पर चन्द शिकारी मछलियाँ पकड़ रहे थे। मैंने उनसे पूछा के ये ज़मीन दरया कब से बन गई? तो वो हंसकर मुझ से कहने लगे के आप जैसा आदमी ये सवाल करे? ताज्जुब है। जनाब! यहाँ तो हमेशा से दरया ही बहता आया है। हमारे आबाओ अजदाद ने भी यहाँ दरया ही देखा है। फिर मैं पाँच सौ साल के बाद वहाँ से गुज़रा तो वो जगह एक बहुत बड़ा मैदान देखी। जहाँ एक आदमी को फिरते देखा। मैंने उससे पूछा के ये जगह खुश्क कब से हो गई तो वो बोला। के ये जगह तो हमेशा से यूंही चली आ रही है। मैंने पूछा। यहाँ

कभी दरया नहीं बहता था? तो वो बोला हर गिज़ नहीं, हम ने ऐसा ना देखा। ना अपने आबाओ अजदाद से सुना, फिर मैं पाँच सौ साल के बाद वहाँ से गुज़रा। तो वहाँ फिर पहले शहर से भी ज़्यादा एक अज़ीम-उश्शान शहर देखा। मैंने एक बाशिन्दे से पूछा के ये शहर कब से है? वो बोला ये शहर बहुत पुराना है। इसकी इब्तिदा का ना हमें इल्म है ना हमारे आबाओ अजदाद को। (अजायब-उल-मख़्लूक़ात लिलकज़्वीनी हाशिया हयात-उल-हैवान, सफ़ा 129, जिल्द अव्वल)

सबक़:- ये दुनिया हज़ारों रंग बदलती है। इसकी किसी चीज़ को दव्वाम व क़याम हासिल नहीं। लिहाज़ा ऐसी नापायदार दुनिया में दिल नहीं लगाना चाहिए और अपनी आक़्बत की फिक्र करना चाहिए। जहाँ की हर चीज़ पायेदार और हमेशा के लिए काम आने वाली है।

हिकायत नम्बर(615) पुर असरार फक़ीर

ईद का दिन है, सेठ नईम और उसकी बीवी हसीना क़ीमती लिबास में मलबूस एक कमरे में बैठे हुए खाने के इन्तिज़ार में हैं के उनका मुलाज़िम शकूर कमरे में दाखिल हुआ। और मौद्दबाना लहजे में कहा।

शकूर:- हुज़ूर खाना तैयार है, तशरीफ़ ले चलिए।

नईम:- चलो बैगम खाने से फारिग हो लें।

हसीना:- चलिये।

नईम मअे हसीना के खाने पर बैठे ही थे। के बाहर के दरवाज़े से आवाज़ आई।

"बाबा कई दिन से भूका हूँ, ईद का दिन है। खुदारा कुछ खाने को दो। खुदा भला करेगा।"

फक़ीर की ये सदा सुनकर सेठ नईम जो दौलत के नशे में चूर और मग़रूर था। चीं बजबीं होकर बोला।

नईम:- ये मंगते कम बख़्त ईद के दिन भी पीछा नहीं छोड़ते। शकूर उसे धक्के देकर दरवाज़े से बाहर निकाल दो। चुनाँचे फक़ीर को धक्के देकर बाहर निकाल दिया गया।

नईम मुतफक्किर व परेशान घर में दाखिल हुआ। हसीना ने दरयाफ़्त किया।

हसीना:- हालात कुछ सुधरे या नहीं?

नईम:- हसीना! क्या बताऊँ हो क्या गया है। मेरी हर कोशिश मौजिब

नुक़्सान साबित हो रही है। थोड़े ही दिनों में मेरी हर चीज़ मेरे क़ब्ज़े से निकल चुकी है। और जो कुछ रह गया है। वो भी जा रहा है। अगर हालात का यही रंग ढंग रहे। तो हसीना मुसतक़बिल बड़ा तारीक नज़र आ रहा है।

क़र्ज़ ख़्वाह हर वक़्त तंग करने लगे। हत्ता के बाहर निकलना भी दुश्वार हो गया है।

ईद के दिन से छः माह बाद वही नईम जो सेठ कहलाता था। इंक़िलाब ज़माने का शिकार हो गया। और उसका सारा मालो मताअ दुकान व मकान वग़ैरा नज़्र नुक़्सान होकर गिरफ़्त रहन में आ गया। और फिर नईम के उरूज व इक़्बाल का सूरज दीवालिया पन के सियाह बादलों में छुप कर रह गया। और नईम पैसे पैसे का मोहताज हो गया हत्ता के फाक़ा कशी तक नोबत पहुँच गई।

इन्तिहाई यास अंगेज़ और हसरत आमेज़ लहजे में लरज़ती हुई आवाज़ से नईम ने हसीना को मुख़ातिब किया।

नईमः- मेरा एक आख़री जुमला सुन लो। मैं जानता हूँ के तुझे बेहद रंज पहुँचेगा और उम्र भर के रिश्ते को यूं अआनन फआनन टूटते हुए देखकर तुम्हारा दिल भी टूट जाएगा। मगर हसीना (रोते हुए) क्या करूं। तुम्हारा नईम शिकार इंक़िलाब हो गया। मुफलिस व मोहताज हो गया। खुद फाक़ाकश रहूं मगर तुम्हारी फाक़ा कशी नहीं देख सकता। हसीना! सिर्फ इस खयाल से के तुम अपना मुसतक़बिल बेहतर बना सको मैं तुम्हें बादिले नख़्वास्ता छोड़ देता हूँ। और तलाक़ देता हूँ। जाओ तुम्हें इजाज़त है के बाद अज़ इद्दत कहीं और निकाह कर लो। (दोनों रो पड़े और फिर उसके बाद) पूरा साल गुज़र गया और फिर ईद का दिन आ गया। हसीना अपने दूसरे ख़ाविंद सेठ शाकिर के साथ खाना खाने बैठी ही थी के बाहर के दरवाज़े से एक फक़ीर की आवाज़ आई।

"बाबा कई दिन से भूका हूँ। ईद का दिन है। खुदारा कुछ खाने को दो। खुदा भला करेगा।"

सेठ शाकिर (जो बड़ा नेक दिल और फय्याज़ था) ने हसीना से कहा पहले इस फक़ीर को खाना भिजवाओ। फिर हम खायेंगे। चुनाँचे हसीना फक़ीर को खाने भिजवाने उठी। कमरे से निकली तो अचानक बाहर के दरवाज़े पर खड़े हुए फक़ीर पर नज़र पड़ गई। फक़ीर को देखा तो एक दम चीख मार कर धड़ाम से गिर पड़ी और बेहोश हो गई। शाकिर दौड़ा। और उसे होश में लाने का जतन करने लगा और होश जो आया तो शाकिन

मुख़ातिब हुआ।

शाकिरः- हसीना! प्यारी हसीना! क्या बात है। ये क्या हुआ तुम्हें।

हसीनाः- (रोते हुए) माफ करना प्यारे! ये दिल क़ाबू में ना रहा। बड़ी ही इब्रतनाक और दर्दअंगेज़ नज़्ज़ारा है।

शाकिरः- हाँ बताओ तो वो क्या है?

हसीनाः- ये फक़ीर जो बाहर दरवाज़े पर खड़ा है। मैंने उसे पहचान लिया है। ये सेठ नईम है।

शाकिरः- सेठ नईम? और तुम उसे जानती हो और फिर ये अब इस हाल में?

हसीनाः- हाँ, हाँ, मैं उसे जानती हूँ, गुज़िश्ता साल ये मेरा ख़ाविंद था, आज से पूरे एक साल पहले इसी ईद के दिन हम खाना खाने बैठे। तो इसी तरह उस रोज़ भी एक फक़ीर ने हमारे दरवाज़े पर आकर भीक माँगी थी। मगर आह! नईम ने उसे धक्के दकर निकलवा दिया। और आज इस पादाश में खुद भीक माँगता नज़र आ रहा है।

शाकिरः- ये दुनिया बड़ी बेवफा है। इस पर क्या भरोसा! हसीना! लो अब इससे भी ज़्यादा इब्रतनाक हक़ीक़त का नज़्ज़ारा करो। हसीना! तुम ने नईम को तो पहचान लिया मगर अब मुझे भी पहचान लो।

हसीनाः- आपको भी पहचान लूं। क्या मतलब?

शाकिरः- मतलब ये के ये तुम्हारा ख़ाविंद सेठ शाकिर वही पिछले साल वाला फक़ीर हैं। जो सेठ नईम के दरवाज़े से धक्के देकर निकलवाया गया था। हसीना ये सुनकर फिर बेहोश हो गई। (हिकायत सअदी तबसरफ़ मौल्लिफ)

सबक़:- ये दुनिया बड़ी बे वफा है। इस पर कभी भरोसा ना करना चाहिए। और दौलत के नशे में मखमूर होकर ग़रीबों, मोहताजों और फक़ीरों को हर गिज़ सताना ना चाहिए। बल्के उनकी मदद करना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के खुदा की गिरफ़्त बड़ी सख़्त और होलनाक होती है। वो देर से पकड़ता है। मगर सख़्त पकड़ता है। उसके जलालो ग़ज़ब से बचना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के इस ज़माने में इमारत व ग़ुर्बत सब आरज़ी चीज़ें हैं। आज जो अमीर है मुमकिन है कल वो ग़रीब हो जाए। और आज जो ग़रीब है मुमकिन है कल अमीर हो जाए और इस इंक़िलाब में उसकी मिसालें बहुत सी देख भी ली गईं हैं।

हिकायत नम्बर(616) दुनिया परस्त का अंजाम

ईसा अलेहिस्सलाम एक सफर में निकले, तो आपके हमराह एक यहूदी हो लिया उस यहूदी के पास दो रोटियाँ थीं। और ईसा अलेहिस्सलाम के पास एक रोटी थी। ईसा अलेहिस्सलाम ने उससे कहा। आओ दोनों मिलकर रोटी खायें। यहूदी ने मान लिया। मगर जब उसने देखा। के ईसा अलेहिस्सलाम के पास एक रोटी है। और मेरे पास दो, तो पछताया के मैंने शिर्कत का वादा क्यों कर लिया? चुनाँचे जब खाने का टाईम हुआ तो यहूदी ने एक ही रोटी रखी। ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया, तुम्हारे पास दो रोटियाँ थीं, एक कहाँ गई? यहूदी बोला, मेरे पास तो एक ही रोटी थी। दो कब थीं? खाना खाकर आगे बढ़े। तो एक अंधा मिला। ईसा अलेहिस्सलाम ने उसके लिए दुआ की तो वो अच्छा हो गया। ये मौजज़ा दिखाकर ईसा अलेहिस्सलाम ने यहूदी से कहा। तुझे उस अल्लाह की क़सम जिसने मेरी दुआ से उस अंधे को अच्छा कर दिया। बता! दूसरी रोटी कहाँ गई? वो बोला मुझे उसी खुदा की क़सम! मेरे पास तो एक ही रोटी थी। दूसरी थी ही नहीं। इतने में आगे बढ़े तो एक हिरन दिखाई दिया। ईसा अलेहिस्सलाम ने उसे बुलाया। वो आ गया। आपने उसे ज़िबह किया। भूना और खाया। और फिर उसकी हड्डियों से फ़रमाया, *कुम बिइज़निल्लाह!* वो हिरन फिर ज़िन्दा हो गया। ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। तुझे उसी खुदा की क़सम जिसने हमें ये हिरन खिलाया। और फिर उसे ज़िन्दा कर दिया। बताओ वो दूसरी रोटी कहाँ गई। वो बोला। मुझे उसी खुदा की क़सम! मेरे पास तो एक ही रोटी थी आगे बढ़े तो एक क़स्बा आ गया। हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने वहाँ क़याम किया। यहूदी ने मौक़ा पाकर हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम का असा मुबारक चुरा लिया और खुश हुआ के मैं इस सोंटे से मुर्दे ज़िन्दा किया करूंगा। चुनाँचे उसने क़स्बे में एलान कर दिया के मुर्दे को मुझ से ज़िन्दा करा लो। लोग उसे हाकिम शहर के पास ले गए। जो बीमार था। ये गया और जाते ही पहले वो डंडा उस हाकिम के सर पर दे मारा। वो मर गया। और फिर कहने लगा लो देखो। अब मैं इसे ज़िन्दा करता हूँ। चुनाँचे फिर उसे डंडा मारा और कहा *कुम बिइज़निल्लाह* मगर वो ज़िन्दा ना हो सका। अब तो ये घबराया। लोगों ने पकड़ लिया। और उसे फाँसी पर लटकाने लगे के इतने में हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम पहुँच गए। फ़रमाया। तुम्हारा हाकिम

मैं ज़िन्दा कर देता हूँ। उसे छोड़ दो। चुनाँचे आपने कुम बिइज़्निल्लाह कहा। तो हाकिम फौरन ज़िन्दा हो गया। और उन्होंने यहूदी को छोड़ दिया। ईसा अलेहिस्सलाम ने उससे कहा। तुझे उसी अल्लाह की क़सम जिसने तुम्हारी जान बचाई। बताओ वो दूसरी रोटी कहाँ गई? वो बोला मुझे उसी खुदा की क़सम! मेरे पास दूसरी रोटी थी ही नहीं। आगे बढ़े तो सोने की तीन ईंटें मिलीं। ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। इनमें एक ईंट मेरी दूसरी तुम्हारी और तीसरी उसकी जिसने तीसरी रोटी खाई। वो बोला। खुदा की क़सम तीसरी रोटी मैंने ही खाई थी। आपने वो तीनों ईंटें उसी को दे दी। और फ़रमाया। अब तुम मेरा साथ छोड़ दो। चुनाँचे वो ईंटें लेकर चला गया। मगर अल्लाह तआला ने उसे ईंटों समेत ज़मीन में धंसा दिया। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 207, जिल्द अव्वल)

सबक़:- दुनिया का लालच बार्बादी और हलाकत का मौजिब होता है। और ये भी मालूम हुआ के पैग़म्बर के सामने झूट बोलना बड़ा ख़तरनाक है। इसलिए के पैग़म्बर को सब इल्म होता है। और ये भी मालूम हुआ के जो बात पैग़म्बर के मुंह से निकले वही बात दूसरा भी कहे। तो जो असर पैग़म्बर के मुंह से निकले पर होता है दूसरों के मुंह से वो असर नहीं होता। मालूम हुआ के पैग़म्बर की मिस्ल बनने वाला अंजाम कार तबाह व बर्बाद ही होता है।

हिकायत नम्बर(617) मोहलिक दुनिया

तीन आदमियों को असना सफर में तीन सोने की ईंटें मिलीं। तीन ने खुशी खुशी एक एक ले ली। फिर एक उनमें से एक क़रीबी गाँव में खाना लेने के लिए गया। उसकी नीयत बदली और सोचा खाने में ज़हर मिला कर ले चलूं मेरे दोनों साथी खायेंगे। और मर जायेंगे। तो तीनों ईंटें मेरी हो जायेंगी। चुनाँचे वो ज़हर आलूद खाना लेकर आया। उधर उन दोनों ने आपस में ये मशवरा तय कर रखा था के वो खाना लेकर आए तो हम दोनों उसे क़त्ल कर दें। ताके तीनों ईंटें हम दोनों के हिस्से में आयें। चुनाँचे उसके खाना लाते ही ये दोनों उस पर टूट पड़े और उसे क़त्ल कर दिया। और फिर फारिग़ होकर उसका लाया हुआ खाना खाया। तो खुद भी दोनों मर गए और ईंटें वहाँ की वहाँ ही धरी रह गईं। (नुज़हत-उल-मजालिस)

सबक़:- दुनिया फना का घर है उसकी हर चीज़ फानी है। दुनिया का लालच रखने वाला अंजाम कार तबाह हो जाता है और इंसान दुनिया के लिए हज़ार मकरो फ़रैब करता है मगर इंसान मर जाता है। और दुनिया

यहीं की यहीं रह जाती है। फिर इस दुनिया के लिए लड़ना मरना किस क़द्र नादानी है।

हिकायत नम्बर(618) माले दुनिया

एक शख़्स सोते में हमेशा बिस्तर पर पैशाब कर दिया करता था। उसकी बीवी ने कहा के ये आपको क्या हो गया है? के हर रोज़ बिस्तर पर पैशाब कर देते हो, उसने कहा के मैं ख़्वाब में शैतान को देखता हूँ के मुझ को सैर के लिए ले जाता है और जब मुझ को हाजत होती है किसी जगह बिठा कर कहता है के पैशाब कर ले मैं पैशाब कर देता हूँ। बीवी ने कहा के शैतान तो जिन्नात में से है जिनके बड़े तसर्रूफात दिए गए हैं। उनसे कहना के हम फ़िक्रो फाक़ा में रहते हैं हम को कहीं से रुपे दिला दे। उसने कहा, बहुत अच्छा। अब अगर ख़्वाब में आया तो ज़रूर कहूंगा। हस्बे मामूल ख़्वाब में फिर शैतान आया। उसने कहा। कमबख़्त! तू मुझ को हमेशा परेशान करता है। हम परेशानी में मुबतला हैं। हम को कहीं से रुपया नहीं दिलाता। शैतान ने कहा, तूने मुझ से पहले क्यों नहीं कहा। रुपया चाहिए, ग़र्ज़ एक जगह ले गया। और वहाँ से बहुत सा रुपया उसे उठवा दिया। और उस रुपया का इस क़द्र उसे बोझ महसूस हुआ के बोझ से पाखाना निकल गया, जब आँख खुली तो बिस्तर पर पाखाना मौजूद है और रुपये का पता भी नहीं। (माहे तीबा, जनवरी 54ई०)

सबक़:- इस आलम की मिसाल आलम ख़्वाब की सी है। और दुनिया के तालिब ख़्वाब देखने वाले की तरह हैं। और माल दुनिया की मिसाल पाखाना की है। उस वक़्त हम ख़्वाब ग़फ़्लत में नहीं जानते के क्या जमा कर रहे हैं। जब आँख खुलेगी यानी मौत आएगी तो उस वक़्त मालूम होगा के माल तो नदारद और पाखाना यानी गुनाह मौजूद है।

हिकायत नम्बर(619) गधा और शाही घोड़े

एक ग़रीब आदमी के कमज़ोर गधे को शाही असतबल में जाने का इत्तिफाक़ हुआ। क्या देखता है के घोड़े खूब मोटे ताज़े हैं और कई खिदमत गुज़ार उनकी ख़िदमत में लगे हुए हैं। गधे को अपनी हालत पर रंज हुआ। और ये तमन्ना करने लगा के ऐ काश! मैं भी उन जैसा होता। इतने में जंग का बुग्ल बजा। और घोड़ों के मैदाने जंग में जाना पड़ा। और जब वो वापस हुए तो गधे ने देखा के कोई घोड़ा ज़ख्मी है। कोई लहू लहान है। किसी के जिस्म

में तीर पैवस्त है। जिसे निकाला जा रहा है। और कोई क़रीब-उल-मर्ग है। ये आलम देखकर गधे ने कहा। मेरे ख़ालिक! मैं इसी हाल में खुश हूँ। मैं नहीं चाहता के मैं इन जैसा हो जाऊँ। (माह तय्यबा, 54ई॰ फ़रवरी)

सबक़:- खुदा ने जिस जिस हाल में रखा है, वही अच्छा है। और जो बड़े हैं, उनकी आज़माईश भी बड़ी है।

हिकायत नम्बर(620) शेर की खाल में गधा

किसी शख़्स का गधा ज़ख़्मी और नाकारा हो गया। उसने उसको जंगल में आवारा छोड़ दिया। परिंद और मक्खियाँ उसकी रही सही खाल को नोचती थीं। और उसके ज़ख़्म और शदीद होते गए। किसी राहगीर को उस पर रहम आया। और वो उसे घर ले आया। उसके पास शेर की एक खाल थी। उसने वो खाल उस गधे के जिस्म पर डाल दी। और खाल का चेहरे वाला हिस्सा गधे के मुंह पर चढ़ा दिया। अब गधा बे फ़िक्री से जंगल में चरने लगा। परिंदे, दरिंदे सब उसे शेर समझ कर उससे डरने लगे। कोई नज़दीक़ ना आता था। अब क्या था। बे फ़िक्री का चरना और जंगल की बादशाही। गधे के ज़ख़्म भी अच्छे हो गए। और खूब मोटा ताज़ा हो गया। गधे की खुरमस्ती मशहूर है जो बन में आके खुरमस्ती ने जो ज़ोर किया। तो लगा चारों तरफ़ ढेंचूं ढेंचू लगाने। इस आवाज़ को सुनकर जंगल के तमाम जानवरों में मशहूर हो गया के ये कोई मसख़रा गधा है। जो शेर की खाल ज़ैबतन करके आज तक हमें धोका देता रहा। और आख़िर सब ने जमा होकर गधे का नक़ाब असदी उतारा और आपकी असल शक्ल देखकर आपको अपने ठिकाने पहुँचा दिया। (माह तय्यबा, अप्रैल, 1951ई॰)

सबक़:- आज कल बहुत से दुश्मनाने दीन भी मुसलमानों का बहरूप इख़्तियार करके असली मुसलमान बन बन कर फिर रहे हैं। और असल में वो कुछ और ही हैं। मुसलमानों को ऐसे बहरूपों से होशियार रहना चाहिए। इस क़िस्म का कोई बहरूपिया अगर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्मो इख़्तियार। औलिया इक्राम की अज़मत व वक़ार या सहाबा इक्राम के फज़्लो शरफ़ या इमामाने दीन की बुज़ुर्गी व इमामत के ख़िलाफ ढेंचूं ढेंचूं करने लगे। तो समझ जाइये के ये शेर की खाल में गधा है।

हिकायत नम्बर(621) हलवा

एक इसाई और एक यहूदी और एक मुसलमान तीनों कहीं जा रहे

थे। चूंके रमज़ान शरीफ का महीना था। इसलिए मुसलमान का रोज़ा था। चलते चलते सूरज ग़रूब होने को आया। तो रात गुज़ारने के लिए ये तीनों एक गाँव में पहुँचे, और एक मस्जिद में चले गए मस्जिद के एक पड़ोसी ने तीनों को मुसलमान और रोज़ादार समझकर बहुत सा हलवा पकाया। और एक बर्तन में डाल कर ले आया। और कहा लो भाईयो! रोज़ा इफ़्तार कर लो। हलवा देखकर इसाई और यहूदी ने आपस में मशवरा किया के हमरा ये मुसलमान साथी रोज़े से था। अगर हलवा इस वक़्त खाया। तो ये बहुत सा हलवा खा जाएगा। कोई ऐसी तरकीब करें के हलवा इस वक़्त तो महफ़ूज़ रख दें। और सुबह उठ कर खायें। इस मुसलमान साथी का सुबह रोज़ा होगा। और हम दोनों मज़े से सारा हलवा खा लेंगे। चुनाँचे दोनों ने इस मुसलमान को बुलाया और कहा के हमारा इरादा है के हलवा इस वक़्त संभाल कर रख दें। और सुबह उठ कर तीनों अपना अपना ख़्वाब सुनाऐंगे। रात को जिसने सब से अच्छा ख़्वाब देखा होगा सारे हलवे का वही मालिक होगा। मक़्सद ये के ख़्वाबों की उलझन से उसे उलझाओ। सुबह तो उसका रोज़ा होगा ही। हलवा बहरहाल हमारे काम ही आएगा। मुसलमान ने कहा। मुझे मंज़ूर है। इस फैसले के बाद हलवे को संभाल कर एक कोने में रख दिया गया। और तीनों सो गए। सहरी का वक़्त हुआ तो मुसलमान हस्बे मामूल उठा और देखा के उसके दोनों साथी गहरी नींद सो रहे हैं उसने हलवे का बर्तन उठाया और सारा हलवा खा गया। और रोज़े की नीयत करके फिर सो गया। सुबह इसाई व यहूदी जागे तो हलवा की फिक्र मे एक जगह बैठकर मुसलमान के सामने अपना अपना ख़्वाब बयान करने लगे। ये ख़्वाब महज़ हलवे की लालच में उन्होंने घड़ लिए थे। यहूदी बोला, क्या पूछते हो भाई! रात को मेरे पैग़म्बर हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ख़्वाब में तशरीफ़ लाए थे, उन्होंने मुझ से फ़रमाया के उठ चल मेरे साथ कोहे तूर पर, चुनाँचे मैं अपने पैग़म्बर के साथ कोहे तूर पर चला गया। और कोहे तूर की ख़ू सैर की। इससे बेहतर ख़्वाब भला और क्या होगा। लिहाज़ा हलवा मैं खाऊँगा। इसाई बोला। सुनो! मियाँ रात को मेरे पैग़म्बर हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम भी मेरे पास तशरीफ़ लाए थे, और आपने मुझ से फ़रमाया। उठ मेरे उम्मती! चल मेरे साथ आसमान पर जहाँ मैं रहता हूँ। चुनाँचे मैं अपने पैग़म्बर के साथ आसमान पर चला गया। कोहे तूर तो आख़िर ज़मीन पर ही है ना। मैं तो आसमान से होकर आया हूँ। लिहाज़ा हलवा मैं खाऊँगा।

अब मुसलमान का नम्बर आया। तो वो बोला भई सहरी का वक़्त हुआ। तो मेरे पैग़म्बर हुज़ूर मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम भी मेरे पास तशरीफ़ लाए थे। और आपने तशरीफ़ लाते ही मुझ से फ़रमाया के उठ! ऐ मेरे उम्मती ! सुबह को तुझे रोज़ा रखना है। उठ कर सहरी खा, हलवा मौजूद है। यही खा लो। चुनाँचे मैं उठा। और हुक्म पैग़म्बरी की तामील में मुझे हलवा खाना पड़ा। और मैंने वो सारा हलवा खा लिया। इसाई व यहूदी ये ख़्वाब सुनकर हैरान रह गए। और बोले। तो क्या सच मुच तुम हलवा खा गए उसने कहा तो क्या करता पैग़म्बर का हुक्म ना मानकर काफ़िर होता। वो बोले। तो यार हमें भी बुला लेते। मुसलमान ने कहा मैंने तो बहुत आवाज़ें दी थीं। मगर तुम में से एक कोहे तूर पर था। एक आसमान पर। सुनता ही कोई ना था। नाचारा के लिए ही खाना पड़ा। (मसनवी शरीफ)

सबक़:- बद मज़हब अपनी मतलब बरारी और मुसलमानों का ईमान छीनने के लिए बड़े बड़े हीले बहाने और खुद साख़्ता दलायल क़ायम करते हैं। मगर दाना मुसलमान उनके किसी दाव में नहीं आते। और अपने ईमान व मसलक पर मज़बूती से क़ायम रहते हैं। वो मुसलमान अगर इस इसाई व यहूदी के फ़रैब में आ जाता तो हलवे से महरूम रह जाता। और सुबह भूक से परेशान होता। यूंही जो मुसलमान किसी बद मज़हब के दाव में आ गया समझो के वो ईमान से महरूम हो गया। और क़यामत के रोज़ वो परेशान होगा।

हिकायत नम्बर(622) रुपों की थेली

एक जगह चन्द चोर बैठे हुए थे। उनके पास से एक सुनार गुज़रा। जिसके पास एक रुपों की भरी थेली थी। चोरों मे से एक चोर बोला। लो देखों मैं ये थेली उड़ा कर लाता हूँ। ये कह कर वो इस सुनार के पीछे हो लिया। यहाँ तक के सुनार अपने घर पहुँचा। तो ये चोर भी साथ ही मकान तक पहुँच गया। सुनार ने थेली को चबूतरे पर रखकर अपनी लोंडी से कहा। के मुझे पैशाब की हाजत है। पानी लेकर ऊपर बालाखाने पर आ जाओ। ये कह कर सुनार ऊपर चला गया। और लोंडी भी पानी लेकर ऊपर चली गई। इतने में चोर मकान के अंदर घुस कर थेली उठा लाया। और अपने साथियों में आकर सारा क़िस्सा बयान किया। उन्होंने सुनकर कहा के तूने अच्छा ना किया। उस ग़रीब लोंडी की शामत आ जाएगी। और सुनार यही समझेगा के थेली उसने उठाई है ये अच्छी बात

नहीं। उसने कहा के फिर तुम क्या चाहते हो, वो बोले के लोंडी मार पीट से बच जाए। और थेली भी हमें मिल जाए। उसने कहा लो ऐसा ही होगा। चुनाँचे ये चोर उठा और सुनार के मकान पर पहुँच गया। उसने देखा के सुनार वाक़ई लोंडी को मार रहा था। चोर ने दरवाज़ा खटखटाया तो सुनार बोला कौन है? चोर ने कहा के आपके पड़ोसी दुकानदार का नौकर हूँ, सुनार ने बाहर आकर पूछा, क्या कहते हो, तो चोर बोला के मेरी आक़ा ने सलाम कहा है और कहा है के आपका हाफ़िज़ा खराब हो गया है, आप थेली दुकान में फैंक आए हैं। और चल दिए हैं। अगर हम उसे ना देख लेते तो कोई दूसरा उठा कर ले जाता। और थेली सामने करके दिखाते हुए बोला। यही है ना, उसने कहा। हाँ वल्लाह यही है। सुनार ने थेली को ले लिया। तो चोर बोला। ये मुझे दे दीजिए। और घर में जाकर एक रूक़अे पर लिख लाईये के आपके नौकर से थेली वसूल पा ली। ताके मैं अपनी ज़िम्मेदारी से बरी हो जाऊँ और आपका माल आपको मिल जाए। तो उसने वो थेली उसे वापस की। और खुद रूक़आ लिखने अंदर गया तो चोर थेली लेकर वापस आ गया। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 385)

सबक़:- ये दुनिया एक फ़रैब है, और फ़रैब ही से हाथ आती है और इस दुनिया में बड़े बड़े फ़रैबी और मक्कार भी बस्ते हैं। इसलिए बड़ा होशियार रहना चाहिए।

हिकायत नम्बर (623) उक़्दत-उल-ममसूख़

क़ाज़ी अबुबक्र बिन अरबी हज़रत इमाम ग़ज़ाली अलेह अर्रहमत से इल्म हासिल करके अपने वतन को वापस जा रहे थे। और एक कश्ती पर बैठे हुए दरया उबूर कर रहे थे। अचानक दरया की मौजों में तूफान सा पैदा हुआ। और कश्ती डगमगाने लगी। क़ाज़ी अबु बक्र ने दरया को मुख़ातिब किया। ख़बरदार! ऐ दरया! तुझ पर से तेरी ही मिस्ल एक दरया जा रहा है। (क़ाज़ी साहब ने अपने इल्म पर फख्र करके अपने आपको दरया कहा) इतने में अजीब शक्ल का एक जानवर दरया से ज़ाहिर हुआ और कश्ती रोक कर खड़ा हो गया। और पूछने लगा। के अगर तुम इतने ही बड़े आलिम हो, तो बताओ जिस औरत के शौहर पर अज़ाब मस्ख़ नाज़िल हो, और वो ममसूख़ हो जाए तो वो औरत कितने दिन इद्दत गुज़ारे? क़ाज़ी अबु बक्र ला जवाब हो गए। और वहीं से फिर वापस हो

गए। ताके हज़रत इमाम ग़ज़ाली से ये मसला पूछ के आयें। चुनाँचे इमाम ग़ज़ाली के पास फिर पहुँचे। और यही मसला पूछा तो इमाम ग़ज़ाली ने जवाब दिया, के अगर वो शख़्स ममसूख़ होकर किसी हैवान की शक्ल में चला गया है, तो औरत पर तलाक़ की इद्दत लाज़िम होगी। इसलिए के उस शख़्स की रूह बाक़ी है और अगर वो ममसूख़ होकर पत्थर बन गया है तो औरत पर वफात की इद्दत लाज़िम है इसलिए के रूह भी बदन से जुदा हो गई। ये जवाब मालूम करके क़ाज़ी साहब फिर वापस हुए। और इसी दरया से गुज़रे। तो वही जानवर फिर मिलला। और क़ाज़ी साहब ने उसे सुनाया। तो उसने कहा। जनाब! दरया अगर है तो ग़ज़ाली है। आप नहीं। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 22, जिल्द 2)

सबक़:- इल्म बड़ी नअेमत है और ग़रूर बहुत बुरा है। और ये भी मालूम हुआ के मसायल दीन का खुद ब खुद समझ लेना बड़ा मुश्किल है। किसी आलिम और जानने वाले से पूछना चाहिए।

हिकायत नम्बर(624) हारून अलरशीद और उसकी लोंडी

शायर अबु निवास ने हारून अलरशीद की शान में एक नज़्म लिखी। जिसे सुनाने के लिए वो हारून रशीद के दरबार में गया। इत्तिफाक़न उस रोज़ हारून रशीद अपनी एक लोंडी के पास बैठा था जिसका नाम ख़ालिसा था। और एक बहुत बड़ा क़ीमती हार उस लोंडी के गले में पड़ा हुआ था। जिसे देखकर हारून रशीद खुश हो रहा था। अबु निवास नज़्म सुनाकर कुछ ईनाम हासिल कने के लालच में आया था। मगर हारून रशीद लोंडी और उसके गले के हार की तरफ़ ऐसा मुतवज्जह हुआ। के अबु निवास उसकी तरफ़ उसने तवज्जह ही ना की। अबु निवास बद दिल होकर दरबार से निकल आया। और दरवाज़े से निकलते हुए दरवाज़े पर ये शैर लिख आया। के....

लक़द ज़ाआ शिअरी अला बाबिकुम
कमा ज़ाआ इक़्दुन अला ख़ालिसती

"यानी मेरे शैर तुम्हारे दरवाज़े पर इस तरह ज़ाए हो गए, जिस तरह एक क़ीमती हार ख़ालिसा के गले में ज़ाए हो गया"

हारून अलरशीद को जब पता चला के अबु निवास जाते हुए दरवाज़े पर ये शैर लिख गया है। तो ग़ुस्से में आकर उसे बुलाया। अबु निवास जब लाया गया तो दरवाज़े से गुज़रते हुए उसने शैर के दोनों मिसरओ में लफ़्ज़ "जाअ" के "अैन" के दायरे को मिटा दिया। अब "अैन" की शक्ल ने

"हम्ज़ा" की यानी हम्ज़ा की शक्ल इख़्तियार कर ली। और शैर यूं बन गया के....

लक़द ज़ाआ शिअरी अला बाबिकुम
कमा ज़ाआ इक़्दुन अला ख़ालिसती

और मानी उसका ये बन गया के मेरे शैर तुम्हारे दरवाज़े पर इस तरह रोशन हो गए जिस तरह एक क़ीमती हार ख़ालिसा के गले में रोशन हो गया।

अरबी से मस रखने वाले हज़रात इस पुर लुत्फ तग़य्युर व तबद्दुल से महफ़ूज़ हो सकते हैं। "ज़ाअ" जब ऐन से हो तो मानी "ज़ाए हुआ" होते हैं। और जब "ज़ाअ" हम्ज़े से हो तो मानी ज़ूअ यानी रोशन के होते हैं। यानी "रोशन हुआ" तो अबु निवास ने ये कमाल किया के दरबार में दाखिल हाते हुए "ऐन" से "हम्ज़ा" बन जाए। और मानी कुछ और हो जाए। चुनाँचे हारून अलरशीद ने जब बाज़ पुर्स की। तो अबु निवास ने कहा। जनाब मैंने तो तारीफी शैर लिखा है आप खुद मुलाहेज़ा फ़रमा सकते हैं। चुनाँचे हारून अलरशीद ने खुद वो शैर देखा। तो खुश होकर उसे ईनाम दिया। और अबु निवास बजाए सज़ा के अता लेकर आया। (नफहत-उल-यमीन)

सबक़:- अरबी ज़बान बड़ी जामअे मानअे और प्यारी ज़बान है। और दाना आदमी अपनी दानिशमंदी बड़ी बड़ी मुश्किलता को दूर कर लेता है।

हिकायत नम्बर(625) बनान तुफैली

अरब का मशहूर ज़रीफ बनान तुफैली जो इन्तिहा दर्जे का शिकम परवर था। एक दफा वो किसी अमीर की दावत पर उसके हाँ गया। तो अमीर ने उसे अपने पास बिठा लिया। ग़ुलाम ने खुश्क हलवे के टुकड़ों का ख़्वान सामने रखा। अमीर ने एक टुकड़ा उठाकर बनान को दिया।

"बनान ने कहा *अन्ना इलाहाकुम लवाहिदुन* तहक़ीक़ तुम्हारा खुदा एक ही है"

अमीर ने फिर दो टुकड़े दिए। तो बनान ने ये आयत पढ़ी *अरसलना इलेहिमिसनैनी* हमने उनकी तरफ़ दो पैग़म्बर भेजे।

अमीर ने फिर तीन टुकड़े दिए। तो बनान ने ये आयत पढ़ी। *फअज़्ज़ज़ना बिसालिसिन* फिर हम ने तीन से इज़्ज़त बढ़ाई।

अमीर ने फिर चार टुकड़े दिए। तो बनान ने ये आयत पढ़ी। *फखुज़ अरबआता मिनत्तैरी* चार परिंदे ले लो।

"अमीर ने पाँच दिए तो वो बोला *व यकूलूना ख़मसतुन* वो कहते हैं के पाँच हैं।

फिर उसने छः दिए तो ये आयत पढ़ी *ख़लाक़ास्समावाती वल अरज़ा फी सित्ताती इय्यामिन* खुदा ने ज़मीन व आसमान को छः दिनों में पैदा किया।"

फिर उसने सात दिए तो उसने पढ़ा *व बनीना फोक़ाकुम सबअन शिदादन* हमने तुम पर सात आसमान बना दिए।

उसने आठ दिए। तो उसने कहा *अन ताजुरेनी समानिया हिंजज* तुम आठ बरस मेरी मुलाज़मत करो।

फिर उसने नो दिए। तो उसने ये आयत पढ़ी *व काना फिलमदीनती तिसअतू रहतिन* मदीना में नो गिरोह थे।

उसने दस दिए। तो उसने पढ़ा। *तिल्का अशरातिन कामिलतिन* ये है दस की पूरी तादाद।

उसने ग्यारह दिए। तो उसने कहाः *इन्ना इद्दतश्शुहूरी इंदल्लाही इसना अशरा शहरन* खुदा के नज़दीक महीनों की तादाद बारह है।

इस पर अमीर ने तंग आकर तबाक़ उठाया। और बनान के आगे रख दिया। तो बनान ने झट ये आयत पढ़ी *व अरसलना इला मिआती अलफिन ओ यज़ीदूना* हमने उसे एक लाख या उसकी ज़्यादा की तरफ़ भेजा। (लोअ लोअ अश्शरअ, सफ़ा 48)

सबक़:- बद मज़हब अफ़राद भी अपने खयालात फासिद व अक़ायद बातिला की ताईद में बनान तुफैली की तरह क़ुरआने पाक की आयात पढ़ने लगते हैं। और अहले हक़ खूब जानते हैं के उन लोगों का क़ुरआने पाक पढ़ पढ़ कर सुनाना बिलकुल इसी तरह है जिस तरह बनान तुफैली पढ़ता था।

हिकायत नम्बर(626) युज़िल्ला बिही कसीरन

एक गिरोह किसी दावत पर गया। साहबे खाना ने बहुत बड़े तबाक़ में चावल भर कर दरमियान में गढ़ा करके उसमें घी डाला। और वो तबाक़ इस गिरोह के सामने रख दिया। उनमें से एक शख़्स ने लुक़्मा उठाकर घी पर डाल दिया। और कहा *फकुबकिबू फीहा हुम वल ग़ाइऊन* तो उसमें औंधे मुंह गिराये जाऐंगे वो और गुमराह लोग और घी को अपनी तरफ़ खींच लिया।

दूसरे ने कहा *इज़ा उलक़ू फीहा समीऊ लहा शिहीकन वहिया तफ़ूरू* जब वो इस जहन्नुम में फैंके जायेंगे। तो उसके चीख़ने की

आवाज़ सुनेंगे। और वो जोश मारती होगी" और उसने घी को अपनी तरफ़ खींच लिया।

तीसरे ने कहा *आखारक़्ताहिया लितुग़रिक़ा अहलाहा* क्या तूने कश्ती को इसलिए तोड़ा के बैठने वालों को ग़र्क़ कर दे" और घी को अपनी तरफ़ खींच लिया।

चौथे ने कहा *इन्ना नसुकुलमाआ इलल अरज़िल जोज़ी* हम पानी को सूखी ज़मीन की तरफ़ ले जाते हैं" और घी को अपनी तरफ़ खींच लिया।

पाँचवें ने कहा *फीहिमा ईनानी तजरियान* इन दो बाग़ों में दो चश्मे जारी होंग" और घी को अपनी तरफ़ खींच लिया।

छटे ने कहा *फीहिमा ईनानी नज़्ज़ाखतानी* इन दो बाग़ों में दो चश्मे जोश मारते होंगे" और घी को अपनी तरफ़ खींच लिया।

सातवें ने कहा *फअलतक़ल मआ अला अमरिन क़दक़ुदीरू* फिर आसमान व ज़मीन का पानी इस काम के लिए जो मुक़द्दर हो चुका था। आपस में मिल गया। और घी को अपनी तरफ़ खींच लिया।

आठवें ने कहा *फसुक़नाहू इला ब्लादिन मीतिन* हम ने पानी को ऐसे शहर में पहुँचाया। जिसकी ज़मीन मुर्दा थी" और घी को अपनी तरफ़ खींच लिया।

नवें ने कहा *व क़ीला या अरज़ुब लई मआका व या समाऊक्लई।* और हुक्म दिया गया के ऐ ज़मीन अपने पानी को पी जा। और ऐ आसमान उठा ले"। और उसने तमाम घी सारे चावलों में मिला दिया। (किताब-उल-अज़किया सफ़ा 75 लाइमाम बिन जोज़ी रहमत-उल्लाह अलेह)

सबक़:- इस हिकायत से मालूम हुआ के हर्स व आज़ के बन्दे और शिकम परस्त अफ़राद पहले भी थे। और अब भी हैं। जो क़ुरआने पाक की आयात को ख़्वाह म ख़्वाह अपने ऊपर चसपाँ कर लेते हैं। और अपने ख़यालात फासिदा अक़ायद बातिला को क़ुरआने पाक से खींचा तानी के साथ साबित करना चाहते हैं। चुनाँचे आज भी जो नया फ़िर्क़ा पैदा होता है। वो अपनी ताईद में क़ुरआन पढ़ने लगता है। यही वजह है के क़ुरआने पाक ही ने खुद एलान फ़र दिया है के *व युज़िल्लुन बिही कसीरन* यानी बहुत से लोग क़ुरआन पढ़कर भी गुमराह हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर(627) मुर्ग़ी की तक़सीम

इब्राहीम अलखरामी कहते हैं के एक दीहाती सहराई अरब के

बाशिन्दों में से एक शहरी के यहाँ आया। उसने उसको अपने यहाँ बतौर मेहमान ठहराया उसके पास बहुत सी मुर्गियाँ थीं। और उसके घर वालों में एक बीवी, और उसके दो बेटे, और दो बेटियाँ थीं। ये शहरी मेज़बान बयान करता है के मैंने अपनी बीवी से कहा के आज नाश्ता के लिए मुर्गी भून कर ले आना। जब नाश्ता तेयार होकर आ गया। तो मैं और मेरी बीवी और दोनों बेटे और दोनों बेटियाँ और वो अराबी सब एक दसतरख़्वान पर बैठ गए। हम ने भुनी हुई मुर्ग़ी उसके सामने कर दी। और कहा आप हमारे दरमियान इस तक़सीम कर दें। हमने उससे हंसने और मज़ाक़ के लिए ऐसा किया था। उसने कहा के तक़सीम करने का कोई अहसन तरीक़ तो मैं नहीं जानता। लेकिन अगर तुम मेरी तक़सीम पर राज़ी हो तो मैं सब पर तक़सीम करने को तैयार हूँ। हमने कहा हम सब राज़ी हैं। अब उसने मुर्ग़ी का सर पकड़कर काटा। और वो मुझे दिया। और कहा रास (यानी सर) रईस के लिए। फिर देनों बाज़ू काटे और कहा दोनों बाज़ू दोनों बेटों के लिए। और फिर दोनों पिंडलियाँ काटीं और कहा पिंडलियाँ दोनों बेटियों की। और फिर पीछे से दुम का हिस्सा काटा और बोला अज्ज़ (यानी चूतड़ वाला हिस्सा) अजूज़ (यानी बुढ़िया) के लिए। और वो मेरी बीवी को दे दिया। फिर कहा करोर (यानी धड़ का पूरा हिस्सा) दायर (यानी मेहमान) के लिए और पूरी मुर्ग़ी अपने आगे रख ली। जब दूसरा दिम आया। तो मैंने कहा के आज पाँच मुर्गियाँ भून कर लाना। फिर जब नाश्ता आया तो हम ने कहा तक़सीम कीजिए। तो कहने लगा के मेरा ख़याल ये है के आप साहिबान को मेरी कल वाली तक़सीम ना गवार गुज़री है। हम ने कहा नहीं ऐसा नहीं है आप तक़सीम कीजिए। कहने लगा। तो मैं जुफ़्त का हिसाब रखूंगा या ताक़ का? हम ने कहा। ताक़ का। तो कहा बेहतर! तो यूं होगा के तू और तेरी बीवी और एक मुर्ग़ी। पूरे तीन हो गए। ये कहकर एक मुग़ी हमारी तरफ़ फैंक दी। फिर कहा और तेरे बेटे और एक मुर्ग़ी पूरे तीन हो गए। ये कहकर दूसरी मुर्ग़ी उनकी तरफ़ फैंक दी फिर कहा और तेरी दो बेटियाँ और एक मुर्ग़ी पूरे तीन हो गए। ये कहकर तीसरी मुर्ग़ी उनकी तरफ़ फैंक दी फिर कहा मैं और दो मुर्ग़ियाँ पूरे तीन हो गए और खुद दो मुर्ग़ियाँ लेकर बैठ गया।

फिर हमें ये देखकर के हम उसकी दो मुर्ग़ियों को देख रहे हैं। बोला के तुम लोग क्या देख रहे हो, शायद तुम्हें मेरी ताक़ वाली तक़सीम पसंद नहीं आई वो तो इसी तरह सही आ सकती है। हम ने कहा अच्छा तो जुफ़्त के

हिसाब से तक़सीम कीजिए ये सुनकर फिर सब मुर्गियों को इकट्ठा करके अपने सामने रख लिया। और बोला तो और दो तेरे बेटे और एक मुर्ग़ी। चार हो गए। ये कहकर एक मुर्ग़ी मेरी तरफ़ फैंक दी। और तुम्हारी बीवी और दो तुम्हारी बेटियाँ और एक मुर्ग़ी चार हो गए। ये कहकर एक मुर्ग़ी उनकी तरफ़ फैंक दी। और मैं और तीन मुर्गियाँ चार हो गए। ये कहकर तीन मुर्गियाँ अपने आगे रख लीं। फिर अपना मुंह आसमान की तरफ़ उठाकर कहा। ऐ अल्लाह! तेरा बड़ा अहसान है। तूने ही मुझे इस तक़सीम की समझ अता फ़रमाई है। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 172)

सबक़:- बाज़ अवक़ात हंसी मज़ाक का उल्टा अपने ऊपर ही वाके हो जाता है।

हिकायत नम्बर (628) चार ज़हीन भाई

नज़ार बिन मअद एक बड़ा रईस आदमी था। उसके चार बेटे थे, जिनके नाम मज़र, रबिआ, अयाद और अनमार थे। नज़ार बिन मअद जब मरने लगा तो अपना माल चारों बेटों में तक़सीम करने के लिए उसने चारों को बुलाया। और कहा, बेटो! देखो फलाँ चीज़ मज़र की है। फलाँ रबिआ की, फलाँ अयाद की और फलाँ अनमार की। और अगर माल की तक़सीम में कुछ मुश्किल पेश आए तो अफई जरहमी शाह नजरान के पास चले जाना। चुनाँचे नज़ार बिन मअद के मरने के बाद तक़सीम में मुश्किल देखकर ये चारों भाई शाह नजरान के पास पहुँचने के लिए नजरान रवाना हुए। चलते हुए रास्ते में उन्होंने एक चरा हुआ खेत देखा। मज़र ने कहा। के जिस ऊँट ने ये खेत खाया है वो काना है रबिआ ने कहा। वो लंगड़ा भी है। अयाद ने कहा। और वो सुस्त भी है। अनमार ने कहा। और उसके दांत भी कमज़ोर हैं। इतने में ऊँट वाला अपने ऊँट की तलाश में आ निकला। और उनसे ऊँट का पता दरयाफ़्त किया। मज़र ने कहा। तुम्हारा ऊँट काना है। वो बोला हाँ। अयाद ने कहा। और वो सुस्त रफ़्तार भी है। उसने कहा। हाँ! अनमार ने कहा। और उसके दांत भी कमज़ोर हैं। उसने कहा। हाँ! रबिया ने कहा। लंगड़ा भी है। वो बोला हाँ, फिर चारों ने कहा। लेकिन भाई खुदा की क़सम हमने तुम्हारा ऊँट देखा नहीं है। वो हैरान होकर बोला, के निशानियाँ तो तुम ने सारी और मुकम्मल बता दी हैं। फिर मैं ये कैसे मान लूं। के मेरा ऊँट तुम ने नहीं देखा। चारों बोले भई! वाक़ेया यही है के ऊँट हम ने देखा बिलकुल नहीं।

ऊँट का मालिक उनके साथ ही नजरान पहुँच गया। और शाह नजरान से इन चारों भाईयों की शिकायत कर दी के चारों ने मेरे ऊँट की पूरी पूरी निशानियाँ तो बता दी हैं मगर ऊँट देखने का इंकार कर रहे हैं, बादशाह ने उन से बिन देखे ऊँट की निशानियाँ बता देने की वजह पूछी तो मज़र बोला। जनाब खेत को मैंने एक सिम्त से खाया हुआ देखा और दूसरी जानिब को सालिम पाया तो समझ गया के ऊँट यक चश्म है। रबिया ने कहा और मैंने ज़मीन पर पैर का एक निशान दूसरे पैरों के निशानों से बहुत हल्का पाया तो जान गया के ऊँट एक पैर से लंगड़ा है। अयाद ने कहा और मैंने उसकी मेंगनियों को बहुत थोड़े थोड़े फासले पर मजतमअ पाया, इससे मैंने अंदाज़ा लगाया के ऊँट सुस्त रफ़्तार है। अगर तेज़ रफ़्तार होता तो मेंगनियाँ दूर दूर और मुनतशिर पड़ी होतीं। अनमार कहा, और मैंने खेत का नर्म नर्म हिस्सा खाया हुआ और सख़्त हिस्सा छोड़ा हुआ देखा तो समझ गया के ऊँट के दांत कमज़ोर हैं।

बादशाह ने उनकी ये गुफ़्तगू सुनी तो ऊँट वाले से कहा। के मियाँ तुम्हारा ऊँट वाक़ई उन्होंने नहीं देखा। जाओ उसे कहीं तलाश करो।

उसके बाद बादशाह ने उन चारों को मेहमान खाने में भेजा। ताके कुछ खा पी लें। चारों एक कमरे में पहुँचे। और खा पी कर मज़र ने कहा। के ये शराब जो हम ने पी है। किसी कब्रिस्तान के दरख़्तों से कशीदा है। रबिआ ने कहा। और ये जो गोश्त हम ने खाया है किसी कुतिया के दूध से पले हुए बकरे का है। अयाद ने कहा और ये जो रोटियाँ हम ने खाई हैं उनका आटा किसी हैज़ वाली औरत ने गुंधा है। अनमार ने कहा और हम आज जिसके मेहमान हैं वो अपने बाप का नहीं। (यानी बादशाह हरामी है) उनकी सारी ये गुफ़्तगू जासूस ने बादशाह से कह दी। बादशाह ने फौरन शराब कशीद करने वाले को बुलाकर दरयाफ़्त किया के शराब कहाँ की थी? तो बादशाह के तेवर देखकर उसने सच सच कह दिया के हुज़ूर आपके बाप की क़ब्र पर लगे हुए फलदार दरख़्तों से कशीद की गई थी। बादशाह ने फिर कसाब को बुलाया। और पूछा के गोश्त किस चीज़ का था। कसाब ने भी सच सच कह दिया के ये गोश्त कुतिया के दूध से पले हुए एक मोटे ताज़े बकरे का था। बादशाह फिर घर पहुँचा। और आटा गूंधने वाली के मुतअल्लिक़ तहक़ीक़ की तो वाक़ई वो हायज़ा थी। इन तीनों बातों की सहत मालूम करने के बाद बादशाह हैरान होकर दिल ही दिल में कहने लगा के अब तो चौथी बात भी दुरूस्त ही निकलेगी।

गुस्से में अपनी माँ के पास पहुँचा। और तलवार लेकर उसकी छाती पर बैठ गया। और कहने लगा, सच सच बता। मैं हलाली हूँ या हरामी? माँ ने कहा, बेटा खुद ही अंदाज़ा कर लो। हलाली होते तो माँ की छाती पर यूं सवार होते? वाक़ेया ये है के मरहूम बादशाह से मेरा कोई बच्चा ना था। मैं डर गई के इस तरह हकूमत दूसरों के पास ना चली जाए इसलिए मैंने ज़िना से तुझे हासिल किया। और मश्हूर तुझे बादशाह का बेटा कर दिया। ये हक़ीक़त सुनकर बादशाह इन्तिहाई कर्ब व मलाल से वापस आया। और चारों भाईयों से कहने लगा के तुम्हारी सारी गुफ़्तगू मैंने सुनी और तहक़ीक़ के बाद तसदीक़ भी कर ली। मगर ये तो बताते जाओ। के तुम ने इन बातों का अंदाज़ा कैसे लगा लिया। मज़र ने कहा के जनाब शराब पीने से सुरवर व इनबिसात और चश्ती पैदा होती है मगर आपकी शराब पीकर हज़्न व मलाल और सुस्ती पैदा हुई। इससे मैंने समझ लिया के ये किसी बाग़ से नहीं बल्के क़ब्रिस्तान से कशीद कर्दा है। रबिया ने कहा और बकरे के गोश्त पर हमेशा चर्बी ऊपर और बोटी नीचे होती है बरख़िलाफ़ कुत्ते के गोश्त के के बोटी ऊपर और चर्बी नीचे होती है। और हम ने जो गोश्त खाया वो दूसरी क़िस्म का था। ये तो ना मुमकिन था के आपके हाँ कुत्ते का गोश्त बिकता। इसलिए मैंने ये अंदाज़ा लगाया के ये बकरा किसी कुतिया के दूध से पला हुआ होगा। अयाद ने कहा और हायज़ा औरत के गूंधे हुए आटे की रोटी सालन में डालने से बिखर जाती है। और उसके रेज़े अलग अलग हो जाते हैं। चुनाँचे हम ने जो रोटियाँ खाईं उनका भी यही हाल था, इसलिए मेरा अंदाज़ा ये था के ये आटा किसी हायज़ा औरत ने गूंधा है। अनमार ने कहा। और जनाब के मरहूम बादशाह बड़े मेहमान नवाज़ और हमेशा मेहमानों के साथ बैठकर खाना खाया करते थे। और इज़्ज़त व शराफत भी उसमें है। मगर आपने तनहा हमें एक कमरे में भेंज दिया। इससे मैंने अंदाज़ा कर लिया के आप अपने बाप के नहीं। वरना आप भी हमारे साथ बैठकर खाना खाते।

बादशाह ने पूछा। तुम यहाँ आए क्यों हो? वो बोले, अपना झगड़ा चुकाने। बादशाह ने कहा तुम्हारा झगड़ा चुकाना मेरे बस की बात नहीं। अज़राहे करम वापस जाओ। और मुझ से जो लेना है ल लो। और खुदारा अपनी ये तहक़ीक़ और किसी से ना कहना। (हयात-उल-हैवान, सफ़ा 26, जिल्द अव्वल)

सबक़:- बअज़ लोग ऐसे ज़हीन होते हैं के जहाँ दूसरों का ज़हन नहीं

पहुँचता। वहाँ उनका ज़हन पहुँच जाता है। और ये आम लोगों की बात है फिर जो अल्लाह के ख़ास और मक़्बूल बन्दे हैं उनके इल्मो इर्फ़ान की शान क्या होगी। और उनके लिए क्यों ना कहा जाए के वो ऐसी ऐसी बातें जान लेते हैं जिनका हमें कुछ पता नहीं होता।

हिकायत नम्बर (629) कुरआन से जवाब देने वाली औरत

हज़रत अब्दुल्लाह वास्ती फ़रमाते हैं। मैंने अरफ़ात में एक औरत को देखा जो तनहा खड़ी कह रही थी *मंयहदिल्लाहू फला मुज़िल्ललाह वमंयुज़लिलहू फला हादियला* यानी जिसे खुदारा समझा दे उसे कोई भटका नहीं सकता। और जिस वो राह भला दे। उसे कोई राह समझा नहीं सकता। मैंने मालूम कर लिया के ये औरत रास्ता भूल गई है। मैंने उसके क़रीब जाकर उससे कहा, के ऐ नेक औरत! तू कहाँ से आई है? तो बोली *सुबहानल्लज़ी असरा बिअब्दीही लेलम्मिन मस्जिदिल हरामी इलल मस्जिदिल अक़्सा* मैंने समझ लिया के ये बैत-उल-मुक़द्दस से आई है। मैंने पूछा, तुम यहाँ क्यों आई हो तो बोली। *व लिल्लाही अलन्नासी हिज्जुलबेती* मुझे मालूम हो गया के ये हज के लिए आई है। मैंने पूछा आप का शौहर भी साथ है या आप अकेली हैं? तो बोली *वला तक़्फू मा लेसा लका बिही इल्मुन* इसमें इशारा था के उसका इन्तिक़ाल हो गया है। मैंने पूछा ऊँट पर सवार होगी? तो बोली *वमा तफअलू मिन ख़ैरिन यअलुमाहुल्लाहू* चुनाँचे मैंने सवारी के लिए ऊँट बिठा दिया और वो सवार होने लगी तो बोली *कुल लिलमोमिनीना यग़ुज़्ज़ु मिन अबसारिहिम* मतलब ये के अपनी नज़रें दूसरी तरफ़ कर लो। चुनाँचे मैंने नज़र दूसरी तरफ़ कर ली। और वो सवार हो गई। फिर मैंने पूछा, आपका नाम क्या है? तो बोली *वज़्कुर फिलकिताबी मरयमा* मुझे पता चल गया के उसका नाम मरयम है। मैंने पूछा आपकी औलाद है? तो बोली *ववस्सा बिहा इब्राहिमा बनीही* मैंने समझ लिया के उसके चन्द बच्चे हैं। मैंने पूछा उनके नाम क्या हैं तो बोली *वकल्लमल्लाहू मूसा तकलीमा वत्तखज़ल्लाहू इब्राहीमा ख़लीलन या दाऊदा अन्ना जअलनाका खलीफतन* मतलब ये के उनके नाम मूसा, इब्राहीम, और दाऊद हैं। मैंने पूछा वो तुम्हारे बच्चे कौनसी जगह हैं ताके मैं उनकी तलाश करूं तो बोली *वअलामातिन्नजमी हुम यहतादून* मैंने समझ लिया के वो क़ाफलों के रहबर हैं। फिर मैंने पूछा के क्या कुछ खाओगी, तो बोली *इन्नी नज़रतू लिर्रहमानी सोमन* यानी मैं रोज़े से हूँ। चुनाँचे जब हम ढूंडते ढूंडते

उसके बेटों के पास पहुँचे तो वो अपनी माँ को देखकर रोने लगे। और कहने लगे। ये हमारी माँ आज तीन दिन से हम से अलेहदा होकर रास्ता भूल गई थी। फिर थोड़ी देर गुज़री तो वो अपने बेटों से कहने लगी *फबअसू अहादुकुम बिवरीकिकुम हाज़िही इलल मदीनती* यानी उसने मेरे लिए बाज़ार से कुछ मंगवाने का हुक्म दिया। थोड़ी देर के बाद उस नेक औररत की हालत खराब हो गई। और उसका आख़री वक़्त आ पहुँचा। मैं उसके क़रीब पहुँचा। और मिज़ाज पुर्सी की तो बोली *वजाआ सकरतुल मौती बिलहक़्क़ी* चुनाँचे उस पाक बाज़ औरत का इन्तिक़ाल हो गया। फिर मैंने उसे उसी रात ख़्वाब में देखा, और पूछा तो किस मुक़ाम में है तो बोली *इन्नलमुत्तक़ीना फी जन्नातिंव व नहारिन फी मक़अदी सिदकिन इंदा मलीकिम्मुक़्तदीरिन* (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 27, जिल्द 2)

सबक़:- हर मर्द और औरत को क़ुरआने पाक से शग़फ और मोहब्बत लाज़िम है अफसोस के आज कल हमें क़ुरआने पाक से प्यार ना रहा। एक ज़माना वो भी था के औरतें भी अपनी हर बात क़ुरआने पाक की आयात से करती थीं। और एक ज़माना ये भी है के मर्दों को भी फिल्मी गाने ही याद हैं। (फयालुल अजब)

हिकायत नम्बर (630) हसीन लोंडी

एक निहायत हसीन लोंडी हम्माम खाने से निकली, एक जवान उसे देखकर फ़रीफता हो गया। और उसके सामने आकर कहा *ज़य्यनाहा लिन्नाज़रीना* यानी हम ने उसे देखने वालों के लिए ज़ीनत दी। उस लोंडी ने उसके जवाब में ये आयत पढ़ी *व हफिज़नाहा मिन कुल्ली शैतानिर्रजीम* यानी हम ने हम शैतान मर्दूद से उसकी हिफाज़त की। फिर वो जवान बोला *नुरीदू अन नआकुला मिनहा व ततमाइन्न कुलूबुना* यानी हम सिर्फ यही चाहते हैं के इससे खायें। और हमारे दिल को आराम हो। लोंडी फिर बोली *लनतनालुल बिर्रा हत्ता तुनफिकू मिम्मा तिहिब्बूना* यानी हर गिज़ ना पाओगे भलाई को जब तक के खर्च ना करो। उससे जो तुम दौलत रखते हो, जवान ने यूं जवाब दिया *वल्लज़ीना ला यजीदूना निकाहन* यानी जिनको वो चीज़ ना मिले जिससे निकाह हो सके। (तो वो लोग क्या करें?) इस लोंडी ने फौरन जवाब दिया *ऊलाईका अनहा मुबअदूना* यानी वो उससे से दूर रहेंगे। बिल आखिर जवान ने हार का और तंग आकर कहा *लअनतल्लाही अलेका* तुम्ह पर अल्लाह की लानत हो। उस लोंडी ने फौरन

जवाब दिया *वलिज़्ज़िक्री मिस्लू हज़्ज़िल उनसीयीन* यानी (तुझ) मर्द को दो औरतों के हिस्से के बराबर (लानत) है। उसके बाद वो जवान मुंह की खा कर खामोश हो गया। और ज़लीलो ख़्वार होकर चला गया। (लोअ लोअ अश्शरअ, सफ़ा 34)

सबक़:- क़ुरआने पाक का इल्म इज़्ज़त व असमत का मुहाफिज़ भी है। और ये भी मालूम हुआ के पहले ज़माने की औरतें भी बड़ी इल्म वाली और दाना थीं और इल्म अगर है तो क़ुरआन व हदीस का। दिगर सब हैच।

हिकायत नम्बर(631) तीन लोंडियाँ

मामूं रशीद को एक मर्तबा एक लोंडी की ज़रूरत पेश आई तो उसने एलान किया। तो उसकी ख़िदमत में तीन लोंडियाँ हाज़िर हुईं। और तीनों सामने खड़ी हो गईं। बादशाह ने देखा तो कहा मुझे तो एक दरकार है। और तुम तीन हो अच्छा मैं तुम तीनों से इन्तिखाब कर लेता हूँ। तीनों लोंडियाँ सामने एक सफ में खड़ी थीं। बादशाह जब इन्तिख़ाब के लिए उठा तो पहली बोली। *वस्साबिक़ूना अव्वलूना मिनल मुहाज्रिना वल अनसारी* पहली ने जब ये आयत पढ़ी तो दूसरी जो दोनों के वस्त में खड़ी थी। बोली। *वकाज़ालिका जअलनाकुम उम्मातंव वस्तनलितकूनू शौहदाआ अलन्नासी* तीसरी जो सबसे आख़िर में खड़ी थी उसने हस्बे ज़ेल आयात पढ़ ली। *वललआख़िरतू खै़रूल्लका मिनल ऊला।*

मामूँ रशीद तीनों पर बड़ा खुश हुआ। और तीनों को खरीद लिया। (लोअ लोअ अशशरअ, सफ़ा 49)

सबक़:- आज कल की ढोलक के गीत गाने वालियों को लाज़िम है के पहले ज़माने की औरतों की तरह क़ुरआने पाक की आयात को याद करें। और उन फिज़ूल और लचर गानों और गीतों से किनारा करें।

हिकायत नम्बर(632) दो लोंडियाँ

एक मर्तबा हारून अलरशीद को एक लोंडी की ज़रूरत पेश आई तो उसके पास दो लोंडियाँ आईं। एक का रंग काला था। और एक का सफेद। हारून रशीद ने कहा। मुझे तो एक दरकार है। मैं तुम दोनों में। अपनी ख़िदमत के लिए उसे रखूंगा। जो अपने रंग की दूसरी के रंग पर तरजीह साबित कर दे। चुनाँचे सफेद रंग वाली ने अपने रंग की कुछ खूबियाँ बयान कीं। तो काली ने कहा हुज़ूर! देखिये उसका सफेद रंग अगर ज़रा सा भी मेरे चेहरे

पर आ जाए तो सब मुझे फलबहरी की मरीज़ा कहेंगे। और मेरा सियाह रंग ज़रा सा भी उसके चेहरे पर चला जाए तो उसका हुस्न दोबाला हो जाएगा। के मेरा रंग तिल बनकर उसके चहरे पर चमकने लगेगा। हारून अलरशीद उनकी हाज़िर दिमाग़ी पर बहुत खुश हुआ। (लो लो अश्शरअ, सफ़ा 50)

सबकः- पहले ज़माने की औरतें बड़ी दाना थीं। आज-कल की जाहिल औरतों को उनसे सबक़ हासिल करना चाहिए।

हिकायत नम्बर(633) छः ज़हीन औरतें

ख़्वाजा मेहमूद ज़रदार शीराज़ी एक रईस शहर और दुनयवी जद्दोजहद से बे फिक्र थे। एक ईद के दिन उनका आलिशान खैमा नहर के क़रीब नसब किया गया जिसमें एक बज़्म तर्ब क़ायम की गई। इस बज़्म में ख़्वाजा ज़रदार की छः कनीज़ें भी थीं। जो अपनी ज़हानत व क़ाबलियत के लिहाज़ से ख़्वाबजा को बे हद अज़ीज़ थीं। बज़्म तर्ब ख़त्म हुई तो ख़्वाजा ज़रदारान कनीज़ों के लुतायफ व तरायफ से जी बहलाते रहे। यकायक कनीज़ों को कुछ खयाल हुआ। और उन्होंने अपने आक़ा से पूछा के आज ईद का रोज़ है। आप फैसला कीजिए के हम में से अफ़्ज़ल कौन है।

ख़्वाजा ने कहा के ये फैसला मैं उसी वक़्त कर सकता हूँ के तुम में से हर एक अपनी अपनी फज़ीलत और दूसरे पर फौक़ियत साबित करे। शर्त ये है के ये मुनाज़रा अक़्ल व नक़्ल दरायत व रिवायत के साथ हो। ये सुनकर गोरी ने काली को। लाग़िर ने फर्बा को और ज़र्द ने गंदम गूं को अपना अपना हरीफ बनाकर गुफ़्तगू शुरू की।

सब से पहले गोरी कनीज़ ने काली को मुख़ातिब किया, और कहा। ऐ सियाह रू! जानती है के मैं कौन हूँ? मेरा रंग हर रंग से बेहतर है। मेरी पैशानी दरख़्शाँ और मेरे रूख़्सार ताबाँ हैं। मैं चौधवीं रात का चाँद हूँ। खुदा ने अपने पैग़म्बर मूसा अलेहिस्सलाम को यदे बेज़ा अता फ़रमाा। आयात रहमत में से *अबयज़्ज़त वुजूहूहुम* कहकर गोरे रंग का ज़िक्र आया है। हदीस शरीफ में है के सफेद रंग सब रंगों से बेहतर है। हूरों का यही रंग है। तो ऐ हबशन! ज़ाग पीकर है दाग़ मंज़र है। ख़्वाजा ज़रदार ने सियाह फाम कनीज़ को अपनी मज़म्मत पर चीं ब जबीं देखा। तो गोरी कनीज़ से कहा। बस बस इसी क़द्र काफी है। उसके बाद काली कनीज़ ने ज़बान खाली। और बोली।

ऐ सफेद चमड़े पर इतराने वाली, तू अक़्ल से खाली है। क्या तूने क़ुरआन में नहीं पढ़ा *वल्लैली इज़ा यग़शा वन्नहारी इज़ा तजल्ला* अगर शब

सियाह मोहत्रम ना हो तो अल्लाह उसकी क़सम ना फ़रमाता। और उसे दिन पर मुक़द्दम ना फ़रमाता। तुझे मालूम नहीं के सियाही जवानी की ज़ीनत है। बालों में सफेदी आई के बुढ़ापे ने मौत की ख़बर सुनाई। देख अगर मेरी एक सियाही का धब्बा तेरे चहरे पर पड़े तो उस खाल मशर्की से तेरे हुस्न में इज़ाफा हो जाए। लेकिन तेरी सफेदी का एक ज़र्रा मेरे चहरे पर नमूदार हो तो दुनिया मुझे फलबहरी की मरीज़ा कहने लगे। सियाही की फज़ीलत उससे बढ़कर और क्या होगी। के तमाम उलूम व फिनून की किताबें इसी सियाही से लिखी जाती हैं। मुश्क व अंबर का यही रंग है। अगर सियाही सबसे बेहतर ना होती तो सानअे मतलक़। आँख की पुतली को ये रंग अता ना फ़रमाता। ख़्वाजा ज़रदार ने कहा। बस ऐ आँख की पुतली बस!

उसके बाद फर्बा कनीज़ ने अपने गोल मटोल बाज़ू उठा कर लागिर इंदाम कनीज़ को कहा। ऐ दिक़ज़दा। मेरा तेरा क्या मुक़ाबला? आज तक दुनिया में किसी ने लाग़री को भी पसंद किया है? हर शख़्स फ़रबही का आरज़ूमंद है। आदमी तो आदमी कोई दुबले जानवर को भी अच्छा नहीं समझता। दुबला पन तो खुदा को भी पसंद नहीं इसी लिए दुबले जानवरों की क़ुर्बानी जायज़ नहीं। तेरी टांगें जो चिड़िया के मुशाबह हैं। और तेरे हाथ जो बांस की खपचियों की मानिंद हैं कैसे मरऊब हो सकते हैं?

कनीज़ लागि़र को हुक्म हुआ। तो वो बोली। ऐ फर्बा! अपनी फ़रबही पर ना इत्रा। ऐब को हुनर बनाकर ना दिखा। खुदा का शुक्र है के उसने मुझे शाखे गुल की तरह नाज़ुक और मोजे नसीम की मानिंद सिबक़ पैदा किया है तू रेत का थेला है। गोश्त का एक पहाड़ किसी ने मअशूक़ की पील तनी और कोहे पेकरी की तारीफ नहीं की। सिवाये उसके के ज़िबह करने के लिए फ़रबही बेहतर होती है।

ख़्वाजा ज़रदार ने ये अलफाज़ सुनकर कनीज़ लागि़र को भी अपनी तक़रीर ख़त्म करने का हुक्म दिया। और कनीज़ ज़र्दफाम की तरफ़ इशारा किया। उसने गंदम गूं कनीज़ की तरफ़ रूख करके कहा। मैं ज़र्द हूँ। मगर हसीनों में फर्द हूँ। सय्यारो में मेहर दरख़्शाँ हूँ। निबात की ज़ाफरान हूँ। गुलों में गुल सदबर्ग हूँ। सरसासें का सिंगार हूँ। बसंत की बहार हूँ। तू ऐ गंदम गूं! अजीब-उल-ख़लक़त है। ना सफेद है ना सियाह, तेरा रंग खज़्न व मलाल की अलामत है। तेरे मुतअल्लिक़ किसी शायर ने खूब कहा है...

हर करा ग़फ़्ल बोद पेश रोद राह नमूं
शोद शीफ़्ता हर गिज़ बर्ख़ गंदम गूं

चूंके आदम दिल रा मील सूए गंदम कर्द
कर्द अज़ जन्नत फ़िर्दोस बरूं

उसके बाद कनीज़ गंदम ने ज़र्दफाम कनीज़ को मुख़ातिब किया। और कहा, मैं खुदा का शुक्रिया अदा करती हूँ के उसने मुझे बेहतर से बेहतर सूरत अता फ़रमाई है। मैं ना मोटी ना पतली ना गोरी ना काली हूँ ना छिपकली की तरह ज़र्द। मेरा रंग गंदम गूँ है जो सब से अफ़ज़ल समझा जाता है। मैं मलाहत व सबाहत का मजमूआ हूँ। शौअरा मेरे सनाख़्वाँ और नक़ादान जमाल मेरे क़द्रदान हैं। ख़्वाजा ज़रदार ने उनकी ये पुर लुत्फ बेहस सुनकर फैसला दिया के तुम में एक भी दूसरी से कमतर या बेश्तर नहीं। आँख अपनी जगह पर। बाल अपनी जगह पर। गाल अपनी जगह पर दिलफरैब हैं। एक को एक पर फज़ीलत नहीं दे सकते। बस यही मेरी राय है। (माखूज़)

सबक़:- खुदा तआला ने जो कुछ भी और जिस रंग में भी किसी को पैदा फ़रमाया है, खूब ही पैदा फ़रमाया है। और सब अपनी अपनी जगह पर मोज़ूं व मुनासिब हैं। और ये भी मालूम हुआ के पहले ज़माने की औरतें भी बड़ी दाना और ज़हीन होती थीं।

हिकायत नम्बर(634) औरत का फ़रैब

अबु अलहसन हुसैनी ने बयान किया। जो मिसतरशुद बिल्लाह के मौज़्ज़न थे। के बअज़ चलते फिरते ताजिरों ने ज़िक्र किया। के हम मुख़्तलिफ शहरों से आकर मिस्र की जामअे उमरो बिन आस में जमा हो जाते। और बातें किया करते थे एक दिन हम बैठे बातें कर रहे थे के हमारी नज़र एक औरत पर पड़ी। जो हमारे क़रीब एक सतून के नीचे बैठी थी। एक शख़्स ने जो बग़दाद के ताजिरों में से था उस औरत से कहा, क्या बात है? उसने कहा। मैं एक लावारिस औरत हूँ। मेरा शौहर दस बरस से मफक़ूद-उल-ख़बर है। मुझे उसका कुछ भी हाल मालूम नहीं हुआ। मैं क़ाज़ी साहब के यहाँ पहुँची के मेरा निकाह कर दें। मगर उन्होंने रोक दिया। और मेरे शौहर ने कोई सामान नहीं छोड़ा। जिससे बसर अवक़ात कर सकूं। मैं किसी अजनबी शख़्स की तलाश में हूँ जो मेरी इम्दाद के लिए गवाही दे दे और उसके साथ ये भी के वाक़ई मेरा शौहर मर गया। या उसने मुझे तलाक़ दे दी। ताके मैं निकाह कर सकूं या वो शख़्स ये कह दे के मैं उसका शौहर हूँ और फिर वो मुझे क़ाज़ी के सामने तलाक़ दे दे। ताके मैं इद्दत का ज़माना किसी तरह गुज़ार कर

निकाह कर लूं। तो उस शख़्स ने उससे कहा। के तू मुझे एक दीनार दे दे तो मैं तेरे साथ क़ाज़ी के पास जाकर कह दूंगा के मैं तेरा शौहर हूँ। और तुझे तलाक़ दूंगा। ये सुनकर वो औरत रोने लगी और उसने कहा, खुदा की क़सम उससे ज़्यादा मेरे पास नहीं है। और उसने चार रूबाईयाँ यानी चौथाई दरहम निकालीं। तो उसे शख़्स ने वही उससे ले लीं। और औरत के साथ क़ाज़ी के यहाँ चला गया। और देर तक हम से नहीं मिला। अगले दिन उससे हमारी मुलाक़ात हुई। हमने उससे कहा। तुम कहाँ रहे। इतनी देर क्यों हुई? उसने कहा छोड़ो भाई मैं एक ऐसी बात में फंस गया जिसका ज़िक्र भी रूसवाई है। हम ने कहा हमें बताओ। उसने बयान किया के मैं उसके साथ क़ाज़ी के यहाँ पहुँचा। तो उसने मुझ पर ज़ोजियत का दावा किया। और दस साल तक ग़ायब रहने का और दरख़्वास्त की के मैं उसका रास्ता साफ कर दूं। मैंने उसके बयान की तसदीक़ कर दी। तो उससे क़ाज़ी ने कहा। क्या तू इससे अलेहदगी चाहती है? उसने कहा। नहीं वल्लाह। उसके ज़िम्मे मेरा मेहर है। और दस साल का खर्चा मुझ देना उसका हक़ है। तो मुझ से क़ाज़ी ने कहा के इसका हक़ अदा करो। और तुझे इख़्तियार है उसको तलाक़ देने या रोके रखने का। तो मेरा ये हाल हो गया के मैं मुतहय्यर रह गया। और ये हिम्मत ना कर सका के असल सूरत वाक़ेया बयान कर सकूं। और उसके बयान की तसदीक़ ना करूं। अब क़ाज़ी ने ये इक़्दाम किया। के मुझे कोड़े वाले के सपुर्द करे। बिलआख़िर बीस दीनारों पर बाहमी तसफिया हुआ जो उसने मुझ से वसूल किए। और वो चारों रबाअयीं जो उसने मुझे दी थीं। वो वकला और क़ाज़ी के अहलकारों को देने पर खर्च और इतनी ही अपने पास से खर्च हुईं। हम ने उसका बहुत मज़ाक़ उड़ाया। वो शर्मिंदा होकर मिस्र ही से चला गया। और फिर उसका हाल मालूम ना हो सका। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 456)

सबक़:- औरत जब फ़रैब करने पर उतर आए तो बड़े बड़े दाना मर्दों को भी परेशान कर देती है।

हिकायत नम्बर(635) फैशन ऐबल धोका

लंदन के एक मशहूर जोहरी की दुकान में एक खूबसूरत औरत बड़ी ठाठ और अमीराना शानो शौकत से दाखिल हुई। और कहने लगी। मैं फ़लाँ डाक्टर की बीवी हूँ। हमें कुछ बैश क़ीमत जवाहरात दरकार हैं। मालिक दुकान ने

बहुत से क़ीमती जवाहरात निकाल कर पेश किए। औरत ने कुछ जवाहरात चुन कर कहा। इन्हें एक डिब्बे में बन्द करके अपना आदमी मेरे साथ कर दो। बाहर कार खड़ी है। आपका आदमी मेरे साथ चले। ताके ये जवाहरात डाक्टर साहब भी देखकर पसंद कर लें। उनकी क़ीमत आपके आदमी को वहीं आदा कर दी जाएगी। चुनाँचे मालिक दुकान ने हज़ारों रुपये की मालियत के वो जवाहरात एक डिब्बे में बन्द करके उस औरत के हवाला किए। और अपना मुलाज़िम साथ भेज दिया। और औरत अपनी कार में उसे बिठा कर चल दी।

थोड़ी देर के बाद ये कार लंदन के किसी दूसरे हिस्से में एक मशहूर डाक्टर की दुकान के सामने रूकी। और औरत ने उस मुलाज़िम से कहा। तुम कार ही में बैठो। मैं डाक्टर साहब के पास जाती हूँ। और अभी तुम्हें अन्दर बुला लिया जाएगा। मुलाज़िम कार ही में रहा। और औरत डाक्टर साहब के मतब में दाखिल हो गई। और डाक्टर साहब से कहने लगी। डाक्टर साहब! मेरा शौहर दिमाग़ी मरीज़ है। किसी ज़माने में बहुत बड़ा जोहरी था। कारोबार में नुक़सान वाके़ हो जाने से दिमाग़ पर बुरा असर पड़ा। और अब हर वक़्त यही कहता रहता है "लाओ क़ीमत जवाहरात की" मेरे जवाहरात, मैं क़ीमत लेने आया हूँ। वग़ैरा वग़ैरा। और मुझे देखकर उसका मर्ज़ और भी बढ़ जाता है मैं उस साथ वाले कमरे में बैठी हूँ। वो कार में बैठा है। आप उसे अन्दर बुलाकर उसकी तश्ख़ीस करें। डाक्टर साहब! ये लीजिए अपनी फीस माकूल फीस देकर औरत खुद दूसरे कमरे में चली गई। और डाक्टर साहब ने अपने दो आदमी बाहर भेज दिए के मरीज़ को अन्दर ले आओ। मुलाज़िम अन्दर आया। तो आते ही बोला। डाक्टर साहब! पसंद आ गए जवाहरात अब क़ीमत दीजिए। डाक्टर साहब ने मुस्कुराकर कहा। बैठ जाइये। अभी सब ठीक हो जाएगा। और फिर उसका मुआयना करने लगा। मुलाज़िम ने घबराकर पूछा। के ये क्या? डाक्टर ने सारा क़िस्सा सुनाया। तो मुलाज़िम ने भी सारा वाक़ेया कह सुनाया। अब जो घबराकर कमरे में गए। तो औरत ग़ायब थी। बाहर निकले तो कार भी ग़ायब थी। (माह तय्यबा सितम्बर 1955ई०)

सबक़:- इस फैशन ऐबल दौर में बड़े बड़े फैशन ऐबल धोके भी होते हैं। लिहाज़ा बड़ा चौकन्ना रहने की ज़रूरत है।

हिकायत नम्बर (636) ज़न मुरीद

एक माही गीर कुछ मछलियाँ लेकर बादशाह के पास आया। और बादशाह को तोहफतन पेश कीं। बादशाह ने खुश होकर उसे चार सौ

रुपये ईनाम दिया। बादशाह की बैगम ने कहा। आपने चन्द मछलियों के लिए ना हक़ इतना रुपया दे दिया रुपया अपना वापस ले लीजिए। बादशाह ने कहा। मगर अब तो मैं दे चुका। वापस किस तरह लूं? बैगम ने कहा। तरीक़ा मैं बताती हूँ। आप उससे पूछिये। ये मछलियाँ नर हैं या मादा? वो अगर नर बताए तो आप कहिये मुझ तो मादा दरकार हैं। और अगर वो मादा बताए तो आप कहिये मुझे नर दरकार है। इस बहाने से आप अपना रुपया वापस ले लीजिए। चुनाँचे माही गीर को बुला कर बादशाह ने यही सवाल किया। माही गीर बड़ा होशियार था। उसने जवाब दिया। हुज़ूर ये मछलियाँ ना नर हैं नार मादा। ये मुखन्निस हैं। बादशाह उसके इस जवाब से और भी ज़्यादा खुश हुआ। और चार सौ रुपये और ईनाम दे दिए। ये देखकर बैगम और भी ज़्यादा जली। इतने में माही गीर के हाथ से एक रुपया गिर गया। और उसने फौरन उठा लिया। बैगम को मौक़ा मिल गया। और बादशाह से कहा। देखिये ये कितना हरीस है। के आठ सौ में से एक रुपया गिर गया तो कितनी उजलत से उसे उठाया है। उससे इसी बात पर नाराज़गी का इज़हार करके अपनी सारी रक़म वापस ले लीजिए। चुनाँचे बादशाह ने फिर उसे बुलाया और पूछा के आठ सौ में से एक रुपया गिर गया था तो गिरा रहने देते। तुम ने इतनी उजलत से क्यों उठा लिया? माहीगीर ने जवाब दिया। हुज़ूर! इस पर आपका नाम गंदा था। मैंने गवारा ना किया। के आपके नाम की बे अदबी हो। बादशाह इस जवाब से और भी ज़्यादा खुश हुआ। और चार सौ और इनाम दे दिया। और फिर सारे शहर में डूंडी पिटवाई के कोई शख़्स अपनी बीवी की अंधा धुंद इताअत ना करे। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 12, जिल्द 2)

सबक़:- ज़न मुरीद ख़सारे में रहता है। और ये मर्ज़ कमज़ोर लोगों में पाया जाता है। जिनकी तरफ़ से शायर ने लिखा है...

आए हैं दुनिया में हम दो काम करने के लिए
कुछ खुदा से और कुछ बीवी से डरने के लिए

हिकायत नम्बर (637) लकड़ी की औरत

एक दर्ज़ी, एक बढ़ई, एक सुनार और एक फक़ीर। चारों इकट्ठे कहीं जा रहे थे। रास्ते में रात हो गई। तो एक जंगल में ठहरे। और रात भर के लिए हर एक के ज़िम्मे दो दो घंटे का पेहरा मुक़र्रर क़र दिया। पहले दो घंटा एक आदमी जागे। और बाक़ी तीनों सोयें। फिर दूसरा जागे। और दो घंटा पेहरा

दे और बक़ी तीनों सोयें। चुनाँचे सबसे पहले बढ़ई का नमबर आया। और वो दो घंटा पेहरा देने के लिए जागा। और तीनों सो गए। बढ़ई ने सोचा के बेकार क्यों बैठें, हथियार पास हैं कयों ना एक दरख़्त चीर कर लकड़ी की एक औरत बना डालूं। चुनाँचे दो घंटे में उसने एक औरत का मुजस्मा तैयार कर दिया। फिर दर्ज़ी का नम्बर आया। और वो जागा तो उसने लकड़ी की इस औरत को देखा तो समझ गया के ये बढ़ई का कारनामा है। और फिर खयाल आया के मेरे पास भी सारा सामान है। मैं क्यों ना उसे कपड़े पहना दूं। चुनाँचे उसने दो घंटे में उसका सारा लिबास तैयार करके उसे पहना दिया। फिर सुनार का नम्बर आया। और उसने ये नक़्शा देखा तो उसने उसे गहने पहना दिए। आख़िर में फक़ीर का नम्बर आया। आख़िर में फक़ीर का नम्बर आया। उसने ये देखा तो झट सज्दे में गिरकर अल्लाह से दुआ की। के इलाही! मुझ बे सरो सामान की लाज रख और इसमें जान डाल दे। चुनाँचे वो औरत ज़िन्दा भी हो गई।

अब सुबह चारों आपस में झगड़ने लगे। बढ़ई बोला। औरत मेरी है, दर्ज़ी बोला मेरी है। सुनार बोला मेरी हैं और फक़ीर बोला मेरी है। ये झगड़ा क़रीबी शहर के हाकिम के पास गया। हाकिम ने उस औरत को देखा तो वो कहने लगा तुम चारों झूटे हो। औरत तो मेरी है। इतने में वो औरत खुद बोली बोली। के मैं बताऊँ मैं किसकी हूँ। हाकिम ने कहा। हाँ बताओ तुम किस की हो? क़रीब ही एक दरख़्त था। वो औरत दौड़कर उस दरख़्त से चिमट गई। और फिर लकड़ी बन गई और इस दरख़्त में गुम हो गई और वो सब के सब मुंह देखते ही रह गए। (मसनवी शारीफ)

सबक़:- बच्चा पैदा होता है तो माँ बाप कहते हैं हमारा बच्चा है, चचा कहता है मेरा भतीजा है, मामू कहता है मेरा भांजा है, भाई कहता है मेरा भाई है और थोड़े अर्से के बाद वही बच्चा लुक़मा-ए-क़ब्र बन जाता है और मिट्टी का पुतला फिर मिट्टी बन जाता है और सारे रिश्तेदार मेरा मेरा कहने वाले मुंह देखते रह जाते हैं।

हिकायत नम्बर(638) हीरे की तलाश

मिस्टर शक़ी ने मिस्टर शातिर की तमाम जैबें टटोल डालीं। मगर हीरे का पता ना चलाँ। मिस्टर शक़ी बड़ा हैरान हुआ के सोते वक़्त मैं हीरा मिस्टर शातिर के पास देख चुका हूँ। और उसने मेरे सामने हीरा अपनी जैब में रखा था। मगर ये थोड़ी देर में हीरा ग़ायब कहाँ हो गया।

मिस्टर शातिर शहर के एक मशहूर जोहरी का एक बहुत बड़ी क़ीमती हीरा चुरा कर फ़रार होने की ख़ातिर ट्रेन के फस्ट किलास के डिब्बे में सवार था। के मिस्टर शक़ी भी उसी डिब्बे में सवार हुआ। मिस्टर शक़ी ये देखकर के डिब्बा मुख़्तसिर और दो ही मुसाफिर के लिए मख़सूस है, खुश हुआ, शाम का वक़्त था। ट्रेन छोटी और मिस्टर शक़ी मिस्टर शातिर से मुख़ातिब हुआ।

मिस्टर शक़ीः- मिस्टर! क्या मैं पूछ सकता हूँ के आप कहाँ तशरीफ़ ले जायेंगे?

मिस्टर शातिरः- मैं लंदन जाऊँगा।

मिस्टर शक़ीः- बहुत खूब दो दिन दो रात का खूब साथ रहेगा। मुझे भी लंदन जाना है। ट्रेन अपनी पूरी रफ़्तार से जा रही थी। और रात के दस बजे का टाइम था। सोने से पहले मिस्टर शातिर ने अपनी जैब से हीरा निकाला और मिस्टर शक़ी के सामने उसे देखभाल कर फिर जैब में रख लिया। और मिस्टर शक़ी से कहा के अब सोना चाहिए। चुनाँचे दोनों अपनी अपनी सीट पर सो गए।

आधी रात के बाद मिस्टर शक़ी उठा और हीरे की तलाश में मिस्टर शातिर की जैबें टटोलने लगा मगर ये देखकर हैरान रह गया के वो हीरा जो मिस्टर शातिर ने उसके सामने जैब में रखा था उसका किसी जैब में नामो निशान तक नहीं। आख़िर मायूस होकर लेट गया। सुबह हुई तो वो ये देखकर और भी हैरान हुआ के वही हीरा मिस्टर शातिर ने अपनी जैब से निकाला। और मिस्टर शक़ी के सामने उसे देखभाल कर फिर जैब में डाल लिया। मिस्टर शक़ी ने दिल ही दिल में सोचा के एक और भी बाक़ी है। उसा रात को हीरा मिल ही जाएगा। चुनाँचे दूसरी रात फिर सोने से पहले मिस्टर शातिर ने हीरा अपनी जेब से निकाला। और फिर अपनी जैब में डाल लिया। आधी रात के बाद मिस्टर शक़ी फिर उठा और मिस्टर शातिर की जैबें टटोलने लगा मगर ये देखकर बेहद हैरान हुआ के हीरा फिर ग़ायब है। थक हार कर फिर लेट गया। और सुबह उठा तो हीरा शातिर के हाथ में देखा। मिस्टर शक़ी उसी वक़्त मिस्टर शातिर से मुखातिब हुआ।

मिस्टर शक़ीः- गुसताखी माफ! मुझे इतना बता दीजिए के ये हीरा जो आप अपनी जैब में रख कर सो जाते थे आधी रात के बाद कहाँ चला जाता है।

मिस्टर शातिरः- मिस्टर मुझे ग़ाफिल ना समझो। मुझे ये इल्म हो चुका था के इस हीरे के तुम भी ख़्वाहाँ हो। और हीरे के चुरा लेने ही की

ख़ातिर मेरे तआक़्क़ुब में तुम इस डिब्बे में सवार हुए हो। मैंने इस हीरे को तुम से बचाने के लिए नफ़्सियाती हर्बे से काम लिया। मैंने सोचा के दिन के वक़्त तो तुम कुछ ना कर सकोगे। रात ही को उड़ाने की कोशिश करोगे। और चूंके नफ़्सियाती तौर पर तुम को मेरी जैबों को टटोलना था। इसलिए रात को मैं हीरा तुम्हारे सामने जैब में डाल कर सो जाता था। और रात के पहले हिस्सा में जब तुम्हारी आँख लग जाती थी। तो वो हीरा अपनी जैब से निकाल कर मैं तुम्हारी जैब में डाल देता था। और तुम आधी रात के बाद जब उठते थे। तो मेरी खाली जैबों को टटोल कर मायूस होकर लेट जाते थे। तो मैं हीरा फिर तुम्हारी जैब से अपनी जैब में डाल लेता था। (हिकायत मसनवी तबसर्रूफ मौल्लिफ)

सबक़:- खुदा की तलाश में तुम जंगलों में फिरते हो। हालाँके खुदा खुद तुम्हारे अन्दर मौजूद है। *वफी अनफुसीकुम अफाला तुबसिरून*

हिकायत नम्बर(639) जामअे जवाब

एक फलसफी ने एक मजज़ूब से पूछा के क्यों साईं जी! खुदा जब नज़र नहीं आता तो फिर तुम लोग *अशहद* कहकर उसकी गवाही क्यों देते हो। और जब हर काम अल्लाह ही करता है तो फिर बन्दा मुज्रिम क्यों है? और शैतान जब आग से बना हुआ है तो फिर उसे दोज़ख़ में डालने से उसको क्या तकलीफ होगी। आग आग को कैसे तकलीफ दे सकती है? साईं साहब ने इन तीनों सवालात के जवाब में एक मिट्टी का ढेला उठाया। और खींच कर इस फलसफी के सर पर दे मारा। फलसफी का सर फट गया और वो सीधा अदालत में पहुँचा और साईं पर मुक़दमा दायर कर दिया। साईं साहब अदालत में बुलाए गए और क़ाज़ी साहब ने उनसे दरयाफ़्त किया के आप ने उसे ढेला क्यों मारा। साईं साहब बोले के उनके तीनों सवालात का एक ही जामअे जवाब दिया है। क़ाज़ी साहब ने कहा। मगर ये जवाब कैसे हुआ? तो वो बोले के इस फलसफी से पूछिये के ढेला लगने से उसे तकलीफ हुई? फलसफी बोला, यक़ीनन हुई और हुई। साईं साहब बोले। मगर वो तकलीफ तुम्हें नज़र भी आई? फलसफी ने कहा नज़र तो नहीं आई मगर महसूस तो हुई। साईं साहब ने का बस ये तुम्हारे पहले सवाल का जवाब है के खुदा नज़र तो नहीं आता मगर मालूम तो है। दूसरे सवाल का जवाब इस तरह है के जो करता है खुदा करता है फिर तुम ने दावा मुझ पर क्यों किया? ढेला भी उसी ने मारा है उससे पूछो। तीसरे सवाल का जवाब इस तरह है के फलसफी भी

मिट्टी का बना हुआ है और ढेला भी मिट्टी का ही था। तो जिस तरह मिट्टी ने मिट्टी को तकलीफ पहुँचाई उसी तरह आग भी आग को तकलीफ दे सकेगी। फलसफी झट बोल उठा के तीनों मसले मेरी समझ में आ गए। और मैं अपना दावा वापस लेता हूँ। (माह तय्यबा जनवरी 1960ई०)

सबक़:- फलसफा बअज़ अवक़ात गुमराही का बाइस बन जाता है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के बन्दों की बातें मुबनी बर हिकमत होती हैं।

हिकायत नम्बर(640) हथैली के बाल

एक बादशाह ने एक रोज़ भरे दरबार में एलान किया के जो शख़्स ये बता दे के मेरी हथैली पर बाल क्यों नहीं तो मैं उसे मुंह माँगा ईनाम दूंगा और अगर कोई शख़्स मेरे इस सवाल का जवाब देने के लिए उठा और जवाब माक़ूल ना दे सका तो मैं उसे मरवा डालूंगा।

बादशाह का ये एलान सुनकर कोई शख़्स जवाब देने के लिए उठने की जुर्रात ना कर सका। थोड़ी देर के बाद एक शख़्स उठा और कहने लगा। हुज़ूर! आपके सवाल का जवाब मैं दे सकता हूँ, बादशाह ने कहा। खूब सोच लो। अगर जवाब माक़ूल ना हुआ तो मरवा डाले जाओगे। वो बोला हुज़ूर मैंने खूब सोच लिया हैं।

बादशाह ने पूछा, अच्छा बताओ, मेरी हथैली पर बाल क्यों नहीं?

वो बोला, हुज़ूर आप बहुत बड़े सखी हैं। हर वक़्त सख़ावत करते ही रहते हैं और कुछ ना कुछ देते ही रहते हैं। ये वजह है के आपकी हथैली के बाल दे दे कर घिस गए हैं। बादशाह ये जवाब सुनकर खुश हुआ। और फिर पूछा, अच्छा ये बताओ, तुम्हारी हथैली पर बाल क्यों नहीं? वो बोला, हुज़ूर आप जब कुछ देते हैं तो मुझी को देते हैं आपके बाल देदे कर और मेरे लेले कर घिस गए हैं।

बादशाह ने दरबार के हाज़ीन की तरफ़ इशारा करके पूछा। और उनकी हथेलियों पर बाल क्यों नहीं? वो बोला। हुज़ूर! आप जब देते हैं मुझी को देते हैं। आपके बाल दे दे कर मेरे ले ले कर और इनके हसरत व अफसोस में अपने हाथ मल मल कर घुस गए हैं" बादशाह ने जवाब सुनकर उसे बहुत सा ईनाम दिया। (माह तय्यबा)

सबक़:- दाना आदमी हर मुश्किल पर क़ाबू पा लेते हैं और अपनी दानाई से फायदा उठाते हैं।